लखनऊ आ० ज्येष्ठ २९ ज्येष्ठ शु० ९ रविवार सवत् २०४० वि०, १९ जून सन १९८३ ई०

वेद का मनन

व्याख्याकार श्री प० इन्द्रराज

ओ भूर्भुव स्व सुप्रजा सुप्रजाभि स्या सुवीरा वीरै सुपोष पोष ।
नय प्रजा मे पाहि । श स्य पशून्मे पाहि । अथव
पितुम्मे पाहि ।। (य० ३/३७)

हे (भू) प्राणो के प्राण सर्वावतमान (भुव)दु ख विनाशक(स्व) आनन्दमय प्रभो ! आप की कृपा से (प्रजाभि) पुत्र पौत्रादि से सम्पन्न होकर हम (सुप्रजा) अच्छी प्रजा वाले (स्याम) हो और (वीरै) वीर योद्धाओ से युक्त होकर हम सदा (सुवीर) अच्छे वीरो की सहायतासे विजयी हो । तथा (पोष) पुष्ट व्यवहारो से युक्त होकर (सुपोष) सम्पुष्ट हो । हे (नय) नरो के हितकारक परमात्मन आप सदा (मे प्रजाम) मेरी प्रजा की रक्षा कीजिए । हे (शस्य) स्तुति करने योग्य परमे वर आप (मे+पशून) मेरे पशुओ की सदा (पाहि) रक्षा करो । हे (अथय) व्यापकेश्वर । आप (मे पितुम) मेरे अ न की निरन्तर (पाहि) रक्षा कीजिए (पितु इति अन्ननाम (निघ० २/७)

विशेष –– इस म त्र मे गृहस्थ को सुखी बनाने के साधन का बड सुन्दर ढग से वणन है । गृहस्थी को क्या चाहिए ? (१) अच्छा सन्तान (२) दूध तथा (३) भरपूर सात्विक अन्न यह गृहस्थ के सुख है । निश्चय होने पर यदि सन्तान कुपात्र हो, डरपोक हो और कमजोर हो तो वह गृहस्थ नरक है । ऐसे गृहस्थो के आधार पर बना समाज भी अव्यवस्थित समाज हो जाएगा । यदि सुसन्तान हो जाए परन्तु दूध और अन्न न हो दरिद्रता हो तो सुसन्तान, सुसन्त न न रह सकेगी । दरिद्रता भी महाभिशाप है । इन उल्लिखित तीनो वस्तुओ के सौभाग्य से गृहस्थ मे होने पर यदि भगवान की कृपा न हो तो वे तीनो वस्तुए भी नही रह सकती । इस लिए वेद म त्र के द्वारा क्रमश हम लोग परिवार को वग ... की मालिक वस्तुओ का भगवान से मागते हैं । प्रथम प्राथना भगवान से यह है कि हम अच्छी प्रजा वाले हो । यहा सन्तान को प्रजा कहा गया है । प्रजा का अथ है जिसको प्रकर्षण पैदा किया जाए । वह अच्छी सन्तान भी कैसे अच्छी रह सकती है जबकि वेद के शब्दो मे वह वीर हो कायर न हो क्योकि "वीर भोग्या वसुन्धरा वीर पुरुष ही वसुन्धरा के भोगो को भोग सकते है । कायरो का ससार मे कोई स्थान नहीं है । सन्तान मे दूसरा गुण यह होना चाहिए कि वह पुष्ट हो । स्वस्थ हो,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

		प्रधान सम्पादक–	वर्ष	अङ्क
वार्षिक	१६)	आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०		
छमाही	९)			
विदेश में	१ पौंड	प्रबन्ध सम्पादक—नारायणप्रिय	८६	२१
एक प्रति	४० पैसे			

प्रार्थना

यो नो दाता स नः पिता, महाँ उग्र ईशानकृत्।
अयामन्नुग्रो मघवा पुरूवसु गोरश्वस्य प्रदातु नः ॥
ऋ० ८-५२-५ ॥

अर्थ –जो प्रभु हमें ऐश्वर्य प्रदान करता है, वही हमारा पालन-कर्ता है, नितान्त तेजस्वी है जो अभावग्रस्त को भी ऐश्वर्यशाली बना देता है। साथ ही अयन्तव्य मार्ग पर चलने वाले पापी के प्रति वह भयानक रूप धारण करता है। सभी को व्यवस्थित करने वाला स्वयं ऐश्वर्य युक्त वह परमात्मा हमें गौ, अश्व धन आदि प्रदान कर सर्वथा सम्पन्न बनाये।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार १९ जून १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८४

–सम्पादकीय

अनुशीलयन्तु भद्राः

शिक्षा से ज्ञानार्जन होता है–प्रतिभा में विकास होता है और मौलिक रूप से विचार शक्ति एवं अनुशीलन की प्रतिभा प्राप्त होती है। शोध कार्य नवीन तथ्यों को प्रकट करने में सक्षम होता है। जितना हम जानते है उससे भी अधिक जानने को पड़ा है। अत जो विद्वद् जन और मनीषी किसी खोज में है–शोध कार्य कर रहे हैं वह धन्यवाद के पात्र हैं और उनका श्रम उसी प्रकार से है जैसे धूल और राख के ढेर मे से कोई रत्न कणों को खोज निकाले।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बहुत से जीवन चरित्र प्राप्त है। सभी विद्वानो ने पृथक परिश्रम से तथ्यों को प्रस्तुत किया है। परन्तु अधिकाश मे उनके जीवन के उन वर्षों के सम्बन्ध मे जब भारत मे अग्रजो के विरुद्ध प्रथम सशस्त्र विद्रोह हो रहा था–कम या बिल्कुल ही प्रकाश नही डाला गया है उनकी शिक्षाओं आर्य समाज आदि की स्थापना का विस्तृत वर्णन है। परन्तु १८५६ से लेकर १८६२ के मध्य छ वर्षों मे उनकी जो गति विधिया रहीं उस पर बहुत कम लिखा गया है। जब कि देश इस काल मे प्रथम स्वतन्त्रता का युद्ध लड़ रहा था। देहली ब्रह्मावर्त–कानपुर-इलाहाबाद-लखनऊ-झासी और ग्वालियर मे अग्रेजो के पैर उखड़ रहे थे। नाना राव पेशवा-तातिया टोपेरानी लक्ष्मी बाई संघर्षशील नेता थे।

'योगी के आत्मचरित्र' शीर्षक पुस्तक कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई है जो प० दीन बन्धु शास्त्री की खोज है और महर्षि दयानन्दजी ने स्वय अपने विषयमे कलकत्ता और दूसरे स्थानोपरलिखवाया हैजिसकेकुछ तत्कालीन अग्रेजी पत्रिका 'थियो-फिस्ट' मे प्रकाशित भी हुये। इस पुस्तकपर विद्वानो की विभिन्न प्रक्रियाए हुई। कुछ व्यक्तियो ने इसे अप्रमाणिक और जाली बताया बहुतो ने कुछ ग्राह्य और कुछ अग्राह्य कहा। और यह आर्य जगत तथा आर्य विद्वानों मे चर्चा का विषय बन गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती देश के सामने नवीन प्रतिभा के साथ क्रान्तिदर्शी रूप मे आये। विद्वता-शक्ति-प्रतिभा और अनुभव तो उनमें स्वय था ही विरजानन्द जी तो निमित्त मात्र थे। अत स्वामी दयानन्द जी ने 'क्रान्ति के वर्षों मे' अपने को तटस्थ न रखकर किसी गुफा मे साधना मे लीन नहीं रहे, अपितु-क्रान्ति को सक्रिय रूप देने अग्रेजों को देश से निकालने के महायज्ञ में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते रहे थे। ऐसा निश्चय है।

विक्रम सम्वत् १९१२ से लेकर १९१८ तक अर्थात् ईस्वी सन् १८५६ से १८६२ तक ६ वर्ष स्वामी दयानन्द जी के जीवन के स्वर्णिम क्षण थे, जब पराधीनता के बोझ को उखाड़ फेंकने में व्यस्त हुये, जिसमें वह सन्यासी के रूप मे व्याख्यान दाता के रूप में गुप्त एव छद्म वेषो के रूप में ही देश के विभिन्न भागों में विचरण करते रहे, तथा नाना राव पेशवा तात्याटोपे और रानी लक्ष्मी बाई के साहस को बढ़ाते रहे। इसके साथ ही इसी अवधि में स्वामी जी उत्तराखण्ड-काश्मीर-तिब्बत और मान सरोवर से लेकर पुरी तथा कन्या कुमारी से लेकर उत्तर-भारत की महान यात्रायें करते रहे। भारत भूमि के कणों का स्पर्श करते हुये भारत वासियों एव उनकी अशिक्षा अज्ञानता निर्धनता की सत्यानुभूति को प्राप्त करते रहे। प्रथम क्रान्ति कुछ अनुभव-हीनता कुछ देश द्रोहियों और कुछ नेतृत्व विहीनता के कारण असफल हुई। स्वामी जी ने सब कुछ देखा अनुभव किया तथा सैनिक सशस्त्र क्रान्ति की विफलता के बाद वह नवीन सकल्प के साथ बौद्धिक क्रान्ति कराने की दशा में आगे बढ़े इस बौद्धिक क्रान्ति का प्रतीक आर्य समाज है और दिशा निदेशक ग्रन्थ है सत्यार्थ प्रकाश। स्वामी जी ने बौद्धिक क्रान्ति को जन्म दिया उसका प्रभाव व्यापक रहा–क्रान्ति-कारियों को बल मिला और प्रथम क्रान्ति की असफलता के ठीक नब्बे वर्षों के बाद अग्रेज भारत से चले गये।

स्वामी दयानन्द जी ने देश मे बौद्धिक जीवन स्तर को ऊचा उठाया। स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा गांधी चन्द्रशेखर आजाद और राम प्रसाद बिसमिल उसके उदाहरण हैं। देश स्वतन्त्र हुआ, परन्तु हम स्वतन्त्रता के बाद अधिक प्रोन्नति क्यो नहीं कर सके इसका उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद हम 'दयानन्द दर्शन' से हटकर अपना आदर्श और प्रारूप 'योरूप तथा अग्रेज' विचार धारा को लेकर चले जिसमे हिन्दू-मुस्लिम में भेद नीति की व्यापकता की ओर शिक्षा प्रणाली मे मैकाले से भी आगे बढ़ गये। हमारा अब बौद्धिक माप दण्ड कार्य-कलापों की परख यूरोप और अग्रेजी माप दण्ड के आधार पर होने लगा यही हमारी विफलता का कारण है प्रत्येक दिशा मे हम अवनति की ओर है और जब तक मौलिक आर्य दर्शन हमारा लक्ष्य नहीं होगा हमारी स्थिति सुधरेगी नहीं।

प्रस्तुत विषय है कि क्रान्ति दर्शी ऋषि स्वतन्त्रता सग्राम के ६ वर्ष की अवधि मे कहां कैसे और कब गये तथा रहे इस पर जो मतभेद है उसका निराकरण तर्क पूर्ण रीति से प्रस्तुत किया है विद्वान् शोध कर्ता मनीषी श्री आदित्यपाल सिंह जी आर्य ने अपने शोध पत्र 'ऋषि दयानन्द के हरद्वार से मथुरा तक के ५॥ वर्ष' शीर्षक निबन्ध मे श्री आदित्य पाल सिंह जी ने इस अवधि को सम्वत् विक्रम ज्येष्ठ १९१२ से लेकर कार्तिक सम्वत १९१७ के मध्य अर्थात् जून १८५५ से लेकर नवम्बर १८६० तक दर्शाया है। इस शोध निबन्ध से बहुत सी भ्रान्तियो का निवारण हो जाता है–यात्रा विवरण और तिथियो का तारतम्य भी तर्क सम्मत् है–तथा बहुत सी घटनाओ की जान-कारी भी होती है–जैसे उन दिनो मे श्वेत वस्त्रो मे श्वेताश्वो पर सवार दो साधु देख पड़ते थे। एक बलिष्ट और गोल मुखाकृति वाला वह थे स्वामी दयानन्द जी तथा दूसरे थे ब्रह्मचारी कृपाराम जी। नाना रावपेशवा ने स्वामी जी से सन्यास की दीक्षा ली और सौराष्ट्र मे आकर एक मठी के महा मोर्वी मे रहने लगे। इसी प्रकार की और बहुत सी घटनायें है।

प्रथम क्रान्ति की असफलता के बाद अग्रेजी शासन द्वारा नाना राव को पकड़ने वाले को दस हजार का इनाम घोषित किया गया था, अत क्रान्ति के योद्धा सतर्क और छिप [शेष पृष्ठ १२ पर]

पश्य देवस्य काव्यम्

[परम देव को दिव्य काव्य में देखो]

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥ अथर्व १०।८।३२

मनुष्य (अन्ति सन्तं न जहाति) यद्यपि बहुत निकट विद्यमान (परमेश्वर) से बिल्कुल नहीं होता, किन्तु (अन्ति सन्तं न पश्यति) बहुत निकट होते हुए भी उसका साक्षात्कार नहीं कर सकता। हे मनुष्य ! तू (देवस्य काव्यं पश्य) परमात्मा की दिव्य रचना को देख जो स्वयं (न ममार न जीर्यति) कभी जीर्ण नहीं होती, कभी मरती नहीं।

परम प्रभु इतने सूक्ष्म और रहस्यमय ढंग से प्रत्येक मानव में उसकी नस-नस में बसे हुए हैं कि उनकी अनुभूति का आभास होते हुए भी न तो बाह्य चक्षुओं से उनके दर्शन कर सकते हैं, न उनमें व्योम व्याप्त स्वरों का श्रवण कर सकते हैं। हमारी सूक्ष्मेन्द्रियां भी उनको नहीं पा सकती।

प्रभु की यह अति निकटता ही उनके दर्शन में बाधा बन गई। आंखें अपने को नही देख पाती, कान अपने स्वर को सच्चे रूप में सुन नहीं पाते और ज्ञान केन्द्र मस्तिष्क अपनी परख स्वयं नही कर सकता। इसलिए अपने प्रतिबिम्ब में ही हम अपने को देखते हैं और प्रतिध्वनित स्वर में ही अपने स्वर की वास्तविकता को पहचानने का यत्न करते हैं।

हमारे कृतित्व में ही हमारा व्यक्तित्व अभिव्यक्ति पाता है। अपनी कला में ही कलाकार की आत्मा चित्रित होती है। प्रभु की काव्यमय अभिव्यक्ति भी उसके मूर्त संसार में होती है। हमें इसके काव्य सौरभ को देखकर उसकी दिव्यता का आभास मिलता है। वेद वाणी में प्रभु स्वयं आदेश देते हैं—

'पश्य देवस्य काव्यम्' 'परम देव को दिव्य काव्य में देखो।' विश्व की भव्यता और सुन्दरता उसमें समाये मन मोहक प्रभु के कारण हो है। वही आदित्य में ज्योति है, फूल में सुगन्ध पानी में शीतलता है। उषा काल की स्वर्णिम आभा में वही है और इसकी सांझ के सांवले रूप में भी उसी की सुषमा है।

तर्क वितर्क के अवकाश से ऊपर उठकर जो प्रभु का अनन्त सम्मोहक रूप में खोजते हैं वही उसे पाते हैं। प्रभु की माया में ही सत्य की अनुभूति करने वाले उसे पा सकते हैं। उसकी रहस्यमयता का कोई पार नहीं पा सकता। अल्पज्ञ मनुष्य की बौद्धिक प्रतिभा से प्रभु की महत्ता को नहीं मापा जा सकता। बुद्धि के दर्पण में उसकी छवि नहीं उतर सकती।

किन्तु हृदय में निवास करने वाली आत्म चेतना के स्वर विश्वात्मा के स्वरों में विलीन हो सकते हैं। अन्तर्यामी आत्मा को निर्मल बनाकर उसमें परमात्मा की ज्योति का बिम्ब उतारना संभव है। अजर अमर प्रकृति पर खिंचा हुआ ईश्वर का वह प्रतिबिम्ब भी अजर अमर है।

—सत्यकाम विद्यालंकार
(वैदिक वन्दन से)

—आर्य समाज निरपुड़ा (मेरठ) में एक ईसाई युवक को शुद्ध करके उसका नाम सतीश कुमार रक्खा गया। —वन कुमार

—आर्य समाज बसोरा के श्री छोटे लाल आर्य रेडियो सिंगर का देहान्त हो गया। आर्य समाज ने शोक प्रकट किया। मंत्री

अध्यात्म चिन्तन

[आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार]

जीवन यज्ञ रूप : तीन भाग : सृष्टि यज्ञ : दो अंग

भारत की पवित्र भूमिका यह सौभाग्य है कि उसके प्रत्येक युग ऐसे वैदिक तपःपूत ब्रह्मवेत्ता ऋषि मुनियों का प्रादुर्भाव होता रहा जिन्होंने अपने अगाध आध्यात्मिक ज्ञान से मानव मात्र का शाश्वत कल्याण किया है। इनमें से अन्यतम उल्लेखनीय याज्ञवल्क्य ऋषि हैं। परम्परागत इतिहास के अनुसार याज्ञवल्क्य मिथिला प्रदेश निवासी और वैशम्पायन ऋषि के शिष्य थे। उपनिषदों के अध्ययन से प्रतीत होता कि ऋषियों के यज्ञ को केवल कर्मकांड तक सीमित न कर आध्यात्मिक ज्ञान के उच्च शिखर तक प्रस्थापित कर दिया था। इस जीवन यज्ञ को तीन भागों में बांटते हुए—पहला भाग आयु के २४ वर्ष तक 'वसु' प्रातः सवन (२) दूसरा भाग ३६ वर्ष तक 'रुद्र' नाम 'मध्यदिन सवन' और (३) तीसरा भाग ४८ वर्ष की आयु तक 'आदित्य' 'विश्वदेव' तृतीय सवन—इस प्रकार तीनों सवनों की कुल आयु १०८ वर्ष प्राप्त करता हुआ द्यौ-लोक वत् तेजोमय हो जाता है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द के शब्दों में 'अखंडित ब्रह्मचर्य सेवन करके पूर्ण अर्थात्, चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावे, वैसे तुम भी बढ़ाओ।' प्रसंगवश भारतीय धार्मिक परम्परा में १०८ की संख्या का विशेष महत्व है जो कि इन तीनों उपर्युक्त सवनों की संख्या का योग है। इसी १०८ संख्या से प्रायः योगी जन व महात्माओं को आभूषित किया जाता।

छान्दोग्य उपनिषद् ४।१६ में इस समूची विशाल सृष्टि के यज्ञमय अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है 'सृष्टि में जो कुछ भी हो रहा है वह 'यज्ञ' ही है जो गति द्वारा प्रकट हो रहा है। गति ही संसार में पवित्रता का प्रेरक है, यही 'यज्ञ' है। इसके प्रायश्चीकरण के दो मार्ग हैं—'वाणी और मन'। यज्ञ में ब्रह्मा वाणी का प्रयोग नहीं करता, मन द्वारा ही यज्ञ के मार्ग का संस्कार व परिमार्जन करता है। होता, अध्वर्यु, उद्गाता तीनों मन का प्रयोग न कर 'वाणी द्वारा ही 'ऋचा पाठ करते हैं। फलतः इस सृष्टि यज्ञ अर्थात् गति रूप यज्ञ का कुछ व्यक्ति 'मन' के मार्ग द्वारा और कुछ 'वाणी' मार्ग द्वारा अनुष्ठान करते हैं।

यज्ञ के इस स्वरूप को कर्मकांड तक की सीमाओं से मुक्त कर आध्यात्म ज्ञान द्वारा ब्रह्म साक्षात् कार के गगन स्पर्शी सार तक साधनवर्णन सहित पहुंचाने वाले जो ऋषि हुए, उनमें अग्रतम या अवश्य हैं जिनके नाम का अर्थ ही यह है वह व्यक्ति जो शरीर मन आत्मा—सर्वतोभावेन विश्व यज्ञ अर्पित है' बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य। उपनिषद् में याज्ञवल्क्य जनक राजा संवाद के रूप में कई प्रवचन इसी तथ्य के द्योतक हैं। गीताके पांच प्रकार के यज्ञः सर्वोत्तम 'ज्ञान' इसी तथ्य के द्योतक हैं।

उपनिषदों के इन्हीं सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में श्री कृष्ण ने गीता के अध्याय ४ के २८ से ३३ तक के श्लोकों में 'द्रव्य यज्ञ' 'तपोयज्ञ' 'योगयज्ञ' 'ध्यान यज्ञ' और 'ज्ञान यज्ञ'—इन पांच प्रकार के यज्ञों के के साथ प्राण अपान निरोध, स्वल्प और नियत आहार का अवलम्बन इत्यादि यज्ञ के विविध अंग बताते हुए ३३ वें श्लोक में स्पष्ट घोषणा की है कि सब प्रकार के द्रव्यमय यज्ञों में श्रेष्ठ ज्ञानयज्ञ है।

(क्रमशः)

योग प्राकृतिक-चिकित्सा शिविर

२३ जून से ६ जुलाई १९८३ तक

द्वारा :—महात्मा जगदीश्वरानन्द जी, सत्यचिकित्सक संस्थापक एवं संचालक जीवन निर्माण केन्द्र पांचली मेरठ

स्थान :—जनता इन्टर कालेज पलड़ी बोगाना क्षेत्र मेरठ (उ० प्र०)

बन्धुओं—

आर्य समाज पलड़ी ने ऐसे निराश रोगियों के लिये जो दवा खाते खाते अधिक बीमार हो गये हैं या रोग असाध्य समझे जाते हैं, उनके उपचार के लिए आरोग्यदान शिविर का आयोजन किया है। इस शिविर में उपचार और आवास की व्यवस्था निःशुल्क होगी।

यहां यौगिक क्रियाओं, धूप, मिट्टी, हवा पानी के माध्यम से दमा गठिया, लकवा, गैस्टिक, अल्सर बवासीर, डायबिटीज, पथरी, स्याटिका, धातु विकार, कब्ज, गैस ट्रबल, चर्मरोग, आंखों के रोग आदि का उपचार किया जाएगा।

आप सभी से निवेदन है कि आप इस स्वर्णिम अवसर को अपने हाथों से न जाने दें। स्त्री पुरुषों की आवास व्यवस्था अलग-अलग होगी।

२० जून तक अपना रजि० आर्य समाज पलड़ी में अवश्य करवा लें।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

६०, राजपुर रोड, देहरादून।

कन्यागुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। १ म० कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गति विधि संस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास। तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ।

निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा। मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ठ हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

१ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) भेजकर नियमावली मंगा सकते है।

—दमयन्ती कपूर
प्रिन्सिपल

महाराष्ट्र को छोटा पाकिस्तान बनने से रोका जाय।

दिल्ली १० जून।

महाराष्ट्र राज्य के अनेक क्षेत्रों का दौरा करने के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लालारामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि महाराष्ट्र में वनवासी क्षेत्रों में मुसलमान लोग १५-१५ की टुकड़ियों में घर घर जाकर वनवासी, गिरिजनों, भील, गोंडू तथा कारकू जाति के निवासियों को मुसलमान बना रहे हैं। इस समय आलेबाड़ी, और चिचोरी में २-२ लाख रुपए की लागत से मस्जिदों का निर्माण भी हो चुका है। सतपुड़ा पर्वतमाला पर इस्लामीकरण का कार्य जोरों पर चलाया जा रहा है।

श्री शालवाले ने गृहमंत्री भारत सरकार और मुख्यमंत्री महाराष्ट्र सरकार को पत्र लिखकर चेतावनी दी है कि यदि महाराष्ट्र के मुसलमानों के धर्मान्तरण की इस लहर को न रोका गया तो शीघ्र ही महाराष्ट्र मुस्लिम बाहुल प्रान्त बन जायगा और अकालियों के खालिस्तान की मांग की तरह महाराष्ट्र में छोटे पाकिस्तान की मांग उठ खड़ी होगी।

उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से मांग की कि आदिवासी, भील, जनजातियों एवं अनुसूचित वर्ग के लोगों को जो सुविधाएं प्राप्त हैं, इन लोगों के इस्लाम धर्म ग्रहण करने के उपरान्त यह सुविधाएं तुरन्त बन्द कर देनी चाहिए। उन्होंने इस बात पर आश्चर्य और खेद प्रकट किया कि महाराष्ट्र में इन लोगों को धर्म परिवर्तन करने के पश्चात् भी सरकार की सुविधाओं का लोभ मिल रहा है।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा

श्री हीरालाल व्रतपाल स्वास्थ्य-यज्ञ

अल्मोड़ा। आर्य समाज अल्मोड़ा के प्रधान श्री हीरालाल व्रतपाल के पेट का आपरेशन ३१ मार्च १९८३ को अहमदाबाद में हुआ था। आर्य समाज मन्दिर ताड़ीखेत में 'श्री हीरालाल व्रतपाल-स्वास्थ्य-यज्ञ' महात्मा भक्तमुनि की अध्यक्षता में ५ मई १९८३ को पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य में हुआ। डा० कच्चाहारी ने परमात्मा से स्वास्थ्य हेतु प्रार्थना की।

त्रिलोकसिंह रावत
मन्त्री
आर्य समाज ताड़ीखेत
जिला-अल्मोड़ा

अर्थानिका

— धर्म का पालन करते समय प्रारम्भ में कुछ दुःख भी होता है। र वह वास्तव में दुःख नहीं कहा जा सकता।

— अधर्म पर चलने वालों का अन्त दुःखद होता है। वे अपनी ानसिक मलिनता के कारण किसी से न प्रेम कर सकते हैं, और न सी स्थिति से सन्तुष्ट ही होते हैं। किन्तु धर्म पर चलने वाले शाश्वत ख पाते हैं।

— जो शुभ कर्मों को करते हैं, वे श्रेष्ठ जन्म को प्राप्त होते हैं। ो अधर्म का आचरण करते हैं वे नीच जन्म को प्राप्त होते हैं।

ऋ०/२/७३

— जगदीश्वर जी के अनुष्ठित कर्मों के अनुसार सुख-दुःख और कृष्ट, मध्यम तथा श्रेष्ठ जन्मों को देता है। ऋ० २/३८/८

— वे ही विद्वान् जन श्रेष्ठ हैं जो सनातन वेद प्रतिपादित धर्म ा अनुष्ठान करते हैं। उन्हीं विद्वानों का जन्म सफल होता है जो पूर्ण द्या को पाकर, धर्मात्मा होकर प्रीति के साथ सबको अच्छी शिक्षा ाते हैं। ऋ० ७/४२/२

— जिनके पिछले काम पुण्यरूप हैं वे ही पवित्र जन्म वाले हैं। नके वर्तमान में धर्मयुक्त आचरण है वे पवित्र जन्मा होते हैं।

ऋ० ७,५६/१२

— पूर्व जन्म के पाप-पुण्यों के बिना उत्तम, मध्यम और नीच शरीर था बुद्धि आदि पदार्थ कभी नहीं मिल सकते। ऋ० भू० पुनर्जन्म

— जीव शरीर में परिछिन्न है जो वह विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न ुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, जाना, आना, कभी नहीं हो सकता। इसलिए जीव का स्वरूप अत्यन्त अल्प अर्थात सूक्ष्म है और परमेश्वर तीव सूक्ष्मात्मसूक्ष्मतर अनन्त सर्वव्यापक स्वरूप है, इसलिए जीव ौर परमेश्वर का व्याप्य—व्यापक सम्बन्ध है।

स० प्र० सप्तम समु०

— जीव और ईश्वर का एक मानना केवल जंगली मनुष्यों की कथा है, ऋषि, मुनि और विद्वानों की यह कथा नहीं है।

वेदान्ति ध्वान्त०

— जो जीव ब्रह्म हो तो जैसे ब्रह्म ने यह असंख्यात सृष्टि की है ैसे एक मक्खी व मच्छर भी जीव क्यों नहीं कर सकता। इससे जगत की मिथ्या और जीव ब्रह्म की एकता मानना ही मिथ्या है।

वेदान्ति ध्वान्त०

— जीव और ब्रह्म को एक मानने से परमार्थ सब नष्ट हो जाता है। क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा का पालन स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने की प्रीति बिल्कुल छूटने से केवल मिथ्याभिमान, स्वार्थ तत्परता अन्याय का करना, पाप में प्रवृत्ति इन्द्रियों से विषयों के भोगों में फंसने से अत्यन्त पामरता और ललिताधिक दोषयुक्त होके अपने मनुष्य जन्म धारण करने के जो कर्त्तव्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों फल नहीं होने से मूर्ति पूजन आदि व्यवहारों के करने से उस जीव का जन्म निष्फल हो जाता है। वेदान्ति ध्वान्त

— नारायण प्रिय

वनिता विवेक

वीरांगना रानी दुर्गावती

अब हमें उन राजरानियों की याद आती है, जिनकी पोशाक खून से भीग गयी है, जिनके दाहिने हाथ में तलवार शत्रुओं का खून पीने के लिए लपलपा रही है। जो घोड़े पर सवार होकर रण में दानव दलिनी दुर्गा की तरह दानवों के दमन में व्यस्त है, तो हमारा सिर उनके पुण्यपाद पद्मों पर आप से आप नत हो जाता है। रानी दुर्गावती इसी तरह की एक वीर हृदया नारी थी, जिसने गढ़मण्डल के विकट रणों में यवनों के दाँत रंग दिये। रानी दुर्गावती का चरित्र विलक्षण है, उसने अपनी वीरता, शक्ति और रणकुशलता से अपने लिये इतिहास में वह स्थान बना लिया है, जो बड़े-बड़े वीरों को कठिन तपस्या करने पर भी नहीं मिलता है।

रानी दुर्गावती महोबा के राजा की कन्या और गढ़मण्डल राज्य के अधिपति दलपतशाह की सहधर्मिणी थी। दक्षिण भारत में गढ़मण्डल सोलहवीं सदी में एक छोटा सा राज्य था, लेकिन साथ ही साथ अपने अपार वैभव और सम्पत्ति के लिये वह दूर-दूर के राज्यों में महती ख्याति प्राप्त कर चुका था। थोड़े ही दिनों तक सुहाग-सुख भोगने के बाद दुर्गावती पर वैधव्य का वज्र टूट पड़ा, परन्तु उसने धैर्य तथा साहस से काम लिया। अपने प्यारे पुत्र नारायण की देख रेख का भार उसने अपने कंधे पर लिया और बड़ी नीतिज्ञता और कुशलता से राज्य का प्रबन्ध किया। उसके खजाने की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसने पन्द्रह साल तक निर्विघ्न राज्य किया। गढ़मण्डल का ध्वज आसमान का चुम्बन करता हुआ यवनों को चुनौती दे रहा था कि जब तक दुर्गावती की भुजाओं में बल है, उसके हाथ में तलवार है, गढ़मण्डल किसी की भी अधीनता न स्वीकार करेगा। रानी की सेना अत्यन्त सुसंगठित थी, उसमें भील अधिक संख्या में थे।

उस समय भारत का सम्राट अकबर था। इसे अब तक भारत की सार्वभौम सत्ता प्राप्त नहीं हुई थी। हुमायूं को मरे केवल कुछ ही साल बीते थे कि अकबर को अपने खोये साम्राज्य को फिर जीतने की सनक सवार हुई। राजपूत रियासतों को अपने पक्ष में लाने के लिए वह तरह-तरह की योजनायें बना रहा था। राजपूताने की बहुत सी रियासतें उसके कपट जाल में पड़ चुकी थीं। उनकी स्वाधीनता का अपहरण हो चुका था। अकबर सुदूर प्रान्तों पर विजय करने के लिए सेनाएं तैयार कर रहा था, लेकिन प्रश्न यह था कि रुपया कहाँ से आये। इसके लिए गढ़मण्डल राज्य ही लक्ष्य बनाया गया। उसके आदेश से सेनापति आसफ खाँ एक बहुत बड़ी सेना लेकर चल पड़ा। उस समय गढ़मण्डल अनाथ था। रानी विधवा हो चुकी थी, फिर भी वीर रानी दुर्गावती ने आश्चर्यजनक पराक्रम दिखला कर दुश्मनों की शान मिट्टी मे मिला दी। यद्यपि वह हार गयी, फिर भी यह उसकी जीत ही थी। नारायण भी अठारह साल का हो चुका था। माँ और बेटे ने जमकर युद्ध किया। रानी मुगलों के आक्रमण से तनिक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

बाल-विनोद

भजन

भोर भई पक्षीगण बोले,
उठो जन प्रभु गुन गाओरे।
लख प्रभात प्रकृति की शोभा,
बार-बार हर्षाओ रे॥
प्रभु की दया सुमिर निज मन में,
सरल स्वभाव उपजाओ रे।
हो कृतज्ञ प्रेम में भिगके,
नैनन नीर समाओ रे॥
ब्रह्म स्वरूप सागर में मन को,
बारम्बार डुबाओ रे।
निर्मल शीतल लहरें ले ले,
आत्म ताप बुझाओ रे॥

मेरी अभिलाषा

मुझे धर्म देव ऐसे हे पिता, सदा इस तरह का प्यार दे।
कि न मोड़ू मुंह कभी उससे मैं, चाहे सिर भी कोई उतार दे॥

वह कलेजा राम को दिया, वह जिगर जो बुद्ध को अताकिया।
वह फराख दिल दयानन्द का, घड़ी भर मुझे भी उधार दे॥

न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूं मैं बदी की जगह भला।
मेरे लब से निकले सदा दुआ, कोई कष्ट चाहे हजार दे॥

न हो मुझको ख्वाहिशे मर्तबा, न हो मालो जर की हवस मुझे।
मेरी उम्र खिदमते खल्क में, मेरे ईश्वर तू गुजार दे॥

मुझे प्राणी मात्र के वास्ते, करो सोजे दिल व अता पिता।
जलूं उनके मय में मैं इस तरह, न खाक तक भी गुबार दे॥

मेरी ऐसी जिन्दगी हो बसर, कि हूं सुर्खरू तेरे सामने।
न कहीं मुझे मेरी आत्मा ही, यह शर्म लैलो निहार दे॥

न किसी का मर्तबा देखकर, जले दिल में मेरे हसद कहीं।
जहां पर रहूं रहूं मस्त मैं, मुझे ऐसा सबरो करार दे॥

लगे जख्म दिल में अगर किसी के, तो मेरे दिल में तड़प उठे।
मुझे ऐसा दे दिल दर्द रस, मुझे ऐसा सीना फिगार दे॥

हैं 'प्रेम' की यही कामना, यही एक उसकी आरजू।
कि यह चन्दरोजा हयात को तेरी याद में ही गुजार दे।

"वीर! तुम्हें शत बार नमन"

क्रान्ति ज्योति नूतन बिखराती,
स्वतन्त्रता की अलख जगाती,
'स्वातन्त्र्य वीर सावरकर' तुमने!
अंग्रेजों की नींद उड़ाती।

शौर्य-शक्ति पर अहे! तुम्हारी
मुग्ध हुआ था कोटिक अभिमन।
वीर! तुम्हें शत बार नमन्॥

कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी,
जन-जन में उत्साह भरेगी।
लेकर नव-आलोक धरा पर,
स्वतन्त्रता की ज्योति जगेगी।

वसुन्धरा का जाग्रत होगा
तेरी ललकारों से कन-कन।
वीर! तुम्हें शत बार नमन्॥

भारत मां के तुम सपूत थे,
क्रान्ति यज्ञ के अग्रदूत थे,
त्याग तथा बलिदान समन्वित
पावनता से तपः पूत थे।

मातृ भूमि को आन्दोलित कर
भरा तुम्हीं ने नव स्पन्दन।
वीर! तुम्हें शत बार नमन॥

अन्डमन की भू से पूछो,
भारत के कण-कण से पूछो,
कैसे तैरा महा सिन्धु में—
भूमिमध्य सागर से पूछो,

कौन तपस्वी, महाबली था?
साहस की प्रतिमूर्त्ति अप्रमन।
वीर! तुम्हें शत बार नमन्॥

—राधेश्याम 'आर्य'
एडवोकेट

आर्य समाज किदवई नगर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज किदवई नगर का वार्षिकोत्सव २७ से २९ मई तक सम्पन्न हुआ।

उपदेशक श्री हरवंशलाल जी मेहता और पं० लालता प्रसाद जी के भाषण हुये तथा श्री अलेश्वर सिंह और खेमचन्द्र के मधुर भजन हुए।

समापन भाषण आर्यमित्र सम्पादक आचार्य रमेशचन्द्र जी एम०ए० का हुआ जिसमें आर्य समाज के कार्य कलापों का विस्तृत वर्णन रहा और क्षेत्र की जनता से सहयोग की अपील की गयी। —सम्वादाता

वीरांगना रानी दुर्गावती

[पृष्ठ ५ का शेष]

भी विचलित न हुई। उसने बहादुर सैनिकों से कहा 'देश पर मर मिटने वाले वीरो! तैयार हो जाओ। आज तुम्हारी जन्म-भूमि विपत्ति की सूचना पाकर क्रन्दन कर रही है। उसकी स्वाधीनता की रक्षा करना तुम्हारा परम धर्म है। तुम दुश्मनों को दिखला दो कि जब तक एक भी राजपूत जीता रहेगा, तब गढ़ मण्डल पर मुगलों का शासन नहीं हो सकेगा। मैं जीते जी गढ़ मण्डल में शत्रुओं को पैर न रखने दूंगी। वीरो! चलो मेरे साथ गढ़ मण्डल की कीर्ति अमर करने! शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो अथवा रणक्षेत्र में प्राणों की आहुति देकर अक्षय यश और दुर्लभ स्वर्ग सुख प्राप्त करो।'

राजपूत सैनिकों की नसों में बिजली दौड़ गयी। आंखों से चिनगारियाँ छूटने लगीं। रानी ने कहा-'माता, यवनों की शक्ति बर्बरता की सीमा पार कर चुकी है। आततायीपन नंगा नाच आरम्भ हो गया है। बाबर के वंशज ने विधवा की रियासत पर हमला बोल दिया है। परन्तु जिस समय तुम लोग रण में कूद पड़ोगे, एक-एक हिन्दू वीर सैकड़ों यवनों को मार भगावेगा। यदि तुम सच्चे वीर हो और निस्सन्देह तुम सच्चे वीर हो ही, तो तुम अपनी इस वीर माता की सहायता करो।'

रानी के 'जयनाद' से आकाश गूंज उठा। सैनिक मुगल-सेना पर टूट पड़े, गाजर मूली की तरह काटते हुये उन्होंने दो बार मुगलों को हराया। आसफखां ने कूटनीति से काम लिया। गढ़मण्डल के ही एक घातकी सैनिक को काफी घूस देकर अपना काम बना लिया।

दुर्गावती साक्षात रणरंगमयी भवानी दुर्गा की तरह लड़ाई के मैदान में शत्रु सेना का विनाश करने लगी। उसके तेज बाण दुश्मनों को मैदान में मटियामेट करने लगे। परन्तु मुट्ठीभर राजपूत अधिक देर तक विशाल मुगल सेना के सामने न ठहर सकी। रानी घायल हुई, उसकी बायीं आँख में आकर अचानक तीर लगा। निकालने का प्रयत्न करने पर भी वह नहीं निकला। फिर भी वह वीराङ्गना लड़ती रही। थोड़ी ही देर में सारी राजपूत सेना में हाहाकार मच गया। वीर पुत्र नारायण, रानी के नयनों का तारा, जो रानी के हाथी के बगल में घोड़े पर सवार होकर मुगलों से लोहा ले रहा था, दुश्मन के एक बाण से चल बसा। साध्वी रानी पुत्र-वियोग में कर्तव्य पथ से विचलित न हुई। उसने लड़ाई जारी रक्खी। पुत्र का शव उसकी आंखों के सामने से दूर हटा लिया गया। परन्तु सहन शक्ति की भी सीमा होती है, रानी बुरी तरह घायल हो गयी। आँखों तले अंधेरा छा गया। जब विजय की कोई आशा नहीं रह गयी तब देखते-देखते ही उस वीराङ्गना ने कमर से कटार निकाल कर अपनी छाती में झोंकली। शत्रु तमाशा देखते रहे कितना महान् पराक्रम और सतीत्व का बल उसे प्राप्त था, इसका निर्णय इतिहासकार भी नहीं कर सके। रानी रणगङ्गा में अवगाहन करके पवित्र हो गयी।

गढ़मण्डल पर मुगलों का आधिपत्य हो गया। किले का खजाना रत्नों, मोतियों और हीरों से भर गया। लेकिन दुर्गावती रत्न पर यवनों का अधिकार न हो सका।

—रा० भी०

निर्भीक निर्णय

लखनऊ नगर के जुडीशियल मैजिस्ट्रेट श्री एसी० पी० शुक्ल ने एक निर्भीक निर्णय दिया है कि बकरीद के अवसर पर भैंसे या किसी पशु की हत्या कुरान शरीफ के विरुद्ध है।

लखनऊ जनपद में सहलामऊ ग्राम में आज से चार वर्ष पूर्व वहाँ मुसलमानों ने बकरीद के अवसर पर सार्वजनिक रूप से भैंसे के बध की योजना बनाई, वहाँ के ग्राम प्रधान तथा कुछ जागरूक व्यक्तियों ने जुडी शियल मैजिस्ट्रेट के यहां इसके विरोध में अभियोग प्रस्तुत किया मुकदमा चार वर्षों तक चलता रहा। कासगंज के प्रसिद्ध आर्य विचारक श्रीराम आर्य वादियों की ओर से प्रस्तुत हुये और उन्होंने कुरान शरीफ की आयतों से सिद्ध किया कि कुरान में कहीं पर भी पशु बध की आज्ञा नहीं है। प्रतिवादी कोई सार्थक उत्तर न दे सके। अतः विद्वान् न्याय कर्ता ने स्पष्ट लिखा कि नैतिकता पवित्रता और दूसरे की भावना को ठेस पहुंचाते हुये कोई भी धार्मिक कार्य नहीं किया जा सकता है। भैंसे के बध से गन्दगी फैलेगी। रक्त बहेगा और ग्राम निवासियों की भावना को चोट लगेगी। अतः धर्म के नाम पर पशुबध अपराध है।

विद्वान न्यायकर्ता की निर्भीकता की सराहना करना उचित है और उनके निर्णय ने यह भी साबित कर दिया कि कुरान पाक का नाम लेकर अपना मौलिक अधिकार मानकर पशु बध करना भी अवैध है। अभियोग पैरवी करने वाले श्री रेवतीरमण तथा वेद प्रकाश अधिवक्ता (वकील) भी धन्यवाद के पात्र हैं।—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

समीक्षा

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्य 'शाला'—लेख एवं शोध पत्रों का संकलन सम्पादक श्री जयदेव वेदालंकार-प्रकाशक-गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (हरिद्वार) मूल्य २० रुपया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में गत वर्ष ४ से ८ सितम्बर १९८२ के मध्य एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। जिसका उद्घाटन विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा डा० माधुरी शाह के लिखित भाषण को पढ़ कर हुआ और अध्यक्षीय भाषण डा० सत्य व्रत सिद्धान्तालंकार का हुआ।

इस आयोजन पर उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्रियों एवं मनीषियों के भाषण हुए और निबन्ध प्रस्तुत किये गये। वेद वैदिकीय शिक्षा योग शिक्षा एवं श्रम। दयानन्द का शिक्षा दर्शन गुरुकुलीय शिक्षा आदि विषयों पर गम्भीरता पूर्वक विचार हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में इस गोष्ठी के अवसर पर दिये हुए भाषण प्रस्तुत निबन्धों एवं शोध पत्रों का संकलन है।

यह संकलन प्रत्येक महाविद्यालय और आर्य समाज के पुस्तकालयों में होना चाहिये। विचार शील व्यक्ति भी अध्ययन करें। अतः संकलन का विद्वद् जगत् में आदर अपेक्षित है।

विषय प्रस्तुतीकरण मुद्रण कागज आदि आकर्षक एवं सराहनीय है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

समाज या राष्ट्र में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो ठोस एवं जनहित का काम कम करते है, परन्तु न जाने किन उपायों से उनका नाम, उनका यश, पद और प्रतिष्ठा अधिक मिलती है। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जो जितना काम करते हैं, उसी अनुपात मे उन्हें यश, पद, प्रतिष्ठा और धन मिलता है, परन्तु तीसरे प्रकार के वे व्यक्ति भी होते हैं जिन्होंने अपने जीवन में जितना काम, जितनी सेवा और जितना त्याग किया होता है उसके अनुरूप न तो उन्हें यश मिलता है और न धन तथा पद प्राप्त होता है। श्री सुरेश चन्द्र वेदालंकार तीसरी श्रेणी के व्यक्तियों में आते हैं।

मैं जब पढ़ता था तब गुरुकुल के वार्षिकोत्सवों आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों और वार्षिकोत्सवों तथा सम्मेलनों में प्रायः जाता था और वहां मुझे जितना श्री वेदालंकार जी के व्यक्तित्व, उनकी वेदकथा तथा उनके जोशीले भाषणों ने प्रभावित किया उतना अन्य किसी के नहीं। मुझे याद है जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। तब आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने जनता में उत्साह भरा, पाकिस्तान के विभिन्न आक्रमणो के समय उन्होंने जनता में विजय का उल्लास भरा--बाढ़ और सूखे के समय आर्य समाज ने जो जन सेवा का कार्य किया उन में भी श्री वेदालंकार जी ने प्रशंसनीय भाग लिया। वन मन्त्री श्रीअलगूराय शास्त्री को राष्ट्रक्षा कोष के लिये श्री वेदालंकार जी ने अथक परिश्रम करके अतुलधन समर्पित किया।

श्री वेदालंकार जी उ० प्र० और बिहार की आर्य समाजों के उत्सवों पर प्रायः भाषण वेदकथा तथा प्रवचनों के लिये जाते रहते हैं। इनके भाषणों में सुश्रृंखलता और प्रवाह के साथ-साथ जोश भी भरा होता है। उन्होंने अपने लेखों से आर्य समाज की बहुत बड़ी

आर्य समाज के प्रतिभाशाली लेखक

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार

[श्री विश्व प्रकाश वेदालंकार, विश्व भवन, मु० ईशापुर जौनपुर (उ० प्र०]

सेवा की है। उन्होंने आर्यमित्र लखनऊ 'आर्य-मर्यादा ,जालन्धर' सार्वदेशिक दिल्ली 'आर्य-सन्देश' और 'आर्य जगत्' दिल्ली वेद-प्रकाश, सर्व हितकारी और विराट पत्रों में जितने लेख लिखे हैं, उतने आजतक किसी अन्य लेखक ने न लिखे होंगे। इनका 'बुलसी' पर लिखा हुआ प्रहसन बहुत अच्छा था। इन सब विषयों को छोड़कर आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास, एवं उनके प्रचार, प्रसार, एवं उन्नति की अभिलाषा से महर्षि दयानन्द वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति ही उन्होंने अपनी लेखनी का प्रयोग किया।

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार का जन्म देवरिया जिले की सलेमपुर तहसील के हाटा नामक गांव में १७ अक्टूबर १९१७ ई० में हुआ था। इनके पिता स्व० श्री छट्टी प्रसाद एवं माता स्व० श्रीमती मूर्त्तिदेवी थी। माता जी साहसी, आत्म-विश्वासी एवं कर्म-निष्ठ महिला थी। इनके पिता का आर्य समाज के सिद्धान्तों में अटूट विश्वास था। उन्होंने अपने गांव में आर्य समाज की स्थापना की थी तथा वे स्वयं मन्त्री थे। श्रीपूज्यस्वामी त्यागानन्दजी महाराज काबहुत प्रभाव था। उन्हींके आदेश एवं प्रेरणा से अपने एकमात्र पुत्र को ६ वर्ष की अवस्था में गुरुकुल काङ्गड़ी की शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पढ़ने के लिये भेजा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इस गुरुकुल की भी स्थापना की थी और विश्राम तथा स्वास्थ्य लाभ के लिये स्वामी जी प्रायः वहां आया करते थे। वेदालंकार जी ने मुझे बताया कि जब वे प्रथम श्रेणी में पढ़ते थे स्वामी जी महाराज गुरुकुल में पधारे। उन का स्वागत करने के लिये सभी ब्रह्मचारी पंक्तिबद्ध फूल और मालायें लेकर खड़े थे। ऊंचे कद के विद्यार्थी आगे और छोटे कद के पीछे थे। वे सबसे छोटे थे अतः सबसे अन्त में खड़े थे। उन्होंने बताया मेरी नाक बह रही थी और पेंट नीचे खिसक रहा था। जब स्वामी जी मेरे पास आये तो स्वागत के उत्साह की अधिकता से फूल जमीन पर गिर गये। जब मैंने उन्हें जल्दी में जमीन से उठाया तो फूल कम और धूल अधिक आ गई और धूल मेरे फूलों की मैंने स्वामी जी पर वर्षा कर दी। स्वामी जी धूल से भर गये। पर धन्य है पिता तुल्य वह संन्यासी अधिष्ठाता जी के डांटने पर भी शरीर की विशालता के समान विशाल एवं उदार हृदय वाले महात्मा जी ने मुझे गोद में उठा लिया। उस समय उस अमृतमयी गोद का महत्व और आनन्द तो कम अनुभव हुआ पर हां अधिष्ठाता जी के चपतों से बचने का आनन्द तो श्री वेदालंकार जी को मिल ही गया।

श्री वेदालंकार जी ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ८वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद कक्षा ९ व १० की शिक्षा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में प्राप्त की तथा महाविद्यालय के चार वर्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी में बिताये। १९३९ ई० में शिक्षा समाप्त करने के बाद वेदालंकार की उपाधि से विभूषित किये गये स्नातक बनने के बाद उन्होंने गांधी वादी ढंग से मजदूरों का संगठन करने की ट्रेनिंग अहमदाबाद में ली और उसके बाद गोरखपुर के चीनी मिलों के मजदूरों के संगठन की योजना बाबा राघवदास की देखरेख में बनाई गई। पर वह न चली। उसके बाद वेदालंकार जी ने गोरखपुर में हरिजन सेवक संघ के तत्वावधान में गोरखपुर के हरिजनों के उत्थान और उनको आगे बढ़ाने के लिये कुछ समय तक कार्य किया। परन्तु वहां अधिक समय तक नहीं रहे और आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार तथा बंगाल द्वारा संचालित गुरुकुल महा विद्यालय वैद्यनाथ धाम में ७ वर्ष तक आचार्य एवं अध्यापक के रूप में कार्य किया। उसके बाद दो वर्ष तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में तथा १ वर्ष तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक कार्य के बाद गोरखपुर के प्राकृतिक चिकित्सा के मुख्यपत्र 'आरोग्य' मासिक में डेढ़ वर्ष तक सहायक सम्पादक के रूप में कार्य किया और पुनः एम० ए० [हिन्दी]और एल०टी० की परीक्षा उत्तीर्ण करके गोरखपुर के डी० वी० कालेज में ३० वर्ष तक लगातार प्रवक्ता के रूप में अध्यापक कार्य करने के बाद सन् १९७८ ई० में अवकाश प्राप्त किया। उसके बाद से श्री वेदालंकार जी अपना सारा समय आर्य समाज के प्रचार और प्रसार में लगा रहे हैं।

○○

--आर्य समाज हरदोई के मंत्री श्री अनूपकुमार के ताऊ व श्री रामेश्वर दयाल (शुद्धि बाबू) के सगे भाई डा० हर भजन लाल के निधन पर समाज नेगहरा शोक व्यक्त किया है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

अनूप कुमार

मन्त्री

भारत यात्रा क्यों ?

—चन्द्रशेखर

[जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर ने ६ जनवरी, १९८३ को कन्याकुमारी के गांधी-मंडपम से गांधी-समाधि राजघाट [दिल्ली] तक की पदयात्रा प्रारम्भ की। उन्होंने अपनी इस यात्रा को भारत-यात्रा कहा है। अपनी यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व उन्होंने एक वक्तव्य जारी किया था जो नीचे दिया जा रहा है। वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार श्री चन्द्रशेखर २५ जून, १९८३ को राजघाट [दिल्ली] पहुंचेंगे।]

अनेक मित्रों और आलोचकों ने मुझसे पूछा है कि मैंने भारत यात्रा का निर्णय क्यों लिया है? इससे किस उद्देश्य की पूर्ति होगी? क्या यात्रा में समय नष्ट करने से जनता पार्टी, जिसका मैं अध्यक्ष हूं, के काम में रुकावट नहीं आयेगी? क्या मैं भारतीय राजनीति के केन्द्र और संसद से, जिसका मैं सदस्य हूं, अलग नहीं हो जाऊंगा। मैं जन-साधारण के लिये क्या संदेश देना चाहता हूं? मैं किन वैकल्पिक नीतियों और कार्यक्रमों को जनता के सामने रखना चाहता हूं और उन्हें क्या समझाना चाहता चाहता हूं?

ये वास्तविक प्रश्न हैं। एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के नाते मुझे बताना पड़ेगा कि भारत यात्रा क्यों शुरू की गई? कुछ प्रश्नों का जवाब मेरे पास है और कुछ प्रश्नों का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। सम्भव है कि भारत यात्रा पूरी करने के बाद इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में मैं समर्थ हो सकूं।

भारत यात्रा जनता पार्टी के कार्यक्रम के अन्तर्गत शुरू नहीं की गई है। साथ ही यह यात्रा आत्म-शुद्धि के लिए स्वयं कष्ट देने का निर्णय भी नहीं है। इसी प्रकार यह भारत यात्रा आज की राजनीति से पलायन भी नहीं है, चाहे इसे मेरे जैसा व्यक्ति कितना ही पसन्द या अपसन्द करे। यह यात्रा किसी गुस्से में भी नहीं शुरू की गई है। दूसरे लोगों के मुकाबले में किसी प्रकार की तात्कालिक राजनीति से लाभ उठाना भी इसका उद्देश्य नहीं है।

यात्रा का उद्देश्य

इस यात्रा का उद्देश्य भारतीय जनता के उन वर्गों से मिलना, उनके साथ चलना और उनकी बातें सुनना है, जिनके पास समय तो है, किन्तु जिनके पास ऐसे वित्तीय साधन या प्रभाव नहीं हैं कि वे यह बता सकें कि उनके अनुभव क्या है या कि उनकी स्थिति को सुधारने के लिए क्या किया जाय। इस दृष्टि से यह यात्रा शिक्षात्मक है। भारत के राजनीतिक नेता, चाहे वे सत्तारूढ़ हों, या सत्ता से अलग हों, परिस्थितियों और एक ऐसी प्रक्रिया के शिकार हो गये हैं जो उन्हें दिन-प्रतिदिन जनता से दूर करती जा रही हैं। राजनीतिक नेता और सार्वजनिक कार्यकर्ता उन लोगों से अलग होते जा रहे हैं जिनके हितों का प्रतिनिधित्व करने और बढ़ाने की अपेक्षा उनसे की जाती है। इन दोनों में खाई इतनी चौड़ी हो गई है कि राजनीतिक नेता भाषण करना सलाह देना और अनेक प्रकार के बेमाने वादे करना अपना नैतिक अधिकार समझने लगे हैं और इतना ही वह अपना दायित्व समझते हैं। राजनीतिक नेता, चाहे वे किसी भी पार्टी के हो और अधिकांश सार्वजनिक कार्यकर्ता यह समझते हैं कि यदि उन्हें सत्ता में आने का मौका मिले तो जनसाधारण की सभी समस्याओं का हल करने की क्षमता उनमें है और सभी जन-हित के प्रश्नों का जवाब उनके पास तैयार है, बशर्ते कि नेताओं की नीतियों और कार्यक्रमों के औचित्य और वैधता में कोई शंका न की जाए।

यह सही नहीं है। यदि समूचे समाज में परिवर्तन लाना है और गरीबों को फायदा पहुंचाना है तो परिवर्तन की प्रक्रिया जनाकांक्षाओं और जन-सहयोग पर आधारित होना चाहिए। सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की पूर्व-आवश्यकता यह है कि समाज की समस्याओं की मूलभूत स्वरूप को समझा जाय और उनकी पूरी जानकारी हो। अतः जन-साधारण के साथ घुल-मिल जाने, गरीबों और समाज के उपेक्षित वर्गों को इस प्रयास से शामिल करने और जन-साधारण का सहयोग लेने की आवश्यकता है।

दीर्घकालिक लक्ष्य

कर्नाटक और आन्ध्र विधानसभा चुनावों के बाद मैं यह यात्रा आरम्भ कर रहा हूं। मैंने भारत यात्रा एक महीने पहले शुरू कर दी होती, लेकिन मैं चुनाव अभियान के दौरान जनता में यह धारणा पैदा नहीं करना चाहता था कि मैंने यह यात्रा चुनाव में फायदा उठाने के लिए की है। इस यात्रा का लक्ष्य दीर्घकालिक है, इसके जरिये कोई तात्कालिक लाभ उठाने की मंशा नहीं है।

विनम्रता के साथ यह यात्रा शुरू की गई है और इससे चमत्कार की अपेक्षा नहीं है। यदि कोई व्यक्ति यह विश्वास करता है कि इस भारत यात्रा से बड़े पैमाने पर जन-उद्वेलन होगा या राष्ट्रव्यापी क्रांति आयेगी तो यह उसका भ्रम है। जन-साधारण को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाने के प्रयास में शामिल करना काफी मेहनत का काम है और इसमें काफी समय भी लगता हैं। हम में से अनेक इस दिशा में कार्य करने और सुफल प्राप्त करने की प्रतीक्षा करने की मन स्थिति में नहीं हैं। लेकिन इस काम पूरा करना है और जितनी जल्दी शुरू हो उतना ही अच्छा है।

इस यात्रा से इस आन्दोलन की गति और दिशा को समझने और आवश्यक सूचनाऐं इकट्ठी करने का अवसर मिलेगा। कुछ सीधे प्रश्न करने और पूछने की भी आवश्यकता है। समाज में कुछ प्रवृत्तियों का जन्म क्यों हुआ हैं? राजनीतिक आजादी मिलने के ३५ वर्ष पश्चात भी ऐसा क्यों हुआ कि आय और सम्पत्ति की विषमता कम होने के स्थान पर गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं और धनी अधिक धनी होते जा रहे हैं? भूखे लोगों की संख्या १७ करोड़ से बढ़कर ३१ करोड़ हो गई है। क्या ऐसा केवल जनसंख्या-वृद्धि के कारण हुआ है? इसी प्रकार हम सबको जानने की जरूरत है कि सरकारी अभिकरणों के अनुसार गरीब व्यक्तियों की संख्या तीव्र गति से बढ़ी है। जहां गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं, वहां मुट्ठी भर भारत के उद्योगपति परिवारों की परिसम्पत्ति १०० करोड़ रुपये वार्षिक दर से बढ़ रही है। यदि राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर कम है तो इसका प्रभाव धनवानों की आय पर क्यों नहीं पड़ता? जब एक ओर मुट्ठी भर धनवान विलासिता और फिजूल खर्ची का जीवन व्यतीत कर रहे हों तथा अपने धन का भद्दा प्रदर्शन करते हो और दूसरी ओर भूख से छटपटाते लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही हो तो

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारत यात्रा क्यों

(पृष्ठ ६ का शेष)

कोई समाज-चाहे वह भारतीय हो या अन्य कोई—कब तक अनुशासित और शान्तिपूर्ण रह सकता है ? असमताएं न केवल व्यक्तिगत आय में ही बढ़ती जा रही हैं बल्कि क्षेत्रिय असतुलन भी बढ़ा है। देश के कुछ भाग, जिनमें प्राकृतिक साधन विपुल हैं, आज भी उतने ही गरीब बने हुए हैं, जितने कि ब्रिटिश हुकूमत में थे। इसी प्रकार यह प्रश्न भी पूछा जा सकता है कि देश को राजनीतिक आजादी मिलने के बाद शहरों में अधिक समृद्धि क्यों आई और ग्रामीण भारत के प्रति उपेक्षा क्यों बढ़ती गई ?

हमारा गणतन्त्र

भारत समाजवादी गणतन्त्र माना जाता है। शासन से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसी नीति और कार्यक्रम तैयार करे जो ऐसे समाज का निर्माण कर सके जिसमें आने वाले वर्षों में सभी भारत-वासियों को आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक समानता प्राप्त हो सके। क्या इस दिशा में बढ़ने की आशा की जा सकती है ? शिक्षा और युवा कल्याण के नाम पर सरकार एक हजार करोड़ रुपये से अधिक भारत की राजधानी में वातानुकूलित स्टेडियम निर्माण पर खर्च करती है, लेकिन भारत के करोड़ों बच्चों को स्कूल की पुस्तकें, स्लेट स्कूल मे बिजली की रोशनी और खेल कूद की बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने और ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों में औषधियों की व्यवस्था करने में भी वह विफल है यदि बालकों को न्यूनतम स्वास्थ्य-सेवा और शिक्षा से वंचित रखा जाता है तो वर्गरहित समाज-रचना कौन कहे क्या कहे हम एक स्वस्थ और सुखी राष्ट्र के निर्माण की कल्पना भी कर सकते हैं ?

राजनीतिक दलों और राजनीतिक नेताओं की विश्वसनीयता क्यों तेजी से कम होती जा रही है ? भारत मे राजनीतिक दल अपना काम वोट लेने के समय तक के लिए क्यों सीमित रखे हुए हैं ? ऐसा क्यो है कि शिक्षा का माध्यम बनने के बजाय राजनीतिक कार्य केवल सत्ता का खेल बन गया है।

देश की जनता यह भी प्रश्न पूछ सकती है कि जो प्रतिनिधि अपने चुनावों में लाखों रुपया खर्च करते हैं क्या वे कभी गरीबों की भलाई कर सकेंगे ? इससे भी अधिक जनता मे यह जागरुकता उत्पन्न होनी आवश्यक है कि एक ऐसी चुनाव-पद्धति जिसमें अत्यधिक साधन सम्पन्न लोग ही जीत सकते है, गरीबो और असहाय लोगो के हितों की रक्षा नहीं कर सकती। ऐसी चुनाव पद्धति जो पैसे की ताकत को तरहीज देती है सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है, को बदलने की आवश्यकता है। इस चुनाव पद्धति को कैसे बदला जाये ? जनता में इसे बहस का मुद्दा बनाया जाना चाहिए और सहमती के आधार पर कोई तरीका ढूंढना जाना चाहिए। सत्ता-रूढ़ दल और सरकार अनेक प्रकार के दावे करते रहे हैं जो विकृत दृष्टिकोण और स्थापनाओं पर आधारित हैं। भारतीय समाज में प्रवृत्तियां उनसे बिल्कुल भिन्न है और बहुत ही चिन्ताजनक है। सरकारी दावे अधिकांश लोगों के वास्तविक अनुभवों से मेल नहीं खाते। यही कारण है कि भारत की राजनीतिक पद्धति में अस्थिरता आ गई है और विश्वसनीयता खत्म होती जा रही है।

बुनियादी मुद्दे

मैं भारत यात्रा के दौरान राष्ट्र और जनता से सम्बन्धित ऐसे प्रश्न उठाना चाहता हूं, जिनका वर्तमान के लिये ही नहीं बल्कि भविष्य के लिए भी बहुत महत्व है। विचार-विमर्श का विषय समाज के बुनियाद और ढांचे सम्बन्धी मुद्दों से सम्बन्धित होना चाहिए। दर-असल मैं यह नहीं मानता कि किसी एक व्यक्ति या किसी एक राज-नीतिक दल के बारे में ही हमेशा चर्चा की जाय। समय के साथ-साथ व्यक्ति और दल विलीन हो सकते हैं, लेकिन देश की समस्याएं और पद्धति खत्म नहीं हो सकती। इसलिए हमें वर्तमान प्रवृत्तिय और मुद्दों पर विचार करना चाहिए और शासन-पद्धति में जहां कमी है उसके मूल कारण का पता लगाना चाहिए। हमें जन-साधारण का ध्यान रखना होगा। संसार के आधुनिक साधनों द्वारा लोगों के पास पहुंचने से सीधे-सादे लोगों में डर पैदा हो सकता है। लेकिन किसी परिवर्तन के लिए उन्हें इकठ्ठा करने या प्रेरणा देने में यह साधन काम नहीं दे सकता।

जिस प्रकार पूरी व्यवस्था ने लगातार कमजोर और निर्धन लोगों की तकलीफो के प्रति मनुष्यहीन और निष्ठुर अवहेलना का रवैया अपनाया है तथा अल्पसंख्यकों की समस्याओं के प्रति जो संवेदन शून्यता दिखायी है वह हमारे सामाजिक बिखराव के रोग की ओर संकेत करती है और कई दशकों के संघर्ष में राष्ट्रीय आन्दोलन से देश को मिली विरासत को झुठलाती है। भारत यात्रा निश्चय ही देश की जनता के अनुभवों को जानने का एक साधन होगी।

अपील

मैं लोगों के हर वर्ग से चाहे उनका राजनीतिक सम्बंध कुछ भी हो अपील करता हूं कि वे आगे बढ़कर इस विनम्र कार्य में लगें। मैं देश के युवकों से विशेष रूप से अपील करूंगा कि वे समय की पुकार को सुनें और वर्तमान सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को बदलने और शोषित पीड़ित जनता के अन्दर विश्वास की नयी भावना पैदा करने के लिए आगे बढ़े, क्योंकि उनके ही दृढ़ निश्चय पर देश का भविष्य निर्भर करता है।

—चन्द्रशेखर

उत्सव

आर्य समाज फेरूपुर रामखेड़ा हरिद्वार का उत्सव २० से २२ मई तक समारोह से मनाया गया। यज्ञ के यजमान डा० हरिप्रकाश जी व्यवस्थापक गुरुकुल काङ्गड़ी फार्मेसी हरिद्वार।

—भूषण लाल

आर्यसमाज अजमेर ने दिल्ली के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा हिन्दू महासभा के भू० पू० अध्यक्ष प्रो० रामसिंह के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—आर्य समाज अजमेर में ५-६-८३ को श्री प्रो० वृद्धिप्रकाश जी आर्य के पौरोहित्य में एक सिन्धी युगल का समस्त प्रकार की सामा-जिक रूढ़ियों का परित्याग कर सादगीपूर्ण आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ।

रासा सिंह
मन्त्री

साम सूर्य का अस्त

(श्री देवेन्द्र नाथ खरे एम.ए. अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, साहित्यरत्न)
नवलखा प्रेस कटरा बाँदा

संध्या की अरुणिमा पर अमा रजनी ने भीषण अट्टहास किया। चारों ओर अन्धकार छा गया। मानव विकल हो राह खोजने लगा। आत्मा कह उठी 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' आत्मा की आवाज गूंज उठी चारों ओर। दिशायें कह उठीं तमसो मां ज्योतिर्गमय मां का कोना-कोना प्रकाश के लिए तड़प उठा। कुछ ने मिट्टी के दिये जलाये, पर मां को कहाँ संतोष।

एक लाड़ला था मां का सपूत ज्ञानदीप जलाने के लिए अपने अंधे गुरु के पास बैठकर सतत प्रयत्न कर रहा था। गुरु के प्रत्येक इंगित को उसके ज्ञान मान रक्खा था वह स्वयं प्रकाशित हुआ। उसकी आत्मा ज्योति की ओर अग्रसर हो चली गुरु और शिष्य दोनों ही प्रसन्न हुए। आशीर्वाद मिला वत्स! ज्योतित कर विश्व के कण-कण को अपने अलौकिक प्रकाश से।

जल दिया वेद का भंडार भारतीय संस्कृति के गहन अन्धकार को दूर करने जादू सा फूंक दिया, एक लहर सी छा गई। देश में तम का परदा फट चला। महर्षि के विचार व्योम में फैल गये। बड़े-बड़े पंडितों से शास्त्रार्थ हुए पर उस ज्योतित आत्मा के सामने एक भी न ठहर सका। धर्म और राजनीति दोनों का अगुवा पूर्ण भारतीयता का प्रतीक निर्भीक सत्य वक्ता राजा और रंक को एक समझने वाला कौपीनधारी सन्यासी भारतीयों को संदेश देता था 'अपना राज्य चाहे जैसा हो विदेशी राज्य से कहीं अच्छा होता है।

जन-जन के मन में अखण्ड विश्वास श्रद्धा और साहस की ज्योति जगा दी। उस महर्षि का देहावसान दीपावली सं० १९४० को हुआ। अज्ञान आभा मुस्करा उठी, ज्ञान सूर्य को अस्त होते देखा दीपावली मनाई गई। पर मनाई कृत्रिम। दीपों की ज्योति फीकी थी। आभा की मुस्कराहट मृत्यु की मुस्कराहट थी। अज्ञानियों के सरदारों ने समझा, उनकी जीत हुई। पर महान आत्मा अपना काम कर चुकी थी उलझी गुत्थी का तार निकाल कर ऋषि चला गया।

भारतीयों को ज्ञान की उलझी गुत्थी सुलझाने में कुछ विलम्ब हुआ पर जो सूत्र ऋषि बता गया था उसी के सहारे स्वाधीनता प्राप्त हुई। वह सूत्र था समाज का गठन, शिक्षा प्रचार, अछूतोद्धार, हिन्दी भाषा का विकास।

आज पूर्ण रूप से ऋषि के वचनों को सत्य करने के लिए समय प्रस्तुत है। कृणवन्तो विश्व मार्यम का प्रण हम ग्रहण करें। आज की भूली मानवता को उसकी उच्चतम शिखर पर पहुंचाना है। उसके पशुत्व को मिटाना, ज्ञान पशुत्व को दूर कर मनुष्य को मनुष्य बनाना है। उनका शुद्ध संगठन वेद प्रचार तथा आर्य समाज के दस नियम विश्व का मार्ग दर्शन करने के लिए प्रस्तुत है। उनका पालन करने वाला विश्व का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है।

—आर्य समाज खण्डवा में २० मार्च को रामलाल सिंगले का सपरिवार शुद्धि संस्कार किया गया।

मंत्री

कन्या गुरुकुल, हाथरस

कन्या गुरुकुल में ग्रीष्मावकाश आरम्भ हो गया है। नया सत्र १ जुलाई १९८३ से आरम्भ होगा और नवीन प्रवेश २७ जून १९८३ से होंगे।

इन दिनों कन्या गुरुकुल को निम्नलिखित विशेष दान प्राप्त हुए—

१— मधुगढ़ी—हाथरस निवासी श्रीमती सावित्री शर्मा की इच्छा के अनुसार उनकी उत्तराधिकारिणी पुत्र बधूवों श्रीमती इन्द्रा शर्मा एवं श्रीमती कुन्तादेवी तथा पुत्री श्रीमती शान्ती देवी ने श्रीमती शान्ती देवी चिकित्सालय के निर्माण के लिए ४०,००१) रु० दिये हैं।

२— न्यूजीलैण्ड निवासी डा० रामकुमार गुप्त ने अपनी स्व० पत्नी श्रीमती स्वर्णलता शास्त्री की स्मृति में गुरुकुल में शास्त्री परीक्षा में प्रथम आने वाली कन्या को प्रतिवर्ष स्वर्ण पदक देने के लिए ५००१) रु० और उन्हीं की स्मृति में स्थाई छात्रवृत्ति के लिए ४०००) रु० भेजे है, साथ ही छात्रवृत्ति की राशि को पूरा करने के लिए ६०००) रु० और देने का संकल्प किया है।

४— भारतीय विद्या के प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशक श्रीमन्तः मोतीलाल बनारसीदास ने १०,००१) रु० दिये है।

५— अलीगढ़ निवासी डा० जानकी देवी वीर ने अपनी स्वर्गीया माता श्रीमती नारायण देवी की स्मृति में गुरुकुल की श्रेष्ठ कन्या को प्रतिवर्ष १००)रु० का पारितोषिक देने के लिए १०००) रु० दिये है।

कन्या गुरुकुल की ओर से सभी को धन्यवाद दिया जाता है।

—मुख्याधिष्ठात्री

वेद का मनन

(पृष्ठ १ का शेष)

बीमार न हो। जिन परिवारों में रोग घरकर लेता है वे नरकधाम बन जाते हैं। परिवारों को पुष्टि विद्यादि तथा सोम औषधि सुवर्ण आदि और नीरोग्यादि से होती है। ये सब वस्तुयें परिवार में हों। यह तब सम्भव है जब भगवान की कृपा हो। इस मन्त्र में भगवान को भूर्भुवः स्वः, नर्य, शंस्य, अथर्य आदि विशेषताओं से पुकारा गया है। वह भगवान प्राणों का प्राण है, दुःख नाशक है, सुख स्वरूप है, नरों का हितकारक है, प्रशंसा के स्तुति के योग्य है तथा सर्वत्र विराजमान है। गृहस्थी जब भगवान को इस रूप में देखता है और भगवान के इन गुणों का धारण करके सब सामाजिक प्राणियों के लिए प्राण बनता है, सबके दुक्खों को दूर करता है, सबको सुख देता है, सबका हितैषी बनता है, सबका सेवा आदि सत्कर्मों से प्रशंसा के योग्य होता है तथा दूर-२ तक गति करके सब में व्याप्त होने का प्रयत्न करता है. तब भगवान की उस पर कृपा होती है और वह दूध और अन्न से भरपूर हो जाता है। उसको गौ आदि पशु अपना हितकारक दूध और भूमि माता अपना सात्विक अन्न प्रदान करती है। जिसके उपभोग से उसके पुत्र पौत्र आदि सात्विक बुद्धि वाले, वीर, और सर्वतः सम्पुष्ट हो जाते है।

यह है एक आदर्श गृहस्थ जिसकी तरफ वेद ने संकेत करते हुए प्रभु की कृपा की आकांक्षा की है।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष-45933 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वर्ष० ज्येष्ठ २६
ज्येष्ठ शु० ६ रविवार
१९ जून १६८३ ई०

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अनुशीलयन्तु भद्रा

[पृष्ठ २ का शेष]

कर रहते थे। स्वामी जी भी नवीन रूप मे विरजानन्द से शिक्षा लेकर बौद्धिक स्तर पर क्रान्ति दर्शी सन्यासी के रूप मे उभर कर सामने आये, परन्तु, उनके उपदेश और निर्देश अंग्रेजी शासन पर गहरी चोट करते थे। इस लिये यदि 'योगी के चरित' कुछ अस्पष्ट है तो वह राजनैतिक गोपनीयता है।

विद्वानो से आग्रह है कि इस विषय पर अधिक विचार करे। श्री आदित्यपाल सिंह जी ने वृहद् दिशा दिखाई है। स्वय सही निणय पर पहुचे है। उनके अभिलेख सत्य और तथ्य से पूर्ण है। उनकी जितनी सराहना की जाय कम है, वह अभिवादन के पात्र हे और आशा है कि अभी वह और अधिक इस विषय की सामग्री प्रस्तुत करगे। उनका पता है श्री आदित्य पाल सिंह जी आय-एफ ५।५२ चार इमली भोपाल ४६२०१८। डा० भवानी लाल भारतीय शोध पूर्ण रचनाओ मे प्रवीण है। उनसे भी अपेक्षा है कि स्वामी दयानन्द के विस्तृत जीवन चरित्र क्रान्तिदर्शी सन्यासी प्रस्तुत करने या कराने का प्रयास करे। जिसमे दो भाग हो। ऋषि वर का शास्त्रीय क्रान्ति (स्कल्प चर रिवाल्ट)

अपेक्षा है कि इतिहास के शोध छात्र इस विषय मे रुचि लेगें। विद्वान विचार प्रकट करें और ऋषि दयानन्द के कार्य कलापों के सम्बन्ध मे विस्तृत जानकारी मिलेगी।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

—आर्य समाज धौरापुर का उत्सव २६ अप्रैल से १ मई तक मनाया गया।

मन्त्री

—स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम। अलीगढ़ ने श्री माता सरला देवी शास्त्री के निधन पर शोक सवेदना प्रकट की है।

—डा० जानकी देवी
मन्त्रिणी

—२४ से २६ मई तक स्वामी शान्तानन्द वैदिक योगाश्रम गणेशपुर मेरठ मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ मनाया गया।

संयोजक

—आर्य समाज चौक लखनऊ ने श्रीमती रेशमा मानो की शुद्धि की।

मन्त्री

—आर्य समाज भरुआ सुमरपुर (हमीरपुर) का उत्सव १५ से १७ मई तक मनाया गया।

मन्त्री

—श्री सीताराम भजनोपदेशक सभा व श्री विश्वभर दत्त शास्त्री द्वारा १ मार्च से २४ अप्रल तक आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के प्रयत्न से कई गावो मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

रामजी आर्य उपमन्त्री

—आर्य समाज अल्मोड़ा के भू० पू० सदस्य श्री रवीन्द्र प्रसाद के निधन पर समाज मे शोक प्रकट किया गया।

मन्त्री

—आर्य समाज, कासगंज के प्रधान ने टीकाराम धर्मशाला में तीन मुसलिम परिवारों के सदस्यों का शुद्धि संस्कार किया गया। —शिव देव प्रचारक

—आर्य समाज मण्डी बांस मुरादाबाद मे २८ मई को वीर सावरकर जयन्ती मनाई गयी।

सुधीर कुमार
मन्त्री

—आर्य समाज मिलक (रामपुर) ने श्री मुशी राम बहादुर के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया है। प्रभु शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सुधीर कुमार सिंह
मन्त्री

—आर्य समाज नैनीताल का उत्सव २० से २७ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया। बहुत से विद्वान् पधारें।

मन्त्री

—श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महा विद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव २७ से २८ मई, तक समारोह से मनाया गया।

प्रज्ञा देवी आचार्या

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिए

'आर्यमित्र के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ जून ८३ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ४ ५० अधिक पोस्टेज लगता है। इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआडर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं–

४५५, ६९३ २२५१ २४७८, २५६८, २६२६, २६३२, ३६५८, ४६५६, ६१५१ ६३१३ ८१५०, ८२६८ ८५६७, ८६१८, ८६२१ ८७८८ ८८१६ ८८६७, ६१४६, ६१५० ६०५५, ६१७१, ६१७२, ६१७८ ८१८० ६१८४, ६४६५, ६४७०, ६६५७, ६६७६, १०१७७, १०१७८, १०१८० ११२०६, ११२१०, ११४८२, ११५३७, ११६२४ ११६३६ १२००३, १२२१३, १२२१४, १२६६०७, १२६६१, १२६६२ १२६६३ १२६६४, १२६६५, १२६६६, १२६६७, १२६६८, १२६६८ १२६७० १२६७१, १२६७२, १२६७३, १२६७४, १२६७५, १२६७६, १२६७७, १२६७८ १२६७६, १२६८०, १२६८१, १२६८२, १२६८३

विनीत
— व्यवस्थापक

कार्यकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ आ० श्रावण ३० श्रावण शु० १३ रविवार सम्वत् २०४० वि०, २१ अगस्त सन १९८३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश, लखनऊ का वार्षिक वृहद्धिवेशन

दि० ४ सितम्बर ८३ को सभा-भवन में सम्पन्न होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का ९६, ९७ वां वार्षिक वृहदधिवेशन दि० ४ सितम्बर १९८३ रविवार को नारायण स्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ मे प्रात ८ बजे से प्रारम्भ होगा। अपरिहार्य कारणो से आवास सभा भवन के नजदीक धर्मशाला, स्कूल आदि मे किया गया है। भोजन व्यवस्था का प्रबन्धसभा भवन मे ही रहेगा।

कृष्ण गोपाल शर्मा
अधीक्षक—सभा भवन, लखनऊ

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ का दिनांक— ४-९-१९८३ को होने वाले निर्वाचन के सम्बन्ध मे स्थान की सूचना पूर्व डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ घोषित की गई थी। अब दिनांक— ४-९-१९८३ को होने वाला निर्वाचन डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के स्थान पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ के प्रधान कार्यालय, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में पूर्व घोषित समयानुसार सम्पन्न होगा। कार्यालय अधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ इस के सम्बन्ध मे आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करें, साथ ही इस आदेश की प्रति सभा कार्यालय लखनऊ के नोटिस बोर्ड पर प्रतिनिधियों के सूचनार्थ लगा दें।

एस० बी० चौधरी
डिप्टी रजिस्टार/निर्वाचन अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

---

२८ अगस्त का अंक बन्द रहेगा

वार्षिक रिपोर्ट छपने तथा श्रावणी के अवकाश के कारण २८ अगस्त १९८३ का अंक बन्द रहेगा। अब ४ सितम्बर का अंक निकलेगा।

—नारायण प्रिय
प्रबन्ध सम्पादक

		प्रधान सम्पादक—	वर्ष	अंक
वार्षिक	१६)	पं० इन्द्रराज		
छमाही	९)			
विदेश में	५ पौंड		८६	१२
एक प्रति	४० पैसे			

वेद ज्योति का प्रभाव-

(श्री पं० बिहारी लाल शास्त्री, रामपुर फार्म, बरेली)

संसार में जब मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ, तब उसको जीवन के कार्यों की विधि और परोक्ष पदार्थों का ज्ञान कराने के लिए परमात्मा ने सर्वोत्तम, निर्मलतम चार ऋषियों के हृदय में 'वेदज्ञान' प्रकट किया। आदि सृष्टि में सब मनुष्य एक ही स्थान पर उत्पन्न हुए, वह स्थान था 'हिमालय'। जैसा कि 'महाभारत' कहता है हिमालय विख्यातो ख्यातो लोकेषु पावन।

पं० बिहारीलाल शास्त्री

तत्र सृष्टि समुत्पन्न। मुसलमानो का भी यही विश्वास है। मुसलमानो के महान नेता सर इकबाल लिखते हैं।

'ऐ हिमालय बतलाती उस वक्त की कोई सुना,
मसकने आबामे आदम का बना दामन तेरा।'

आबादी बढ़ जाने से मनुष्य हिमालय से नीचे आकर बसे, तथा कुछ दिनो मे उत्तरी भारत मनुष्यो से पूर्ण हो गया। उस समय मनुष्य वेद को आर्य कहते थे। अब इनमें से कुछ लोगो ने शास्त्र व्यवस्थाओ पर ध्यान देना छोड़ दिया। उनको आर्यों ने अपने से अलग कर दिया। वे द्रविड कहलाये अर्थात दौड़े हुए। जो जाति इन नियमो को छोड़कर लोगो में दौड़ गये। कुछ आज अफगानिस्तान होते हुए ईरान पहुँचे। पठान लोग अपने को पख्तून कहते हैं, यह पख्तून शब्द वेद' के पक्थ' शब्द से बना है। वेद ने कहा है--

'पक्थ स क्षत्रिय स अर्थात क्षत्रिय पके हुए हो, अपनी युद्ध कला में निपुण हो। जब ज्यो ज्यो आर्य जाति के लोग और देशो में फैलते गये, त्यों त्यो अपने 'वेद ज्ञान को भूलते गये। समय समय पर उनके नेताओ ने उनकी आचार विचार की एकता के लिए पुस्तके बनायी। उन पुस्तकों मे मौलिकता, 'वेद ज्योति' की रही। किन्तु जैसे प्रकाश लाल रंग के शीशे मे लाल दिखाई देगा, हरे रग मे हरा इसी प्रकार उन नई पुस्तको मे उन नेताओ के विचार आ गये।

पहली पुस्तक जो मिलती है। 'जन्द आवेस्ता मिलती है, जो बहुत कुछ अथर्ववेद से मिलती है। फिर हजरतमूसा की किताब, हजरत सुलेमान, तथा हजरत दाऊद की किताब, इंजील, कुरानादि, संसार की जातियों के धर्मग्रन्थ'। किन्तु वेद ज्योति' क्षीणावस्था मे भी इनमे चमकती रही, किन्तु भारतीय लोगो मे वेद का प्रभाव बहुत अधिक बना रहा। इसीलिए संसार भर में जो आचार हिन्दुओ का रहा है, वह किसी जाति का नहीं रहा है। योरप के अन्तिम युद्ध मे जब अमरीकन और इंगलैण्ड के लोगों ने जीत लिया, तब जर्मन स्त्रियों के साथ इन दोनो देशों के लोगों ने व्यभिचार किया। जापान पर जब अमरीका ने विजय पायी, तब अमरीकन लोगो ने जापानी स्त्रियों के साथ दुराचार किया, किन्तु विदेशो मे गए हुए भारतीय सिपाहियों की एक तत्सम्बन्धित शिकायत नहीं मिलतीं। अभी पिछले दिनों, जब पाकिस्तानी मुसलमानों का अधिकार बंगला देश पर हो गया तब कोई पाकिस्तानी सिपाही ऐसा न था जिसके पास एक बंगला स्त्री न हो।

किन्तु जब भारतीय सेना ने बंगला मुसलमानो को पाकिस्तान की आधीनता से मुक्त किया तो भारतीय सेना वहाँ पाँच माह रही, उस समय के विदेशी अखबारो ने लिखा था कि पाकिस्तानी सिपाहियो के पास जबकि उन्हें बन्दी बनाया गया था एक एक बंगला स्त्री पाई गई। भारतीय सैनिको ने एक भी बंगाली स्त्री को उंगली भी नहीं छुई हुई। जिस समय बंगाली मुसलमानो का पाकिस्तानियो से युद्ध चल रहा था तो पाकिस्तान का प्रेसीडेंट मुसलमानो से कहता था– मुझे बंगाल चाहिए बंगाली नहीं, बस पाकिस्तानियो ने डट कर कत्ल किया और, दूसरी ओर जब पाकिस्तान पर काश्मीर रक्षा के लिए भारतीय सेना ने युद्ध की तैयारी की तो सेना के सामने भारतीय कर्नल भण्डारी सेना से कहते हैं—

'बेटो आज तुम्हे पाकिस्तान पर हमला करना है। पाकिस्तान की स्त्रियो को माता समझना, बहिन और बेटी समझना तथा यह समझते रहना कि तुम्हारी स्त्री से सुन्दर यहाँ कोई नहीं है।' इस उपदेश का प्रभाव यह था कि किसी एक भी भारतीय ने पाकिस्तान की स्त्री पर हाथ नहीं डाला। भारतीयो के सामने उनके नेताओ के सदाचार के पुष्ट प्रमाण सामने थे। जिस समय शिवाजी की सेना ने कल्याण गढ़ को मुसलमानों से जीता, तो सब मुसलमान भाग गये। किन्तु किलेदार की लड़की गोहर बानू न भाग सकी। वह छुप गयी। सेना अपने राज्य मे आकर जब सामान खोल कर हर्ष रही थी सन्दूक मे बन्द स्त्री को देखकर सेनापति को आश्चर्य हुआ। शिवाजी ने उस लड़की से कहा कि मुँह खोलो लड़की ने जब पर्दा उठाया तब शिवाजी के मुख से निकला' ऐसा सौन्दर्य सिंहासन के पीछे खड़े हुए सेनापति ने कहा कि श्रीमन्त क्या इसे महल मे पहुँचा दिया जाय? शिवाजी को क्रोध आ गया तथा सेनापति को डाँट कर बोले क्या तुम अपने राजा के चरित्र को नहीं जानते? यह विचार रहा हूँ कि जीजा बाई की तरह यदि यह माँ होती तब मैं भी इतना सुन्दर होता। तदनन्तर उसके कहने पर गोहरबानू को बीजापुर भिजवा दिया गया। रात्रि को जब वह पति के कमरे मे गये, पति ने पूछा 'शिवाजी ने तुमसे कैसा सलूक किया जाय?', गोहरबानू ने उत्तर दिया, जैसा बाप बेटी के साथ करता है। जबपति ने कहा 'काफिर शिवाजी ने? लड़की ने छुरी निकाल कर अपने कलेजे पर रक्खी, तथा कहा मेरे बाप को यदि काफिर कहा तो जान दूँगी।' उसके पति के हाथ मे तलवार थी। उसके पति ने तलवार को म्यान में फेंक कर कहा चाहे मुझे नवाब की नौकरी छोड़नी पड़े, शिवाजी के खिलाफ तलवार नहीं चलाऊँगा।'

हिन्दू राष्ट्र को यह निर्मल चरित्र शिक्षायें किससे मिली? सत्य पर, धर्म पर, पतिव्रत पर सहस्रों हिन्दू नारियो स्वेच्छा से अग्नि मे कूद पड़ी। हकीकत राय बन्दा बैरागी जैसे शहीद, पूज्य गुरुगोविन्द सिंह के पुत्रों जैसे बलिदानी, किसी जाति मे ढूँढने से नहीं मिलेंगे। यह प्रभाव वेद ज्योति का ही है। वेद ज्योति' की ये दो किरणें कितनी उच्चकोटि की शिक्षा दे रहीं हैं–

[शेष पृष्ठ १० पर]

वैदिक साहित्य की मूल प्रेरणा

डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी, श्याम गंज
बरेली–२४३००५

सुश्री महाश्वेता चतुर्वेदी

वेद ज्ञान वह है जो मनुष्य मात्र के हित अनहित कर्मों का बोध कराता है, अपौरुषेय है। ईश्वर प्रदत्त है, जिसमें सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी शिक्षा नहीं है, जिसमें झूठ, व्याघात और निरर्थक वाक्यों के दोहराव के दोष नहीं हैं।

'बुद्धिपूर्वा वाक् प्रकृति र्वेदे' वैशेषिक ६।१।१

'शास्त्र योनित्वात्'। वेदान्त २।१।१।३। वेद अपौरुषेय हैं, यह, न कभी मरता है और न क्षीण होता है।

'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।' (ऋग्वेद)

'आत्मा' निराकार है फिर भी उसे जानने का उपदेश दिया जाता है – 'आत्मना वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्यावेव विज्ञाने नेदं सर्वं विदितम्'। यह बृहदारण्यकोपनिषद् का वचन है। मुण्डकोपनिषद् उसे जानने की प्रेरणा देती है –

'तमेवैकं जानथ आत्मानम्। अन्या वाचो विमुञ्चथ। अमृतस्यैष सेतुः।' उसी आत्मा को जानो, संसार की अन्य बातों को छोड़ो, संसार की दुर्गम धारा पर यही अमृत का सेतु है। 'किन्तु यह आत्मज्ञान कैसे हो, इसके विषय में स्वयं उपनिषद् कहती है – 'श्रोतव्यो श्रुतिवाक्येभ्यो: मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः। मत्वा च सततं ध्येय। ऐते दर्शन हेतवः।' वेद वाक्यों का श्रवण, मनन, तथा युक्तियों से उन पर निरन्तर विचार करना ही दर्शन के हेतु हैं जिन्हे ही क्रमशः श्रवण, मनन और निदिध्यासन कहते हैं। अथर्ववेद में लिखा है– 'पुण्डरीकं नव द्वारं त्रिभिर्गुणे भिरावृतम्।

तस्मिन् यद्यक्षमात्मन्वत्। तद्वै ब्रह्मविदोविदुः।।'

वह आत्मा इस नव द्वार वाली पुरी में निवास करता है। ब्रह्मविद् उसी को जानते हैं। यह आत्मा चिरन्तन पथिक है तथा अपनी वासनानुसार विविध रूपों को धारण कर रहा है शेक्सपियर ने कहा है –

"we are such stuffs as dreams are made on & our little life is rounded with a sleep." (*The tempest*) *"whence are we and why are we' of what scenes the actors or the spectators"* (*shellay Adonais*)

'मत्वा कर्माणि सीव्यतीति मानवः' अर्थात् मननशील होकर भी मनुष्य जब तक सांसारिक वस्तुओं से वासनात्मक सम्बन्ध रखता है तब तक उसे ये भोग लुभाते तथा ललचाते रहते हैं। केन्द्रीय शासक से सम्बन्ध जोड़ने पर ही वह सांसारिक भोगों से उदास होता है। वैदिक साहित्य की मूल प्रेरणा यही है कि मानव आत्मदर्शन द्वारा अपने चरम लक्ष्य को पाये।" भवारण्यमुक्त्वा यदि जिगिमिषु मुक्ति नगरीम्।

तदेवं मा कार्षी विषयविष वृक्षेषु वसतिम्।

यतश्च्छायाप्येषी प्रजति विना कारण कलाम्।

अयं जन्तुर्यस्मात् पदमपि न गन्तुम् प्रभवति।'

अर्थात् यदि मानव मुक्ति नगरी की ओर जाना चाहता है तो उसे सांसारिक विष वृक्षों की छाया से बचना होगा जो निरन्तर मोह उत्पन्न कर उसे पाश बद्ध करती है।

आत्मदर्शन विषयक कुछ वेद मन्त्र–

१ आवत्स्ये वो निषदनं पर्णे: वो वसतिष्कृता० (अथर्व)

हे जीव! तेरा निवास पीपल के पत्ते पर है।

२ अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवोह्मासि नो दृशे। (सामवेद–१०)

हे प्रभो! तू ही दर्शक और मार्गदर्शक है।

३ अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ।। यजु० ३०।४१।

मृत्युमय अविद्या सागर को पार कर विद्या द्वारा मनुष्य अमृतमय हो जाता है।

४ विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति यजुर्वेदं सामवेदमथर्वणं चतुर्थमितिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्......

विज्ञानमुपास्स्वे। आ० उ० १ एवं ५ जो विज्ञान की रीति से वेदों का अध्ययन कर उनको प्रकट करता है, वही वेदों को जानता है तथा वही इतिहास विद्या को जान सकेगा।

५–उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषा वस्तुर्धिया वयम्।

नमो भरन्त एमसि ।। ऋ० १।१।६। म० ३।२३

हे अग्ने! (ईश्वर) प्रतिदिन सायं-प्रातः नमस्कार करते हुए आपके समीप आते हैं,

ये मन्त्र तो मात्र उदाहरण हैं। वैदिक साहित्य तो रत्नों का अपार सागर है एवं मानव मात्र प्रेरणा का स्रोत है। आज के समस्या प्रधान युग में वेद-पथ का अनुसरण ही उसका निदान है। अज्ञान, अन्धविश्वास, एवं पाखण्ड की निविड़ निशा में निरन्तर अस्त-व्यस्त रहकर भी आज मानव संज्ञा विभ्रमित एवं थके हुए नीर सी है, मानव यदि अपना सहायक स्वयं बने तभी कुछ प्रगति सम्भव है। 'गीता' भी कहती है –' आमव आत्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।

उद्धरेदात्मनात्मान मात्मान मवसादयेत्।।'

मनुष्य स्वयं ही अपना ही शत्रु और मित्र है। अतः उसे किसी भी उपलब्धि के लिए स्वावलम्बी बनना। चाहिये वैदिक सनातन धर्म की प्रेरणा में उसकी जीवन यात्रा पाथेय बने–

'अयुतोऽहं अयुतो मे आत्मा अयुतं मे चक्षुः अयुत मे श्रोत्र। अयुतो मे प्राणो अयुतो मेऽपानो अयुतो मेव्यानों, अयुतोऽह सत्र।' (अथर्व०) अर्थात मेरे आँख, नाक, कान, प्राण, अपान, व्यानादि सब पूर्ण हैं।

आत्मदर्शन द्वारा ही यह ज्ञान सम्भव है। हीनता की भावना अभिशाप है। तथा यही दरिद्रता अतः हीन भावना शून्य है स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करना तथा चरमलक्ष्य प्राप्त करना ही वैदिक साहित्य की मूल प्रेरणा है। 'आत्मदर्शन' को कवि शैले ने *'The white radiance of Eternity'* कहा है। 'होनाचार परीतात्मा प्रेत्य चेहविनश्यति। 'होनाचार' विनाश को प्राप्त होता है, 'श्रुति' के अनुसार जीवन यात्रा आनन्दमय एवं अमृतमय बनाना तथा ज्ञानसहित विद्यार्जन कर उसे क्रियात्मक रूप देना ही वेदों का सन्देश, लक्ष्य प्राप्ति एवं यात्रा का अन्त है।

वनिता विवेक

जगत्जननी सीता

(ले० पाण्डेय श्री राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम')

(गतांक से आगे)

जनक सीता किशोरी धन्य है, जो रघुनाथ जी के साथ सैकड़ों वर्ष तक प्रसन्नतापूर्वक रहेंगी। किन्तु सुन्दरी ! तुम कौन हो ? जो इतने प्रेम के साथ श्री राम चन्द्रजी के गुणों का वर्णन सुनती हो।;

जानकी जी बोलीं– 'तुम जिसे जनकनंदिनी सीता कहती हो वह मैं ही हूं। श्रीराम ने मेरे मन को अभी से लुभा लिया है। वे यहां आकर जब मुझे ग्रहण करेंगे तभी मैं तुम दोनों को छोडूंगी। तुमने अपने वचनों से मेरे मनमें राम को पाने का लोभ उत्पन्न कर दिया है। अतः मेरे घर में सुख से रहो। और मीठे मीठे पदार्थ भोजन करो।, सीता की यह बात सुनकर सुग्गी अनिष्ठ की आशंका से कांप उठी और विनती करती हुई बोली– 'साध्वी! हम वन के पक्षी हैं। पेड़ों पर रहते हैं। और स्वतंत्र विचरा करते है। तुम्हारे घर में हमें सुख न मिलेगा। मैं गर्भिणी हूं। अपने स्थान पर जाकर बच्चे पैदा करूंगी। इसके बाद फिर तुम्हारे पास आ जाऊंगी।, तोते ने भी ये ही बातें कहकर प्रार्थना की। किन्तु सीता उस सुग्गी को छोड़ने के लिए उद्यत नहीं हुई। दोनों पक्षी बहुत रोये। गिड़गिड़ाये, किन्तु इन्होने बालकोचित हठ के कारण उसे नहीं छोड़ा। ये वन-विहंगमों की हार्दिक वेदना का अनुभव न कर सकी। सुग्गी के लिए पति का वियोग असह्य हो गया। वह बोली– 'अरी! मुझ दुखिनी को इस अवस्था में तू पति से अलग कर रही है। अतः तुझे भी गर्भिणी की दशा में पति से बिलग होना पड़ेगा। यों कहकर 'राम राम' का उच्चारण करते हुए सुग्गी ने अपने प्राण त्याग दिये। पत्नी के वियोग में तोते ने भी देह त्याग दिया। वही इस वैर का बदला लेने के लिए अयोध्या में धोबी के रूप में प्रकट हुआ। इस प्रकार विदेहनंदिनी सीता के जीवन में आने वाले विरह दुःख का बीज उसी समय पड़ गया।

विदेह कुमारी सीता क्रमशः बढ़कर सयानी हुई, राजा ने अपनी उस अयोनिजा कन्या के सम्बन्ध में निश्चय किया कि जो अपने पराक्रम से धनुष को चढ़ा देगा और तोड़ डालेगा, उसी के साथ इस कन्या का विवाह करूंगा।

सीता जी विवाह के योग्य हो गयी थी, इस लिए राजर्षि जनक ने धनुष यज्ञ के साथ ही सीता के स्वयंम्वर का आयोजन किया। निमंत्रण पाकर देश-देश के राजा मिथिला में आये। राजा ने सबको ठहरने का स्थान दे सबका यथा योग्य सत्कार किया। महर्षि विश्वामित्र भी यज्ञोत्सव देखने के लिए ऋषि मुनियों के साथ मिथिला पधारे। उनके साथ श्री राम और लक्ष्मण भी थे। नगर के बाहर आमों का एक बगीचा था।

वहाँ सब प्रकार के सुभीते थे। विश्वामित्र जी को वही स्थान पसंद आया, वे सबके साथ वहीं ठहर गये। राजा जनक को जब उनके आने का समाचार मिला तो वे श्रेष्ठ पुरुषों और ब्राह्मणो को साथ ले उनसे मिलने के लिए गये। राजा ने मुनि के चरणों पर मस्तक रखकर प्रणाम किया और मुनि ने प्रसन्न होकर राजा को आशीर्वाद दिया। फिर सारी ब्राह्मण मण्डली को मस्तक झुकाकर राजा ने अपना अहोभाग्य माना। कुशल प्रश्न के पश्चात् विश्वामित्र ने राजा को बिठाया। इतने में ही दोनों भाई राम लक्ष्मण जो फुलवारी देखने गये थे, वहाँ आ गये। उनके आने पर सब लोग उठकर खड़े हो गये। विश्वामित्र जी ने उन्हें अपने पास बिठाया। दोनो भाइयों को देखकर सबको बड़ा सुख मिला। सबके नेत्रों में प्रेम और आनन्द के आँसू उमड़ पड़े। शरीर रोमांचित हो उठे, श्रीराम चन्द्र जी की मनोहारिणी शक्ल देखकर राजा विदेह (जनक) विशेष रूप से विदेह हो गये।– उन्हें देह की सुध बुध न रही। तदनन्तर राजा ने उनका परिचय पूछा। विश्वामित्र जी ने बतलाया कि– ये दोनों भाई रघुकुल मणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं। राजा ने मेरे हित के लिए भेजा है। इन्होंने ही ताड़का और सुबाहु को मारकर मेरे यज्ञ की रक्षा की थी। इन दोनों भाइयों में बहुत घनिष्ट प्रेम है।, परिचय पाकर राजा जनक प्रसन्न हुए, उन्होंने सबको साथ ले जाकर एक सुन्दर महल में ठहराया। जो सभी ऋतुओं में सुखदायक था।

तदनन्तर विश्वामित्र जी की आज्ञा ले राम लक्ष्मण दोनों भाई नगर देखने के लिए गये। पुरवासियों ने जब यह समाचार पाया तो वे इन्हें देखने के लिए सब घर बार, काम-काज छोड़कर ऐसे दौड़े।, मानों दरिद्र मनुष्य खजाना लूटने दौड़े हों। युवती स्त्रियां घर के झरोकों से झांकने लगी। जिसने देखा, वही मोहित हो गयी। घर-में दोनों भाइयों की चर्चा थी, सब लोग यही कहते थे कि जानकी जी के योग्य वर तो ये ही हैं राम और लक्ष्मण क्रमशः नगर के बाजार' हाट, गली, सड़क, चौराहे तथा सुन्दर-सुन्दर मकान देखते हुए पूर्व दिशा गये। जहाँ धनुष यज्ञ के लिए भूमि बनाई गयी थी। लम्बा चौड़ा बना हुआ यज्ञ आंगन था ; जिस पर सुन्दर वेदी सजाई गयी। चारों ओर सोने के बड़े-बड़े मंच थे। राजाओं, पुरवासियों तथा स्त्रियों के बैठने के लिए अलग अलग स्थान बने हुए थे, सब देख सुनकर दोनों भाई लौट आये। रात बीती, प्रभात हुआ और स्नान आदि से निवृत होकर राम और लक्ष्मण मुनि की आज्ञा से फूल लेने के लिए चले। उन्होंने जाकर राजा जनक का सुन्दर बाग देखा, जहाँ बसन्त ऋतु लुभाकर रह गयी है। नये-नये पत्तों, फूलों और फलों से भरे हुए सुन्दर वृक्ष अपनी सम्पत्ति से कल्पवृक्ष को भी लजा रहे हैं। उद्यान के बीच मे एक सुन्दर सरोवर शोभा पा रहा है ; जिसमें मणियो की सीढ़ियाँ विचित्र ढ़ंग से बनी है। स्वच्छ निर्मल जल, पक्षियों के बहुरंगे कमल, जल कलरव और मयूरों के गूँजार उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। बाग मे चारों ओर दृष्टि डालकर और मालियो से पूछकर वे प्रसन्न मन से पत्र और पुष्प लेने लगे। उसी समय सीताजी भी वहाँ आयी। उनके साथ में सुन्दरी और सयानी सखियाँ थी ; जो मनोहर वाणी में गीत गा रही थी। सीताजी ने सखियों सहित सरोवर मे स्नान किया। एक सखी सीताजी का साथ छोड़कर फुलवारी देखने चली गयी थी। उसने राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को फूल चुनते देखा और प्रेम में विह्वल होकर वह सीताजी के पास आयी।

[क्रमशः]

चयानिका

—संयोग और वियोग अवश्यम्भावी हैं, इस नित्य सत्य को न समझते हुए मन्द बुद्धि लोग अनिष्ट पदार्थों के संयोग से तथा प्रिय पदार्थों के वियोग से चिन्ताग्रस्त होकर मानसिक दुःखों (रोगों) से दुःखी होते हैं।

—जो मनुष्य मरे हुए (किसी अपने सम्बन्धी) का अथवा नष्ट हुए (किसी पदार्थ का और भूतकाल में विलीन हुए किसी प्रिय का शोक करता है, वह एक दुःख से दूसरे दुःख को प्राप्त करता है।

—दुःख की परम औषध यही है कि इसका चिन्तन न करे। क्योंकि चिन्तन से (दुःख) नष्ट नहीं होता (अथवा कम नहीं होता, प्रत्युत) और अधिक बढ़ जाता है।

—ज्ञान के बल से मानसिक दुःख नष्ट कर देना चाहिए, और औषध सेवन से शरीर में होने वाले रोग नाश करना चाहिए। मानसिक कष्ट अथवा शारीरिक रोग के आने पर बालकों के समान (रुदन) नहीं करना चाहिए।

—तरुणाई, रंग-रूप, जीवन धनागम, नीरोगता और प्रिय जनों का संगम ये सभी अनित्य हैं, (अर्थात् तरुणाई वृद्धावस्था में, रंग-रूप कुरूपता में जीवन मरण में, धनागम, धन-नाश में, आरोग्य व्याधि में और प्रिय-संवास प्रिय वियोग में बदल जाते हैं, इसलिए इन अनित्य भावों में आसक्त नहीं होना चाहिए।

—जो व्यक्ति दुःख या सुख इन दोनों की चिन्ता का परित्याग कर देता है, अर्थात् दुःख आने पर दुःखी और सुख आने पर सुखी नहीं होता। वह उस ब्रह्म पद को पा लेता है। पण्डित लोग उस व्यक्ति के लिये शोक नहीं करते।

—मोक्ष में वही पुरुष सुखी होता है, जिसका बाह्य इन्द्रियों की अपेक्षा (आत्म-चिन्तन सदृश) आध्यात्मिक विषयों में अनुराग है, इस कारण जो स्थिर बुद्धि से युक्त, कामना-रहित, और भोगों में आसक्त न होता हुआ अपने ही भरोसे (संसार-यात्रा) करता है।

—सत्य व्यवहार, अहिंसा पालन दुःखी तथा पीड़ितों का साहाय्य आदि शुभ कर्मों के अनुष्ठान से (आन्तरिक तथा बाह्य) सुख प्राप्त होता है, और मिथ्या व्यवहार, पर पीड़ित आदि पाप कर्मों को करने से दुःख मिलता है। अतः मनुष्य को सदा किए हुए कर्म का फल मिलता है। बिना कर्म किये (कर्म-जन्य फल) नहीं भोगा जाता।

—अतः कर्मशील पुरुषार्थी पुरुष ही सर्वत्र (कर्म के परिणाम स्वरूप) भाग्य के अनुकूल प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, परन्तु जो अकर्मण्य है, कर्म फल से वंचित होने पर उसकी दशा व्रण पर नमक छिड़कने के समान असह्य दुःख भोगने की होती है।

—जो मनुष्य द्वारा करने योग्य कर्म नहीं करता, परन्तु भाग्य के सहारे बैठा रहता है, वह वृथा ही (जीवन में) दुःखी होता है, अर्थात् अपने दोष के कारण वह उसी प्रकार दुःखी रहता है, जैसे कोई स्त्री नपुंसक पति को प्राप्त करके (संतानहीनता का) दुःख उठाती है।

भली प्रकार किया हुआ पुरुषार्थ भाग्य को भी अपने अनुकूल बना लेता है, परन्तु पुरुषार्थहीन भाग्य किसी को कुछ नहीं दे पाता।

एक समय था, आर्य देश था, 'आर्यावर्त' अध्यापक था बृहस्पती!

आर्य-देश, आर्यावर्त था, अध्यापक था बृहस्पती!
आर्या और आर्य पाते थे, निज जीवन में दिव्य-गती!
'आर्याः ज्योति रग्राः' का मतलब, आर्य है ज्योतिष्मान महान!
आर्य कर्म-रत, दस्यु अकर्मी, श्रुति गाती है, शुचि पहचान!

सदा सुकर्मा आर्य पुरुष है, रहा कुकर्मी दस्यु, लबार!
यह अन्तर है 'आर्य-पुरुष' का समझा जाये भली प्रकार!
धर्मशील, ईश्वर विश्वासी, सौम्य, सुशील, सुबुद्ध, सुधीर!
शुद्ध, पवित्र तपस्वी, कर्मठ, सदाचारयुत और सुवीर!

ऐसे पुरुष और नारी को, आर्य और आर्या कहते हैं!
'आर्यावर्त' कहा जाता था, जिसमें देव-ऋषी रहते हैं।
'बृहस्पति' का अर्थ, बृहत-पति, संरक्षक है या सुमहान!
या महती महान स्वामी को, मिलाबृहस्पति का सम्मान!

बृहस्पती और आर्य परस्पर जिन सूत्रों में गुंथे हुए!
अनुभव करें आर्यजन उनको, जन-मंगल में जुटे हुए!
दो शब्दों में कहें अगर तो आर्य शब्द का अर्थ यही!
है 'आदर्श पुरुष' को कहते आर्य जगत मे सही-सही!

और 'बृहस्पति' को पहचानें, करवायें जग को पहचान!
यहीं 'बृहस्पति' कहा गया, है अध्यापक आदर्श महान्!
वेतन भोगी भृत्य नहीं वह, ज्ञान-भद्रता की काया!
चलती-फिरती विश्व चेतना की अध्यापक है छाया!

अध्यापक का कार्य, 'बृहस्पति' का हो बस 'आर्य' कहा जाये'!
भद्र पुरुष, आदर्श व्यक्ति को हो बस 'आर्य' कहा जाये!
बनें 'बृहस्पति' अध्यापक तो, स्वयं बनेगा 'आर्यावर्त'
अध्यापक ही बना सकेगा 'आर्य राष्ट्र' की पहली शर्त!

—लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'
एम० ए० साहित्यालंकार
मोक्षपुरा, मैनपुरी

—जो मनुष्य दुराचारी होता है, वह व्यसनी होकर दीर्घ आयु को प्राप्त नहीं करता। उस दुराचारी से सभी प्राणी डरते हैं, तथा उसको तिरस्कार की भावना से देखते हैं, इसलिए मनुष्य यदि अपने कल्याण अर्थात् सुखमयी दीर्घ आयु की कामना करता है, तो जीवन में सदाचार का पालन करना चाहिए। यदि मनुष्य के शरीर में सुन्दरता का अभाव तथा विकार भी होता है, तो उसकी उस कमी को सदाचार दबा लेता है, अर्थात् उसके शरीर के विकार को लोग उपेक्षा कर देते हैं।

—धर्म का स्वरूप शुद्ध आचरण हो, सज्जन पुरुषों की पहचान उसका सच्चरित्र ही होता है। श्रेष्ठ पुरुषों का जो उत्तम चरित्र होता है, वही सदाचार का लक्षण किया गया है।

—नारायण प्रिय

हिन्दी का अपमान

[श्री नरेन्द्र मोहन सम्पादक दैनिक 'जागरण']

गुट निरपेक्ष राष्ट्रों का जो शिखर सम्मेलन दिल्ली में हुआ था उसमें राजभाषा हिन्दी की जो उपेक्षा हुई उस पर लोकसभा में जनता पार्टी के कुछ सदस्यों ने जो रोष व्यक्त किया वह तनिक भी अनुचित नहीं है। पर अजीब बात है कि इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर उत्तर प्रदेश के व अन्य हिन्दी भाषाभाषी सांसदों ने कोई भी दिलचस्पी नहीं ली। दरअसल उत्तर प्रदेश एक मरा हुआ राज्य है और इसके अधिकांश सांसद और विधायक एक प्रकार से अंधे, गूंगे और बहरे हैं। मानसिक रूप से अपंग इन सांसदों और विधायकों के बारे में क्या कहा जाये—इन्हें न देश प्रिय है। न आदर्श प्रिय है, न इनकी कोई अन्तरात्मा है, और न स्वाभिमान, ये तो बस कुर्सी के दीवाने हैं और या फिर लम्प-पोस्ट अथवा रबर स्टाम्प। हिन्दी इनकी मातृभाषा अवश्य है, पर, [अ]नेलेधन की रोटियों पर पलने और रबर स्टाम्प बने रहने के कारण इनकी वाकशक्ति को लकवा मार गया है और धीरे-धीरे ये पूरी तरह से संवेदनहीन हो चुके। राजस्थान, मध्य प्रदेश और हरयाना के अधिकांश सांसदों की भी कुछ कम, कुछ ज्यादा यही कहानी है। पार्टी व्हिप अथवा पार्टी अनुशासन के नाम पर सच्चाई के साथ होने वाला बलात्कार देखने वाले कब तक और शासन की कुर्सियों पर बैठेंगे यह कोई नहीं जानता।

अजीब बात है कि विदेश मन्त्री श्री नरसिंह राव यह तर्क देते हैं कि समयाभाव के कारण हिन्दी के अनुवाद की व्यवस्था नहीं हो सकी, किन्तु वे यह सब बात भी नहीं कह सके कि अंग्रेजी मोह से चूंकि भारतीय विदेश मंत्रालय इतना ग्रसित है,इसलिए यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति बनी। भारतीय विदेश मन्त्रालय का अंग्रेजी मोह इतना प्रबल है और पाश्चात्य सभ्यता व दर्शन से इतना कुप्रभावित व चकाचौंध-ग्रस्त हैं कि सच्चाई यह देख हो नहीं सकता और इसीलिए इस मन्त्रालय में मातृ भाषा को सम्मान मिलेगा इसकी आशा करना व्यर्थ है। आजादी के लगभग ६ वर्षों के उपरान्त आज भी भारतीय विदेश मंत्रालय अपने देश की किसी भाषा में कार्य नहीं करता। इसमें बैठने वाले अंग्रेजी साहब अंग्रेजी में खाते है, अंग्रेजी में बोलते हैं और शायद अंग्रेजी मे सोते हैं। ये काले साहब ही हिन्दी के सबसे बड़े शत्रु है और इनका अगुवा जो हमारे देश का विदेश मन्त्री है, वह इन काले साहबों की रहनुमाई पर ही कार्य कर रहा है। यही ता कारण है कि किसी भी भारतीय दूतावास में अभी तक न तो हिन्दी में काम होना प्रारम्भ हुआ है और न ऐसी संभावना है कि किसी भी भारतीय दूतावास में हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भिक और बुनियादी तौर पर हो सकेगा और हो भी कैसे? भले ही श्री नरसिंहराव ने कुछ न कहा हो लेकिन उनकी दृष्टि में हिन्दी अधिक से अधिक अनुवाद की भाषा है, मौलिक चिंतन की भाषा उनकी दृष्टि में नहीं। और उनका कटु सत्य यह है कि भारत सरकार का कोई सरकार कोई भी मन्त्रालय हिन्दी मौलिक चिंतन नहीं करता। प्रधानमन्त्री का भी सचिवालय नहीं। हिन्दी तो अधिक से अधिक केवल वोट मांगने की भाषा है या अनुवाद की और हिन्दी भाषा-भाषी इतने मूर्ख तथा भेड़ों के रेवड़ की तरह काम करने वाले हैं कि उन्हें अपना अपमान होता दिखाई ही नहीं देता। पता नहीं देश में चल रहे भेड़ों के इस रेवड़ की कुंभकर्णी निद्रा कब समाप्त होगी और कब इनका स्वाभिमान जागेगा? जब तक हिन्दी भाषा भाषी अपनी शक्ति को पहिचानेंगे नहीं, अपने सम्मान की रक्षा के लिये कटिबद्ध नहीं होंगे, तब तक न केवल भारतीय विदेश मंत्रालय में हिन्दी का अपमान होता रहेगा और उसे अधिक से अधिक एक अनुवाद की भाषा समझा जायेगा, बल्कि देश के अन्य क्षेत्रों में भी हिन्दी को इसी अपमान और दुर्दशा से गुजरना होगा।

चलिए, मान लिया समयाभाव के कारण भारत में गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में हिन्दी में कार्रवाई भारत की ओर से नहीं की गई। नवम्बर के महीने में राष्ट्रमंडल का सम्मेलन भारत मे होने जा रहा है। देखें, इसमें कौन से तीर भारतीय विदेश मन्त्रालय मार लेता है? यदि राष्ट्रमंडल के इस शिखर सम्मेलन में भी भारतीय प्रधानमन्त्री हिन्दी में नहीं बोली और भारत की भारत की ओर से हिन्दी में कार्यवाही नहीं की गई तो उससे एक बार फिर इसी बात को ही तो पुष्टि होगी कि हिन्दी के बारे में केन्द्र के इरादे मात्र ढपोलशंखी है।

आवश्यक सूचना

समस्त सभा के अधिकारी गण एवं अन्तरंग सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि सभा के आगामी निर्वाचन का कार्यक्रम रजिस्ट्रार द्वारा प्रकाशित हो चुका है। प्रोग्राम के अनुसार १८-८-८३ को नामांकन होगया। अतः इस सम्बन्ध में निवेदन है कि जिन सज्जनों के पास सभा का प्राप्तव्य धन रसीदें तथा वाहन तथा अभिलेख फाईल आदि हों तो वे सब सभा कार्यालय में २५ अगस्त तक जमा करने का कष्ट करें।

अतः आशा है उपरोक्त को २५ अगस्त तक जमा करने का कष्ट करेंगे।

भवदीय—
कृष्णगोपाल शर्मा
कार्यालय अधीक्षक
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

अति आवश्यक सूचना

प्रतिनिधि सभा की नियमावली के नियम १७ के अधीन जिन समाजों और उपप्रतिनिधि सभाओं पर सभा का प्राप्तव्य धन शेष हैं। वह २१-८-८३ तक सभा कार्यालय मे कार्य दिवस के समय में जमा कर रसीद प्राप्त कर लें। अन्यथा वह ४-९-८३ को होने वाले चुनाव में भाग लेने से वंचित रहेंगे।

प्रबन्ध सम्पादक की आवश्यकता

आर्यमित्र के लिए एक प्रबन्ध सम्पादक की शीघ्र आवश्यकता है। जिसे पत्रकारिता का पूर्ण अनुभव हो। जो हिन्दी अंग्रेजी का अच्छा लेखक हो, प्रूफ रीडिंग का पूर्ण ज्ञान हो। गुरुकुल के स्नातक को विशेषतः वरीयता दी जायगी।

वेतन— योग्यतानुसार दिया जायगा।

शीघ्र लिखें।

—इन्द्रराज
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

श्री इन्द्रराज जी का प्रचार कार्यक्रम

१–३-७-८३ आर्य समाज सूरजकुण्ड रोड मेरठ के शिलान्यास का विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री इन्द्रराज जी ने सर्वप्रथम सत्संग हाल के निर्माण में अपने २५०/- लिखवाये तत्पश्चात् अपील करनेपर हजारों रुपया एकत्र हुआ। श्री मनोहरलाल जी प्रधान ने १०००/- तथा ओमप्रकाश जी ने ५०१/- लिखवाये। शिलान्यास स्वामी विवेकानन्द जी गुरुकुल प्रभात आश्रम के कर-कमलों से हुआ।

२–४-७-८३ मेरठ के बड़े फैक्ट्री के मालिक श्री रोशन लाल जी वर्ई के एक विशाल भवन का शिलान्यास श्री इन्द्रराज महामंत्री के करकमलों से हुआ। श्री मन्त्री जी ने इस अवसर पर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भगवान से प्रार्थना की कि रोशन लाल जी मालिक सदैव धर्म के कार्यों में लगे रहें।

३–५-७-८३ को श्री अशोक जैन की मृत्यु के उपलक्ष में एकत्रित विशिष्ट नागरिकों की शोक सभा में श्री इन्द्रराज जी ने सत्संग को नश्वरता और मानव जीवन की उत्कृष्टता पर वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

४–६-७-८३ राजप्लास्टिक मल्याना मिल के द्वारा आयोजित एक यज्ञ में श्री इन्द्रराज जी ने एकत्रित जनसमूह को वैदिक संस्कारों की उत्कृष्टता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। इसी दिन मेरठ के सम्भ्रान्त प्रकाशक स्व० पीताम्बरशरण जी रस्तोगी के वार्षिक शान्तियज्ञ मे स्व० पीताम्बर जी को श्रद्धांजलि देते हुए मानव जीवन की उत्कृष्टता पर प्रकाश डालते हुए श्री स्व० पीताम्बर जी के गुणों को अपनाने की प्रेरणा की। इस अवसर पर परिवार की ओर से गुरुकुल प्रभात आश्रम के लिए १००१/- दान किए गए।

५–७-७-८३ को प्रातः ८ बजे एक हरिजन बस्ती छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए राजेश विद्यामंदिर भरतपुर का उद्घाटन यज्ञ श्री इन्द्रराज जी द्वारा सम्पन्न करवाया गया। इस अवसर पर एकत्रित जन समूह मे बोलते हुए श्री मन्त्री जी ने आर्य समाज के अछूतोद्धार का विशेष उल्लेख किया तथा राजेश विद्यामन्दिर के संयोजकों को इस कार्य के लिए बधाई दी।

५–८-७-८३ आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर के एक यज्ञ मे बोलते हुए श्री इन्द्रराज जी ने इण्टर कालेज के शतप्रतिशत परिणाम पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बच्चों को पढ़ने, अनुशासन में रहने की प्रेरणा की तथा श्री मनोहर लाल जी प्रधान तथा अधिकारी वर्ग विशेषतया श्री स्वराज्यचन्द्र जी प्रबन्धक एवं अध्यापक वर्ग को इसके लिए बधाई और धन्यवाद दिया।

७–९-७-८३ को पञ्जाब रेडियोज खैर नगर के नए कार्य का उद्घाटन यज्ञ करते हुए श्री इन्द्रराज जी द्वारा हुआ जिसमें उन्होंने व्यापार के सिद्धान्तों पर वेद के आधार पर प्रकाश डाला।

८–दो गरीब कन्याओं के विवाह के अवसर पर श्री इन्द्रराज जी ने घी, अन्न वस्त्र, सन्दूक, बिस्तर आदि की व्यवस्था कर उनके पाणिग्रहण संस्कार में सहयोग किया। डा० सरस्वती माली, श्री मनोहरलाल जी प्रधान आदि सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

९–ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी एवं निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर के निमित्त आयोजित जिला सभा एवं केन्द्रीय आर्य समिति की बैठकों में श्री इन्द्रराज जी ने कार्य जोर-शोर से प्रारम्भ करने का आवाहन किया।

१०–२०-७-८३ को प्रिय राजीव खन्ना को अमरीका जाने सम्बन्धी यज्ञ में बोलते हुए प्रिय राजीव खन्ना को अमरीका में अपना कोर्स पूरा करते हुए देश के गौरव की रक्षा की प्रेरणा की। तथा वहां से कठोर परिश्रम कर सफल होकर आने की भगवान से प्रार्थना की।

११–२३-७-८३ को बिजनौर में मुशायरा के अवसर पर श्री जयनारायण जी अरुण सभा उपमन्त्री द्वारा आयोजित काव्य संगम में पद्मश्री से अलंकृत श्री रघुवीर शरण जी के साथ श्रीइन्द्रराजजी बिजनौर पहुंचे। काव्य संगम में पद्मश्री श्री रघुवीरशरण जी के परिचय में बोलते हुए श्री इन्द्रराज जी ने पंजाब में खालिस्तान, मद्यपान, दहेज हत्या है और गोहत्या की चर्चा की तथा कवियों को युग को पलटने देने की प्रेरणा की। कवि क्रान्तिदर्शी होता है और युग को पलटने की क्षमता रखता है। बच्चन जी, व्यासाजी, कृष्णमित्र, क्रान्तिकारी जी, गुलशन जी, पद्मश्री, अरुण जी, आदि की महान् कवियों के पाठ के पश्चात अध्यक्ष पद्मश्री रघुवीर शरणजी की वीर रस की ओज पूर्ण कवितायें हुईं।

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक आर्य विद्या मन्दिर का उद्घाटन

१२ जून १९८३ को महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक आर्य विद्या मन्दिर बान्दरा का उद्घाटन महाराष्ट्र के श्रममन्त्री श्रीसतीश पेडणेकर के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

आर्य विद्या मन्दिर सोसाइटी १९७० से आर्य विद्या मन्दिर, सान्ताक्रुज का संचालित कर रही है तथा इसकी दूसरी शाखा महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक आर्य विद्या मन्दिर,बान्दरा का उद्घाटन समारोह महाराष्ट्र के श्रममन्त्री एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाशजी त्यागी की समुपस्थिति में बहुत ही सोत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। बम्बई महानगरी के कोने-कोने से आये हुए दर्शकगण अपार हर्ष का अनुभव कर रहे थे। विद्यालय में बने हुए यज्ञशाला, कार्यशाला, अध्ययनकक्ष, भोजनकक्ष, कार्यालय, क्रीडांगन को देखकर सभी हर्षित हो रहे थे।—मन्त्री

– १२ जुलाई को केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद के तत्वावधान में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में शिक्षक शिविर सम्पन्न हुआ। –चन्द्रमोहन

– आर्य समाज मंदिर घूंनो (खीरी) का निर्माण हो रहा है। स्थानीय तथा जिले की समाजों ने अच्छा दान दिया है। दानी लोगों को इस कार्य में सहायता करनी चाहिए।

मंत्री

– सभा के प्रचारक श्री शिव देवजी वेधड़क नेआर्यसमाज कमास (आजमगढ़) में ५ से २५ जुलाई तक वैदिक धर्म का प्रचार किया।

– शिवदेव

– १६ जुलाई को गाजीपुर के जिला कृषि रक्षा अधिकारी श्री योगीन्द्र प्रसाद की आयुष्मती पुत्री कु० ऋचा का पाणि ग्रहण संस्कार तुलसीपुर समाज वाराणसी के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

– राम प्रसाद

– जमानिया (गाजीपुर) के श्री गोवर्द्धन प्रसाद का अन्त्येष्टि संस्कार ९ जून को गंगातट पर वैदिक रीति से किया गया।

नारायण प्रसाद मंत्री

– आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी ने श्री नन्द लाल जी की धर्मपत्नी एवं क्रान्ति कुमार जी के निधन पर दुःख प्रकट किया है। वेदारी लाल मंत्री

आदर्श विवाह

गुरु विरजा नन्द स्मारक के व्यवस्थापक श्रीस्वामीकर्मानन्दजी ने महर्षि दया नन्द के आदर्शों के अनुकूल एक कन्या किन्ही मुसीबतों में से नारी निकेतन मथुरा से लेकर कु० मालती देवी का विवाह वैदिक पद्धति से आर्य समाज तिलक द्वार में अशोक के चि० उज्वल शर्मा पुत्र श्री बाबू लाल शर्मा से दि० ५।७।८३ में सम्पन्न कराया जो अपने में प्रशंसनीय कार्य है।

देवेन्द्र कुमार विद्याभास्कर

– नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर द्वारा २८ वर्षीय नवयुवक जियाउद्दीन पुत्र श्री अब्दुल मोईद चौधरी निवासी (रजाबगंज) साहबगंज गोरखपुर का शुद्धि संस्कार सम्पन्न किया गया।

–रमेश प्रसाद गुप्त मंत्री

धर्मान्तरण सर्वाधिक गम्भीर राष्ट्रीय समस्या

३ जुलाई आर्य समाज बख्शी पुर गोरखपुर के सभाकक्ष में आर्य समाज के कार्य कर्ताओं तथा जिला आर्य उपसभा के पदाधिकारियों, सदस्यों की संयुक्त बैठक को सम्बोधित करते हुए सभा उपमंत्री श्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने कहा कि धर्मान्तरण आज की सर्वाधिक गम्भीर राष्ट्रीय समस्या है। सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से जो लोग पिछड़े हुए हैं उनमें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का संदेश पहुंचाकर हम धर्मान्तरण की चुनौती का सामना कर सकते हैं। आगे आपने कहा कि पूर्वांचलीय जनपदों में वेद प्रचार योजना के क्रियान्वयन में अपेक्षित तेजी नहीं आनी है इसके लिये आर्यजनों को विशेष रूप से सक्रिय रहने की आवश्यकता है, आर्यजनों के इस कार्य में हर सम्भव सहयोग के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० तत्पर है। अतः हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम सभा द्वारा प्रति पादित धर्म रक्षा अभियान को आगे बढ़ायें तथा आर्य विचार धारा का विस्तार करें।

जय प्रकाश भारती

पंजाब सुरक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया।

सारे आर्य जगत् में २४ जुलाई को पंजाब सुरक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्रस्ताव पास किए गए। और प्रधान मंत्री से प्रार्थना की गई कि उग्रवादियों को सख्ती से दबाया जाय और गुरुद्वारों में छिपे विद्रोहियों को बाहर निकालकर इन्हे दण्डित किया जाय। पंजाब सरकार को बर्खास्त करके राष्ट्रपति शासन कायम किया जाय। आर्य समाज सरकार के साथ हैं।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली। आर्य समाज देहरादून, आर्य समाज गाजियाबाद, आर्य समाज आगरा नगर, आर्य समाज कालपी, आर्य समाज कोसी कला, आर्य समाज चन्दौसी नगर आर्य समाज लखनऊ, आर्य समाज गवां (बदायूं), आर्यसमाजचौक लखनऊ, आर्य समाज छपरौली (मेरठ) आर्य समाज मड़ियाऊ आर्य समाज उन्नाव, आर्य कन्या इण्टर कालेज आर्य नगर (बदायूं) आर्य समाज सहतवार (बलिया), आर्य समाज अमरोहा,

शुभ विवाह

–श्रीमती संतोष रंगन प्रधान आर्य समाज हरिद्वार तथा श्री ज्ञान चन्द्र जी रंगन-इन्जिनियर नगरपालिका हरिद्वार की पुत्री कु० रश्मि का पाणिग्रहण संस्कार कैप्टन हरीश अरोड़ा हरिद्वार के साथ दि० ५।६।८३ को देवपुरा कालोनी हरिद्वार में श्री आचार्य राम प्रसाद जी वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार तथा आचार्य धर्मपाल जी मेरठ एवं श्री देवेन्द्र जी विद्या भास्कर पुरोहित आर्य समाज हरिद्वार के आचार्यत्व मे पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

आर्य कुमार सभा गोण्डा

आर्य कुमार सभा गोण्डा का उत्सव १० से १३ दिसम्बर तक मनाया जायगा। श्री नारायण स्वामी क्रान्तिकारी की स्वीकृति मिल गई है।

बलबीर श्रीवास्तव मंत्री

–आर्य उपप्रतिनिधि सभा झांसी ने कर्मठ आर्य कार्यकर्ता एव आर्य समाज शहर के पूर्व प्रधान जी सीता राम जी धर्मपत्नी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है।

–वेदारी लाल मंत्री

शुद्धि विवाह संस्कार

दिनांक २२ जुलाई को आर्य समाज खुरजा में ईसाई कुमारी ओलिव सेमुअल का शुद्धि संस्कार सम्पन्न हुआ। आपका नाम कुमारी सुषमा रक्खा गया। उसी समय कु० सुषमा का विवाह संस्कार खुरजा निवासी श्री सूरजपाल सिंह पुत्र श्री माधो सिंह के साथ सम्पन्न हुआ। मंत्री

उत्सव

आर्य समाज गढ़ी कांग राम (मेरठ) का उत्सव २२ से २५ अगस्त तक मनाया जायगा।

धर्म पाल सिंह मंत्री

निर्वाचन

आर्य कन्या इण्टर कालिज इस्लामनगर (बदायूं)

प्रधान–श्री दयाशंकर आर्य
प्रबन्धक–श्री राम कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री शिव ओम

आर्य समाज सिरसा (इलाहाबाद)

प्रधान–श्री कमला प्रसाद
मंत्री–श्री कैलाश चन्द्र
कोषाध्यक्ष–श्री भोला नाथ

आर्य समाज बांसी (बस्ती)

प्रधान–श्री शेष दत्त एडवोकेट
मंत्री–श्री मोती लाल आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री अम्बिका प्रसाद

आर्य समाज वैदिक आश्रम ऋषिकेश

प्रधान–श्री राम लाल
मंत्री–श्री महिपाल सिंह
कोषाध्यक्ष–श्री प्रकाश आर्य

पं० गंगाप्रसाद वाजपेयी का निधन

श्री पं० गङ्गा प्रसाद वाजपेयी भूतपूर्व जिला जज मध्य प्रदेश तथा जामात्-लखनऊ के कर्मठ आर्य नेता स्व० रहस बिहारी तिवारी का निधन लम्बी बीमारी के बाद अहमदाबाद में २२ जुलाई १९८३ को हो गया।

वाजपेयी जी आर्य नगर लखनऊ के निवासी थे। आर्य समाज गणेश गंज के सदस्य तथा अधिकारी रहे और सेवा से अवकाश के बाद आर्य समाज के कार्यों में सक्रिय कार्यरत रहे। गणेश गंज लखनऊ आर्य समाज के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के फूफा थे। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समितियों के सदस्य रहे। आर्य साहित्य के अध्ययन के प्रति सदैव अभिरुचि रखते थे।

वाजपेयी जी के निधन से एक निष्ठावान योग्य आर्यजन हमारे बीच से चला गया। 'आर्य मित्र दुःखी परिवार के प्रति पूर्ण सहानुभूति प्रकट करता है और प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगतात्मा को शान्ति प्राप्त हो।

श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य समाज गणेश गंज तथा प्रबन्धक डी० ए० वी० कालेज ने निधन का समाचार सुनने पर शोक विह्वल होकर कहा कि वाजपेयी जी हमारे बीच मे वयोवृद्ध थे और आर्य समाज तथा विद्यालय के गम्भीर मसलों पर हमें परामर्श देते थे। खेद है कि हमारे पितामह स्वर्गीय रहस बिहारी तिवारी के युग के एक कर्मठ व्यक्ति हमारे मध्य अब नहीं है।

आर्य समाज गणेश गंज तथा डी० ए० वी० कालेज के अध्यापक तथा छात्रों की शोक सभाएं हुई और दिवंगतात्मा के लिए शान्ति तथा दुःखी परिवार के प्रति समवेदना प्रकट की गई।

— आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक १९-७-८३ को आर्यसमाज रामपुरा कोटा एवं इसाई युवती कुमारी मार्टिना हेन्द्री आत्मजा लायन्स हेन्द्री निवासिनी अजमेर को स्वेच्छा से शुद्धि कर वैदिक धर्म में प्रविष्ठ किया तथा इनका नाम मीनाक्षी देवी रखा गया।

इनका विवाह श्री मनोराम आत्मज श्री गोविन्द सिंह निवासी रामपुरा कोटा के साथ श्री राम सिंह जी निर्भय के प्रयास से किया गया।

मन्त्री

—१२ जून को आर्य समाज हापुड़ में एक शोक सभा हुई, जिसमें श्री शादी नीलाम् की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया। नीलाम की मृत्यु दहेज की रकम कम मिलने पर इसमें घर के सभी लोग सम्मिलित हो। प्रस्ताव पास करके प्रभु प्रार्थना की गयी है कि वह ऐसी घटनाएं होने दें।

मंत्री

—आर्य समाज सेखूपुर (बुलन्दशहर) का उत्सव २५ से २८ जून मनाया गया।

मंत्री

— आर्य समशेरगढ़ (बालाबाला) देहरादून के श्री जगत नारायण का देहान्त हो गया। आर्य समाज ने शोक प्रकट किया है।

मंत्री

वेद ज्योति का प्रकाश

(पृष्ठ ३ का शेष)

१—'इच्छन्ति देवा सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहन्ति।'
इन्ति प्रमादं अतन्द्रा अर्थात् देवता लोग कर्मवीर को पसन्द करते हैं, आलसी, प्रमादी को नहीं। देवता प्रमादी को नष्ट करते हैं।

२—'योजागार तमृचः कामयन्ति। योजागार ममुंसामानियन्ति।'
योजागार तमयम् सोम आह तवाह मस्मि सख्ये न्योक।'
अर्थात्—जो जागता है चैतन्य है, उसको ऋग्वेद पसन्द करता है। जो कर्मकाण्डी है, आलस्यहीन है उसी से भगवान् कहते हैं कि मैं तेरा मित्र हूं। हिन्दुओं ने इन दोनों ऋचाओं पर यदि ध्यान दिया होता, तब हिन्दू पराधीन नहीं होते। हिन्दुओं को मतमतान्तरों ने आलसी, प्रमादी अन्ध विश्वासी बना कर, कर्म से तथा वीरता से रोककर बहुत हानि पहुंचाई। इस कारण स्वामी दयानन्द ने इन मतों का खण्डन किया तथा केवल 'वेद' को ही आर्यों का धर्म पुस्तक ठहराया तथा घोषणा की :—"वेद एवं परोधर्मः यद् अन्यत्तत् विपर्ययः।"

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष ४०७९३ ४२६६८
पंजीकरण सं० एल० डब्लू/एन०पी० ७
वा० श्रावण ३०
श्रावण शुक्ल १३ रविवार
२१ अगस्त १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख

—गुजरात में भयंकर बाढ़ के कारण हजारों व्यक्ति घर परिवार विहीन नगर बनावेगी जिसका नाम दयानन्द नगर होगा।

—मंगलसेन चोपड़ा

—हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन २४, २५ सितम्बर को भिवानी में मनाया जायगा।

—उत्तमचन्द्र शरर

—आर्यास एवं विकास परिषद् लखनऊ के मुख्यालय में स्वतन्त्रता दिवस समारोह से मनाया गया।

—सत्यदेव
मन्त्री

—आर्य समाज शाहकोट (गोण्डा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद आर्य की आयुष्मती पुत्री सुशीला देवी का शुभ पाणि ग्रहण संस्कार दि० १७ जून ८३ को ग्राम बटका निवासी छत्रपाल के पुत्र के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

—आवास एवं विकास परिषद लखनऊ के मुख्यालय में स्वतन्त्रता दिवस समारोह से मनाया गया।

सत्यदेव मन्त्री

—आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद) का उत्सव २५ से २६ सितम्बर तक मनाया जायगा।

मन्त्री

जिला सभा मीरजापुर के मन्त्री श्री देवन सिंह सूचित करते हैं अजमेर शताब्दी के लिए दो बसें ३६ अक्टूबर को १२ दिन के लिए जायेंगी। चलने के जाने वाले १००) अग्रिम मेरे पास देवें। अन्तरंग २५ सितम्बर को दुर्गा जी कुमार में ११ बजे होगी।

देवनसिंह मन्त्री
मन्त्री

—आर्य समाज ननरेडा (सहारनपुर) श्री देवराज योगेन्द्र पाल शास्त्री महाशय दिलेराम पौ० यशपाल की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है।

—सत्यवीर सिंह शास्त्री

—२३ जून को आर्य समाज चौक शाहाबाद के श्री

मन्त्री

महावत्त जी भिक्षु का निधन हो गया।

मन्त्री

—आर्य समाज अंगार नगर के भूतपूर्व प्रधान श्री विद्या सागर बब्बर का निधन हो गया। आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास करके गहरा दुःख प्रकट किया है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

प्रकाश बब्बर
प्रधान

—३ जुलाई को डा० मेवा लाल का विवाह एक विधवा महिला से कोल्हापुरम किया गया।

मन्त्री

—आर्य समाज ताड़ी खेत मे ११ जुलाई को श्री लालमन आर्य शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री कन्या हारी जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

मन्त्री

प्रकाशक-स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए जयनारायण आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से मुद्रित

लखनऊ-बा० भाद्रपद २०, २७ भाद्रपद शु० ५, १२ रविवार सम्वत् २०४० वि०, ११ एवं १८ सितम्बर सन् १९८३ ई०
११, १८ का संयुक्त-अङ्क

आत्मा और इन्द्रियों का सम्बन्ध

ओ३म । समीचीनास आसते होतार स्प्त जामय । पदमेकस्य पिप्रत । ऋ० ८।१०७

(सप्त जामय) सात भोग साधन—सात इन्द्रिया (होतार) दान आदान करती हुई, लेती देती हुई (एकस्य) एक—आत्मा के (पदम्) ठिकाने की (पिप्रत) रक्षा करती हुई (समीचीनास। ठीक ठीक (आसते) रह रही है।

आख, नाक, कान, स्पर्श जिह्वा मन तथा बुद्धि अथवा आख, नाक, कान, स्पर्श, जिह्वा हाथ और पाव ये सात जामि भोगसाधन हे [चमु, छमु, जमु, झमु, अदने—चम, छम, जम, झम धातुओ का अर्थ खाना—भोगना है] इन्द्रिया लेती भी हैं और देती भी है। आख रूप का ज्ञान आत्मा को देती है, कान शब्द आत्मा के पास पहुचाता है। नाक गन्ध का ज्ञान कराती है। जिह्वा रस देती है। स्पर्श सरदी गरमी, नरमी गरमी का पता कराती है इत्यादि। अन्न पानादि से ये अपना अपना भाग लेती है। भोजन न मिले तो आख, नाक आदि की तो बात क्या, स्मृति भी नष्ट हो जाती है। दीर्घ उपवास करने से यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है। इसी से इनको 'होतार कहा है। इनका लक्ष्य है—आत्म के ठिकाने की, या प्राप्तव्य की रक्षा करना।

आत्मा शरीर में रहता है। शरीर भोजन तथा वायु के सहारे रहता है। नाक वायु को अन्दर ले जाकर शरीर की रक्षा करता है। जिह्वा से भोजन अन्दर ले जाते हैं, नाक उसकी सुगन्ध दुर्गन्ध का परिचय कराके उसकी हेयता या उपादेयता का बोध कराती है। इस प्रकार यह इन्द्रिय मिलकर उस आत्मा के शरीर की रक्षा सी करती है। अर्थात ये आत्मा के कारण हैं, और कि शरीर के अन्दर उसका अभिमानी आत्मा एक है इसको

पदमेकस्य पिप्रत —[एक के पद को कर रही है] के द्वारा व्यक्त किया है।

यदि ये आत्मा के पद का—शरीर का पालन करें, तो वह समीचनास —उत्तम गति वाली हैं, क्योकि तब ये अपने लक्ष्य की सिद्धि मे रत है। किसी न हमारे आगे अत्यन्त उत्तम सुमधुर पकवान्न आदि रख दिये। हमने स्वाद के लोभ मे आकर अधिक खा लिये। परिणाम किसी रोग के रूप मे हमारे सामने आता है। अब यह जो स्वाद की लालसा मे आवश्यकता से अधिक खाया गया, वह शरीर की रक्षा के लिये नहीं था, इससे शरीर को हानि हुई। अत इन्द्रिया समीचीन न रहीं। इन्द्रियां समीचीन—समता की गति से चलेंगी, तब तो शरीर की रक्षा होगी। यदि ये प्रतीचीन—उल्टा चाल चलेंगी, तो शरीर को हानि पहुचायेंगे। इसी प्रकार इन्द्रियो की चाल यदि शरीररक्षा निमित्त है तो इन्द्रियां समीचीन है, अन्यथा प्रतीचीन हैं।

यज्ञ मे कई ऋत्विज होते हैं। उनमे ऋग्वेद से जो कार्य्य कराता है उसे होता कहते हैं। ऋग्वेद का काम यथार्थ ज्ञान कराना है। इन्द्रिया यदि यथार्थ ज्ञान कराती हैं तो ये होता है।

मन्त्र ने संक्षेप से आत्मा, इन्द्रियो और शरीर का सम्बन्ध बतला दिया है। इन्द्रिया आत्मा की करण हैं, शरीर पर भोग प्राप्ति का आधार है। ये दोनो आत्मा के लिये हैं, आत्मा इनके लिये नहीं।

चन्दा देश	
वार्षिक	१६)
छमाही	८)
विदेश में	१ पौंड
एक प्रति	४० पैसे

प्रधान सम्पादक—
पं० इन्द्रराज
सभा मन्त्री

वर्ष ८६ अङ्क संयुक्त अङ्क ३४-३५

प्रार्थना

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥

—ऋ० १०-९०-१

अर्थ—विराट पुरुष अनन्त सिरो वाला है अर्थात् जड़ चेतन एवं सर्वत्र व्याप्त होने के कारण सभी प्राणियों के सिर उसके सिर हैं। इसी प्रकार सहस्र नेत्रों वाला है। सहस्रो पैरों वाला है। वह ब्रह्माण्ड को सब ओर से घेरकर केवल अंगुली परिमित स्थान को ब्रह्माण्ड से बाहर व्याप्त करके स्थित है अर्थात् वह परमपुरुष इस ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर व्याप्त है।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को अन्तरङ्ग सभा की बैठक २५ सितम्बर रविवार को प्रातः १०–१/२ बजे से नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में प्रारम्भ होगी। सभा के सभी माननीय अधिकारियों और अन्तरङ्ग सदस्यों से प्रार्थना है कि वे उक्त अवसर पर पधार कर सभा के कार्य में सहयोग प्रदान करें। विनीत-

इन्द्रराज
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

आर्यमित्र

लखनऊ—रविवार, ११ व १८ सितम्बर १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय—

निर्वाण शताब्दि के अवसर पर

एक विचार

हर्ष है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दि आगामी दीपावलि के अवसर पर अजमेर मे सर्वसम्मति तथा विशाल रूप से मनाई जा रही है। सार्वदेशिक सभा एवं परोपकारिणी सभा का समन्वयात्मक प्रयास जहां शताब्दि समारोह को ऐतिहासिकता प्रदान करेगा वहीं यह भी अपेक्षित है कि समस्त आर्यजन अपनी त्रुटियों पर विचार करें। उनका निवारण करें और सौ वर्षों मे हमने जो कुछ किया है उसका मूल्यांकन करते हुए भविष्य मे कम से कम आगामी पचीस वर्षों का ठोस कार्यक्रम बनाया जाय, जिस पर समस्त आर्यजन एक मन से, एक वाणी से एवं एक पदगति के साथ चल कर भारत एवं विश्व मे नवीन जागरण की ज्योति जगा सकें और निर्माण की सही दिशा का सूत्रपात कर सकें।

आज हम आर्यजनों मे भी कुछ कमियां हैं, वह हमारे संगठन और उद्देश्य मे न्यूनता के कारण नहीं है अपितु मानव स्वभाव में कभी तामसी प्रवृत्ति की अधिकता होनेपर आ जाती है उनका निवारण होना चाहिए। वह दो दोष है लिप्सा तथा मोह तथा इनके प्रबल होने पर कलह स्वतः उत्पन्न हो जाती है जो विवेक पर पटाक्षेप कर देती है और मनुष्य विवश करता हुआ न्यायालयों के द्वार पर याचना प्रारम्भ करने लगता है।

आर्य समाज के संगठन के आन्तरिक ढांचे मे खींचतान की कमी नहीं है। लघु इकाई से लेकर बृहद् तक कुछ न कुछ मनोमालिन्य और पद मोह दिखाई पड़ता है। निर्वाचनो के विवाद और सम्बन्धी साधारण सी बात है। अतः अवसर है कि ज्योति पुञ्ज महर्षि की निर्वाण शताब्दि के अवसर आर्यजन अपने अन्दर का तामस और अन्धकार दूर करें। मेरे विचार से एक कार्यक्रम इस प्रकार अपनाया जाय जो शपथ ग्रहण के रूप मे हो। जैसे जब बृहद् ओलम्पिक (क्रीडाओं) का आयोजन होता है तो प्रत्येक प्रतियोगी एक शपथ लेता है कि खेल को प्रेम की भावना से और अनुशासन से निष्पन्न किया जायगा उसी प्रकार से निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर किसी एक शुभ दिवस और समय पर अजमेर मे एकत्रित समस्त आर्य जन शपथ लें जो इस आशय की हो·

'हम आर्यजन वैदिक ध्वज को साक्षी मानकर शपथ लेते हैं कि आपसी विवाद और कलह में अपना मूल्यवान समय नष्ट नहीं करेंगे। पद का मोह हमें नहीं होगा। हम सहर्ष नवीन रक्त और नव प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर देंगे। किसी प्रगति में बाधक नहीं होंगे। परनिंदा, कुयोजनायें हमारे मस्तिष्क में नहीं होगी, केवल एक लक्ष्य होगा कि आर्यसमाज के उद्देश्यों की पूर्ति कैसे हो और उसी की उपलब्धि में प्रयत्नशील होंगे। अनुशासन हमें प्रिय होगा। आर्य समाज के विवादों को न्यायालय में न ले जाकर संगठन के प्रमुखों के आदेश को मानेंगे और पद विहीन स्थिति मे पदो पर रहने वालो से अधिक कार्य करेंगे। वेदाध्ययन, यज्ञ, हवन हमारे जीवन के दैनिक कार्य यथासाध्य होंगे।

अजमेर मे निश्चित समय और दिन समस्त आर्यजन एकत्रित हो। सार्वदेशिक सभा के प्रधान या कोई आदरास्पद आर्य संन्यासी शपथ वाक्य पढ़े—उपस्थित जनसमूह दोहराये और प्रक्रिया पूर्ण हो।

यह निश्चय है कि सभी आर्यजन अजमेर नहीं पहुंच सकते हैं, अतः उपर्युक्त आशय का शपथ पत्र को समोचित और परिवर्तित किया जाय लाखों की संख्या में सार्वदेशिक सभा तथा प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा द्वारा मुद्रित कराये जाय और जिस समय अजमेर में शपथ ग्रहण की जाय उसी समय समस्त भारत और विदेशों की आर्यसमाजों में निर्वाण दिवस मनाया जाय और शपथ ग्रहण की जाय।

अनुमान है कि इस प्रक्रिया से कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, कलह कम होगी। निर्वाचन और पदों तथा आर्य समाज से सम्बन्धित सम्पत्तियों के विवाद कम होंगे। श्रीमान स्वयं पद त्यागकर अन्य योग्य जनों को भार सौंपने का आह्वान करेंगे। न्यायालय के विवाद शान्त होंगे तथा सभा प्रधानों और समाज प्रधानों की मर्यादा बढ़ेगी।

शपथ पत्र की भाषा और भाव मे आवश्यक परिवर्तन हो—हमने तो आशय मात्र प्रस्तुत किया है। सार्वदेशिक सभा प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा को दायित्व सौंपे और प्रादेशिक सभायें जनपदीय उप प्रतिनिधि सभाओं और ईकाई आर्यसमाजो द्वारा इस कार्य को सम्पन्न करे। इस समस्त आर्यजन सारे भारत और विश्व में एक-सी शपथ ग्रहण करें, इससे संगठन में नव-प्राण का संचार होगा।

मेरा एक विनम्र विचार और सुझाव है। संगठन में अनुशासन लाने का। आशा है कि विज्ञ आर्य जन और आर्य जगत् के नेता इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे तथा अन्य विचारकों के विचार जानने का अवसर मिलेगा।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

"चरित्रांस्ते शुन्धामि"

आचार्य अनन्त विभूषित स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीका-ग्राम—मेरठ (उ० प्र०)

यदि भवन में प्रकाश के लिए विद्युत के समस्त उपकरण हों अर्थात् तार, स्विच, बल्ब सभी कुछ हों और यथा स्थान युक्त भी हों, वे सभी उपकरण निर्दोष विकार रहित भी हों, उसका प्रयोगकर्त्ता व्यक्ति भी प्रबुद्ध हो, किन्तु इन सबके होने पर भी यदि भवन प्रकाश युक्त न होरहा हो तो बात स्पष्ट हो जायेगी कि विद्युत संचार के बाह्य उपकरण तो हैं, परन्तु उनमे संचार करने वाली विद्युत शक्ति का अभाव है, जिस के कारण बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् भी भवन का स्वामी अपने भवन में प्रकाश नहीं पा रहा है। इसी प्रकार वर्तमान युग में मनुष्य को सुखी बनाने के समस्त साधन विज्ञान के द्वारा उपलब्ध करा दिये गये हैं और जो कुछ अवशिष्ट हैं उनको उपलब्ध कराने का यत्न किया जा रहा है। किसी ने सुझाव दिया कि शिक्षा के बिना सब व्यर्थ है, तो सुशिक्षित करने के लिये स्थान-स्थान पर विद्यालय महाविद्यालय, विश्वविद्यालय प्रौढ़ शिक्षणालय की बाढ़-सी आई है। भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में सब को सुशिक्षित करने का अभियान अतिवेग से चल रहा है। नित्य नूतन विकास हो रहे हैं।

आज विश्व अत्यन्त छोटा होकर एक ग्राम का रूप ले चुका है। आपस में विचार के आदान-प्रदान के साधन इतने विकसित हो गये हैं कि विचार विनिमय एक सहज कार्य हो गया है। मानव को सुखी सम्पन्न बनाने में में यदि प्रकृति बाधक बनी तो उसको विजित कर इच्छानुसार उससे कार्य लेने का प्रयास किया जा रहा है। किन्तु कठोर श्रम करने के पश्चात् अपने चतुर्मुखी विकास कर लेने के उपरान्त भी मनुष्य सुखशान्ति से कोसों दूर है। उसके लिये सुख शान्ति सुन्दर का पुष्प बनी हुई है। जीवन निराशा से परिपूर्ण हो गया। जिन साधनों का विकास उसने सुख शान्ति के लिये किया था वे साधन ही उस को और अधिक दुःखी एवं अशांत बना रहे हैं। विश्वविद्यालय हो या कार्यालय, घर हो या उद्योग-शाला, गुरु शिष्य, पति—पत्नी, पिता पुत्र, स्वामी भृत्य, क्रेता-विक्रेता सभी स्थानों पर सभी के अन्दर अशान्ति और दुःख ही दृष्टिगोचर हो रहा है।

यदि हम सब शान्त होकर विचार करें तो हमें स्पष्ट हो जायेगा कि जिस प्रकार भवन में प्रकाश के समस्त उपकरणों के रहते हुए भी विद्युत संचार के बिना भवन का स्वामी प्रकाश नहीं पा रहा है। उसी प्रकार सुख सम्पन्नता के सभी साधनों के उपस्थित होने पर भी मनुष्य सुख शान्ति से वञ्चित हो रहा है। क्यों ? इसके साधनों में भी विद्युत स्थानीय कोई वस्तु है जिसके अभाव में वह अशान्त है और वह वस्तु है चरित्र। चरित्र के बिना मानव जाति का जीवन अंधेरे से आवृत है। इसी लिए महर्षि व्यास ने महाभारत में कहा :—

'वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्त-मायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्त-तस्तु हतो हतः॥

महाभारत ३२.१०

मनुष्य को चरित्र एवं आचार की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता जाता रहता है। जो धन से हीन है वह क्षीण नहीं, किन्तु जो चरित्र से हीन है वह सर्वथा नष्ट हो जाता है। महर्षि व्यास के अनुसार यदि वह किसी व्यक्ति या समाज का चरित्र नष्ट हो गया तो वह व्यक्ति या समाज अवश्यमेव नष्ट हो जाता है। चरित्र जीवन का आधार है। उसके बिना जीवन प्राण हीन देह के तुल्य है। यजुर्वेद के अन्दर मन्त्र आया है :—

'ओम् :—वाच ते शुन्धामि प्राण ते शुन्धामि चक्षुस्ते
शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुंधामि मेंढ्रम् ते
शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि॥'

यजुर्वेद अ० ६।मं १४॥

इस मन्त्र का विनियोग शतपथ ब्राह्मण में पशुयाग के प्रकरण में किया गया है। वहां चरित्र शब्द का अर्थ पाद: दर्शाया है पन्निर्वं प्रतितिष्ठति प्रतिष्ठित्या एवं तदेनं प्रतिष्ठापयति।' अर्थात् जिससे प्रतिष्ठित होता है।

महीधर उव्वट ने भी चरित्र का अर्थ इस निर्वचन के साथ 'चरन्ति गच्छन्ति सुपरिचरन्ति एभिः चरित्राः पादाः' पैर ही किया है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने यजुर्वेद भाष्य में 'चरित्राम्' का अर्थ 'व्यवहारमान्' किया है तथा स्वामी समर्पणानन्द जी ने भी शतपथ ब्राह्मण के भाष्य में चरित्र का अर्थ व्यवहार ही किया। महीधर उव्वट की निरुक्ति के अनुसार भी चरित्र शब्द का सत्यार्थ व्यवहार ही सिद्ध होता है। क्योंकि जिस प्रकार यदि स्थूल शरीर पैर के द्वारा ही इधर उधर गति करता है उसी प्रकार जीवन रूपी शरीर अपने व्यवहारों के द्वारा ही इधर उधर गति करता है। उसके बिना वह गति करने मे असमर्थ है और गति के अभाव में ज्ञान और प्राप्ति, जो गति के दो अर्थ शेष रहते हैं, उनको प्राप्त नहीं कर सकता।

चरित्र शब्द व्याकरण के अनुसार .—

'चर, गतिभक्षणयो.' धातु से 'अर्तिलूधूसूखनसहचरः इत्रः।'

अष्टाध्यायी अ. ३।सू० १८४

इस सूत्र से करण अर्थ मे इत्र प्रत्यय होकर बना है। जिसका कोई भी वैयाकरण यही निर्वचन करेगा :—

'चरति गच्छति येन तत् चरित्रम्' जिसके द्वारा जाता है एक स्थान से दूसरे स्थान पर और एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करता है। व्यवहार के द्वारा मनुष्य एक दूसरे के पास आता है, उसके सम्पर्क में आता है और एक दूसरे के पास जाता है, उसके सम्पर्क मे आता है और एक दूसरे का उपकारक बनता है। जीवन में जिन मार्गों से उस चरित्र (व्यवहार) रूपी स्रोत का उद्गम होता है उनका मन्त्र के अन्दर पूर्व ही श्रुति ने वर्णन कर दिया है। वाणी, नासिका, नेत्र, कान, नाभि। शिश्न, गुदा इनके व्यवहार में जो व्यक्ति जितना पवित्र हैं वह उतना ही अधिक चरित्रवान् है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पुरुषार्थ

(श्री स्वामी-ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"–आर्य नव युवक संघ–हरकरी बदायूं (उ० प्र०)

"स्वयम + वाजिन् + तन्वम् + कल्पयस्व" (यजु०, २३।१५)

अर्थ–हे समर्थ = शक्ति युक्त आत्मन् तू अपने आप ही अपनी उन्नति करने में सक्षम है। तू अपने कार्य विस्तार को चाहे, जितना ही विस्तृत करे, कर सकता है। तेरी उन्नति का राज तेरे ही भीतर निहित है।

पुरुषार्थ मानव का सच्चा भूषण है। निज बाहु बल अपने पुरुषार्थ से प्राप्त सूखी-नमक रोटी में जो स्वाभिमान युक्त आनन्द है, वैसा पराधीन तथा पुरुषार्थ हीन होकर के प्राप्त ३६ प्रकार के व्यंजनों में नहीं होता है। पुरुषार्थ दो प्रकार का है–प्रथम शारीरिक और द्वितीय मानसिक। दोनों प्रकार के पुरुषार्थ से ही मानव समाज और देश-जाति की उन्नति सम्भव है। यह पुरुषार्थ उन्नति की सोपान है। भाग्यवादी पुरुषार्थ हीन होकर सर्वदा दुःखी रहता है। सिकन्दर, नैपोलियन आदि प्रभृति विजेताओं ने अनुमानतः (अपने पुरुषार्थ बल से ही) अर्ध-संसार को जीत कर स्वाधीन कर लिया था। नितान्त असभ्य जातियों में उत्पन्न अ्प्राति क्षुद्र मनुष्य भी निरन्तर परिश्रम के द्वारा सभ्यता के शिखर पर पहुंचे हैं। पुरुषार्थी मानव बिना श्रम किये बिना किसी से कुछ भी लेना पाप समझता है। पुरुषार्थ मानव जीवन का सार है। पुरुषार्थ के ही बल से महर्षि दयानन्द ने लुप्त प्रायः वैदिक धर्म की गरिमा को पुनः स्थापित किया और जीवन बलिदान करके संसार को सत्य का मार्ग दिखाया।

भौतिक साधन-उपसाधनों में आज संसार के छोटे देशों में से एक छोटा देश जापान है, जो आज अपने कड़े परिश्रम से विश्व विख्यात देश बना है, जापान में निर्मित वस्तुओं की साख विश्व के बाजारों में जम गई है। वहाँ बच्चों को अल्पायु से ही पुरुषार्थ की शिक्षा दी जाती है। हत् भाग्य भारत में दरिद्रता का ढका पिटता रहता है, जो देश का संसार का प्रसिद्ध राष्ट्र था, अध्यात्म और भौतिक दोनों प्रकार के वैभवों से अग्रगण्य था। किन्तु आज वह कंगाल देशों का सिरताज बना हुआ है। इसका कारण भारत के मुफ्तखोर, निकम्मे और आलसियों पर निर्भर करता है। लाखों भिखारी, पुजारी, मठाधीश और तथा कथित साधु समुदाय देश को निकम्मेपन की शिक्षा दे रहे हैं और भोली जनता की कमाई को भांग, चरस, शराब और अन्य दुर्गुणों में अरबों की सम्पत्ति खाक कर रहे हैं। अबोध तथा अन्ध-विश्वासों में जकड़ी भाग्य-वादी धर्मभीरु भारत की जनता इन राष्ट्र द्रोही तत्वों का पोषण कर के अपने दुर्दिनों को आमंत्रित कर रही है। यही भारत की कंगाली का मुख्य कारण है। आत्म विश्वास तथा स्व पुरुषार्थ से भारत को दुर्दशा से बचाया जा सकता है।

कर्तव्यों के पालन करने में पुरुषार्थ की परम आवश्यकता है। सत्यासत्य का निर्णय इसी से होता है। लोभ, लालच आदि आत्म-हीनता के हमलों से भी इसी से बचा जा सकता है। संसार के सभी महान पुरुषों ने पुरुषार्थ से ही बड़प्पन पाया है। पुरुषार्थ की महिमा महान् है। लेख को अधिक न बढ़ा करके एक घटना लिख कर समाप्त करता हूं। मूसलाधार वर्षा में एक जहाज आस्ट्रेलिया की ओर तरंगें चीरता हुआ चला जा रहा था, अकस्मात आधी रात्रि के आस पास उसमें आग लग गई। जहाज के नियन्त्रक मैक्सुवल साहब थे। उन्होंने कप्तान को आग लगने की सूचना दी, किन्तु कप्तान ने पहाड़ों के परे ले जाने को कहा। मैक्सुवल ने आकाश की ओर हाथ उठाया और प्रभु से प्रार्थना की कि–हे प्रभो! मुझे अपने कर्तव्य पालन में उत्साह और सामर्थ्य दे। यह वस्तु सर्व आप की ही शरण में है। विमान तभी जहाज आगे बढ़ा दिया। अग्नि प्रचण्ड हो चुकी थी और जहाज का वेग तीव्र था। धुंवे तथा आग की लपटों से प्रलय का सा दृश्य लग रहा था। सारे यात्री चकित थे और भयभीत होकर इस विनाश लीला को आंखें फाड़ कर देख रहे थे। जीवन और मृत्यु का घनघोर संघर्ष चल रहा था। मैक्सु-वल साहब तने के समान तप्त सीट पर मौत से जूझ रहे थे और पुरुषार्थ से कर्तव्य पालन में लगे थे। उनके पांव झुलस रहे थे और धुंवे से प्राण घुट रहे थे, परन्तु वे पाषाण वत् कठिनाइयों को परे कर रहे थे, तब उनका चेहरा दीप्ति से युक्त देख कर यात्री अपने को भी जीता समझ रहे थे। कुछ ही क्षणों में (इस अदम्य पुरुषार्थ के कारण) जहाज अपने ठिकाने उतरा और यात्री कूद-कूद कर बाहर निकल पड़े। कुछ क्षणों में एक यात्री चिल्लाया हाय! मेरी सन्दूक जहाज ही में रह गया–मैं लुट गया, मेरा सर्वस्व छिन गया आदि-आदि अलाप कर ही रहा था कि तभी मैक्सुवल साहब जहाज में बढ़के उसके सन्दूक को बाहर फेंक दिया–उसके दोनों हाथों की चमड़ी उस गर्म सन्दूक पर ही चिपकी चली गई। पुरुषार्थी सफल हो गया। परन्तु कुछ काल में वह स्वस्थ हुए। आज वे अमर हैं। धन्य है पुरुषार्थ की महिमा को। ऐ भारत के होन-हार युवकों! पुरुषार्थी बनकर खोई गरिमा को पुनः प्राप्त करो।

"आपदा के अग्नि पथ पर जो कभी रुकना न जाने।
दैन्य के अभिशाप में भी जो कभी झुकना न जाने॥
प्रलय झंझावात में भी भंवर में फसना न जाने।
गीतमय जीवन बनाले, गीत को ही धर्म माने॥
गा सके संघर्ष में – हंसकर सदा जो स्वर वही हैं।
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर–वही है॥"

निर्वाचन–

आर्य समाज बांसी (बस्ती)
प्रधान–श्री देव दत्त त्रिपाठी एडवोकेट
मन्त्री–श्री मोतीलाल आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री अम्बिका प्रसाद वर्णवाल

श्री दयानन्द वैदिक धर्मशाला बांसी (बस्ती)
अध्यक्ष–श्री उमाशंकर पाठक
मन्त्री–श्री बोती लाल आर्य
प्रबन्धक–श्री चन्द्रिका प्रसाद
कोषाध्यक्ष–श्री अम्बिका प्रसाद

दहेज विरोधी उप समिति
आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ
प्रधान–श्री राधेश्याम गुप्त
संयोजक–श्री राजेन्द्र आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश
अध्यक्ष–श्री रामसिंह आर्य
मन्त्री–श्रीकर्मवीर व्यायामाचार्य

आर्य समाज मेलानी (खीरी)
प्रधान–श्री राजकुमार सिंह
मन्त्री–श्री प्रभुदयाल स्वरूप
कोषाध्यक्ष–श्री देवी प्रसाद

आर्य समाज देवद्वारा
प्रधान–श्री चौ० रणवीरसिंह
मन्त्री–श्री सत्यराम
कोषाध्यक्ष–मुनिकुमार

वनिता विवेक

जगत्जननी सीता

(ले० पाण्डेय श्रीराम नारायण दत्त शास्त्री 'राम')

(गतांक से आगे)

सीता जी का स्वयंवर आरम्भ हुआ। देश-देश के राजा, राजकुमार विद्वान्, ब्राह्मण, ऋषि, मुनि नगरवासी, देशवासी, स्त्री-पुरुष सभी अपने-अपने लिए नियत यथायोग्य स्थान पर बैठ गये। स्वयंवर मे भाग लेने वाले राजाओं के मञ्च बहुत सजे-सजाये और सुन्दर थे। श्रीराम और लक्ष्मण भी विश्वामित्र जी के साथ एक ऊंचे मञ्च पर विराजमान थे। राजा जनक ने मंत्रियों को आज्ञा दी थी, 'चन्दन और मालाओं से सुशोभित वह शिव धनुष यहाँ ले आओ।' वह धनुष आठ पहियों वाली लोहे की बहुत बड़ी सन्दूक में रखा था। उसे अनेकों लोग ठेलकर वहां लाये। अवसर जानकर जनक जी ने सीता को बुला भेजा। चतुर और सुन्दर सखियाँ आदरपूर्वक उन्हें लिवा लायीं। वे मनोहर वाणी से गीत गा रही थीं। सीता की शोभा अवर्णनीय थी। उन्होने ज्यों ही रंगभूमि मे पैर रखा, उनका दिव्य रूप देखकर सभी स्त्री पुरुष मोहित हो गये। इसके बाद जनक जी की आज्ञा से भाटों ने उनके प्रण की घोषणा इस प्रकार की—'राजाओ! आप लोग महाराज जनक की प्रतिज्ञा सुनें। आप के सामने कठोर धनुष रक्खा हुआ है। आप मे से जो भी इसे तोड़ देगा, उसे विजय का सुयश मिलेगा तथा राजकुमारी सीता उसका वरण करेंगी।' प्रण सुनकर सब राजा ललचा उठे। जिन्हे अपनी वीरता का अभिमान था, वे बड़े जोश से धनुष तोड़ने चले, किन्तु तोड़ना तो दूर रहा, वे धनुष को हिला भी न सके। सब लोग हार मान कर बैठ गये। यह देखकर राजा जनक को बड़ा दुःख हुआ। वे कहने लगे—'आप लोगो मे से जो लोग अपने को वीर मानते हों, वे मेरी बात सुनकर नाराज न होगे। आज मुझे निश्चय हो गया कि पृथ्वी वीरों से खाली है। अब आशा छोड़कर आप लोग अपने-अपने घर पधारें। विधाता ने सीता का विवाह लिखा ही नहीं है।'

जनक जी की यह बात लक्ष्मण को बहुत बुरी लगी। उनकी भौंहे टेढ़ी हो गयीं। ओठ फड़कने लगे और नेत्र क्रोध से लाल हो गये। उन्होने श्रीराम के चरणों में मस्तक झुकाकर कहा—मैं इस धनुष को गेंद की तरह उठा लूंगा, कच्चे घड़े की तरह फोड़ डालूंगा। इन भुजाओं में धनुष को मूली की भांति टुकड़े कर देने की शक्ति है। इस पुराने धनुष मे क्या रक्खा है। इस सभा मे रघुवंश शिरोमणि श्रीराम के रहते हुए जनक जी ने जो बात कही है, वह कदापि उचित नहीं है।' लक्ष्मणजी के ये वीरोचित उद्गार सुनकर समस्त राजा डर गये। सीता जी के हृदय मे हर्ष हुआ और जनक जी सकुचा गये। तब विश्वामित्र की आज्ञा से श्रीरामजी धनुष के समीप गये, सब स्त्री-पुरुष उनकी सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगे। उन्होंने मन ही मन गुरु को प्रणाम करके बड़ी फुर्ती से धनुष उठा लिया। उनके हाथ मे धनुष बिजली की तरह चमक उठा; फिर खींच कर उसी क्षण उन्होने धनुष को बीच से तोड़ डाला और दोनों टुकड़े पृथ्वी पर डाल दिये। सारी सभा मे जय जयकार की ध्वनि छा गयी। तब शतानन्दजी की आज्ञा से सीताजी जय-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चयनिका

—दुष्टों के साथ उपकार करने का फल बुरा होता है।

—एक मेढक ने अपने विरोधी कुटुम्बियों का नाश कराने के लिए एक सांप को बुलाया। उसने सोचा कि सांप को पेट भर भोजन मिलेगा तो वह मेरा उपकार मानेगा और विरोधियो का नाश हो जायगा। सांप ने आकर उसके सब कुटुम्बियों को खाडाला और फिर उस मेढक को भी खाने के लिए तैयार हो गया। उसने किसी तरह अपनी जान बचाई।

—एक बन्दर की किसी मगर से दोस्ती थी। बन्दर अपने दोस्त मगर को जंगल से ला लाकर मीठे फल खिलाया करता था। एक दिन मगर अपनी स्त्री के कहने से बन्दर को पीठ पर चढ़ाकर छल से पानी में ले जाया और उसका कलेजा निकालना चाहा। बुद्धिमान् बन्दर ने उसके कपट को जानकर मगर से कह दिया कि भाई! मैं तो कलेजा घर छोड़ आया। मूर्ख मगर ने उससे कहा—'अच्छा जाओ, उसे ले आओ। मगर उसे पीठ पर चढ़ाकर किनारे ले गया। बन्दर ने पानी से निकल कर अपनी जान बचाई।

—दुष्ट की कपट भरी मीठी वाणी सुनकर अपने हृदय में अच्छी तरह विचार कर उसका मतलब समझना चाहिए। सहसा उस पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। मूढ दासी मंथरा छल भरी मीठी वाणी से ही कैकेयी को निमित्त बनकर रामजी के राज्याभिषेक में बाधक हुई थी।

जोंक की चाल टेढी होती है, परन्तु यह मन से सीधी होती है क्योंकि वह हानिकारक रक्त को ही चूसती है, परन्तु दुष्टों को इससे विपरीत समझना चाहिए। वे बाहरी चालढाल से बड़े ही सीधे दीखते हैं, परन्तु मन के अत्यन्त कपटी होते हैं। क्योंकि वे तो दूसरों के हित का ही शोषण [नाश] करने वाले होते है।

—ज्ञानी, तपस्वी, शूरवीर, कवि पण्डित और गुणो का धाम इस संसार में ऐसा कौन मनुष्य है, जिसकी लोभ ने मट्टी पलीद न की हो?

—माया की प्रचण्ड सेना संसार भर मे फैल रही है, कामादि (काम, क्रोध, मद लोभ और मत्सर) वीर इस सेना के सेनापति हैं और दम्भ, कपट, पाखण्ड उसके योद्धा है।

—काम, क्रोध और लोभ ये तीन दुष्ट बड़े ही बलवान् हैं, ये विज्ञान सम्पन्न मुनि के मन में भी पलक मारते क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं।

—अग्नि क्या नहीं जला सकती; समुद्र मे कौन वस्तु नहीं डूब सकती प्रबल होने पर अबला कहलाने वाली स्त्री क्या नहीं कर सकती, और जगत् में काल किसको नहीं खाता?

—जो काम, क्रोध, मद और लोभ, के परायण हैं और जो दुःख रूप गृह मे ही आसक्त हैं, वे संसार रूपी कुएं मे पड़े हुए मूढ़ भगवान् को कैसे भज सकते हैं?

—स्वाभाविक सन्तोष के बिना क्या कोई शान्ति पा सकता है? चाहे करोड़ों प्रकार से यतन करते कोई मर जाय, परन्तु जल के बिना सूखी जमीन पर क्या कभी नाव चल सकती है?

—पुण्यात्मा पुरुष अपने पुण्य को और नीच, कपटी मनुष्य अपने कपट को मरते दम तक नहीं छोड़ते, जटायु और मारीच मरते-मरते इसी बात की सीख दे गये हैं। जटायु ने सीता को छुड़ाने के प्रयत्न में परोपकारार्थ प्राण छोड़े और मारीच ने मरते समय भी राम के स्वर मे हा! लक्ष्मण कह कर सीता को धोखा दिया। —नारायण मिश्र

९२ वर्षीय हिन्दी के अनन्य साधक–

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी से भेंट वार्ता

–आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र'

साहित्य सेवियों का अप्रतिम सौभाग्य है कि हमारे मध्य हिन्दी के गौरवशील लेखक और निबन्धकारों तथा पत्रकारों में अग्रगण्य श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी जी हमारे मध्य में प्रभु कृपा से हैं। स्वस्थ हैं। दैनिक क्रियायें करने में सक्षम हैं तथा देश की सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं पर खुलकर बात करते हैं। वयोवृद्ध हैं। आदरणीय हैं। स्नेहवश हम सब उन्हें 'दद्दा' कहकर सम्बोधित करते हैं।

मुझे एक जोलाई १९८३ को फीरोजाबाद जाने का अवसर मिला। कर्तव्य और श्रद्धा की भावना थी कि हिन्दी के तपस्वी के चरण स्पर्श करूं। अतः सायं ५ बजे फीरोजाबाद की छोटी और टेढ़ी-सीधी सड़कों पर चलते हुए मैं 'दद्दा' के निवास स्थान पर पहुंचा जो चौबियाने मुहल्ले की एक छोटी, परन्तु साफ गली में है। गली दद्दा के मकान के द्वार पर समाप्त हो गयी। अन्दर प्रवेश किया बड़ा आंगन और दाहिनी ओर दो कमरे जिसमें एक में दद्दा रहते हैं और दूसरी बैठक है। आंगन में पहुंचते ही दद्दा के ज्येष्ठ पुत्र मिले। मैंने परिचय दिया और उनके साथ दद्दा के कमरे में प्रवेश किया। बानवे वर्षीय दद्दा पलंग पर बैठे थे। पास में दैनिक पत्र एवं पुस्तकें पड़ी थीं दृष्टि बहुत कमजोर हो गयी है, फिर भी कुछ पढ़ने का प्रयास करते हैं। मैंने चरण स्पर्श किया परिचय दिया–दद्दा के मुखमण्डल पर हर्ष की रेखायें उमड़ पड़ीं। हाथ बढ़ाकर अपने पास पड़ी कुर्सी पर प्रेम से बैठा लिया और बोले–'आर्यमित्र' आता है–आपके लेख कभी-कभी पढ़ता हूं कभी किसी से पढ़वा कर सुनता हूं, बहुत दिनों के बाद आज देख रहा हूं। और दद्दा की स्मरण शक्ति इतनी ठीक थी कि उन्होंने स्वयं कहा कि कानपुर में आज से बहुत पहिले जब नवीन जी पं० बालकृष्ण शर्मा थे तो उनके यहां आपसे परिचय हुआ था।

आर्यमित्र' से दद्दा का पुराना सम्बन्ध रहा है। वह आगरा में इस के सह सम्पादक रहे हैं। उन दिनों की चर्चा की, स्मरण सुनाये और हमारे आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक श्री नारायणप्रिय गोस्वामी जी की कुशल वार्ता ज्ञात की तथा कहा कि मैं आर्यमित्र में सन्तुष्ट रूप से कार्य कर रहा था। प० हरिशंकर शर्मा जी जो प्रधान सम्पादक थे मेरे ऊपर असीम कृपा थी। गोस्वामी जी सच्चे हितैषी थे, परन्तु हरिशंकर जी के परामर्श पर ही मैं आगरा से कलकत्ता गया और विशाल भारत का सम्पादक पद स्वीकार किया। उन दिनों विशाल भारत से सम्बन्धित अंग्रेजी मासिक पत्र 'माडर्नरिव्यू' के यशस्वी और सन्त तुल्य सम्पादक श्री रामानन्द चटर्जी के सम्बन्ध में स्मरण सुनाये। बड़े प्रसन्न मन से दद्दा ने कहा कि विशाल भारत में मैंने रामानन्द चटर्जी के कुछ विचारों का विरोध किया। चटर्जी विशाल भारत के स्वामित्व पद पर थे, फिर भी मुझसे स्नेह रखा और विचार स्वतन्त्रता का आदर किया। आज के युग में पत्रकार और सम्पादक अपने मालिकों की कितनी चाटुकारिता करते हैं, उस पर दद्दा ने खेद प्रकट किया और बड़ी देर तक पत्रकारिता–हिन्दी के पत्र आदि विषयों पर वार्ता करते रहे।

पं० बनारसीदास जी ने सन् १९१२ के लगभग लेखन प्रारम्भ किया। राजस्थान के प्रसिद्ध [illegible] कालेज में कुछ वर्ष अध्यापन किया परन्तु पत्रकार और लेखक की अभिरुचि उन्हें इस क्षेत्र में ले आयी। जीवन के प्रथम २५ वर्ष तक प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में लिखा। महात्मा गांधी के निकट सम्पर्क में आये और चालिस वर्षों तक अपने लेखों द्वारा देश पर बलिदान होने वाले शहीदों की चर्चा की और अधिक से अधिक साहित्य प्रस्तुत किया। हिन्दी गद्य के क्षेत्र में चित्रणात्मक और संस्मरण लेखों का प्रचलन चतुर्वेदी जी ने ही किया तथा 'आर्यमित्र', 'विशाल भारत' और 'मधुकर' आदि पत्रों के कुशल सम्पादन के द्वारा स्वतन्त्र विचार अभिव्यक्ति और प्रभावशाली शैली का मार्ग दर्शन दिया। अंग्रेजी साहित्य में जो स्थान व्यक्ति प्रधान तथा संस्मरणात्मक लेखों के लिये एडीशन और स्टील का है और विभिन्न विषयों पर सशक्त गद्य शैली में गोल्ड स्मिथ का है, वही स्थान हिन्दी में चतुर्वेदी जी का है तथा तीनों लेखकों की समवेत कला के दर्शन दद्दा की लेखनी में एक ही स्थान पर होते हैं। बारह वर्षों तक संसद् सदस्य राज्य सभा रहे और शरीर से शिथिल होने पर अपने पैतृक स्थान फीरोजाबाद में शान्तिमय रूप से रह रहे हैं। परन्तु साहित्यिक गतिविधियों में परामर्श देते हैं। पुस्तकों की समालोचना किया करते हैं। कितने ही सन्दूक दद्दा के पास कमरे में रखे हैं जो पुराने लेख-पत्र साहित्य और संस्मरणों से भरे पड़े हैं।

दद्दा जी का कार्यक्रम निश्चित रूप से चलता है। उनके दो पुत्र जो सेवा से निवृत्त होकर आ गए हैं उनकी देख-रेख करते हैं तथा फीरोजाबाद के प्रमुख उद्योगपति साहित्य प्रेमी और उदारमना सेठ श्री बालकृष्ण जी गुप्त उनकी पुत्रों से भी अधिक देखरेख करते हैं तथा प्रत्येक प्रभात में प्रातः ६ बजे अपनी कार पर दद्दा को भ्रमण हेतु वाटिका तक ले जाते हैं।

२ जोलाई को प्रातः मैं श्री सेठ बालकृष्ण जी की कार में दद्दा के निवास पर पहुंचा। हर्ष का प्रातः साढ़े पांच बजे का समय था। दद्दा बिना किसी का सहारा लिये कार में आकर बैठ गये उनके दोनो पुत्र और एक अन्य स्नेही जन भी बैठ लिये। कार नगर के बाहर दो किलो मीटर की दूरी पर एक रम्य वाटिका में पहुंची दद्दा उतरे, एक चबूतरे पर बैठ गये, मैं पास बैठ गया। स्नेह से मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बोले कि पिता और पुत्र–नाथूरामशंकर शर्मा तथा पं० हरिशंकर शर्मा ने मिलकर सौ वर्ष तक हिन्दी साहित्य की सेवा की, परन्तु उनके सम्बन्ध में कोई चर्चा तक नहीं होता है। आर्यसमाज ने विदेशों में बड़ा काम किया है। उसकी जानकारी देने वाला कोई बृहद् प्रामाणिक साहित्य नहीं है। आर्यसमाज संगठन के आन्तरिक विवादों पर भी दद्दा ने खेद प्रकट किया। कानपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की चर्चा की। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के संस्मरण सुनाये तथा साहित्य सेवी डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम' के सम्बन्ध में वार्ता की।

मैंने दद्दा से विनम्रता पूर्वक पूछा कि मुझे कोई आज्ञा दीजिये। हंसकर बोले–मैं गांधी जी के पास रहा हूं। उनसे पत्रों को सुरक्षित कार्य करने की शिक्षा ली थी वही तुम्हें दे रहा हूं। सब कार्य नियमित और समय से करो तथा नियम से लिखो। निर्भय होकर लिखो किसी की ठकुर सुहाती और मिथ्या खुशामद से दूर रहना। दूसरे अकेले कार्य करो–लगनशील विचारक एवं लेखकों से आदान-प्रदान करो–संस्था बनाना ठीक नहीं। गांधी जी ने एक बार कहा कि संस्था का अर्थ है सम्यक् रूप से जो स्थापित कर दिया जाय अर्थात् जिस कार्य को समाप्त करना हो तो संस्था बना दो। दद्दा भी हंसे हम सब हंस पड़े।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०—शताब्दी का समयबद्ध कार्यक्रम

— श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० —

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की स्थापना १८८६ मे हुई। दिसम्बर १९८५ को उसका सौवाँ जन्म दिन होगा, और दिसम्बर १९८६ में शताब्दी वर्ष सम्पन्न होगा। दिसम्बर ८३ से दिसम्बर ८५ दो वर्ष दो मास का समय है। दि० ८६ तक तीन वर्ष समझ सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम शताब्दियों के रूप में सम्पन्न होते रहे हैं। महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा, महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा, पाखण्डखण्डिनी पताका शताब्दी वाराणसी, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह दिल्ली, उत्तरप्रदेश में मेरठ, कानपुर, वाराणसी मे आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, विरजानन्द जन्म शताब्दी करतारपुर, नारायणस्वामी जन्म शताब्दी गुरुकुल वृन्दावन, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी समारोह गुरुकुल कांगड़ी, दर्शनानन्द जन्म शताब्दी ज्वालापुर आदि।

शताब्दी ही नहीं अर्द्ध शताब्दी, हीरक जयन्ती, स्वर्ण जयन्ती, रजत जयन्ती आदि भी हम कई मना चुके हैं। आज सारा आर्यजगत् महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर मे मनाने जा रहा है।

ऐसे ऐतिहासिक वातावरण में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की जन्म शताब्दी का आरम्भ और समापन होना एक ऐतिहासिक घटना होगी।

आर्यजगत् में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश सबसे प्राचीन और सबसे बड़ी आर्य प्रतिनिधि सभा है। आर्यसमाजों की सम्पूर्ण संख्या ६००० में से २५०० आर्यसमाजें अकेले उत्तरप्रदेश में हैं। आर्य शिक्षा संस्थायें भी सर्वाधिक उत्तरप्रदेश में ही हैं। वेद प्रचार कार्य, उपदेशक भजनीक आदि में उत्तरप्रदेश सर्वाग्रणी है फिर भी उत्तरप्रदेश के आर्य भाइयों को विचार करना चाहिये कि अभी बहुत सा ऐसा कार्य है जो हमें करना है, जिसे हमने अभी तक आरम्भ ही नहीं किया है। आशा है सभा की शताब्दी को दृष्टि में रखकर अपने कार्यक्रम की रूपरेखा तैय्यार करेंगे और एक निर्धारित समय दिसम्बर ८६ तक उसे पूर्ण कर दिखायेंगे।

यद्यपि आज का युग भौतिक युग है। फिर अध्यात्म और समाजोत्थान के प्रति जनता में झुकाव है और उचित कार्यक्रम के लिये योग्य व्यक्तियों को धन भी वह मुक्तहस्त से देती है। ऐसी अवस्था में योजना निर्माण और उसका क्रियान्वयन कठिन न होगा।

वेद प्रचार—

आर्यसमाज के कार्यक्रम में सर्वाधिक मुख्य है वेद प्रचार। वेद-प्रचार को स्थायी और जनमानस तक पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य परिवार में वेद संहिता मूल और भाष्य सहित उपलब्ध हों, अभी तो उत्तरप्रदेश की २००० आर्यसमाजों में से सम्पूर्ण वेद-संहितायें उपलब्ध न होंगी, वेद भाष्य उपलब्ध होना तो दूर की बात है। अतः सभा को आर्यसमाजों में वेद संहिता और भाष्य उपलब्ध कराने का दिसम्बर ८४ तक समय निश्चित कर देना चाहिये।

साहित्य प्रकाशन—

इसी प्रकार महर्षि दयानन्द ग्रन्थावली प्रत्येक आर्यसमाज में पहुंचानी वेद और वेदभाष्य एवं महर्षि दयानन्द ग्रन्थावली के अतिरिक्त वैदिक और सामयिक साहित्य शोध होना चाहिये। आशा है सभा में इस योजना को पूरा करने के उपायों पर विचार किया जायगा। जिन आर्यसमाजों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो उन्हें पुस्तकें मंगाकर भी भेजी जा सकती हैं। आधा मूल्य ले लिया जाय और आधा निश्चित समय छः मास व एक वर्ष में चुकाने की सुविधा प्रदान की जाय।

प्रत्येक जनपद में आर्यसमाज का मुख्यालय—

जब तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का केन्द्रीय कार्यालय लखनऊ में नहीं बना था, सभा के सब कागजात अधिकारियों के साथ घूमते रहते थे। लखनऊ कार्यालय आने पर स्थिरता आ सकी इसी प्रकार की समस्या जिला उपप्रतिनिधि सभाओं की है। जिले के किसी मुख्य नगर में उपसभा का कार्यालय किसी प्रमुख आर्यसमाज के एक कमरे में बन्द रहता है। होना यह चाहिये कि उपसभाओं का निजी कार्यालय हो और जिले में प्रचार काय को जिला सभा आगे बढ़ावे।

आर्यसमाजों की स्थापना—

प्रत्येक जिले में न्यूनतम १० आर्यसमाजें स्थापित करने का निश्चय हो। तीन वर्ष में एक जिले में ३० आर्यसमाजें बनें और सक्रिय ४० जिलों में इस कार्य के पूरा होने से १२०० आर्यसमाजें नई बन सकेंगी। केवल संख्या पर ही हमें बल नहीं देना है हमें स्थापित आर्यसमाजों की सक्रियता पर भी ध्यान देना होगा। इसी सिलसिले में जिन जिलों में आर्य समाजों की स्थापित संख्या अधिक है पर वे नाममात्र के हैं उन्हें भी सक्रिय करना होगा। प्रतिनिधि सभा के १७०० सक्रिय आर्यसमाजों में से ६०० के लगभग आर्यसमाजों ने ही इस वर्ष सभा में वार्षिक चिट्ठे भेजे हैं और उन्हीं के ८०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। शेष या तो उदासीन है या संगठन के महत्व को नहीं समझ रहीं।

जन सेवा—

जहाँ तक नागरिक जीवन का सम्बन्ध है आर्यसमाजों को सक्रिय बनाने की विशेष आवश्यकता है। प्रत्येक आर्यसमाज के साथ (१) यज्ञशाला (२) पुस्तकालय (३) व्यायामशाला होनी ही चाहिये औषधालय भी हों तो अच्छा होगा। प्रत्येक जनपद में एक बड़ी आर्यसमाज मे औषधालय जन सेवा, संसार उपकार की दिशा में सक्रियात्मक कार्य होगा। अभी तक इस प्रकार के कार्य में केवल स्थानीय आर्यसमाज ही यत्नशील होती है अब जनपद की समवेत शक्ति के साथ यह कार्य होना चाहिये।

जन सम्पर्क—

जनता की दैनन्दिन कठिनाइयों को दूर करने में भी आर्यसमाजें सक्रियता दिखाने के लिये जन सम्पर्क विभाग की स्थापना करें और जनता के कष्ट दूर करने में सरकार के सम्मुख उनकी समस्याओं को रखने में यह विभाग प्रयत्नशील हो सकता है वर्ष के अन्त में कष्ट निवारण कार्य का विवरण जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाय। ऐसे केन्द्र शताब्दी वर्ष तक प्रत्येक जिले में अवश्य सक्रिय हो जाने चाहिये।

शिक्षा में क्रान्ति—

शिक्षा क्षेत्र में आर्यसमाज ने माध्यमिक से उच्च शिक्षा तक महत्वपूर्ण कार्य किया है, पर खेद है हमारी बाल शिक्षा उपेक्षित रही है। नई पीढ़ी हमारे उत्तम संस्कारों से वंचित हो रही है। सभा की ओर से आदर्श दयानन्द बाल मन्दिर का रूप प्रस्तुत किया जाय और उसी के अनुरूप अन्य दयानन्द बाल मन्दिरों को विकसित किया जाय। और

(शेष पृष्ठ १० पर)

ओ३म् स्मरण (वैदिक प्रार्थना)

ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् कहिए।
ओम् में तन्मय हो, कर्म करते रहिए ।। ओम् ।।

ओम् की याद में चित्त को लगाइये।
नित्य प्रभु ओम् का गुणगान करिए ।। ओम् ।।

ओम् की भक्ति में मन को लगाइए।
ओम् की महिमा - गान नित्य करिये ।। ओम् ।।

ओम् स्मरण को कभी न बिसारिए।
'ओम्-क्रतो स्मर' सदैव मनन करिए ।। ओम् ।।

ओम् चिन्तन कर जीवन संवारिए।
'ओम् खं ब्रह्म' ही नित्य जपते रहिए ।। ओम् ।।

यही है मुक्ति-मार्ग, इसे समझिए।
'ब्रह्मानन्द' ओम्-गान करते रहिए।
अन्त में भव सागर पार उतरिए ।। ओम् ।।
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् कहिए।
ओम् में तन्मय हो कर्म करते रहिये ।।

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु
अतरदह—मुजफ्फरपुर

"सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो"

भ्रांति भूल भगाने खातिर, त्रिविध शूल मिटाने खातिर
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो

वेद दधि को मथ ऋषिवर ने देखो ये सार निकाला है
वैसे होंगे ग्रन्थ अनेकों पर ये ग्रन्थ निराला है
कोई शंका हो मन में आपकी, सारी बातें पुण्य पाप की
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो—१

मेधावी गुरुदत्त ने इसको इक्कीस बार आद्योपान्त पढ़ा
नास्तिकता काफूर हो गई जब आस्तिकता रंग चढ़ा
पठन मनन करके हर्षाये, नये-नये तथ्य सामने आये
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो—२

जिज्ञासु के नाम से इसमें प्रश्न अनेकों हैं ठाये
सिद्धांतों से कर समाधान फिर सबके हल हैं दर्शाये
तर्क तीरों की झड़ी लगाई, गढ़ पाखण्ड दिया धूल मिलाई
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो—३

सत्यार्थ के नाम से ही जो भौंहें और नाक चढ़ाते थे
नर्क कुंड में पड़े हुए जल क्या - क्या पीते खाते थे
उनकी शुद्ध हो गई आत्मा, जीवन पलटा बने महात्मा
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो—४

सत्यार्थ रूपी सागर में जो नित गोता लगावे
'श्रीपाल' ठगी से बचा रहे वह नहीं जाल में आवेगा
बाल वृद्ध युवा नर नारी, पण्डे मुल्ला और पुजारी
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो—५

—श्रीपाल आर्योपदेशक

जगत् जननी सीता
[पृष्ठ ५ का शेष]

माला हाथ में लिए श्री रामचन्द्र के समीप गयीं। साथ में सुन्दरी और सखियां मंगलाचार के गीत गाती जा रहीं थीं। निकट पहुंच कर श्रीराम की शोभा निहार कर वे चित्र लिखी-सी रह गयीं। चतुर सखी ने उनकी यह दशा देखकर कहा—'राजकुमारी! जयमाल पहनाइये।' सीता जी ने दोनों हाथों से माला उठायी, पर प्रेम से विह्वल होने के कारण वह पहनायी नहीं जाती थी। सखियां मंगल गाने लगीं और सीता ने श्रीराम के गले में माला डाल दी।

तत्पश्चात् राजा जनक ने दूत भेजकर अयोध्या से महाराज दशरथ को बुलवाया। वे विद्वान् ब्राह्मण, महर्षि, पुरोहित, कुटुम्ब तथा चतुरंगिणी सेना के साथ बहुत बड़ी बारात लेकर जनक पुर पहुंचे। भरत और शत्रुघ्न भी आये थे। मिथिला का नगर हाट बाट सहित खूब सजाया गया था। प्रत्येक घर में उत्सव मनाया जा रहा था। मार्गशीर्ष शुक्लपंचमी विवाह की तिथि निश्चित थी। विवाह का मण्डप बहुत सुन्दर बना था। दोनों पक्ष की ओर से वेद-विधि जानने वाले ऋषि महर्षि पधारे थे। पुत्रों सहित राजा दशरथ ने मण्डप में पदार्पण किया। राजा जनक की छोटी कन्या का नाम उर्मिला था। जनक के भाई कुशध्वज के भी दो पुत्रियां थीं, माण्डवी और श्रुतकीर्ति इन चारों कुमारियों का विवाह, राजा दशरथ के चारों पुत्रों के साथ एक ही लग्न में आरम्भ हुआ। श्रीराम के साथ सीता, भरत के साथ माण्डवी लक्ष्मण के साथ उर्मिला और शत्रुघ्न के साथ श्रुतकीर्ति ब्याही गयीं। स्त्रियों के मंगल गान, ऋषियों के वेद मन्त्रोच्चारण और ब्राह्मणों के आशीर्वाद के साथ विधि पूर्वक वैवाहिक कार्य सम्पन्न हुआ। राजा जनक ने सभी बारातियों का बड़ा स्वागत सत्कार किया। दान-दहेज भी बहुत दिए थे। बारात विदा हुयी। पुत्रों और पुत्र वधुओं को साथ साथ ले राजा दशरथ बड़ी प्रसन्नता के साथ अयोध्या पहुंचे। वहां भी बड़े समारोह के साथ आनन्दोत्सव मनाया गया। श्रीराम ने सीता को और सीता ने श्रीराम को पाकर अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव किया। दोनों एक दूसरे के प्रेम का आस्वादन करते हुए बड़े आनन्द से रहने लगे। सीताजी पति को सदा ही अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखती थीं। ससुर तथा अन्य गुरुजनों के प्रति भी उनका बर्ताव बहुत सुन्दर था। उनकी अन्य बहिनें भी उन्हीं के आदर्श की अनुगामिनी थीं।

१५० ईसाई भाईयों ने वैदिक हिन्दू धर्म की दीक्षा ली

ग्राम—बलीपुरा जिला—मुजफ्फरनगर के १५० ईसाई भाईयों को भारतीय शुद्धिसभा के उपदेशक श्रीइतवारीलाल आर्य ने स्वामी कल्याणानन्द जी के प्रयत्न के फलस्वरूप दिनांक ७-८-८३ रविवार को प्रातः १० बजे शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया। शुद्धि संस्कार श्री पं. दीपचंद जी शर्मा, कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धिसभा, ने सम्पन्न कराया। स्मरण रहे कि पहले यह गांव हरिजनों का था और खतौली मिशन द्वारा बहुत पहले इन्हें ईसाई धर्म की दीक्षा दी गई थी, परन्तु अब यह सभी ग्रामवासी वैदिक हिन्दू धर्मी रहेंगे। यह घोषणा इन्होंने स्वामी कल्याणानन्द जी के प्रचार के फलस्वरूप की है। श्री स्वामी जी कई महीनों से वहां पर रहकर इनके बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दे रहे हैं, क्योंकि स्वामी जी पहले खतौली क्षेत्र में मुख्य अध्यापक थे और अब वह सेवा निवृत्त हो गये हैं तथा धर्म का प्रचार कर रहे हैं। पहले भी स्वामी जी ने कई ग्राम के ईसाईयों को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के माध्यम से हिन्दू धर्म में दीक्षित किया, जिनमें जीवना, कुवाणा आदि मुख्य हैं।

भवदीय
द्वारकानाथ सहगल प्रधान-मंत्री

अजमेर की गत निर्वाण अर्धशताब्दी के संस्मरण

—ब्रह्मदत्त स्नातक

निर्वाण अर्धशताब्दी (१९३३) के समय मैं १५ वर्ष की आयु का था और गुरुकुल के छात्रों के साथ उस अवसर पर हुए ब्रह्मपारायण यज्ञ में वेदपाठी के रूप में दो सप्ताह रहा था। वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनि लाहौर से आकर उस यज्ञ के मुख्य ब्रह्मा बने थे। कार्यकर्ता ब्रह्मा के पद पर स्व० पंडित ब्रह्म दत्त जिज्ञासु एवं स्व० पं० गंगादत्त शर्मा (बाद में जो स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती बने) थे। यज्ञ की पूर्णाहुति शाहपुरा के तत्कालीन महाराजा उम्मेदसिंह के हाथों मुख्य यजमान के रूप में हुई थी। यज्ञ के उपरान्त उन्होने यज्ञ के ब्रह्मा तथा ५० के लगभग उपस्थित वेदपाठियों के चरण स्पर्श करके दक्षिणा दी थी। मुझे याद है कि तब १५ रुपये की मुझे भी भेंट मिली थी। (तब मथुरा से अजमेर का किराया लगभग ३ रुपये था।

इसी प्रकार चारो वेदों का एक-एक सेट वैदिक यन्त्रालय की ओर से सबको भेंट दिया गया और जयपुर के स्व० सेठ गणेशनारायण सोमानी (यजमान) एडवोकेट ने मौसम के अनुसार एक-एक सुन्दर खेस सब वेद पाठियों को दिया था। यज्ञ बर्तन आदि के साथ अन्य भेंट भी तब दी गयी थी। एक मास तक हुये उस यज्ञ की सारी व्यवस्था बड़ी श्रद्धापूर्वक अजमेर के शिक्षा शास्त्री मास्टर कन्हैयालाल जी ने की थी। नीमच के सेठ श्री मांगीराम भी घर का सुख त्यागकर खजांची का काम उन दिनों सेवा भाव से वहां करते थे। आशा है इस बार भी ऐसे समर्पित कार्यकर्ता शताब्दी को सफल बनायेंगे।

तब महात्मा नारायण स्वामी जी की देख-रेख में सारी व्यवस्था थी। उनको जन्म शताब्दी मथुरा का व्यापक अनुभव था और वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी थे। अजमेर से दीवान बहादुर हरविलास शारदा, चांदकरण शारदा प० भगवत्स्वरूप आदि ने उस समारोह को तब सफल बनाया था। स्थानीय मतभेद के बावजूद रायबहादुर मिट्ठन लाल भार्गव कर्मवीर पं० जियालाल ने उस शताब्दी में पूरा सहयोग दिया था।

सौभाग्य में इस बार प्रिंसिपल श्री दत्तात्रेय बाब्ले के कार्यकर्ताओं की टीम पूरा सहयोग दे रही है। अब ५० वर्ष में निर्वाण न्यास की भी स्थापना हो चुकी है—और उसके सुयोग्य विद्वान् मन्त्री पं० भूदेव शास्त्री जैसे लोग भी अजमेर मे मौजूद हैं।

अजमेर में इस आयोजन को सफल बनाने का प्रयत्न जोर-शोर से चल रहा है। यदि आर्यजन सब लोग बाहर से समर्पित व्यक्तियो एवं धन को जुटा सकें तो आज के अजमेर में आर्य समाज के साधन १९३३ की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। धन सम्पत्ति कार्यकर्ता-संस्थाओ की वहां पर वृद्धि लगातार हुई है। इसलिए सफलता मे सदेह या कमी का कोई कारण नहीं है।

गत, अर्ध शताब्दी की दो घटनाएं अब भी मेरे मस्तिष्क में घूम रही हैं। समारोह से पूर्व अजमेर में कई वर्ष के सूखे से पीने के पानी की भीषण कमी थी। दोनों प्रसिद्ध जलाशय आना सागर और फाई-सागर सूख चले थे और उनकी तलहटी में खेती होने लगी थी। आयोजक चिन्ता में थे, कि क्या होगा? परन्तु उन्हीं दिनों वर्षा यज्ञ किया गया और आनासागर व फाईसागर में किनारो से बाहर पानी बहने लगा। सब में इससे प्रसन्नता की लहर फैल गयी और समारोह सफल हो गया।

आर्य समाज के क्रान्तिकारी कार्यक्रम के प्रभाव का एक संस्मरण जाति प्रथा पर अवश्य उल्लेखनीय है। पूर्णाहुति के दिन शाहपुरा के महाराजा ने दक्षिणा भेंट से पूर्व सब विद्वानों के सपत्नीक चरण स्पर्श किये। वे सब जन्म जात ब्राह्मण तो नहीं थे। उनमें से एक का जन्म नाई के यहाँ हुआ था वैसे वह बड़ा सुकण्ठवान तथा शुद्ध उच्चारण वाला छात्र नरोत्तम था। किसी एक प्रसंग में उसी के एक साथी ने बाद में कहा कि यदि महाराजा उम्मेदसिंह को चरण स्पर्श करने पर पता चलता कि उन्होंने एक नाई के पैर छूए हुए हैं तो वह उसके पैर राज-पूती परम्परा में कटवा देते पर महाराज तो ऋषि दयानन्द से दीक्षित एवं परोपकारिणी सभा के प्रतिष्ठित सदस्य थे। वे इन बातों से ऊपर उठ चुके थे।

उस समारोह में संस्कृत सम्मेलन व सम्मेलन आर्य भाषा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन मे तत्कालीन दिग्गज नेताओं ने भाग लिया। महात्मा हंसराज जी, महाशय कृष्ण जी, पं० बुद्धदेव जी, प० भगवद्दत्त जी आदि जो हस्तियां वहाँ थीं, उनमें से अब कौन देखने को मिलेगी? और इससे अगली शताब्दी या मार्ध शताब्दी में हममें से कितने लोग मौजूद रहेंगे। आज तो अजमेर मे रेडियो स्टेशन (प्रसारण) दैनिक पत्र, सिंध से आये शरणार्थी आदि सब के कई गुनें साधन मौजूद हैं। निराशा नहीं उत्साह का वातावरण बनाकर आगामी शताब्दी पर हम लोग लाखो की संख्या में अजमेर पहुंचे। पूरे चार दिन वहाँ रहकर अपने जीवन मे प्रकाश लेकर घर को लौटें तभी जीवन सफल होगा।

९/१४४—रामकृष्ण पुरम
नयी दिल्ली—११००२२

आवश्यक निवेदन

१९४७ से पूर्व देशी रियासतों एवं ब्रिटिश भारत में उत्तरदायी शासन के साथ राजनैतिक नागरिक एव सामाजिक अधिकारो की प्राप्ति के लिये (धार्मिक स्वतन्त्रता इसी का एक अंग है। आन्दोलन किए गये और कतिपय नियमों के अनुसार इनमें भाग लेने वालो को स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार कर राज्य एवं केन्द्र सरकारों ने यथोचित सम्मान सुविधाएं तथा पेंशन स्वीकृत की हैं। मुस्लिम खिलाफत आंदोलन, यहाँ तक कि हिन्दुओ के रक्त से रंजित मोपला विद्रोह सिखों के गुरु का बाग नाभा रियासत मे सत्याग्रह कूका विद्रोह तथा रियासती प्रजा मण्डलों के आन्दोलनों मे भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान श्रेणी के अन्तर्गत स्वीकृत हैं।

इस सम्बन्ध में १९३८ में हैदराबाद (निजाम) में हुए आर्यसमाज सत्याग्रह मे भाग लेने पर आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यो की सरकारों ने और उनकी संस्तुति पर केन्द्र सरकार ने नियमानुसार उन को सम्मान सुविधाएं दी हैं, जब कि पंजाब, हरियाणा उत्तर प्रदेश राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश आदि की सरकारो ने हमारी शिथिलता के कारण कोई निर्णय नहीं लिया और आज तक वहां तथा केन्द्र सरकार के यहां यह विषय गत ३५ वर्षो से 'विचाराधीन' चला आ रहा है। आर्यसमाज के संगठन एवं नेता इस सम्बन्ध मे उदासीन व शिथिल हैं।

इस वर्ष मनायी जा रही निर्वाण शताब्दी पर जहाँ डाक टिकट निर्वाण स्थली के अधिग्रहण जैसी एवं दिखावटी चीजो को महत्व दिया जा रहा है। वहाँ इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर परोपकारिणी तथा सार्वदेशिक सभा का ध्यान नहीं गया। इन बलिदानो से समाज को इस अवसर पर कोई योजना नहीं है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी को सफल बनाने हेतु

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की आर्यजगत् से अपील

दिल्ली ३० अगस्त ८३।

आगामी ३, ४, ५ और ६ नवम्बर ८३ को अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने की तैयारियां जोर से हो रही हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले ने देश-विदेश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य जनों से अपील करते हुए कहा कि परोपकारिणी सभा द्वारा अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के आयोजन को सभी जन सफल बनाने के लिये तन-मन और धन से सहयोग करें।

श्री शालवाले ने कहा—आज से १०० वर्ष पूर्व हमारे गुरुदेव महर्षि दयानन्द ने अपने भौतिक शरीर का त्याग अजमेर में ही किया था। विगत १०० वर्ष में महर्षि निर्वाण के पश्चात् उनकी विचारधारा को लेकर आर्यसमाज ने देश-विदेश में महान् कार्य किये जिनका सिंहावलोकन इस निर्वाण शताब्दी पर किया जाना चाहिये।

आर्यजगत् ने महर्षि जन्म शताब्दी मथुरा में मनाई, अर्ध निर्वाण शताब्दी अजमेर में की गई और उसके पश्चात् मथुरा में दीक्षा-शताब्दी का आयोजन सफलता पूर्वक किया। सन् १९७५ में दिल्ली मे आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह का ऐतिहासिक आयोजन—न भूतो न भविष्यति—किया गया, जिसमें लगभग १० लाख आर्य नर-नारियों ने भाग लिया।

श्री शालवाले ने आर्य जनता से निवेदन करते हुए कहा कि अजमेर में यदि अपने गुरु के निर्वाण शताब्दी समारोह पर कोई कष्ट, असुविधा भी हो जाय तो सहर्ष सहन करते हुए महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। आर्यसमाज के इस ऐतिहासिक निर्वाण शताब्दी समारोह को हर प्रकार से सफल बनाने के लिये आर्य जनता, आर्य समाजें व प्रतिनिधि सभायें परोपकारिणी सभा को हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर अपने कर्तव्य का पालन करें।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दिल्ली

निम्न आर्यसमाजों में पंजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ, आर्यसमाज फूलपुर (आजमगढ़), आर्यसमाज पतला (गाजियाबाद), नगर आर्य समाज शाहगंज गोरखपुर, महर्षि दयानन्द मार्ग अहमदाबाद, आर्य समाज बाजापार सहारनपुर, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, आर्यसमाज बम्बई आदि ने मनाया।

—आर्यसमाज पचराव गोरखपुर में यजुर्वेद के तीन अध्यायों से यज्ञ कराया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज बिलसंडा (पीलीभीत) के प्रधान श्री ओंकारप्रसाद और राधेश्याम मन्त्री के पिता श्री रामस्वरूप जी के निधन पर आर्य समाज ने शोक व्यक्त किया है। —मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दी

(पृष्ठ ७ का शेष)

जन क्षमा करें आज के दयानन्द बाल मन्दिर अन्य शिक्षा व्यापारियों की भांति व्यापारी दुकानों का रूप ले रहे हैं। आज का नागरिक उच्च नागरिक जीवन स्तर पर बालकों को सुसंस्कृत बनाना चाहता है तब वह तुलनात्मक दृष्टि से नयी शिक्षा-दुकानों को (पब्लिक स्कूलों को) हमसे अच्छा देखता—मानता और जानता है और बच्चों को वहीं भेजता है। हमें व्यापार वृत्ति से दूर हटकर प्रत्येक जनपद में एक-एक दयानन्द बाल मन्दिर स्थापित करने का निर्णय लेना होगा और उसे तीन वर्ष में पूर्ण करना होगा।

नैतिक उत्थान आन्दोलन—

भ्रष्टाचार उन्मूलन, नैतिक उत्थान, गोरक्षा, आर्य भाषा, राष्ट्र भाषा हिन्दी उत्थान, मद्य-निषेध आदि अन्य समस्याओं पर भी निश्चित नीति और समयबद्ध कार्यक्रम बनाने होंगे, उन पर भी क्रमशः विचार किया जायगा।

पुस्तकालय भवन का निर्माण—

शताब्दी वर्ष तक सभा के वृहद् पुस्तकालय का निर्माण, जिसमें सम्पूर्ण वैदिक साहित्य (पुरातन एवं अद्यतन) संग्रहीत हों तैयार होना चाहिये। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में पुस्तकालय भवन अपूर्ण पड़ा है, उसे पूर्ण कर वहीं आदर्श पुस्तकालय बनाया जाना चाहिये।

गुरुकुल प्रणाली का प्रचार-प्रसार—

सभा ने गुरुकुल प्रणाली पर विशेष बल दिया है। शताब्दी वर्ष तक प्रदेश के सभी गुरुकुलों का एक संगठन बनाकर गुरुकुल प्रणाली का आदर्श स्वरूप निर्धारित किया जाय। जिस किसी को जहां कहीं आर्यसमाज के नाम पर गुरुकुल खोलने की प्रवृत्ति को रोका जाय।

आशा है उत्तरप्रदेश के आर्यजन अपने मन-मस्तिष्क में निश्चय कर लेंगे कि अब हमें सारी शक्ति सभा के शताब्दी वर्ष को लक्ष्य में रखकर कार्य करना है। इस दृष्टि बिन्दु से विचार आरम्भ हो और हमारा कार्य आगे बढ़े इस विचार से इस लेख में कुछ संकेत दिये गये हैं। आशा है अन्य सभा प्रेमी जन भी सभा के शताब्दी वर्ष के लिये निश्चित कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत कर आर्य जनता का मार्ग दर्शन करेंगे।

नवीन अधिकारियों से आशायें—

आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-निर्वाचित प्रधान श्री कैलाशनाथसिंहजी और महामन्त्री श्री इन्द्रराज जी आर्यसमाज के कर्मठ नेता हैं। सभा का शताब्दी वर्ष उनकी दृष्टि में है, आशा है वे इस ओर प्रान्त की जनता को उत्साहित कर उत्तरप्रदेश के गौरवपूर्ण इतिहास को सफल बनायेंगे। प्रदेश की आर्य जनता को दृढ़ संकल्प के साथ जुट जाना चाहिये।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर में एक योग्य आर्य पुरोहित की शीघ्र ही आवश्यकता है। जो कर्मकाण्ड तथा वेद प्रवचन में दक्ष हों। संस्कृत तथा हिन्दी का अच्छा ज्ञाता हो। उसे वर्तमान समय में ३००) और ४००) के बीच में पारिश्रमिक दिया जायेगा। आवास आदि की भी सुविधा होगी।

डा० विजयपाल शास्त्री
एम. ए. पी-एच. डी.
मन्त्री

१९८३-८४ के अंतरंग सदस्य

आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा के सदस्यों के नाम

जिला	सदस्यों के नाम
१-देहरादून	१-श्री यशपाल आर्य
२-सहारनपुर	२-,, प्रताप सिंह
३-बस्ती	३-,, रिक्त स्थान
४-बांदा । हमीरपुर । झांसी । जालौन ललितपुर	४-सुश्री कृष्णा कपूर
५-प्रतापगढ़ । रायबरेली । सुल्तानपुर	५-श्री रामकिशोर त्रिपाठी
६-मिर्जापुर । जौनपुर	६-,, देवमनिसिंह
७-इलाहाबाद	७-कु० शेखर कुमार
८-बरेली	८-श्री ओमप्रकाश आर्य
९-लखनऊ	९-,, कृष्ण बलदेव महाना
१०-आगरा	१०-,, रोशनलाल
११-रामपुर	११-,, सुधीर कुमार
१२-मेरठ	१२-,, सत्येन्द्र कुमार
१३-गाजियाबाद	१३-,, चन्द्रकिरण शर्मा
१४-मुरादाबाद	१४-,, राजेन्द्रकुमार
१५-मथुरा	१५-,, जयकुमार मुदगल
१६-हरदोई	१६-,, ब्रह्मस्वरूप पाण्डेय
१७-मुजफ्फरनगर	१७-,, महेन्द्रसिंह
१८-फतेहपुर	१८-,, रूपकिशोर
१९-बिजनौर	१९-,, आदित्यनारायण
२०-गाजीपुर । बलिया	२०-,, जयप्रकाश भारतीय
२१-कानपुर	२१-,, रामजी आर्य
२२-फैजाबाद । बाराबंकी	२२-,, माताप्रसाद त्रिपाठी
२३-बहराइच	२३-,, गोविन्दराम आर्य
२४-मैनपुरी	२४-,, सत्यवीर शास्त्री
२५-गोरखपुर	२५-श्री रामसनेही
२६-इटावा	२६-,, डा० मुन्नालाल मित्र
२७-पीलीभीत	२७-,, ओम प्रकाश
२८-शाहजहांपुर	२८-,, डा० श्याम सुन्दरलाल
२९-सीतापुर	२९-,, ओमप्रकाश अग्रवाल
३०-एटा	३०-,, डा० श्रीराम आर्य
३१-फर्रुखाबाद	३१-,, मैकूलाल आर्य
३२-नैनीताल, अल्मोड़ा, थाईलंड	३२-,, उमेशचन्द्र स्नातक
३३-बदायूं	३३-,, योगेन्द्रपाल, एडवोकेट
३४-लखीमपुर	३४-,, आनन्द स्वरूप
३५-अलीगढ़	३५-,, महेशचन्द्र शर्मा
३६-आजमगढ़	३६-,, सत्यप्रकाश आर्य
३७-बुलन्दशहर	३७-,, पं० तेजराम शर्मा
३८-वाराणसी	३८-,, अवधबिहारी खन्ना
३९-उन्नाव	३९-,, श्यामप्यारे
४०-गढ़वाल । पौड़ी । उत्तरकाशी । चमोली	४०-,, कृष्णचन्द्र अग्रवाल
४१-गोण्डा	४१-,, देवीदयाल तिवारी
४२-देवरिया	४२-,, रिक्त स्थान

ह० एस०डी० जौहरी
४-९-१९८३
डिप्टी रजिस्ट्रार । चुनाव अधिकारी
चिट् फण्ड, फर्म्स तथा सोसायटीज,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

कोटद्वार में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

इस वर्ष का वेद प्रचार समारोह २३ से ३१ अगस्त, १९८३ तक पारस्परिक उल्लास के साथ मनाया गया। भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री श्री कैलाशनाथ सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा के आगमन से समारोह में चहल-पहल रही। कोटद्वार तथा भाबर क्षेत्र के आर्य सदस्यों द्वारा नगर में प्रभात फेरी से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, तथा आर्य समाज के परम हंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती के कर-कमलों से झण्डारोहण हुआ, तत्पश्चात् यजुर्वेद के मन्त्रों से बृहद् यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। जिसकी पूर्ण आहुति ३१ अगस्त को हुई, इस अवसर पर नगर कीर्तन भी निकाला गया, जिसमें कण्वाश्रम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा आर्य नर-नारियों ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रातः सायं वेद कथा आचार्य सत्यव्रत राजेश द्वारा होती रही, तथा श्री हरीसिंह आर्य के भजनोपदेश हुए, सप्ताह भर श्रोताओं ने भारी संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाया।

—कृष्ण चन्द्र अग्रवाल
मंत्री

सीसामऊ में वेद कथा

आर्य समाज सीसामऊ कानपुर में २३ से ३१ अगस्त तक श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार की वेद कथा हुई, तथा प्रातःकाल विभिन्न परिवारों में पारिवारिक सत्संग, यज्ञ, भजन और प्रवचन के रूप में संपन्न हुआ। ३१ अगस्त को कानपुर की समस्त आर्य समाजों ने सम्मिलित रूप में 'कृष्णजन्माष्टमी' पर्व मनाया। श्री राजेश जी भजनोपदेशक के भजन हुए। इस सफलता का श्रेय श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री वरिष्ठ उप प्रधान को है।

—मेघराज
मन्त्री

कर्मवीर पं० जियालाल जयन्ती एवं श्रावणी पर्व समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर में मंगलवार दिनांक २३ अगस्त ८३ ई० को श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले की अध्यक्षता में पं० कर्मवीर जियालाल जयन्ती पर्व एवं श्रावणी पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रारम्भ में आचार्य गोविन्दसिंह जी के संयोजक में बृहद् यज्ञ हुआ। तदनन्तर श्रावणी पर्व की महत्ता पर श्री कृष्णपाल सिंह, श्री प्रो० वेदशर्मा जी, श्री मदन सिंह जी चौहान आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने धर्म परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया एवं मन्त्री जी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त ने किया।

मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष-44993 42991
रजिस्ट्रेशन सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७९
भा० भाद्रपद २०, २७
भाद्रपद शु० ५, १२ रविवार
११, १८ सितम्बर १९८३ ई०

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

श्री बनारसी दास चतुर्वेदी से भेंटवार्ता

(पृष्ठ ८ का शेष)

दद्दा जी की नियमित दिन चर्या है। प्रात काल के लगभग उठना नियमित कार्य साढ़े पाच पर भ्रमण हेतु जाना सात पर वापस आकर दुग्ध दलिया। फिर पत्रों को देखना। एक अवैतनिक प्राध्यापक आ जाते हैं। उनसे पढवा कर सुनना। स्वयं बोलते जाते हैं वह लिखते जाते हैं। मध्याह्न साधारण भोजन और साय ५ तक विश्राम। साय एक प्याली चाय। रात्रि मे दुग्ध दलिया। आठ बजे शयन। प्रात और सायं मिलने वाले आते हैं—बाहर के और स्थानीय। उनसे वार्तालाप। फीरोजाबाद के प्रसिद्ध अध्यापक एव कवि श्री कृष्ण लाल जी कुसुमाकर भी प्राय नित्य थोडी देर के लिए आते हैं। दद्दा का मन बहल जाता है।

दद्दा का हृदय स्नेह से भरा है। मै एक दिन दो घण्टे पास रहा। वाटिका मे उनसे वार्ता की और दूसरे दिन जब जाने के लिए आज्ञा मागी तो स्नेह से मिष्ठान्न और चाय दिया, स्वय भी पिया तथा जब मैंने चरण स्पर्श किये तो आत्मीय भाव से हृदय से लगाकर आशीर्वाद दिया और कहा कि फिर शीघ्र आना और कई दिन मेरे पास रहना। 'हम से भी आगे बढो और हस कर हमने कहा कि दद्दा साहित्य क्षेत्र मे तो बढ ही नहीं सकता हू—इतनी अधिक आयु लेकर क्या करूगा—मै तो तुच्छ हू आप की भाति दूसरो को प्रेरणा भी नहीं दे सकता। सविनय शान्त भाव से हाथ जोडे तब दद्दा जी के दोनो पुत्र डा० श्री चतुर्वेदी एव श्री रामगोपाल द्वार तक भेजने आए।

'चरित्रैस्त्वा पुनामि'

(पृष्ठ ३ का शेष)

आज देश मे अधिक अन्न, उपजाओ, अधिक वस्त्र उपजाओ, अधिक सामान घी-दूध वस्त्रादि उपजाओ के उद्घोष किये जा रहे हैं, किन्तु इन सब के अधिक उत्पन्न होने पर भी लोग भूख, गरीबी, अशान्ति से मुक्त होकर सुख, शान्ति अमीरी का मुख नही देख पा रहे हैं, और भविष्य मे भी वे उसका मुख नहीं देख सकते। जब तक चरित्र नहीं होगा वे वस्तुए रहेगी और लोग दु:खी रहेंगे, भूख से मरते, अभाव अन्याय अज्ञान छाया रहेगा। अत इन सभी के अधिक उपजाओ के उद्घोष के साथ अधिक चरित्र उपजाओ का भी उद्घोष लगाना पड़ेगा। अधिक अन्न वस्त्र वस्तु उपजाओ के स्थान पर 'अधिक चरित्र उपजाओ' इस युग की मन्त्र होना चाहिए। जब चरित्र अधिक उत्पन्न हो जायेगा तो अन्न वस्त्र तथा अन्यान्य वस्तुयें स्वयं ही उत्पन्न हो जायेंगी। जन-जन सुखी सभी प्राणि मात्र प्रफुल्लित एवं उल्लसित हो जायेगा।

अतः भगवती श्रुति के स्वर मे स्वर मिलाते हुए हम प्रभु से कह सकें तो अच्छा रहेगा कि-

'चरित्रैस्त्वा पुनामि' मैं तुम्हारे चरित्र को पवित्र कर रहा हू, तुम्हारे व्यवहार को पवित्र कर रहा हू। चरित्रवानो की जय तथा चरित्र की शिक्षा देने वाली अनादि निधना भगवती श्रुति की जय!!!

निर्वाचन
आर्य समाज चौक बाजार
(बुलन्दशहर)
प्रधान-सर्वश्री खजानचन्द्र शर्मा
मन्त्री-श्री शान्ती सरन राठी
कोषाध्यक्ष-श्री देवऋषि जी शर्मा
प्रबन्धक-श्री बीरेन्द्रपाल शर्मा

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ सितम्बर ८२ को समाप्त हो जायेगा। वी० पी० भेजने मे ४.५० अधिक पोस्टेज लगते हैं, इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआडर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

३५१, ८५७, ८५०, २४१५, २४२०, ३०६९, ३०९३, ३०९९, ३०९०, ३०९७, ३१०६, ४५२१, ५६१४, ५६६५, ५६९०, ६०३४, ६२१२, ६७९९, ६८०१, ६८२२, ६९६८, ७०१०, ७०१२, ८१०६, ८३३१, ८३४८, ८३७७, ८६४८, ८६९०, ८७९१, ८८४४, ८९७७, ८९७८, ९००९, ९०१३, ९०७७, ९२५५, ९२५७, ९२६८, ९५२१, ९५२२, ९५२३, ९५२७, ९५२८, ९७१४, ९९८१, ९९९३, ११०२४, ११२६६, ११२६९, ११२७०, ११२७३, ११२७८, ११२७९, ११७१९, ११७९९, ११९९२, ११९९४, १२३८३, १२३८४, १२३८५, १२३९१, १२३९४, १२३९७, १२३९७, १२३९८, १२३९९, १२४०२, १२४०५, १२५०७, १२४०९, १२७२३, १२७२४, १२७२५, १२७२६, १२७२८, १२७२९, १२७३१, १२७३३, १२७३४, १२७३५।

—विनीत
व्यवस्थापक

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ल०न० के लिए जयनारायण आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ शा० आश्विन ४ आश्विन कृ० ३, रविवार सम्वत् २०४० वि०, २५ सितम्बर सन १९८३ ई०

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर को सफल बनाने हेतु सभा प्रधान प्रो. कैलाशनाथसिंह की प्रदेश के आर्य जनों से अपील

आर्यसमाज के प्रवर्तक, आधुनिक भारत के निर्माता, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम मन्त्र द्रष्टा, युगपुरुष देव दयानन्द की निर्वाण शताब्दी आगामी ३, ४, ५ और ६ नवम्बर ८३ को उन की निर्वाण स्थली अजमेर में बड़े धूमधाम से विशाल पैमाने पर मनाई जावेगी। शताब्दी समारोह के पदाधिकारी और कार्यकर्ता अब पूरे जोर-शोर के साथ तैयारी में लगे हैं। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान प्रो० कैलाशनाथसिंह (भू०पू० शिक्षा मन्त्री) ने उत्तर प्रदेश की सभी आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं (डी०ए०वी०, आर्य कन्या, गुरुकुलों, दयानन्द बाल मन्दिरों, सभा से सम्बद्ध अन्य संस्थाओं तथा अन्यान्य आर्यजनों और प्रदेश के नागरिकों से पुरजोर अपील करते हुए कहा है कि शताब्दी के अवसर पर ओ३म् के झण्डे, समाजों तथा संस्थाओं के बैनरों के साथ अधिक से अधिक संख्या में बसों, ट्रेनों या अन्य साधनों से अजमेर पहुंच कर जगतगुरु महर्षि दयानन्द को अपना श्रद्धा-सुमन अर्पित करें। सभी आर्यजन तनमन, धन से सहयोग करें।

जिन लोगों ने धन भेजा है तथा भेज रहे हैं, वे तथा बसों ट्रेनों आदि से पहुंचने वाले सूचना सभा कार्यालय में अवश्य देवें।

—'आर्यमित्र' संवाददाता

वार्षिक	१६)
छमाही	९)
विदेश में	३ पौंड
एक प्रति	५० पैसे

प्रधान सम्पादक—
पं० इन्द्रराज
सभा मन्त्री

वर्ष	अंक
८६	३६

प्रार्थना

जाया तप्यते कितवस्य हीना
माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् ।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषा-
मस्तमुप नक्तमेति ॥
ऋ० १०-३४-१० ॥

अर्थ –जब जुआरी सब कुछ हार कर घर छोडकर भाग जाता है, तब उसकी वियुक्त पत्नी भोजनादि न मिलने से दुःखी होती है। इधर उधर भटकते हुए जुआरी बेटे की माता भी तड़पती है। ऋण के भार से दुःखी वह ऋणदाता से डरकर भागता फिरता है। धन को चाहते हुए दूसरो के घरो पर रात मे चोरी के लिये सेंध (नकब) लगाने पहुंच जाता है। परिणामतः नाना प्रकार से कष्ट भोगता है।

आर्य्यमित्र

लखनऊ–रविवार, २५ सितम्बर १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

लक्ष्य की ओर

बहुचर्चित आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक (१९८३) का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। आर्यजनो का सहयोग और भविष्य मे लक्ष्य की ओर बढने के लिए सबमे प्रबल चेष्टा एव मनोयोग देखने को मिला। जैसे रात्रि में सोया व्यक्ति प्रात मे नवचेतना एव नवीन उत्साह का अनुभव करता है। तदनुसार प्रधान एव मन्त्री की स्थिति है। उनमे नव स्फूर्ति एव नव शक्ति है। लक्ष्य की ओर बढने के लिये और तदर्थ कार्य भी प्रारम्भ हो गया है। सभा के कुशल एव उत्साही प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी ने अपने एक वक्तव्य मे इस दिशा में प्रकाश भी डाला है।

आज मुद्रा स्फीति का युग है। प्रतिदिन कीमतें बढती जाती हैं। तदनुकूल हमे आय के साधन भी बढाना आवश्यक है, तभी सभा प्रचार कार्य और आर्य समाज के लक्ष्य की पूर्ति की दिशा मे कुछ ठोस कार्य हो सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के पास लखनऊ के प्रथम श्रेणी के क्षेत्र मे पर्याप्त भूमि है यदि इस पर बहुमंजिली इमारत बन जाय, तो सरकारी कार्यालय और बैंक आदि किराये पर ले सकते हैं। आय बढ जायेगी। प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी इस दिशा मे प्रयत्नशील हैं। आशा है आगामी महीनो मे इस निर्माण कार्य को प्रारम्भ करा दिया जायगा। इसके साथ ही सभा कार्यालय के लिए भी पर्याप्त स्थान हो जायगा। भव्य कक्षों और सभा हाल का भी निर्माण होगा। उपदेशक विद्यालय का प्रारम्भ भी शीघ्र से शीघ्र होना है, चाहे गुरुकुल वृन्दावन मे हो लखनऊ मे अथवा अन्य किसी उपयुक्त स्थान पर। आर्य समाज के आधार स्तम्भ मूल-भूत कार्यक्रमो जैसे धर्म रक्षा महा अभियान मद्य निषेध, शुद्धि कार्य, दहेज कुरीति-उन्मूलन आदि कार्यक्रमो को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

प्रमुख कार्यक्रमो में हैं। निर्वाण-शताब्दि समारोह को सफल बनाना। अजमेर पहुंचने से कोई आर्य जन वञ्चित न रह जाय। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की स्थापना शताब्दि १९८७ में मनाना है और गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की हीरक जयन्ती इन अवसरों पर बहुत ही व्यापक और प्रभावी कार्यक्रमों की पूर्ति करना है। सभा की ओर गुरुकुल वृन्दावन की प्रतिष्ठा को भारत मे विस्तृत करना है।

निर्माण कार्यों मे हरिद्वार के दयानन्द भवन मे पक्का घाट निर्माण करवाना है। विरजानन्द कुटी का विकास होना है तथा प्रदेश मे समस्त आर्य समाज के भवनो का सर्वेक्षण करके उनमे जो जीर्ण हैं उनका निर्माण और मरम्मत कार्य प्रारम्भ किया जाय। सभा के पुस्तकालय एव प्रकाशन विभाग के सुधार के साथ प्रदेश की प्रत्येक आर्य समाज मे पुस्तकालयो की अनिवार्य स्थापना।

सभा के कार्यालय का पुनर्गठन जिससे कार्य क्षमता बढ़े। वेतन भोगी कर्मचारियो के हितो को ध्यान मे रखते हुये उनकी स्थिति में सुधार और कार्य कुशलता को बढ़ाने हेतु उपयोगी आवश्यक पग उठाये जाय। दयानन्द की शिक्षा प्रसार हेतु दयानन्द बाल मन्दिरो के प्रसार की योजना भी विचाराधीन है प्रदेश के किसी स्थान पर बृहद् दयानन्द चिकित्सालय की स्थापना उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र पिछड़ा है। आर्थिक दृष्टि से भी दुर्बल है उसके विकास और आर्य समाज के कार्यक्रमो की गतिशीलता उस क्षेत्र मे हो तदर्थ उपयोगी कदम उठाये जाय।

जीवन सेवा मे है। संस्थायें जनता की सेवा के लिये होती हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती देश की दुर्दशा से द्रवित हो उठे थे और आर्य समाज की स्थापना के लिए उद्यत हुए। आर्य देश में दैन्यता है। मानसिक दासता है। नैतिकता के चरित्र का हरण सर्वत्र है। रोग और अशिक्षा है। आर्यसमाज देश के इन शत्रुओं से लड़ने के लिए ही जीवित है। हर्ष है कि प्रो० कैलाशनाथ सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश एव उनके समस्त सहयोगी इस दिशा के प्रति जागरूक है और आगामी वर्ष 'निर्माण-वर्ष' होगा सब एक मन से निर्माण मे तत्पर हो जायेंगे।

–आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

संन्यासियों की टोली अजमेर को

महर्षि दयानन्द शम्भुदयाल वैदिक संन्यास आश्रम के आचार्य स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती के नेतृत्व मे बीस सन्यासियो, वानप्रस्थियो, ब्रह्मचारियो की टोली २२ सितम्बर १९८३ को चार बजे यज्ञानुष्ठान और महर्षि दयानन्द के मानव उत्थान कार्यों पर एक महती सभा मे प्रकाश डालकर वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद से अजमेर के लिए प्रस्थान करेंगे।

गाजियाबाद नगर की समस्त आर्य समाजो और नागरिको के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल दिवाकर हंस सकुशल पद यात्रा के पूर्णता के निमित्त स्वस्ति पाठ करेंगे और ओम का झण्डा फहराते हुए पद यात्री प्रस्थान कर देंगे। यह मार्ग मे पडने वाले स्थानो पर ऋषि दयानन्द के विचारो का प्रचार करते हुए अक्टूबर के अंत में अजमेर पहुंच जावेंगे।

–जनार्दन मिश्र

निर्वाचन—

आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय मवाना

प्रधान—श्री कान्तिस्वरूप दुबलिश
मन्त्री—श्री प्रेम प्रकाश सर्राफ
प्रबन्धक—श्री नरेन्द्र कुमार

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्ता-सामेकामिदभ्यंहुरोगात् ।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥

—ऋ० १०-५-६

'कवयः' क्रान्तदर्शी परमात्मा ने सात मर्यादायें बनाई हैं जो मनुष्य इनमें एक का भी उल्लंघन करता है, वह पापी होता है। जो मनुष्य (धरुणेषु) विपत्ति के अवसर पर कठिन परीक्षा के समय (पथां विसर्गे) मर्यादा भंग का प्रलोभन प्राप्त होने पर भी (उपमस्य नीळे) परमात्मा के आश्रय में स्थिर रहता है वह सचमुच (आयोः स्कम्भः) मानवता का आधार स्तम्भ होता है।

इस मन्त्र का अर्थ समझने के लिए हमें मर्यादा शब्द का अर्थ समझना होगा। मर्यादा शब्द हमने सुना है। कृष्ण के लिये योगीराज या कर्मयोगी शब्द का प्रयोग किया जाता है तो राम के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम। वहां पर मर्यादा का मतलब यह है कि वचन, नियम और व्यवस्थाओं का अक्षरशः पालन करने के कारण 'राम' मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रसिद्ध हुए। श्रीकृष्ण के प्रति यह बात नहीं। वे सामाजिक दृष्टि से न्याय और सत्य की रक्षा के लिए बड़ी कुशलता और चातुर्य से किसी कार्य को समयानुकूल सिद्ध कर लेते थे। द्रोणाचार्य, कर्ण, भीष्म का युद्ध में मारा जाना उनकी कर्म कुशलता का परिचय था। गांडीव धनुष को धिक्कारने पर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये कि जो गांडीव को धिक्कारेगा उसे मैं मार दूंगा—फिर चाहे वे इन्द्र, कृष्ण या युधिष्ठिर हों-युधिष्ठिर को मारने के लिए जब अर्जुन तलवार निकालते हैं तो वहां कर्मकौशल ने मर्यादा का उल्लंघन कर और अर्जुन की प्रतिज्ञा को भंग करने के लिए कृष्ण ने कहा कि बड़ों का अपमान कर देना, उनको मार देना है—अब और क्या तू करेगा, कह कर

सप्त मर्यादाएं (१)

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०, एल०टी० १७५ जाफरा बाजार गोरखपुर]

उसकी तलवार हटवा दी। इसलिए राम जहां मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए वहां कृष्ण योगी कहलाये परन्तु इस मन्त्र मे बहुप्रचलित मर्यादा शब्द का अर्थ थोड़ा भिन्न है।

मर्यादा का अर्थ है, विहित कर्म या विधि रूप से निर्दिष्ट कर्म। आप प्रातःकाल उठकर बड़ों को नमस्ते करते हैं, बड़ों के मिलने पर उठकर उनका स्वागत करते हैं, नियमपूर्वक अपने नित्य कर्म स्नान, व्यायाम, संध्या, हवन, स्वाध्याय आदि करते हैं तो यह सब मर्यादायें हैं या विधि रूप से निर्दिष्ट कर्म करते हैं तो आप मर्यादा का पालन करते हैं।

नीति का बन्धन, व्यवस्थित नियम और औचित्य का विधान। इसको और स्पष्ट समझने के लिए यह ध्यान रखिये कि मर्यादा नकारात्मक न होकर, विधि परक होनी चाहिए। उदाहरणार्थ—सत्यंवद—सच बोलो, धर्मंचर—धर्म का आचरण करो, मातृदेवोभव—माता को देवता समझकर उनका आदर कर। यह सब विधिपरक मर्यादा के उदाहरण हैं। मर्यादा का विपरीतार्थक शब्द पाप है। पाप का अर्थ है, निषिद्ध कर्म वर्जित कर्म या आचरण। अर्थात् पाप विधि परक न होकर निषेधात्मक होता है। जैसे "अक्षैर्मा दिव्यः—जूआ मत खेलो। झूठ मत बोलो 'कृषिमित्कृषस्व'—खेती करो यह मर्यादा वाचक है।

इस मन्त्र में कहा गया है—सप्त मर्यादा कवयस्ततक्षुः" अर्थात् क्रान्तदर्शी परमात्मा ने सात मर्यादायें घड़ी हैं—बनाई हैं। ये सात मर्यादायें कौन-सी हैं? वेद को समझने के लिए सबसे अधिक सहायक वेद होते हैं। अतः वेद में सात मर्यादायें निम्नलिखित मानी गई हैं जिनका पालन करने से हम मर्यादा पुरुषोत्तम बन सकते हैं। मर्यादाओं में पहली मर्यादा है—

"तेन त्यक्तेन भुंजीथाः" वैराग्य भाव से भोग करो। इस मर्यादा का पालन करने से हम 'लालच' नामक पाप से बच सकेंगे अतः पाप से बचने का उल्लेख भी यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्र में बतलाया है। 'मागृधः' लालच मत करो। पाप की सेना में काम, क्रोध, मद, लोभ मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि सैनिक हैं। इन सब का मूल लालच है। लालच रूप का होता है—लालच धन तथा ऐश्वर्यों का होता है। यह लालच ईर्ष्या, द्वेष, स्तेय तथा परिग्रह को लाता है और मानव को कुचल कर रख देता है, अतः पहली मर्यादा—'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' वैराग्य भाव से भोग करो—मर्यादा को हमें धारण करना चाहिए।

'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः'—वैराग्य भाव से भाव से भोग करो। इस मर्यादा को समझने के लिए मन्त्र के पूर्वार्ध का ध्यान रखना होगा। पूर्वार्ध है 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्'—इस जगती के जो जगत् है वह ईश द्वारा बसा हुआ है।' जगती का अर्थ है 'गतिवाली' और 'जगत्' का अर्थ है 'गतिमान्' है। सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, तारे, अणु-अणु में गति है—प्रवाह है। इस गति या प्रवाह का करने वाला कौन है? क्या यह गति स्वयं हो रही है? स्वयं कैसे होगी? यह तो सब जड़ हैं। इन जड़ को गति देने वाला कौन है? कौन है जो इसे व्यवस्था और नियम में चला रहा है वह इनका 'ईश' है मालिक है, स्वामी है, इनका व्यवस्थापक है, इनका नियामक है। और जब वह इन सब पदार्थों मे 'ईश' की हैसियत से बैठा हुआ है तब तो यह सब पदार्थ उसी के हैं, हमारा क्या है? यह बात समझ में आने पर हम यह समझने लगेंगे कि मैं उसका दिया खाता हूं, उसका दिया पीता हूं उसका दिया काम मे लाता हू। हमे सोचना है यह सम्पूर्ण जगत् उससे—ईश से—परब्रह्म से अनुप्राणित है अर्थात् जब हम ससार के बाहरी रूप को न देखकर उसके अन्तराल में जाज्वल्यमान प्रगाढ़ यथार्थ सत्ता को देखना प्रारम्भ कर देंगे, उस समय हम अनुभव करेंगे कि परब्रह्म संसार के अणु अणु मे व्यापक है तब हम संसार की प्रत्येक वस्तु से एकात्मकता अनुभव करने लगेंगे और उस समय ट्रेहर्न के शब्दों में समुद्र हमारी शिराओ बहने लगता है, सितारे हमारे देह के आभूषण बन जाते है। जो व्यक्ति प्रत्येक वस्तु को ब्रह्म से अनुप्राणित, ब्रह्म से आवासित और ब्रह्म से ढका हुआ अनुभव करने लगेगा। सम्पूर्ण वस्तुएं ब्रह्म की समझने लगेगा तब वह वैराग्य भाव से भोग करना सीख जाएगा। उसके लिए लालच को, छीन-झपटी को या अहंमन्यता को स्थान नहीं रहेगा? ऐसा समझने वाला संसार में निर्लेप, निःसंग, त्यागपूर्वक भोग के अतिरिक्त किसी दूसरे दृष्टिकोण को अपने सम्मुख रख ही नहीं सकता।

(क्रमशः)

देश-दशा

[श्री डा० मुंशीराम जी शर्मा 'सोम' कानपुर]

नाथ ! नभ कब से घिरा है उदासीनता से,
रवि-शशि छवि-क्षीण शोक-सा मना रहे ।
पेड़-पशु-पक्षी-मानवों के मुख म्लान पड़े,
भीतर भरी है पीर नेत्र अश्रु ढा रहे ॥

कर्मचारियों में, अधिकारियों में, सेवकों में,
शिक्षकों, व्यापारियों में भीति-भाव छा रहे ।
डाके दिन दहाड़े बैंक, डाकघर, रेल मध्य,
फन भी फिरोती के घिनौने दृश्य ला रहे ।१।

आर्यावर्त भारत को सिन्धुस्थान हिन्दुस्तान मान हम,
अपने को हिन्दु कहने लगे ।
सिन्धु पार कभी रहते थे चोर डाकू,
वही सिन्धु हिन्दू फारसी में अर्थ करने लगे ।

आर्य शब्द छूटा, वस्तुवाची शब्द पीछे पड़ा,
बाहर से आये वे भी साथ चलने लगे ।
पर आज फिर बटवारा हो रहा है नाथ,
एक में अनेक देश-भाग बनने लगे ।२।

हिन्दू से मुसलमान बने थे विशेष बल,
खाई चौड़ी होती गई, वर्ग दो प्रसिद्ध थे ।
यूरोपीय जातियां ईसाई मत साथ लाईं,
वर्ग बना तीसरा, सभी विरोध-सिद्ध थे ।

पराधीनता में परकीयता दबी-सी रही,
होते ही स्वतन्त्र स्वैरस्वर भी समिद्ध थे ।
पाकिस्तान साथ क्यों न ईसा देश हिन्द में हो,
खालिस्तान के भी सिक्ख स्वप्न वृद्ध-बुद्ध थे ।३।

राज्य तो अनेक पहले भी थे, परन्तु,
देश एक था समान-भाव-संस्कृति लिये हुये ।
सम्प्रदायवाद भी पला था बौद्ध, जैनों साथ ।
लोकायत, शैव, वैष्णवामृत पिये हुए ।

किन्तु ध्रुव उत्तर से दक्षिण गये अगस्त्य,
ब्रह्म-स्याम-मलय प्रदक्षिणा दिये हुए ।
उद्दालक पैद, कण्व मिथ को सिखाते रहे,
बरुण, सुमात्रा, यव एकता किये हुये ।४।

चक्रवर्ती राज्य था हमारा वसुधा के बीच,
मांडलिक राजा वे निदेश-नय मानते ।
अभिषेक समय तिलक करते वे सब,
अश्वमेध, राजसूय यज्ञ तन्तु तानते ।

सूर्यवंश, चन्द्रवंश, भृगुवंश फैले हुए,
आज भी धरा पर स्वधा को पहिचानते ।
स्वाहा सर्वहित में सदैव सम्पदा का किया,
आर्य गुण गरिमा वरीयता को जानते ।५।

एक है महेश नाम जिसके विशेष,
भिन्न देश, भिन्न भाषा, भिन्न स्वर, वर्ण गेयता ।
सतति उसी की चर-अचर विराट विश्व, मानव,
उसी की मानपूजा में वरेण्यता ।

हम सब बन्धु भावना से यहां फूले-फलें,
द्वेष वैमनस्य विष को न दें सुपेयता ।
व्याक्त हो समान, अन्न भोग भी समान,
साथ एक जुट होके प्राप्त करलें अजेयता ।६।

आर्य भवनों में दस्युता हो दूर द्वार से ही,
हिंसा, अघशंसा, दम्भ, दर्प, द्वेष नाश हो ।
सत्य, सदाचार, शौच, तप का विधान चले,
श्रुति-स्मृति-शास्त्र सिद्ध ज्ञान का प्रकाश हो ।

यम नियमों से युक्त जीवन प्रणाली बने,
पुण्य राशि द्वारा छिन्न-भिन्न पाप-पाश हो ।
आशा से वलित, संकलित हो फलित काम,
जीवन से कोई न निरावृत, निराश हो ।७।

फिर नभ में न घहरावेंगी घटायें घोर,
रवि छवि द्वारा चन्द्रकर भी करें प्रसन्न ।
मुख भी न म्लान, उदासीनता पलायिता हो,
हर्ष हलाद स्वाद पावें जन जो बने विपन्न ।

सुख-सम्पदा से परिपूरित गृहस्थी रहें,
वसु उपलब्धि हो, मरे न जन हो निरन्न ।
प्रकृति प्रसादमयी, विकृति विषादमयी,
प्रकृति न छिन्न हो, विकृति रहे समाच्छन्न ।८।

श्री खेमसिंह आर्य का भव्य स्वागत

आर्य उपप्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के प्रधान श्री सूरजपाल जी के विशेष आमन्त्रण पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमन्त्री श्री खेमसिंह जी आर्यसमाज कमालगंज फर्रुखाबाद पहुंचे जहां जनपद की आर्यसमाजों की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन किया गया और श्री आर्य जी ने कमालगंज आर्यसमाज का निरीक्षण किया तथा वहां के विवादों को सुना, सम्पत्ति का निरीक्षण किया और व्यावहारिक सुझाव दिये जिसके अनुसार यदि आर्यजन कार्य करें तो समस्यायें सुलझ जायें । —संवाददाता

उत्सव—

आर्यसमाज हरदोई

आर्यसमाज हरदोई का उत्सव १४ से १६ अक्तूबर तक आर्य कन्या पाठशाला में मनाया जायगा । —अनूपकुमार मन्त्री

आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर

आर्य वीर दल आर्यसमाज कानपुर ७ का वार्षिकोत्सव २८, २९ अक्तूबर को मनाया जायगा । —गंगाराम आर्य का०वा० मन्त्री

आर्यसमाज अलीपुर कलां (मु० नगर)

आर्यसमाज अलीपुर कलां मुजफ्फरनगर का उत्सव १८ से २० अक्तूबर तक होगा । —मन्त्री

वनिता विवेक

उर्मिला माण्डवी और श्रुतकीर्ति

(गताङ्क से आगे)

माण्डवी और श्रुतकीर्ति—ये दोनों राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्याएं थीं और उर्मिला साक्षात् राजा जनक की पुत्री थी। जनक का असली नाम सीरध्वज था। सीताजी के विवाह के साथ ही माण्डवी आदि तीनों कन्याओं का विवाह भरत आदि तीन भाइयों के साथ हुआ। माण्डवी भरत की, उर्मिला लक्ष्मण की तथा श्रुतकीर्ति शत्रुघ्न की धर्मपत्नी हुईं। जिस प्रकार भरत आदि तीनों भाइयों का श्री राम चन्द्र जी के प्रति अलौकिक प्रेम था, उसी प्रकार माण्डवी आदि तीनों बहिनें भी सीता के प्रति अटूट प्रेम रखती थीं। इन चारों बहिनों ने महाराज दशरथ के घर में आकर अपूर्व सुख-शान्ति एवं सौहार्द की सृष्टि कर दी थी। सभी बहिनें असाधारण प्रतिव्रता थीं। सबके मन में सास-ससुर तथा गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं आदर्श भाव था। इन्हें अपनी सेवा से तीन-तीन सासुओं को सन्तुष्ट रखना पड़ता था। किसी भी सासु ने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि इनमें से अमुक तो मेरी सगी पतोहू है और अमुक सौतेली। इन राजकुमारियों ने अपने स्वार्थ त्याग, स्नेहशीलता, धर्म परायणता, विनय, संयम, सेवा, सौहार्द सदाचार तथा सुशीलता आदि सद्गुणों से सबके हृदय को जीत लिया था। पति के प्रेम और भक्ति, जेठ के प्रति श्रद्धा और आदर तथा देवर के प्रति उदारता एवं वात्सल्य इन सबके स्वाभाविक गुण थे। यही कारण था कि महाराज दशरथ के विशाल परिवार में पुत्री और पुत्र-वधुओं को लेकर कभी कोई विवाद खड़ा नहीं हुआ। किसी के मन में कोई स्वार्थ था ही नहीं; सभी दूसरों को सुख पहुंचाना ही अपना धर्म समझती थीं और इसी में सुख मानती थीं।

मन्थरा की प्रेरणा से कैकेयी ने जब राम के लिए वनवास का वरदान मांगा, उस समय माण्डवी लज्जा से गड़ गयी। सबसे अधिक चोट उसी के हृदय को पहुंची थी। उसने अनुभव किया, सास के अविवेक के कारण मैं और मेरे पतिदेव सबसे अधिक कलंकित हुये। वह जानती थी कि माता कौसल्या और सुमित्रा मुझ पर सन्देह नहीं करेंगी तथापि दूसरों के मन में ऐसा विचार उठ सकता है कि माण्डवी ने ही यह आग लगाई होगी। उसी ने कोई स्वार्थ अपना साधने के लिए पति और सास के हृदय पर कोई विपरीत प्रभाव डाला होगा। उसका हृदय फटा जा रहा था। उसकी बरसती हुई आंखें ही बता रही थीं कि उसके हृदय में कितनी पीड़ा थी।

उर्मिला और श्रुतकीर्ति को भी इस अप्रत्याशित घटना से बड़ी पीड़ा पहुंची थी। इन बहिनों में शालीनता इतनी थी कि स्वयं आगे होकर किसी बात का विरोध न कर सकीं। देव तुल्य जेठ का वनवास, अपनी लक्ष्मी-सी बहिन का तपस्विनी बनकर वन में जाना आदि बातें ऐसी थीं, कि जिनकी याद करके उनका कोमल हृदय क्षण भर के लिये भी चैन नहीं पाता था; किन्तु उनकी इस आन्तरिक वेदना को अन्तर्यामी के सिवा और कोई न देख सका।

चयनिका

—मनुष्यों के दिये हुए हव्य और कव्य पितृ लोक तक कैसे पहुंचते हैं? यह आश्चर्य है।

—यदि दूसरे के खाने से दूसरे की तृप्ति हो जाय तो परदेश को जाते समय लोग 'तोशा' न बांधा करें।

—जीव मात्र अपने कर्मानुसार गति को प्राप्त कर लेता है, फिर मृत पितर अपने पुत्रों के घर कैसे आ सकते हैं?

—यह मनुष्य अपना स्वयं मालिक नहीं है, ईश्वरेच्छा से यह जन्म और मरण के चक्कर में इधर से उधर धक्के खाता रहता है।

—जो संग्रह किया गया है, वह एक न एक दिन नष्ट अवश्य होगा। जो उठता है, वह गिरता है। जो मिलता है, वह एक न एक दिन वियुक्त भी होता है। जो जीता है वह मरता भी जरूर है।

—जैसे पके फल गिरने से ही डरते हैं वैसे ही मनुष्य को मरने से ही डर लगता है।

—जैसे एक बड़ा महल धीरे-धीरे जीर्ण होकर गिर पड़ता है वैसे ही जरा और मृत्यु के द्वारा ग्रस्त हुए प्राणी नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

—जो रात बीत गई वह बीत ही गई। फिर लौटकर न आवेगी। देखो यह यमुना नदी समुद्र की ओर चली ही जाती है, वहां से फिर लौटकर नहीं आती। यही हाल हमारी आयु का है।

—सब प्राणियों की आयु रात और दिन के फेर में पड़कर ऐसे नष्ट हो रही है, जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणों से जल सूखता जाता है।

—मृत्यु जब चलते हो तब साथ साथ चलती है, जब बैठते हो तो बैठ जाती है। बहुत दूर जाकर जब लौटते हो तो तब वह भी साथ ही लौट आती है, भाव यह है कि कौन जानता है—चलते-बैठते या परदेश में या वहां से लौटते समय कब मृत्यु पकड़ ले।

—अतः भाइयो मरे हुओं का शोक क्यों कर रहे हो, अपना-अपना शोक करो, किन्तु तुम्हारी आयु चलते उठते बैठते प्रतिक्षण ह्रास को प्राप्त हो रही है।

—जब सूर्य उदित होता है, तो लोग पुर्ती के साथ नये-नये काम करने लगते हैं, जब सूर्य छिपता है उसकी सायंकाल की शोभा निहार कर आनन्द मग्न हो उठते हैं, पर वे भूल जाते हैं, इस प्रात. सायं के बखेड़ों में हमारी आयु भी नष्ट हो रही है।

—जैसे दो काष्ठ समुद्र में बहते-बहते कहीं पर आकर मिल जाते हैं, फिर तरंगों के थपेड़ों से पृथक् होकर बहने लगते हैं, यही हाल प्राणियों के मिलने और वियुक्त होने का है।

—इसी प्रकार पुत्र, मित्र, कलत्र और धन-दौलत मिलने पर फिर साथ छोड़ जाते हैं। —नारायणप्रिय

राम, सीता और लक्ष्मण वन में चले गये, इस बात का सभी को बड़ा दुःख था। देवतुल्य श्वशुर इस भारी शोक को न संभाल सकने के कारण परलोक वासी हो गये। माताएं अर्द्ध मूर्छित अवस्था में आ रही हैं। यह सब देखकर तीनों बहिनों का कलेजा फटता था। सबसे अधिक क्षोभ का सामना उर्मिला को करना पड़ा। उसके जीवन सर्वस्व, उसके प्राणाधार पति लक्ष्मण भी वन में थे। वह उनके दर्शन से, उनके कुशल समाचार से भी वंचित हो गई थी। यदि सीता की भांति वन में जाकर स्वामी की सेवा कर सकती, तो उसे कुछ सन्तोष रहता; किन्तु वह ऐसा नहीं कर सकती थी। उसके स्वामी किसी के कहने से नहीं स्वेच्छा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

२४ सितम्बर को जिनकी पुण्य तिथि है।

पं० नरेन्द्र जी : दूसरों की नजर में

(श्री कृष्णदत्त भू० पू० प्रिंसिपल, हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद)

सात वर्ष बीत गये। हां स्वामी सोमानन्द जी महाराज (पं० नरेन्द्र जी) को स्वर्गवासी हुए सात वर्ष बीत गये। सात वर्ष पूर्व तक स्वामी जी हमारे बीच में थे। चलते-फिरते, बोलते-चालते, उठते-बैठते पं० नरेन्द्र जी हमारे मध्य थे, पर आज वे केवल स्मृति शेष हैं। समय रुका नहीं। समय किसी के लिए रुकता नहीं। समय किसी के लिए रुकेगा भी नहीं। देखते ही देखते समय बीत गया, जो व्यक्तित्व हमारे लिए प्रत्यक्ष था, वह बीते दिनों की स्मृति मात्र रह गया।

अपने कार्यों, अपनी निर्भीकता, अपने आकर्षक व्यक्तित्व, अपनी त्यागवृत्ति, पीड़ितों के प्रति अपनी सहज सहानुभूति के कारण स्वामी जी को सभी दिशाओं से आदर, स्नेह, श्रद्धा मिलती रही। स्वामी जी के समकालीन सभी हिन्दू-मुस्लिम व्यक्तियों ने उनके प्रति जो विचार प्रकट किये हैं, उनसे उनके व्यक्तित्व, कार्यों और प्रभाव का मूल्यांकन हो सकेगा। पंडित जी ने १४ मार्च ७६ को संन्यास आश्रम की दीक्षा ली और लगभग ६ मास बाद ही २४ सितम्बर ७६ को वे परलोक सिधारे, अतः जनता में उनका पूर्व रूप नाम और पूर्व ही अधिक प्रचलित रहा है।

स्व० सेठ गोविन्ददास :—पं० नरेन्द्र देश के दक्षिणी आंचल में भाषा संस्कृति के क्षेत्र में एक महत्व पूर्ण धुरी के रूप में वर्षों से बड़ा उपयोगी काम करते रहे।

स्व० म० आनन्द स्वामी जी महाराज :—देश की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, शारीरिक उन्नति में, पण्डित जी सदा अग्रसर रहे हैं।

स्व० एम. नरसिंगराव जी :—आने वाली पीढ़ (नस्ल को पं० नरेन्द्र जी के जीवन से बीते हुए दिनों के स्वतन्त्रता संघर्ष की तारीख को समझने में मदद मिलेगी।

स्व० पं० विनायकराव जी :—मैं नेताओं को तीन श्रेणियों में विभक्त करता हूं। एक मंच पर के नेता, दूसरी श्रेणी कार्य-क्षेत्र के नेता और तीसरी श्रेणी, कार्यालय के नेता पण्डित जी उन विरलों में में से हैं, जिनमें तीनों गुण पूर्णता को पहुंच चुके हैं।

स्व० श्री घनश्यामसिंह गुप्त—अनियन्त्रित और अत्याचारी (निजाम के) शासन के विरुद्ध आर्य समाज को सफलता मिली, और जिसकी म० गांधी ने स्वयं प्रशंसा की थी, उस सफलता के पर्याप्त हिस्सेदार पं. नरेन्द्र जी हैं।

स्व० स्वामी रामानन्द जी तीर्थ :—पं० नरेन्द्र जी की राष्ट्र के प्रति की गई अनगिनत सेवाएं हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग और पीड़ाओं से परिपूर्ण है। निजाम की सामन्ती दमन-नीति के विरोध में आवाज उठाना सरल नहीं था। उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही तत्कालीन रियासत हैदराबाद के पीड़ितों और त्रस्तों को बन्धन मुक्त करने की प्रेरणा प्राप्त की थी। शायद यही कारण है कि पं० नरेन्द्र जी निजामी शासन के कठोर प्रहार के पहले शिकार बने।

स्व० एन एम. गुप्ता :—पं० नरेन्द्र जी को हिन्दी से अत्यन्त प्रेम था। आर्य समाज की सेवा के बाद उनकी हिन्दी-सेवा का स्थान दूसरा है।

डा० एम० चेन्ना रेड्डी :—एक अत्यन्त प्रेरक वक्ता के नाते वे सदैव श्रोताओं के साथ तादात्म्य स्थापित करने में सफल होते थे। अपनी बात की पुष्टि में वे कभी निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग नहीं करते थे। स्पष्टता, निराडम्बरता, सिद्धान्तवादिता, साहस के गुणों से युक्त उनकी वक्तृता के कारण उनके मित्र ही नहीं, उनके प्रतिस्पर्धी भी उनके प्रशंसक थे।

श्री इब्राहीम अली अन्सारी:—हैदराबाद के दमनकारी अन्तिम शासक के विरुद्ध और हैदराबाद राज्य के भारत में विलीनीकरण के पक्ष में उन्होंने (पं० नरेन्द्र जी ने) घोर संघर्ष किया।

नवाब अकबर अलीखान :—आज के हिन्दुस्तान में जबकि हम सब लोग गरीबी हटाने, रोग-मुक्त होने और निरक्षरता निवारण करने में लगे हुए हैं, नरेन्द्र जी जैसे निष्ठावान व्यक्तियों की बहुत अधिक आवश्यकता है।

अलहाज हाफिज अबु युसुफ :—पंडित जी ने हुकूमत–निजाम से टक्कर ली थी, लेकिन बाज जज़बाती (भावुक) लीडरों ने इस जिद्दोजहद (संघर्ष) को मुस्लिम-मुखालिफ' नाम देकर बेसबब बीच में इख्तेलाफ की दीवार खड़ी कर दी। हालांकि मैं जाती तौर पर वाकिफ हूं कि पं० नरेन्द्र जी ने सैकड़ों मुसीबतज़दा मुसलमानों की मुमकिना मदद की है।

श्री आबिद अली खां :—पं० नरेन्द्र जी यकीनन साबिक रियासत हैदराबाद के दौर में एक अहम और मुमताज़ कायद (प्रतिष्ठित नेता) रहे हैं। हैदराबाद की आजादी की तहरीक और उसके बाद कौमी एक जहती (राष्ट्रीय एकता) के इस्तेहकाम (दृढ़ता) के लिये उनकी कोशिश इस इलाके की तारीख में अपना मुकाम रखती है।

डा० सैयद मोहिउद्दीन कादरी जोर :—पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद के उन बड़े लोगों में से हैं, जिन्होंने इस मुल्क को सियासी, समाजी, व कलचरल तारीख के बनाने में अजीम्मोशान खिदमात अंजाम दीं। सियासी बेदारी और तहज़ीबी विरसे की हिफाजत की अलम बरदारी के लिए उन्होंने मुल्क केनौजवानों में एक ऐसी तड़प और जिन्दगी पैदा की जो इनके नाम और काम को हमेशा जिन्दा रखेगी।

ऊपर की पंक्तियों में हमने पं० नरेन्द्र जी के सम्बन्ध में विविध क्षेत्रों, विचारधाराओं, पत्रकारों और राजनैतिक तथा सामाजिक नेताओं के विचार प्रस्तुत किये हैं। इन विचारों को पढ़ने के पश्चात् प० नरेन्द्र जी के व्यक्तित्व और महत्व को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। श्रीमती सुशीला देवी विद्यालंकृता ने अलंकारिक रूप में पंडित जी का शब्द–चित्र इस रूप में चित्रित किया है :—'पं० नरेन्द्र जी में राणा प्रताप सी देशभक्ति, वीर शिवाजी की सी निर्भीकता, पंजाब केसरी (लालाजी) की-सी वक्तृत्व-शक्ति तथा बैरागी सी कष्ट सहिष्णुता थी।' श्री ओम् प्रकाश जी पुरुषार्थी एम० पी० ने पंडित जी के 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' स्वभाव के पारस्परिक विरोधी स्वरूप का विश्लेषण इन शब्दों में किया है—, श्री पंडित जी (नरेन्द्र जी) व्यवहार में जितने विनम्र एवं मधुर हैं उतने ही सिद्धान्त पर अड़ने में कट्टर व दृढ़ हैं। सिद्धान्त-भेद होने पर उनका स्वरूप ही बदल जाता है। इस प्रकार श्री पण्डित जी विनम्रता, मधुरता, कट्टरता व दृढ़ता का साक्षात् समन्वय हैं।' ऐसे थे पंडित नरेन्द्र जी, जिन्होंने आज सात वर्ष पूर्व अपनी जीवन लीला समाप्त करके हम से सदा-सदा के लिए विदा ली।

सार्वदेशिक सभा के विधान में अपेक्षित संशोधन

सार्वदेशिक सभा के साधारण सदस्यों की सेवा में सादर निवेदन

प्रस्तावक—महामहोपाध्याय वेदाचार्य व्यास, एम० ए०, बरेली

(१)

सार्वदेशिक सभा का जब निर्माण हुआ था, उस समय आरम्भिक विधान इस प्रकार था कि—

१—१० प्रतिनिधि उत्तर प्रदेश।
२—१० प्रतिनिधि पंजाब।
३—७ प्रतिनिधि बिहार—बंगाल।
४—५ प्रतिनिधि राजस्थान इत्यादि।

इस विधान के आधार पर सार्वदेशिक सभा का संगठन पाकिस्तान से पूर्व तक चलता रहा।

(२)

भारत का उत्तरप्रदेश सबसे बड़ा प्रान्त है। साथ ही उस समय पंजाब सभा का भी बहुत बड़ा क्षेत्र था। पर पंजाब आधा पाकिस्तान में चला गया। पंजाब बहुत छोटा रहा। पंजाब प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केवल ५०० आर्यसमाजें रह गईं। अतः सार्वदेशिक सभा के विधान में संशोधन अपेक्षित है, ऐसा अनुभव हुआ। परिणामतः सार्वदेशिक सभा के विधान में संशोधन यह हुआ कि—

जिस प्रान्तीय सभा में जितने प्रान्तीय प्रतिनिधि हों उन पर २० पर एक प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा में भेजने का अधिकार दिया गया। यह संशोधन न्यायोचित था। इस आधार पर लगभग ३५ प्रतिनिधि उत्तरप्रदेश के सार्वदेशिक सभा में भेजे गये। उस समय पंजाब में केवल ५०० आर्यसमाजें थीं और उत्तरप्रदेश में एक हजार। अतः सार्वदेशिक सभा में पंजाब के केवल १७ प्रतिनिधि आ सके।

इस परिवर्तित परिस्थिति में पंजाब सभा ने यह अनुभव किया कि पंजाब के आर्यसमाजों की भी संख्या अधिक हो तब ही अधिक प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा में आ सकते हैं। उन दिनों हरियाणा प्रान्त में ५०० आर्यसमाजें थीं जो पंजाब सभा में सम्मिलित नहीं थीं, उनका अपना अलग संगठन था। पंजाब सभा ने उन हरियाणा के ५०० आर्य समाजों को पंजाब सभा में सम्मिलित करा, अब पंजाब सभा की भी आर्यसमाजों की संख्या एक हजार हो गई। इस आधार पर पंजाब सभा के ४४ प्रतिनिधि सार्वदेशिक में पहुंचने लग गये।

उत्तरप्रदेश में समाज संख्या अधिक होने पर भी उत्तरप्रदेश के सब आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि प्रान्तीय सभा में नहीं भेजते। अतः उत्तरप्रदेश की सार्वदेशिक प्रतिनिधि संख्या ३५ ही रही।

(३)

जब सार्वदेशिक सभा में पंजाब के ४४ प्रतिनिधि आने लगे और यह आशा हो गई कि अकेले पंजाब के ही यदि पचास साठ प्रतिनिधि हो गये तो एक ही प्रान्त का अधिकार सार्वदेशिक में रहेगा। अतः इस अव्यवस्था की संभावना और अनुभव से आवश्यकता प्रतीत हुई कि सार्वदेशिक के विधान में संशोधन फिर किया जावे। अतः सार्वदेशिक के बम्बई अधिवेशन में विधान में संशोधन इस प्रकार किया गया कि—

किसी भी प्रान्तीय सभा के सार्वदेशिक में प्रतिनिधि १५ से अधिक न हों। यह विधान इस समय चल रहा है।

पर इस समय परिस्थितियों में फिर परिवर्तन आया जो पहले से अधिक अव्यवस्था पैदा करनेवाला बन गया है। वह यह कि—

पंजाब सभा का जो कार्य क्षेत्र था उसमें पांच प्रान्तीय सभायें पृथक् पृथक् बन गई हैं।

१—पंजाब सभा।
२—हरियाणा सभा।
३—हिमांचल प्रदेश सभा।
४—दिल्ली सभा।
५—कश्मीर सभा।

ये सब पंजाब सभा का ही क्षेत्र था। अब यदि यह विधान कि एक प्रान्तीय सभा के १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक में हों तो ७५ प्रतिनिधि पंजाब के पुराने क्षेत्र के ही हो गये, और पंजाब प्रादेशिक सभा के १५ प्रतिनिधि इन ७५ से अतिरिक्त हैं। इस प्रकार ९० प्रतिनिधि उस ही क्षेत्र के हो गये, और उत्तर प्रदेश के जो भारत का सबसे बड़ा प्रान्त है। उत्तरप्रदेश जितना बड़ा है। हमने विदेशों को देखा है, कई राष्ट्र इतने बड़े हैं जितना बड़ा अकेला उत्तरप्रदेश। उसके भी १५ प्रतिनिधि अतः यह अत्यन्त अव्यवस्थात्मक विधान सार्वदेशिक का है। अतः इसमें पूर्व के समान फिर संशोधन अपेक्षित है।

सार्वदेशिक सभा में महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज के समय से अब तक हुं। विधान में न होते हुए भी सार्वदेशिक सभा में सुनिश्चित परम्परा रही कि यदि सार्वदेशिक सभा में एक प्रान्त का प्रधान है तो दूसरे प्रान्त का मन्त्री। सार्वदेशिक सभा के इस वर्तमान विधान के पूर्व के विधानों तक यह परम्परा स्थिर रखी गई। यदि सार्वदेशिक सभा के प्रधान बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट रहे तो सार्वदेशिक के मन्त्री पंजाब सभा के पं० रघुवीरसिंह शास्त्री रहे। पंजाब के पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति प्रधान रहे तो उत्तरप्रदेश के बा० कालीचरण जी या पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय मन्त्री रहे।

परन्तु वर्तमान विधान इतनी अव्यवस्था पैदा करने वाला इस समय की परिस्थिति में हो गया है कि सार्वदेशिक सभा में इस समय जो प्रधान, मन्त्री और कोषाध्यक्ष हैं वे तीनों ही एक प्रदेश, एक स्थान और एक समाज के ही सदस्य हैं, और ये बहुत वर्षों से चल रहे हैं। वर्तमान विधान का यह परिणाम स्वाभाविक ही है। सार्वदेशिक सभा के पदों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। विकेन्द्रीकरण से प्रगति होती है, अवरोध नहीं।

अतः विधान में उचित संशोधन सार्वदेशिक सभा में होना चाहिये। जिससे न्यायोचित प्रतिनिधित्व प्रत्येक प्रान्तीय सभा को प्राप्त हो सके।

(४)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वनिता-विवेक

[शेष पृष्ठ ५ का]

से वन में गये थे। पिता माता तुल्य भाई और भाभी को दूसरे शब्दों में अपने आराध्यदेवता तुल्य भाई की सेवा का शुभोद्देश्य लेकर वन में गये थे। यदि उर्मिला साथ जाती, तो स्वामी के कर्त्तव्य पालन में बाधा पड़ती। उसके कारण उसके स्वामी के धर्म में त्रुटि आये—यह एक सती पतिव्रता कैसे सहन कर सकती थी। उर्मिला ने चौदह वर्षों तक विरह की भयंकर आग में झुलसना स्वीकार किया; किन्तु पति के कर्त्तव्य पालन में बाधा बनकर नहीं खड़ी हुई। धन्य !

भरत शत्रुघ्न के साथ—अपने मामा के घर से लौट आये। उन दोनों भाइयों ने माता के अन्याय का विरोध किया। उन्होंने राज सिंहासन के प्रति तनिक भी आसक्ति नहीं दिखलायी। उल्टे भाई और भाभी के वनवास-कष्ट का ख्याल करके वे फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने लक्ष्मण के भाग्य की सराहना की। उनकी दृष्टि में उस समय लक्ष्मण के सिवा सबकी बुद्धि मारी गई थी। शत्रुघ्न को तो लक्ष्मण का चुपचाप वन में चले जाना भी अन्याय प्रतीत हुआ। वे तो इस बात के लिए लक्ष्मण को कोसते रहे कि उन्होंने धनुष बाण क्यों नहीं उठाये राम के राज्याभिषेक में बाधा डालने वालों को दण्ड क्यों नहीं दिया। भरत और शत्रुघ्न के निःस्वार्थ भ्रातृ प्रेम को हृदयङ्गम कर माण्डवी और श्रुतकीर्ति का हृदय हर्ष से फूल उठा। उनके नेत्रों से आनन्द और करुणा के आंसू छलक आये। उन्हें अपने पति की सदाशयता पर गर्व हुआ। अब कौन है, जो माण्डवी और श्रुतकीर्ति पर तनिक भी सन्देह कर सके। उन पर और उनके पति पर कलङ्क टीका लगा सके। सबके मुंह से लक्ष्मण की प्रशंसा सुनकर विरहणी उर्मिला को भी कम सुख नहीं मिला।

भरत के साथ सब लोग श्री राम और सीता से मिलने के लिये वन में गये। उन्हे वन में भेजने वाली कैकेयी भी उस सुख से वंचित न रह सकीं। किन्तु माण्डवी, उर्मिला और श्रुतकीर्ति को उस समय भी मन मारकर अयोध्या के राज भवन में रह जाना पड़ा। वे तीनों बहिनें चाहती थीं, हम भी बहिन से मिल आवें। जेठ के चरणों का दर्शन करलें और उर्मिला के तो जीवन सर्वस्व ही वहां थे। वह दूर से ही उनका दर्शन करके छाती शीतल कर लेना चाहती थी। उन तीनों का हृदय हाहाकार कर रहा था, किन्तु उनके मन में इस बात से बड़ी शान्ति और सुख था कि वे वियोग की आग में जलकर भी अपने अपने स्वामियों के धर्म पालन में सहायक हो रही हैं। इसलिये वह आग भी सुखदायिनी थी।

भरत वन से लौट आये, साथ ही अन्य सब लोग भी आ गये। भाई और भाभी के कष्ट का अनुमान करके भरत ने भी वैसा ही जीवन अपनाया। वे 'कन्द असन वलकल वसन होकर जटा बढ़ाये नन्दिग्राम की कुटी में जा बैठे। शत्रुघ्न उन्हीं की सेवा में रह गये। अयोध्या के राजभवन में तीन विरहिणियां चौदह वर्ष तक एक-एक दिन अंगुलियों पर गिनती रहीं। किसी को बीच में पति का दर्शन नहीं हुआ। सीता वन में रहकर भी पति के समीप थीं; किन्तु माण्डवी, उर्मिला और श्रुतकीर्ति महल के भीतर रहकर भी पति से दूर, अत्यन्त दूर थीं। इनमें भी अन्तर इतना ही था कि माण्डवी और श्रुतकीर्ति को नन्दिग्राम से पति के समाचार मिलते रहते थे। किन्तु उर्मिला के भाग्य में वह भी नहीं था। इस प्रकार राजा जनक की चारों कन्यायें दोनों कुलों की मर्यादा का ध्यान रखती हुई त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करती रहीं। उनके मन में कभी किसी के प्रति किसी शिकायत की कल्पना भी नहीं हुई।

इस त्याग और तपस्या का फल उन सबके लिये अच्छा ही हुआ। दुःख के दिन बीत गये, सुख के दिन आए। चारों बहिनें एकत्र हुयीं। उन्हें पति का संयोग सुलभ हुआ। माण्डवी के दो पुत्र हुए तक्ष और पुष्कल। दोनो ही बड़े वीर थे। पुष्कल ने शत्रुघ्न के साथ सम्पूर्ण देशों में घूमकर श्री रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ-सम्बन्धी अश्व की रक्षा की थी। तक्ष और पुष्कल ने भरत के साथ केकय देश में जाकर वहां रहने वाले तीन करोड़ गन्धर्वों को परास्त किया और सिंधु नदी के दोनों तटों पर अपने विशाल साम्राज्य की स्थापना की। भरत जी ने वहां दो समृद्धिशाली नगर बसाये। गन्धर्व देश (सिंध) में तक्ष के नाम पर तक्ष-शिला नाम की नगरी बसायी गई, और गान्धार देश (अफगानिस्तान) में पुष्कल के नाम से पुष्कलावती नाम की पुरी बसाई गई। उर्मिला के भी दो पुत्र हुए अङ्गद और चन्द्रकेतु। उन दोनों को कारुपथ नामक देश का प्रभुत्व प्राप्त हुआ। अङ्गद ने अङ्गदीया नाम की राजधानी बनायी, और चन्द्रकेतु ने चन्द्रकान्त नामक नगर बसाया। श्रुतकीर्ति के भी दो ही पुत्र थे एक का नाम सुबाहु था और दूसरे के शत्रुघाती। सुबाहु मथुरा के राजा हुए और शत्रुघाती वैदिश नगर के।

अन्त में भरत आदि तीनों भाई श्री रामचन्द्र जी के साथ ही सरयू के गोप्रतार घाट में डुबकी लगाकर परमधाम को पधार गये। माण्डवी, उर्मिला और श्रुतकीर्ति भी पतियों के साथ सरयू में गोता लगाकर उन्हीं की अनुयायी बनीं। —दा० शा०

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

एवं नेत्र चिकित्सा शिविर

को मेरठ सफल बनाने हेतु

सभा मन्त्री पं० इन्द्रराज संलग्न

प्रान्त के सभी आर्य भाई-बहन पधारने की कृपा करें

दिनांक ४ से ७ तक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर एवं ८, ९ और १० अक्टूबर १९८३ को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह मेरठ में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ विविध सम्मेलन आंख, नाक, कान एवं गले के रोगियों का निःशुल्क चिकित्सा एवम् आप्रेशन, सामूहिक विवाह, योग शिविर तथा धर्मरक्षा महा अभियान के कार्यक्रम होंगे।

कृपया इन सब कार्यों में आर्य भाई बहन आर्थिक एवं हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें। यदि कोई नेत्र रोगी हो तो उसे ४-१०-८३ को शिविर में भेजें।

सब आर्य भाई-बहन को मेरठ निमन्त्रित किया जाता है। आशा है सबके सहयोग से ये कार्यक्रम सफल होंगे। भवदीय—

इन्द्रराज

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

आर्य जगत

—मलाई (चम्पारण) के श्री जगन्नाथ के निधन पर आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया है। मन्त्री

—आर्य समाज दातागंज (बदायू) के उपमन्त्री श्री कु० वीरेन्द्रसिंह चौहान की माता का ६७ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। मन्त्री

—आर्य समाज बादशाहनगर लखनऊ के प्रधान श्री महावीर प्रसाद आर्य का २० अगस्त को कानपुर मे निधन हो गया। आप का अन्त्येष्टि एवं शान्ति यज्ञ की व्यवस्था आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर ने की।

—रामदेव आर्य
मन्त्री

—आर्य समाज लाडाखेत अल्मोडा मे २५ अगस्त को शहीद भगतसिंह के छोटे भाई कुलबीर सिंह का शान्ति यज्ञ हुआ। डा० कच्चाहारी ने स्वतन्त्रता सेनानी कुलबीर सिंह की दिवगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—त्रिलोकसिंह रावत
मन्त्री

मास्टर जोध सिंह का निधन

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् दिल्ली के डा० विजयेन्द्र स्नातक के पूज्य पिता गुरुकुल वृन्दावन के प्रसिद्ध धर्म निष्ठ अध्यापक श्रीजोध सिंह का ९९ वर्ष की आयु मे वृन्दावन में २ अगस्त को निधन हो गया। इस समाचार से हमे गहरा दुःख हुआ। डा० विजयेन्द्र जी का गुरुकुल से पूर्ववत सम्बन्ध है। परम पिता-परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे। वे यहीं के स्नातक हैं।

—कैलाशनाथ सिंह
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा
उ० प्र० लखनऊ

—विगत दिनों आर्य समाज बदरखा (मेरठ) का उत्सव बडी धूम धाम से मनाया गया। मुझ को इस उत्सव मे जाने का मौका मिला।

—श्रीपाल आर्योपदेशक

—आर्य समाज सकटावा के श्री धर्माईलाल का देहावसान हो गया। अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीति से किया गया।

—आदित्य प्रकाश आर्य

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी ने १४ अगस्त को एक सगोष्ठी का आयोजन किया। अनेक आर्य पुरुषो ने अपने विचार व्यक्त किये। —वेदारीलाल

—आर्य समाज छीतकपुर [मिर्जापुर] के श्री अम्बिकाप्रसाद सिंह की पुत्र वधू श्रीमती अनार कली देवी का २० वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया है।

—कैलाशनाथ सिंह

—आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग दिल्ली का उत्सव अजमेर शताब्दि के कारण स्थगित कर दिया है। —रामनाथ
मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प० इन्द्रराज जी ने गुरुकुल वृन्दावन के पुराने कमठ अध्यापक श्री जोधसिंह जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा है उन्होने अपने जीवन मे गुरुकुल की निष्ठा पूर्वक सेवा की जो भुलाई नहीं जायगी उनके पुत्रों मे श्री विजयेन्द्र स्नातक दिल्ली के प्रख्यात साहित्यकारो में हैं, इन्होंने हिन्दी के लिए प्रशसनीय कार्य किए हैं।

—सवाददाता

—आर्य समाज सम्भल ने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के पुन मन्त्री चुने जाने पर श्री प इन्द्रराज जी को हार्दिक बधाई दी है।

—जगदीश शरण
मन्त्री

—श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री मन्त्री आर्य युवक सभा प्रयाग अजमेर शताब्दी को बस ले जायेंगे। आर्य लोग उनसे सम्पर्क करें।

—सुरेशचन्द्र शास्त्री
९२९ मुट्ठीगज प्रयाग

—मानव सेवा आश्रम छुटमलपुर (सहारनपुर) मे धर्मार्थ होम्योपैथिक दवाखाना नि शुल्क खोल दिया गया है।

—डा० श्रीराम पथिक

—अलीगढ में २० अगस्त को प्रात आर्यवीर सम्मेलन हुआ, २०० आर्यवीर सम्मिलित हुए।

—भूदेव आर्य
मन्त्री

—आर्य समाज बक्सर के एक सदस्य की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। मन्त्री

—गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के स्नातक श्री वत्स जो निगना लक्सर ने इस वर्ष दिल्ली विश्व विद्यालय के एम० ए० (सस्कृत) की परीक्षा मे ८० प्रतिशत अक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। उन की इस सफलता से सस्था एवं आर्य समाज की प्रतिष्ठा बढी। हम उन के उज्ज्वल भविष्य की मगल कामना करते हैं।

—स्वामी विवेकानन्द
आचार्य

—अजमेर डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल के सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य श्री मधुनाथ शास्त्री एम० ए० ने इसी श्रावण पूर्णिमा के दिन श्री स्वामी सदानन्द सरस्वती जी से वान प्रस्थ की दीक्षा ली। —मधुनाथ

एकीकृत ग्राम विकास योजना से प्रदेश में दो लाख १२हजार परिवार लाभान्वित

उत्तर प्रदेश मे बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष मे गत दिसम्बर तक दो लाख १२ हजार परिवार एकीकृत ग्रामीण विकास योजना से लाभान्वित हुए। इनमे से ८१ हजार परिवार अनुसूचित जाति एवं जनजाति के थे। लाभान्वित परिवारों को ७३४२ ०७ लाख रुपये ऋण तथा २३११ २८ लाख रुपये अनुदान के रूप मे वितरित किये गये।

इस दिशा मे शासन द्वारा प्रगति बढाने के लिए प्रभावी कदम उठाये गये हैं और प्रत्येक जिलो में ऋण शिविर आयोजित किये जा रहे है।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ प्र

निर्वाण शताब्दी पर डाक टिकट

ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के कार्यकर्ता प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी ने सचार मन्त्री से भेंट करके निर्वाण शताब्दी के अवसर पर ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे एक डाक टिकट जारी करने का अनुरोध किया। डाक तार सचार मन्त्री श्री वी० बि० गाडगिल ने कहा कि यह बहुत उपयोगी सुझाव है, परन्तु इसे कार्यान्वित करने के लिए अब समय थोडा रह गया, फिर भी मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करूंगा कि ऋषि दयानन्द जैसे महान् व्यक्ति के निर्वाण की शताब्दी के अवसर पर डाक टिकट जारी हो सके। उन्होने प्रो०साहब से कहा कि डाक टिकट का डिजाइन सुझाने मे आप हमारा सहयोग करें तो सरकार को तत्सम्बन्धी निर्णय करने मे सुविधा होगी।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अजमेर आयेंगी

निर्वाण शताब्दी समिति के कार्य वाहक प्रधान श्री प्रोफेसर शेर सिंह जी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला राम गोपाल शालवाले ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर आने का निमंत्रण दिया। श्रीमती गांधी आगामी ३ से ६ नवम्बर को मनाई जाने वाली शताब्दी पर एक दिवस के लिए अजमेर आयेगी। इस अवसर पर श्रद्धांजलि समारोह के साथ ही आर्य सम्मेलन, दर्शन सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन तथा एक मास का चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी हो रहा है। जिसमें देश विदेश के लाखों आर्य नर-नारी भाग लेंगे।

प्रचार विभाग

जैन तथा अन्य धर्माचार्यों की चुप्पी आश्चर्य जनक

लाला राम गोपाल शालवाले

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने वनस्पति घी में गो चर्बी मिलाने का कार्य करने वालों की कड़ी निन्दा करते हुए इसे योजनाबद्ध ढंग से गो हितैषियों एवं हिन्दू धर्मावलम्बियों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले को कुकर्म बताया।

श्री शालवाले ने अपराधियों को कड़ा से कड़ा दण्ड देने की मांग के साथ ही हिन्दू एवं जैन समाज द्वारा अपराधियों को सामाजिक बहिष्कार किए जाने का आह्वान किया, जिन्होंने जैन समाज सहित हिन्दू समाज को कलंकित करने का पाप किया है।

श्री शालवाले ने सरकार द्वारा चर्बी के आयात पर प्रतिबन्ध लगाए जाने का स्वागत करते हुए इसे अपर्याप्त बताया है क्योंकि देश के उन राज्यों में जहां गोहत्या बन्दी नहीं है, गो चर्बी का निर्यात होता रहेगा और खाद्य तेलों में इसके मिश्रण से जनता आश्वस्त नहीं हो सकती। इस स्थिति का एक मात्र निराकरण यही हो सकता है कि सारे देश में पूर्ण गोहत्या बंदी कानून बनाया जाय जिसके लिये आर्य समाज तथा गो सेवा संघ आदि संस्थाएं निरन्तर आंदोलन कर रही हैं। आचार्य विनोबा भावे को भी इसी कारण आमरण प्रयाण करना पड़ा था।

श्री शालवाले ने देश की आर्थिक प्रगति और जनता की खुशहाली के लिये केन्द्र सरकार से मांग की है कि वह तुरन्त गोहत्याबंदी कानून बनाकर इस प्रकार के जघन्य कार्य करने अथवा कराने वालों के विरुद्ध कड़े कदम उठाकर इस सम्बन्ध में श्वेत पत्र जारी करे।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

सारे आर्य जगत् में श्रावणी से श्रीकृष्णाष्टमी तक वेद प्रचार

यह सप्ताह समारोह से मनाया गया। बड़ी-बड़ी आर्यसमाजों ने बड़े-बड़े विद्वानों को बुलाकर वेदकथा, यज्ञ, प्रवचन और भजन कराये। स्थानाभाव से आर्य समाजों के नाम ही दिये जाते हैं। —संपादक

आर्य समाज हरवेन्द्र नगर कानपुर, आर्य समाज महमदाबाद, आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल, आर्य समाज निराला नगर लखनऊ, आर्य समाज इटारसी, आर्य समाज जैहसोल (मथुरा), आर्य समाज सकूराबा (फर्रुखाबाद), आर्य समाज भरथना (इटावा), आर्य समाज छर्रा, (अलीगढ़), आर्य समाज राजाजीपुरम लखनऊ, आर्य समाज शाहगंज (आगरा), जिला आर्योप प्रतिनिधिसभा आर्य कुमारसभागोण्डा, आर्यसमाज अरमापुर इस्टेट कानपुर, केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद दिल्ली द्वारा विभिन्न स्थानों पर, आर्यसमाज गंगा नगर, आर्यसमाज रहमत गंज (रामपुर), आर्य समाज फीरोजपुर छावनी, आर्य समाज नैनीताल, आर्य समाज मथुरा, आर्य समाज महाराजपुर (छतरपुर), आर्य समाज गया, आर्य सिली गुड़ी (दार्जिलिंग), आर्यसमाज मिरजापुर, आर्यसमाज फतेहाबाद (आगरा), आर्य समाज रायपुर घुन्सी, आर्य समाज लालगंज (रायबरेली) आर्य समाज अशोक विहार, दिल्ली, आर्यसमाज ज्वालापुर [हरिद्वार], आर्य समाज बहराइच, आर्य समाज गांधी कालोनी [मु० नगर], आर्य समाज जलालाबाद [शाहजहांपुर], आर्य समाज गर्वा, आर्य समाज पाली [हरदोई], आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर, आर्य माटुंगा [बम्बई], आर्य समाज अजमेर, आर्य समाज बक्सर, आर्य समाज इटारसी, मऊ रानीपुर।

आर्यवीर दल अधिकारी ध्यान दें

समस्त सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रान्तीय अधिकारियों को चाहिये कि वह महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर (राजस्थान) जाने वाले आर्य वीरो की सूची अब से पन्द्रह दिवस के अन्दर-अन्दर केन्द्र को भेज दें। जिससे उनके लिये अलग से शिविर (छावनी) लगाकर आवास, भोजन, शौचालय, स्नानागार आदि की समुचित व्यवस्था करना सम्भव हो सके।

आर्य वीरों को पूर्ण गणवेश में ही अजमेर आना है। आवश्यक बैजादि से सुसज्जित और कान तक की लाठी, सीटी, डायरी उचित बिस्तर आदि के साथ क्योंकि वहां पूर्ण अनुशासन में रहकर, अधिष्ठाता एवं संचालक आर्य वीर दल राजस्थान के आदेशों का पालन करना होगा।

देश-विदेश के विभिन्न भागों से जो आर्य गण वहां पधारेंगे उनकी सेवा-सुरक्षा कार्य का उत्तर दायित्व आपको सम्हालना है यह ध्यान रखियेगा।

बाल दिवाकर हंस
प्रधान संचालक

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान में आर्यसमाज मन्दिर में एक आदर्श अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुआ। गुर्जर जाति के वर श्री ओम प्रकाश का विवाह राजपूत जाति की कन्या कु० कृष्णा के साथ सामाजिक रूढ़ियों तथा दहेज आदि सबसे रहित अत्यन्त सादगीपूर्ण वातावरण में श्री आचार्य गोविन्दसिंह के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

दिनांक ८, ९ व १० अक्टूबर १९८३ शनिवार, रविवार, सोमवार, को शर्मा स्मारक मैदान, मेरठ शहर मे धूमधाम से मनाया जायेगा। समारोह मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, विशाल शोभा यात्रा, निर्वाण शती-स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन, नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर योग शिविर, सामूहिक विवाह, धर्म रक्षा महाअभियान, प्रान्तीय स्तर पर आर्य महाविद्यालयो की रैली तथा विभिन्न सम्मेलनो का आयोजन किया गया है।

समारोह मे देश-विदेश के विद्वान् और नेता महर्षि के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मानव जाति के कल्याण तथा वेद व आर्यसमाज के संदेश को भूमण्डल पर फैलाने का सकल्प लेंगे।

इस अवसर पर सम्पूर्ण आर्य-जगत् एव देश के प्रबुद्ध नागरिको से अनुरोध है कि समारोह को सफलता के लिये तन-मन धन से पूर्ण सहयोग करें।

निर्देशक

माधव सिंह — प्रधान

इन्द्रराज — मन्त्री

आर्य उप प्रतिनिधि सभा

जिला मेरठ–गाजियाबाद

आर्य समाज, मेरठ

द्वारा आयोजित

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

४ अक्टूबर से ८ अक्टूबर १९८३ तक

सम्पन्न होगा

जिसमे जयपुर के सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक

डा० आर० एम० सहाय

M.B.B.S, M.S, D.O.M.S.
F.I.C.S, D.O.R.C.S (Lond)

एव उनके साथी आप्रेशन करेंगे।

इसके साथ ही कान, नाक, एव गले की चिकित्सा को भी विशेष व्यवस्था है।

इस शिविर मे सभी वर्ग के रोगियो के नेत्रों को हर प्रकार की चिकित्सा, आप्रेशन, दवाइयो, चश्मों के टेस्टिंग, निवास व भोजन की मुफ्त व्यवस्था रहेगी।

भर्ती— ४ अक्टूबर प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक

स्थान : शर्मा स्मारक मैदान, मेरठ।

मनोहर लाल सर्राफ — प्रधान

इन्द्रराज — मन्त्री

राधेलाल सर्राफ — सयोजक

कुरेशा बेगम से उमादेवी बन गयी

कानपुर –आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे श्री देवीदास आर्य ने २६ वर्षीया मुस्लिम युवती श्रीमती कुरेशा बेगम को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म ग्रहण कराया। उसका नाम श्रीमती उमादेवी रखा गया। शुद्धि के बाद उनका विवाह श्री उमेशचन्द्र केसरवानी के साथ कराया गया। इससे पहले जिला परिषद कानपुर की नव निर्वाचित मुस्लिम सदस्या कु० बतुलन ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया था तथा उसका नाम विमला देवी रखा गया था। दोनो मुस्लिम युवतियो को आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने वैदिक धर्म की दीक्षा दी। और यज्ञोपवीत पहना कर गायत्री मन्त्र का पाठ पढाया।

मन्त्री

–आर्य समाज बडौत (मेरठ) ने उन लोगो की निन्दा की है जो डालडा घी मे गौ की चर्बी मिलाते हैं। सरकार से प्रार्थना है कि एस लोगो को दण्ड दें।

मन्त्री

मन्त्री

-मेरे बन्धु महावीर सिंह आर्य भजनोपदेशक का २० अगस्त को निधन हो गया।

–महावीर सिंह वानप्रस्थ

आर्यसमाज बिसौली (बदायू) ने हिन्दी दिवस मनाया। २१ से २३ अक्टूबर तक वार्षिकोत्सव के रूप मे निर्वाण शताब्दी मनाई जायगी। श्रावणी पर्व समारोह से मनाया गया।

मन्त्री

निर्वाचन—

आर्य उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर

प्रधान–श्री महेन्द्रसिंह जी
मन्त्री–श्री अर्यसिंह जी
सयुक्तमन्त्री–श्री विद्या सागर
कोषाध्यक्ष–श्री भोजेन्द्र जी

आर्य समाज शिमाला (मु.नगर)

प्रधान–श्री नारायण दास
मन्त्री–श्री जगदीश प्रसाद
वेदपाठ्यक्ष–श्री अशोकबहादुर

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष-४४९९४ ४२६६२१
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वा० आश्विन ४
आश्विन कृ० , ३ रविवार
२५ सितम्बर १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

निर्वाचन—

आर्य समाज मेंहदावल (बस्ती)
प्रधान—श्री जगदीश प्रसाद
मन्त्री—श्री प्रभुदयाल
कोषाध्यक्ष—श्रीकान्त वर्मा

मण्डलीय आर्यवीर दल फतेहपुर
संरक्षक—श्री रामकिशोर
कार्यालयमन्त्री—श्रीराजेन्द्रसिंह
अधिष्ठाता—श्री अवध तिवारी

आर्य समाज मंदिर अहमदाबाद
प्रधान—श्री रतन प्रकाश
मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र
कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म्प्रकाश

आर्य समाज डोईवाला (देहरादून)
प्रधान—श्री वेद प्रकाश
मन्त्री—श्री शिवजी द्विवेदी
कोषाध्यक्ष—श्री राजपाल सिंह

आर्य समाज शिक्षाना (मु० नगर)
प्रधान—श्री गोपाल सिंह
मन्त्री—श्री महादेव
कोषाध्यक्ष—श्री राजपाल

आर्य समाज महरौनी (ललितपुर)
प्रधान—श्री किशोरीलाल राय
मन्त्री—श्री बलराम नायक
कोषाध्यक्ष—श्री श्यामसुन्दर आर्य

आर्यसमाज अलीपुर कला (मु० नगर)
प्रधान—श्री रघुवीर सिंह
मन्त्री—सत्यवीरसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णपालसिंह

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला भीलवाड़ा
प्रधान—श्री डा० मदन मोहन जावलिया
मन्त्री—श्री भंवरलाल भ्रमर
कोषाध्यक्ष—श्री बनारसीलाल

निर्वाचन

आर्य समाज संभल (मुरादाबाद)
प्रधान—श्री जगदीशशरण आर्य
मन्त्री—श्री विक्रमसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री नवल किशोर

सार्वदेशिक सभा के विधान में अपेक्षित संशोधन

(पृष्ठ ७ का शेष)

प्रस्तावित संशोधन

इस समय यही संशोधन समझ मे आ रहा है कि उसी विधान को फिर चालू किया जावे कि—

जिस प्रान्तीय सभा मे जितनी प्रान्तीय प्रतिनिधि संख्या है उस पर २० पर एक प्रतिनिधि उस प्रान्तीय सभा का सार्वदेशिक सभा में जाया करे यह न्यायोचित मांग है।

आशा है सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के सदस्य इस पर विचार करके इस संशोधन को करने की कृपा करेंगे। इससे किसी का भी अकेला बहुमत सार्वदेशिक सभा मे न होकर सब का समान प्रतिनिधित्व सार्वदेशिक मे रहे। सार्वदेशिक सभा के सदस्य इस बात पर भी ध्यान देवें कि राष्ट्रपति के निर्वाचन में किस प्रान्त के कितने वोट हैं यह भी पथ-प्रदर्शन कर सकता है।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ सितम्बर ८२ को समाप्त हो जायेगा। वी० पी० भेजने मे ४.५० अधिक पोस्टेज लगते हैं। अतः इन सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जावेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

३५१, ८५७, ८५०, २४१५, २४२०, ३०६९, ३०९३, ३०९९, ३०९०, ३०९७, ?१०६, ४५२१, ५११४, ५६६५, ५६९०, ६०३४, ६२१२, ६७९९, ६८०१, ६८२२, ६९६८, ७०१०, ७०१२, ८१०६, ८३३१, ८३४८, ८३७७, ८६४८, ८६६०, ८७५१, ८८४४, ८९७७, ८९७८, ९००९, ९०१३, ९०७७, ९२५५, ९२५७, ९२६८, ९५२१, ९५२२, ९५२३, ९५२७, ९५२८, ९७१४, ९९८१, ९९९३, ११०२४, ११२६६, ११२६९, ११२७०, ११२७३, ११२७८, ११२७९, ११७१९, ११७९९, ११९९२, ११९९४, १२३८३, १२३८४, १२३८५, १२३९१, १२३९४, १२३९७, १२३९७, १२३९८, १२३९९, १२४०२, १२४-५, १२४०७, १२४०९, १२७२३, १२७२४, १२७२५, १२७२६, १२७२८, १२७२९, १२७३१, १२७३३, १२७३४, १२७३५।

—विनीत
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए ... आर्यसमाज प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ मा० आश्विन १० आश्विन कृ० ११ रविवार मद्द् २० ० वि०, २ अक्टूबर सन १९८३ ई०

मेरठमें ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह स्थगित

मेरठ मे आयोजित ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह जो ८, ९, १० अक्टूबर को होने वाला था सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार स्थगित कर दिया गया है।

मेरठ तथा उत्तरप्रदेश के आर्य बन्धुओ ने मेरठ में आयोजित समारोह के लिए जो उत्साह दिखाया उसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश व जिला आर्य उपसभा मेरठ आभारी रहेगी।

समारोह की नवीन तारीखें बाद मे घोषित की जाएगी।

सभी आर्यजनो से अनुरोध है कि वे अब अजमेर में सम्पन्न होने वाले ऋषि-निर्वाण शताब्दी समारोह ४ से ६ नवम्बर ८३ को सफल बनाने मे जुट जावें।

इन्द्रराज
मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश एव
मन्त्री–आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ

वार्षिक	१६)
छमाही	८)
विदेश में	१ पौंड
एक प्रति	४० पैसे

प्रधान सम्पादक–
पं० इन्द्रराज
सभा मन्त्री

वर्ष	अङ्क
८६	३७

प्रार्थना

वसु च मे वसतिश्च मे
कर्म च मे शक्तिश्च मे ऽर्थश्च ।।
म ऽश्मश्च म ऽइत्या च
मे मतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम ।।
यजु० १८ १५ ।

अर्थ –मेरी सम्पत्ति मेरा निवास मेरे कम मेरा सामर्थ्य मेरी प्रत्येक वस्तु मेरा सुप्रयत्न मेरी बुद्धि मेरी वह रीति जिससे व्यवहारो को जानता हू तथा मेरी गति (सारे काय कलाप) सब कुछ सबजन हिताय हों।

अर्थात जो दूसरो के हित में अपना सवस्व न्योछावर कर देते हैं, वे ही व्यक्ति प्रशसा के पात्र होते हैं।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार, २ अक्टूबर १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

ऊर्जा-स्रोत 'ओ३म्'

प्रभु वाचक शब्दो मे 'ओ३म सब समथ तथा वदिक ऋषियो द्वारा अनुमोदित है। इसके सस्वर उच्चारण से ही प्राणो म ओज और शरीर मे स्फूर्ति का सचार होता है। हर्ष है कि विगत दिनो मे देहली मे जो वि व ऊर्जा सम्मेलन (इनरजी कान्फ्रेंस) हुआ। उसमे प्रतीक चिन्ह म गोलाकार वत्त के मध्य ओ३म शब्द अकित किया गया और अग्नि सूय आदि भी चर्चित कियेगये अग्नि और सूय विश्व मे ऊर्जाप्रद शक्ति दायी पदाथ मे सवश्रेष्ठ है। यह वज्ञानिक एव व्यवहारिक दोनो रूप मे सम्मत है। हम ऊर्जा सम्मेलन के आयोजको को साधुवाद देते है कि उ होन वदिक ऋषियो द्वारा वर्णित ऊर्जा सम्पन्न पदार्थों का समावेश करके वज्ञानिक बुद्धि का परिचय दिया।

ऊर्जा सम्मेलन का उदघाटन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने किया। खद के साथ लिखना पड रहा है कि अपने उदघाटन भाषण के प्रारम्भ और अ त मे श्रीमती गाधी ने फ्रेञ्च भाषा के विज्ञान परक वाक्यो का उपयोग किया। वह फ्रेञ्च वज्ञानिको को जो प्रमुख रूप से सम्मेलन मे भूमिका निभा रहे थे, प्रसन्न करना चाहती थीं। परन्तु उनकी इस चाटकारिता की कला से न उनका कोई हित हुआ और न राष्ट का गौरव बढा। भारत का प्राचीन गौरव ज्ञान विज्ञ न को सस्कृत एव वदिक ऋचाओ मे निहित किये है। ऋग्वेद का प्रथम मण्डल का प्रथम म त्र ही 'अग्नि शब्द से प्र रम्भ होता है और ऊर्जा की अचना की गयी है। यदि श्र मती गाधी वादक ऋचाओं स अपने भाषण का प्रारम्भ करती और सूय शक्ति वणन परक सस्कृत वाङ मय का प्रयोग करते हुये भाषण की इतिश्री करतीं तो कक्ष मे बठ विदेशी वज्ञानिको के ऊपर राष्टीय गौरव का प्रमुख रूपेण प्रभाव पडता। खद है कि श्रीमती गाधी स्वय सस्कृत की गरिमा से अनभिज्ञ ह और उनके भाषण की पाण्डुलिपि तैय र करने सचिव वाले भी सस्कृत शून्य है और उससे बढकर राष्टीय गौरव का प्रतिष्ठा की स्थापना उनमे लेशमात्र नहीं है।

यह देश का दुर्भाग्य है, परन्तु कभी राष्ट्रीय गौरव को सचेतना राष्ट्र मे प्रमुख होगी, ऐसी आशा हमें नहीं त्यागना चाहिये।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

बधाई !

प्रोफेसर कैलाशनाथ सिह (भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री, उत्तर प्रदेश सरकार) के आय प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के दूसरी बार 'प्रधान चुने जाने के शुभ अवसर पर कवि की हार्दिक बधाई !

पुन प्रधान चुने जाने पर बारम्बार बधाई !
बडे भाग्य से हर्षो खुशी की सुखद घडी यह आई !!

जो करता है काम उसे ही
सभी चाहते हरदम !
उसके ही इगित पर पग पर
प्रमुदित बढते हैं हम !

एक बार फिर कमठता की महिमा पडी दिखाई !
पुन प्रधान चुने जाने पर बारम्बार बधाई !!
रखिये यह विश्वास

आपको है सहयोग हमारा !
सेनानी के आदेशो पर
हमने सब कुछ वारा !

अनुशासन के ही बल पर तो पडती विजय दिखाई !
पुन प्रधान चुने जाने पर बारम्बार बधाई !

—चन्द्रपाल सिंह 'मयक एडवोकेट कानपुर

राजर्षि श्री रणञ्जय सिंह के यहां यज्ञ व कवि सम्मेलन

अनन्त चतुदशी के दिन प्रति वष राजर्षि श्री रणञ्जय सिंह जी के यहा उनके पौत्र श्र राजकुमार सञ्जय सिंह जी वन म त्री के पुत्र चि० अन न विक्रम सिंह का ज म दिन बड उ न स के साथ श्री सञ्जय सिंह जी की कोठी न० १९ विक्रमादित्य माग लखनऊ मे मनाया जाता है। इस वष भी इस दिन आयमित्र के प्रब ध सम्प दक श्री नारायण प्रिय एव श्री प० इ द्र देव जी शर्मा शास्त्री के पौरोहित्य में वृहद यज्ञ हुआ त त्पश्चात रात्रि को ७ बजे से श्री डा० शिव मगल सिंह 'सुमन के सभा पतित्व और डा० लक्ष्मी शकर मिश्र निशक के सचालन मे विशाल कवि सम्मेलन हुआ, इसमे लखनऊ के अनेक गण्यमान्य कवि पधारे थे।

—सवाददाता

सूचना

कन्या गुरुकुल मातृ मन्दिर रामापुरा वाराणसी मे दि० २२ से २६ अक्टूबर तक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है।

भोजनादि नि शुल्क रहेगा। पूर्वी क्षत्र के लोगो के लिये विशेष अवसर है।

—अक्षयमुनि

अध्यात्म-सुधा

सप्त मर्यादाएं (२)

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०,एल०टी० १७५ बाकरा बाजार गोरखपुर]

[[illegible] के आगे]

'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' इन दो शब्दों में वेद ने सागर में सागर भर दिया है। प्रभु द्वारा प्रदत्त का भोग करो। आज यदि संसार में त्याग पूर्वक भोग की भावना आ जाय तो संसार से चोरी, ब्लैक मार्केटिंग, रिश्वत खोरी, बेईमानी युद्ध और हत्यायें दूर हो जायं और विश्वशान्ति का मार्ग साफ हो जाय। त्याग पूर्वक और वैराग्य भाव से भोग की भावना तभी आएगी जब हम संसार में प्रभु का निवास कण-कण में मानेंगे और उसे प्रत्येक वस्तु का 'ईश' मानेंगे।

इसलिये जीवन की पहली मर्यादा है त्यागभाव से संसार का भोग करो। न भोगने का नाम त्याग नहीं, भोग से न चिपटने का नाम त्याग है और त्यागमय उपभोग सदा सुखकारी है। भोग तो जीवन के साथ है, परन्तु भोग को मर्यादा में रखने के लिए 'मागृधः' (चिपटो मत) यह आदेश भी दिया है।

एक दृष्टान्त से यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी। प्राचीन काल में कणाद नाम के एक ऋषि थे। कणाद जी के पास कुछ छात्र आए और उनसे ज्ञान या सीख देने की प्रार्थना की। उस समय पात्र हुए बिना विद्या प्राप्त होना कठिन था और पात्रता के लिये गुरु परीक्षा लेते थे। अतः गुरु ने परीक्षा के लिये १५-१६ दिन बाद सवेरे ६ बजे आने का आदेश दिया। उस दिन आने का मतलब था कि यदि वे आएंगे तो वे सचमुच कुछ जानना चाहते हैं। जिज्ञासु हैं। सचमुच उस दिन वे सभी जिज्ञासु पहुंच गये। कणाद जी भी तैयार थे। उन्होंने एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया था। आते ही उन सबके साथ यज्ञ के लिये बैठ गये और उस यज्ञ को इतना लम्बा कर दिया कि वह २-३ बजे तक चलता रहा। यज्ञ पूरा होने के बाद शिष्य दूर से आये थे। जलपान वगैरह भी नहीं किया था। उनके पेट में चूहे कूद रहे थे। वे घर जाने को तत्पर हुए।

कणाद जी उनके पास आए और हाथ-जोड़ कर बोले अभी आप कहां जायेंगे? पहले भोजन कर लीजिये और उन्होंने झटपट थालियां लगवा दीं। आसन बिछा दिये और उनसे हाथ वगैरह धो कर बैठने को निवेदन किया। जब वे हाथ धोने के लिये बाहर गये तब तक योजनानुसार तगड़े-तगड़े भयंकर सूरत के हथियार, खपच्ची और रस्सी लिये पांच-सात आदमी पहुंच गये और उन्होंने दरवाजा घेर लिया। जब वे जिज्ञासु हाथ धोकर खाने के लिए दरवाजे पर पहुंचे तो उन व्यक्तियों ने कहा यहाँ भोजन करने की एक शर्त है वह आपको माननी होगी और अब बिना भोजन किये जाना भी न होगा।

जिज्ञासुओं ने पूछा 'क्या शर्त है?" द्वारपालों ने कहा 'यह कि आपके दोनों हाथों की कुहनियों के साथ यह खपच्चियां दोनों हाथो में बांध दी जायेंगी और इस प्रकार आप को भोजन करना होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखिये कि यदि आप भोजन किये बिना जबर्दस्ती जायेंगे तो हम तलवारों से गर्दन काट दी जायेगी।

जिज्ञासुओं ने कणाद जी को खोजा पर वे वहां न दीखे। अतः बांध दी गई कुहनियों खपच्चियां वे वहां क्रोध में भरे आसनों पर बैठ गये। अब तक कणाद जी भी पहुंच गये और हाथ जोड़ कर बोले-'अब कीजिये, आप सब भोजन?

उन लोगों ने खाने के लिए हाथ बढ़ाये कुहनियों पर खपच्चियां बंधी थीं। अतः उन्होंने हाथ से पूरी, रसगुल्ला आदि मुख में डालने के लिए उठाया, परन्तु वह मुंह में नहीं गया। हाथ ऊपर चला गया। सबका बुरा हाल था। कणाद जी हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे। वे सब चिढ़कर बोले। गुरु जी, क्यों हमें इस प्रकार अपमानित कर रहे हैं, हमारा मजाक उड़ा रहे हैं, क्या इस तरह भोजन किया जा सकता है।

अब कणाद जी ने कहा-'तुमने मुझसे शिक्षा मांगी थी। मैं तुम्हें संसार में खाने का असली ढंग सिखाता हूं। वह यह है कि यदि तुम केवल अपना ही पेट भरना चाहोगे तो वह भरेगा नहीं यदि तुम्हें अपना पेट भरना है तो अपनी थाली से पूरी उठाओ और सामने वालों को खिला दो, सामने वाले तुम्हें खिला दें। उनका भी पेट भर जाएगा और तुम्हारा भी खाने का यदि यही भाव चल जाय तो संसार में शान्ति हो जायगी। रूस-अमेरिका को खिलाएगा, अमेरिका-रूस को, भारत चीन को और चीन भारत को। न युद्ध रहेगा न झगड़े। यह है वैराग्य भाव से भोग का तरीका। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' का वास्तविक स्वरूप, परमेश्वर की सत्ता कण-कण में मानने से यह आने का ढंग आ सकता है। आइए, इस मर्यादा का अनुभव करें और जीवन को आनन्द मय बनायें।

इस मन्त्र का भाव है कि संसार या जगत् रूपी धन प्रभु का है। प्रभु उसका स्वामी है और हम सब उस प्रभु के पुत्र हैं—उसकी सन्तानें हैं—वह हमारा और सब प्राणियों का मालिक है। इसलिये वह संसार रूपी धन किसी एक व्यक्ति का नहीं है, सबके पिता का होने से वह सबका है। ऐसा तो नहीं है कि वह धन किसी का नहीं है। किसी का न होता तो उसे कोई न भोगता। यदि कोई न भोगता तो उस धन का, उस भोग्य का लाभ ही क्या था? धन व्यर्थ नहीं, भोगने की वस्तु है। परन्तु एक जीव के भोगने की वस्तु नहीं है, सबके भोगने की वस्तु है। जब कोई एक व्यक्ति उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है तो वह उसके लिए भी दुःखद हो जाता है। जिस प्रकार स्वादिष्ट वस्तु अधिक मात्रा में खाने से दुःखदायक हो जाती है, स्वादहीन हो जाती है, उसी तरह इन भोगों का भी यही हाल है। अतः वेद ने मानव के लिए मर्यादा बनाई 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः'—वैराग्य भाव से इसे प्रभु का समझकर भोग करो।

इस प्रकार याद रखने की बात यह है कि वैदिक विचार धारा शरीर और जगत् को आदि अन्त मान कर नहीं चलती। इस का सत्य यह है कि वह जगत् को मिथ्या नहीं कहती, परन्तु उसे अन्तिम सत्य भी नहीं कहती। वह इन दोनों के समन्वय को लेकर मध्य मार्ग पर चलती है। जगत् को सत्य मानते हुए उसे मानो मुट्ठी में भरकर आत्मा की झोली में डाल देती हैं, और आत्मा को उसको उपभोग का अधिकार देती है, परन्तु वह भी ध्यान दिला देती है कि यह तुम्हारा नहीं—यह सबका है। यह सबका है। अतः इसका भोग वैराग्य भाव से करो। यही सर्व प्रथम मर्यादा है।

सार्वदेशिक सभा में प्रतिनिधित्व का आधार
राज्य की इकाई नहीं आर्यसमाजों की संख्या हो

(श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०, सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

सार्वदेशिक सभा के वैधानिक पुनर्गठन के सम्बन्ध में आर्यमित्र में चर्चा आरम्भ की है, यह एक संवैधानिक प्रश्न ही नहीं इसके अन्तर्गत आर्यसमाज संगठन का वर्तमान और भविष्य सन्निहित है।

बम्बई में सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में जिस नाटकीय ढंग से विधान में परिवर्तन हुआ था उसके परिपेक्ष्य में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के बढ़ते प्रतिनिधित्व को सीमित करना था, पर आज की परिस्थितियों ने पंजाब क्षेत्र को राज्य सीमाओं के विघटन के कारण वह सीमा ४० से बढ़कर आज ७५ तक पहुंच गयी है। ऐसी स्थिति में लोकतन्त्र और संगठन के हित में यह विचारणीय होना चाहिये कि आर्यसमाजों के संगठन का केन्द्रबिन्दु आर्यसमाज की इकाई है। राज्य व्यवस्था के अनुसार आर्यसमाज का संगठन अधिक महत्व नहीं रखता है। सार्वदेशिक सभा की वैधानिक रचना में भी राज्य और राष्ट्र को अधिक महत्व नहीं दिया गया है।

सार्वदेशिक शब्द से विश्व के राष्ट्रों से बनी सभा सार्वदेशिक होनी चाहिये, परन्तु सार्वदेशिक सभा की वर्तमान संरचना के मूल तत्व भारत राष्ट्र के घटक राज्य ही अधिक हैं। भारत के अन्तर्गत राज्यों की प्रतिनिधि सभाओं का प्रतिनिधित्व ही यहां मुख्य है, फिर भी हम इस संगठन को सार्वदेशिक कहते और मानते हैं क्योंकि हम आर्यसमाज को विश्व भर में एकसूत्र में बांधकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहते हैं। इसलिये भारत से बाहर के जिन राष्ट्रों में आर्यसमाजें या आर्य प्रतिनिधि संगठन हैं उनको भी भारत के राज्यों के समान प्रतिनिधित्व दिया जाता है। इतनी विस्तृत बात लिखने का आशय यही है कि आर्यसमाज के केन्द्रीय संगठन की इकाइयों के स्वरूप को ठीक से समझ लिया जाय। एक आर्यसमाज भी सीधे सार्वदेशिक का घटक सदस्य बन सकता है। यदि वहां राज्य या राष्ट्र संगठन न हो, एक देश का घटक राज्य भी सार्वदेशिक घटक बन सकता है। पहले दान के आधार पर आजीवन सदस्य भी बनते थे, पर अब यह प्रथा बन्द है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सार्वदेशिक सभा का संगठन राजनैतिक इकाइयों के आधार पर नहीं अपितु आर्यसमाज की इकाइयों की मिशनरी भावना, प्रजातन्त्रात्मक स्वरूप एवं संगठन में व्यापक सहयोग की दृष्टि को महत्व देता है। सिन्ध प्रान्त पाकिस्तान में चला गया पर वर्षों तक उसके प्रतिनिधि सभा में बने रहे, आज मध्यभारत नाम का कोई राज्य नहीं पर उसका प्रतिनिधित्व आज भी बरकरार है। इसी प्रकार गोवा में प्रचार हेतु गोवा का प्रतिनिधित्व भी सभा में होता रहा है जबकि वहां कोई आर्यसमाज नहीं है।

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि सभा में प्रतिनिधित्व का अधिकार इकाइयों की संख्या पर हो या राज्यों को इकाई मान कर प्रतिनिधित्व दिया जाय।

वर्तमान व्यवस्था का जो चित्रण आचार्य विश्वश्रवाः जी ने अपने लेख में किया है वह एक विसंगति है। उसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजों पर पड़ रहा है। इस समय प्रत्येक राज्य घटक के लिये प्रतिनिधित्व की अधिकतम सीमा १५ है जबकि साधारण सभा में १००० से अधिक प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। ५ प्रतिशत के हिसाब से ५० प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल सकता है, पर १५ में ही सन्तोष करना पड़ता है। जबकि छोटे राज्यों में ३०० तक प्रतिनिधि भी नहीं होते फिर भी उन्हें १५ तक का अधिकार प्राप्त है।

इस विसंगति को समाप्त करने तथा आर्यजगत् का व्यापक प्रतिनिधित्व कराने के लिये आर्यजगत् के विधान विशेषज्ञों और संगठन हितैषियों को इस समस्या पर विचार करना चाहिये।

आर्यसमाज संगठन को संकुचित और सीमित बनाने की प्रवृत्ति का त्याग होना चाहिये और संगठन को व्यापक प्रतिनिधित्व देने की भावना से सार्वदेशिक सभा के संगठन स्वरूप–प्रतिनिधित्व प्रणाली आदि गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये।

आशा है सार्वदेशिक सभा के अधिकारी एवं सार्वदेशिक साधारण सभा के सदस्य उत्तरप्रदेश की २५०० आर्यसमाजों के परिपेक्ष्य में इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करेंगे और आवश्यक समाधान निकालेंगे।

वनिता विवेक

माता के द्वारा बालक का लालन-पालन और शिक्षा

(ले० श्री पं० लल्लन जी)

एक विद्वान् का कथन है कि 'बच्चे उतने ही ऊंचे उठ सकते हैं, जितनी ऊंची स्थिति में उनकी माताएं होती हैं।' वास्तव में बच्चे ही राष्ट्र के नेता और उद्धारक होते हैं और उन्हें इस योग्य बनाने का दायित्व माता पर ही है। जैसी माता, वैसी सन्तान; जैसी भूमि, वैसी उपज। आचार्य शङ्कर को ज्ञान के उच्च शिखर तक पहुंचाने की शक्ति किसने दी थी माता ने। प्रताप और शिवाजी को रणाङ्गन में मदमत्त यवनों की विशाल वाहिनी के संहार का साहस किसने दिया था? उनकी माताओं ने। अतः प्रत्येक माता को अपना उत्तरदायित्व समझना और सन्तान को योग्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

गर्भ में बालक के आते ही माता को अपने कर्त्तव्य-पालन के लिये सजग हो जाना चाहिये। सबसे पहले उसके लिये अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। तन-मन दोनों स्वस्थ रहें। शरीर नीरोग हो और मन में सद् विचार जाग्रत होते रहें—यही तन, मन की स्वस्थता है माता के रक्त से ही बालक के शरीर का निर्माण और पोषण होता है अतः रोगिणी माता का बालक कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। जन्म से एक वर्ष बाद तक बच्चे के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिये। उस समय की स्वस्थता या अस्वस्थता का जीवन व्यापी प्रभाव होता है। जन्म-काल में स्वस्थ बालक का वजन साढ़े तीन चार किलो तक रहता है। जो बच्चे पैर के बल पैदा होते हैं, वे यदि तुरन्त रो न उठें तो उनके मुख पर बारीक कपड़ा रखकर उस पर पांच,पांच सेकण्ड के अन्तर से फूंक मारनी चाहिये। बच्चे का रोना विशेष गुणकारी है। जन्म के बाद गुनगुने पानी से बच्चे का शरीर साफ कर देना चाहिये। उसकी आंखों को भी सावधानी से पोंछना और मुंह में उंगली डालकर उसे साफ कर देना चाहिये।

माता को दूध कम आता हो तो वह दूध में बना हुआ साबूदाना पीवे। बच्चे को प्रत्येक दो-तीन घंटे पर दूध पिलाना उचित है, परन्तु दस बजे रात से छः बजे सबेरे तक दूध पिलाना मना है। माता के दूध के अभाव में गाय के उबाले हुए दूध में जरा-सा पानी और मिश्री मिला कर शिशु को पिलाना चाहिये। नौ महीने बाद दूध में पानी मिलाने की आवश्यकता नहीं रहती। बच्चे के बिस्तरे और वस्त्र को स्वच्छ रखना और प्रतिदिन धूप में सुखाना चाहिये। उसके दांतों को हल्के हाथों से बराबर साफ करते रहना चाहिये। हर समय अनियमित रूप से दूध पिलाना अच्छा नहीं। रात को जगकर बच्चा रोवे तो उसे एक चम्मच गुनगुना पानी पिलावे। सोते से जगाकर दूध पिलाना अच्छा नहीं। अधिक दूध पीने से हरे-पीले दस्त आने लगते हैं, बच्चा दूध का उछाल करता है, ऐसी दशा में उसे एक छोटी-सी चम्मच रेंडी का तेल पिला दे। और एक समय दूध न पिलावे। इससे सहज ही उसका कोठा साफ हो जायगा।

सरसों का तेल और उबटन लगाने से बच्चे बढ़ते हैं। चमड़ा भी साफ और मुलायम होता है। भुनी सरसों का तेल अधिक लाभकर है। आंखों में काजल बराबर लगाना चाहिये। बच्चों को खूब सोने देना चाहिये। बच्चे को किसी के साथ न सुलाकर, अपने पास ही दूसरे बिस्तरे पर सुलाना चाहिये। अन्यथा उसकी वृद्धि में बाधा पड़ती है।

सर्दी के दिनों में सरसों का तेल कुछ गर्म करके और कपूर मिला कर छाती, गले एवं हाथ-पैर में मालिश करने से बच्चे को लगी हुई सर्दी का कष्ट दूर हो जाता है। शिशु के कानों में भी बराबर तेल डालना चाहिये। इससे नेत्र रोग नहीं होता। सिर पर तेल रखने से मस्तिष्क को लाभ पहुंचता है। यदि पेट दबाने से बच्चा रोये और बार-बार अपने पैर पेट की ओर समेटे तो समझना चाहिये पेट में दर्द है; फिर तुरन्त अपना हाथ आग पर सेंककर पेट को धीरे-धीरे सहलाना चाहिये। गुलरोगन को गर्म करके पेट पर लगाने या नमक को गर्म करके मलने से भी पेट दर्द में लाभ पहुंचता है। सो लेने के बाद जब बच्चा जीभ बाहर निकाले या सिर इधर-उधर करे, तब समझना चाहिये उसे भूख लगी है। अतः दूध पिला देना चाहिये। कभी-कभी अंगूर और सेब का रस भी पिलाया जाय तो उत्तम है। बच्चे की लार टपके तो बड़ी इलायची और मुलहठी एक-एक तोला लेकर बुकनी बना ले और उसे चीनी की चाशनी में जमा कर रखले। उसे प्रतिदिन पाव आध माशे भर बच्चे को पिलावे। कान बहे उसमें सूजन या दर्द हो, तो माता के दूध में रसौत मिलाकर उसमें मधु मिलाकर कान में डालना चाहिये। खुजली हो तो बच्चा उसे नाखून से खुजलाने न पावे—इस ओर ध्यान रक्खे। खुजली के दानों पर मक्खन लगावे, या नारियल के तेल को पानी में फेंटकर लगावे। बच्चे का मुंह न चूमे, और न किसी को चूमने दे। इससे बड़ी हानि होती है। मुंह के कीटाणु उसके मुंह में प्रवेश कर जाते हैं, कई माता-पिता लाड़-प्यार से अपने मुंह की चीज—पान—मेवा आदि चबाकर बच्चों के मुंह में दे देते है, उसकी चीज को अपने मुंह में दे देते हैं। यह बात बुरी है। इससे उनकी बीमारियां बच्चों को हो जाती हैं। और वे बे मौत मर जाते है।

दो तीन वर्ष के बच्चों को बाजार का अंड-बंड चीजें खिलाकर चटोर न बनावे, उन्हे पैसे भी न दो। अन्यथा उनकी पाचन शक्ति खराब होती है। घर पर बनी हुई मिठाई ही थोड़ी मात्रा में देनी चाहिये। माता का दूध छूटने के बाद बच्चे को गाय का दूध-पूर्ण मात्रा में देना चाहिये। हड्डियों के निर्माण में गाय का दूध सबसे बड़ा सहायक है। बच्चों को गहना भी नहीं पहनाना चाहिये। बच्चों के लिये कपड़े प्रायः ढीले पहनाने चाहिये। बच्चों के दौड़ने-घूमने या खेलने-कूदने में बाधा न दें। बच्चे धूल-मिट्टी में खेलें,कूदकर व्यायाम करें—यह आवश्यक है। माता को चाहिये कि वह बच्चों की रुचि और आवश्यकता को समझ कर वैसी व्यवस्था करे। हर बात में मारने-पीटने या डराने-धमकाने से अच्छा लड़का भी चिड़चिड़ा हो जाता है। बच्चे से प्रेम पूर्वक बोले। उसके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दे। वह डरपोक न बने, निर्भय एवं बलिष्ठ हो—इस ओर ध्यान देना चाहिये।

बालक को कुसंग से बचाकर अच्छे सङ्ग में रक्खे। उसे अच्छी शिक्षा दे। झूठ बोलने का कुफल बताकर सत्य में लगावे। उसमें गुरुजनों के प्रति विनय और आज्ञा पालन का भाव जगावे। पुत्र और कन्या को समान समझ कर दोनों के विकास पर एक-सा ध्यान दे। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा से कभी असावधान न हो। जिस विषय में उन की स्वाभाविक रुचि हो, उस विषय के अध्ययन में ही उनको लगावें।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

फीरोजाबाद के आदर्श उद्योगपति–

सेठ बालकृष्ण जी गुप्त

[आचार्य रमेशचन्द्र जी एम० ए०, सम्पादक–'आर्यमित्र']

अधिकांश रूप में पाया जाता है कि जहां धन । ऐश्वर्य और विद्या होती है वहां विनम्रता कम मिलती है, अहंकार भी प्रधान रूप से आगे आ जाता है । कतिपय महानुभाव इसके अपवाद भी हैं, यह मेरा सौभाग्य है कि मैं 'आर्यमित्र' के पाठकों को एक ऐसे व्यक्ति का परिचय दे रहा हूं जो धन से ऐश्वर्य से तथा सांसारिक सुख से पूर्ण होते हुए भी अत्यन्त विनम्र-मृदुभाषी-शीलवान और सेवा भावना से परिपूर्ण है, वह विशिष्ट व्यक्ति हैं फीरोजाबाद के प्रथम श्रेणी के उद्योगपति श्री सेठ बालकृष्ण जी गुप्त ।

कई वर्ष पुरानी बात है कि वृन्दावन में आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक समारोह के अवसर पर मेरा सेठ बालकृष्ण जी से परिचय 'आर्यमित्र' के प्रबन्ध सम्पादक श्री नारायणप्रिय गोस्वामी जी ने जिन का सेठजी द्वारा अभिनन्दन किया गया था, सभा की ओर से सेठजीने आगरा मण्डलके प्रमुख आर्यजनों का अभिनन्दन किया था, जिसमें हमारे गोस्वामी जी भी कोटला आगरा जनपद के निवासी होने के कारण समाहृत थे । मैं प्रभावित हुआ, गुप्त जी का वार्तालाप और शालीनता से उनकी मृदुता और निरभिमानता अपनी ओर खींच ले गयी ।

श्री नारायणप्रिय जी गोस्वामी कोटला आगरा जनपद के मूल निवासी हैं । श्री बालकृष्ण जी गुप्त भी कोटला निवासी हैं । दोनों एक दूसरे के पिता और वंशजों तक से परिचित हैं, गोस्वामी जी का कथन है कि कोटला के धूलिकणों में खेलकर उत्तम कोटि के विद्वान् प्रशासक सेठ बालकृष्ण जैसे उद्योगपति हमारे बीच में हैं । श्री गोस्वामी जी और अन्य जनों से गुप्त जी के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना था, परन्तु निकट से देखने का अवसर १ जुलाई १९८३ को मिला जब मैं फीरोजाबाद गया । निकट सम्पर्क में आया और दो-तीन दिन उनके साथ रहा ।

कोटला के साधारण वैश्य परिवार में गुप्त जी का जन्म हुआ । आज से लगभग पचपन वर्ष पूर्व । इनके पिता का साधारण लेन-देन का कार्य कार्य–कुछ लघु व्यवसाय और सामान्य कृषि थी । गुप्त जी ने स्कूली शिक्षा तो अधिक नहीं पाई, परन्तु व्यावहारिकता के दृष्टिकोण से अपने को सन्तुलित किया था । ग्राम से आकर फीरोजाबाद में कांच के व्यवसाय में लगे । श्रम सत्यता उनके सहचर रहे–धीरे-धीरे प्रोन्नति करते हुए आज व्यवसाय की सफलता में अग्रणी हैं । तीन कांच की वस्तुएं बनाने के कारखाने हैं जिनका उत्पादन उच्चकोटि का है और विदेशों में बड़ी संख्या में निर्यात होता है । तीनों कारखानों में साढ़े तीन हजार से अधिक व्यक्ति कार्य करते हैं । मजदूर भी हैं और उच्च वेतनभोगी इंजीनियर और ग्लास-केमिस्ट आदि ।

श्री बालकृष्ण जी गुप्त दोहरे शरीर के मध्यम कद के गौरवर्ण के सौम्य आकृति के व्यक्ति हैं । नेत्रों से स्नेह और अधरों पर मुस्कान बिखरा करती है । अनुज्ञाता पत्नी, आज्ञापकारी पुत्र-पुत्र वधुओं एवं कन्याओं से भरे-पूरे परिवार के प्रमुख स्नेहशील व्यक्ति हैं । आकर्षक वैभवपूर्ण निवास गृह है, किन्तु सबके बीच में मैंने उन्हें जलजात की भांति पाया ।

फीरोजाबाद अधिकतर गलियों में बसा है, वहां पहुंचने पर मैंने पाया कि शिक्षित और अशिक्षित सब गुप्त जी से परिचित हैं । एक साधारण से व्यक्ति ने कहा-हनुमानगंज चले जाइए । पतली गली, परन्तु सबसे भव्य और सजीली वाटिका वाला उनका गृह है । मैं पहुंचा सायं, ६ बजे का समय था । गुप्त जी वाटिका में बैठे थे । कई कुर्सियां पड़ी थीं । पास ही एक मेज पर प्रमुख दैनिक और साप्ताहिक पत्र पड़े थे । 'आर्यमित्र' की प्रति संयोग से देख रहे थे । मुझे आता देख गुप्तजी स्वतः खड़े हो गये–मैंने परिचय दिया । स्नेह से गले मिले और बोले–आपका लिखा सम्पादकीय पढ़ रहा था । बड़े प्रसन्न हुए–स्वपत्नी से परिचय कराया । सुसज्जित अतिथिशाला में मेरे ठहरने का प्रबन्ध किया । इसी अतिथिशाला में आर्यजगत् के प्रमुख नेता और देश के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति फीरोजाबाद आने पर ठहर चुके हैं । अतिथि को असुविधा न होने पावे इसका गुप्त दम्पति स्वयं ध्यान रखते हैं और दिन में कई बार योग्य सेवा के लिए स्वयं आज्ञा मांगते हैं ।

श्री गुप्त जी ने व्यवसाय को व्यवस्थित किया वहीं दूसरी ओर स्वाध्याय और चिन्तन में प्रवीण रहे । देश के उच्च श्रेणी के नेताओं के सहचर्य में रहे । देश-विदेश का विस्तृत भ्रमण किया और दर्शन-साहित्य तथा वैदिक ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया है । धर्म-दर्शन, राजनीति, श्रम तथा उद्योग आदि विषयों पर साधिकार वार्ता करते हैं । हिन्दी में काव्य रचना भावातिरेक में लिखी है । पत्रों में हृदय की भावना को उड़ेलकर रख देते हैं । सज्जनों और स्वजनों से खुले हृदय से बात करते हैं, साथ ही अंग्रेजी भी धारा प्रवाह और शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने में सक्षम हैं । मुझे अपनी रचनायें सुनाईं–देश के प्रमुख व्यक्तियों को लिखे पत्र सुनाये । देश विदेश के संस्मरण और कांच उद्योगपतियों की सभा के प्रधान होने के अनुभव भी बताये ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना आदर्श पथ-प्रदर्शक मानते हैं। कविवर डा० हरिशंकर शर्मा के परम प्रशंसक हैं और इनके ही सम्पर्क से आर्यसमाज के प्रति रुचि जागृत हुई । गुप्त जी आर्यसमाज में संगठन के पदों पर जाने के इच्छुक नहीं रहे, परन्तु आर्यसमाज के प्रत्येक आयोजनों में खुलकर दान दिया–आर्य संस्थाओं की सहायता की जो भी आर्य जन इस प्रयोजन से आया वह प्रसन्न होकर ही उनके पास से गया । स्थानीय और बाहरी सभाओं द्वारा उनका अभिनन्दन हुआ तथा गुरुकुल कांगड़ी से लेकर बहुत-सी संस्थाओं ने उन्हें मानद उपाधि प्रदान करके अपने को गौरवान्वित किया । आर्य-भूषण, वाणी-विशारद आदि कितने ही प्रशस्ति पत्र उनके कक्ष में सज्जित हैं ।

श्री गुप्त जी विद्वानों के सेवक हैं । उनके निवास से थोड़ी ही दूर पर हिन्दी के यशस्वी लेखक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी जी रहते हैं । नित्यप्रति उनका समाचार लेने जाते हैं । अपनी कार में प्रातः भ्रमण के लिए ले जाते हैं और ध्यान रखते हैं कि ९२ वर्षीय हिन्दी के इस सेवक को कोई असुविधा न हो । मैं स्वयं दो दिन रहा, कार पर भ्रमण कराने ले जाते थे । अपनी पैतृक ग्राम स्थली कोटला के प्रति उन्हें विशेष श्रद्धा और मोह है, वहां के विद्वान् और प्रसिद्ध व्यक्तियों के चित्र संजोये हैं । आर्यमित्र के नारायणप्रिय गोस्वामी को भी कोटला की एक विभूति मानते हैं । इनकी सरलता-पत्रकारिता कि प्रति लगन की सराहना करते हैं, और उनका विचार है कि कोटला के आदर्श व्यक्तियों के संस्मरणों को चिरस्थायी बनाया जाय । मैंने 'कोटला विभूति मन्दिर' की योजना रखी, सहर्ष सहमत हुए ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अज्ञात जीवनी विषयक सत्यान्वेषण कसौटी पर

[श्री काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

श्री आदित्यपाल सिंह आर्य, भोपाल का एक लेख 'महर्षि दयानन्द की अज्ञात जीवनी के विषय में सत्यान्वेषण' शीर्षक से 'आर्यमित्र' दि० ६ मई १९८३ के तथा आगे के कई अंकों में प्रकाशित हुआ है। साथ ही लेखक ने तद् विषयक एक शोध प्रबन्ध भी प्रकाशित कर विद्वानों के पास सम्मत्यर्थ भेजा है। इन पंक्तियों के लेखक को भी उनका शोध प्रबन्ध सम्मत्यर्थ तथा समालोचनार्थ प्राप्त हुआ है। अतएव सुझाव या सम्मति के रूप में निम्न लिखित पंक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है कि आर्य विद्वान् एवं शोधकर्ता महोदय उक्त सत्यान्वेषण पर पुनः विचार करेंगे :–

'आर्यमित्र' में प्रकाशित लेख तथा शोध प्रबन्ध में यही सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि अज्ञात-जीवनी में मुख्यतः (श्री आदित्य पाल सिंह आर्य के शब्दों में) पृष्ठ ६ से २४१ तक जो कुछ उत्तम पुरुष में कहा या लिखा गया है वह शतप्रतिशत सत्य है। किन्तु अज्ञात जीवनी की सत्यता अब भी संदिग्ध है क्योंकि अज्ञात जीवनी में उसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा गया है, वह प्रमाण कोटि का न होकर महर्षि की जीवनी से सम्बन्धित कतिपय अन्य विवरण हैं। शोध प्रबन्ध के लेखक ने भी अपने शोध प्रबन्ध में अज्ञात जीवनी की प्रामाणिकता की सिद्धि के लिये अकाट्य प्रमाण न देकर स्थान-स्थान पर अनुमान से काम लिया है और संदिग्ध भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ :–(शोध प्रबन्ध पृष्ठ ३ फुट नोट ४) 'यह हस्त लेख स्वामी जी के उपदेश या किसी अन्य के कथन का कोई अंश रहा होगा जो पं० दीनबन्धु जी की असावधानी से इस स्थान पर जुड़ गया है।'

(शोध प्रबन्ध पृष्ठ ६ कालम १ की अंतिम पंक्तियां) 'स्वामी जी के स्वहस्त से लिखित कुल १२ पृष्ठों की सामग्री होती है जिसमें १, २ एवं ५ पृष्ठ की पूरी तथा पृष्ठ ६ की आधे पृष्ठ की सामग्री वर्तमान में अनुपलब्ध है जिसको किसी कारण 'थ्योसोफिस्ट' में प्रकाशित कराने के लिये अंग्रेजी में अनुवाद करते समय छोड़ दिया गया होगा।'

(पृष्ठ ६ कालम २ की अंतिम पंक्तियां) 'स्वामी जी को क्रान्ति की निश्चित तिथि ३१ मई १८५७ की सूचना मिल गई होगी जिससे वे अपनी यह यात्रा स्थगित कर उत्तर भारत की ओर चल दिये।'

(पृष्ठ ७ कालम १ की प्रारम्भिक पंक्तियां) 'सम्भवतः स्वामी जी ने सोचा होगा कि उनके देहावसान के उपरान्त इन दोनों आत्म कथाओं में आर्य विद्वान् स्वयं ही समन्वय और पूर्वा पर तारतम्य बिठा लेंगे।'

(पृष्ठ १४ कालम २ के मध्य की पंक्तियां) 'स्वामी जी की अज्ञात जीवनी का यह कथन इस बात का संकेत देता है कि स्वामी जी पुरी से बुरहानपुर पुनः बारिकपुर, मेरठ होते हुये दिल्ली पहुंचे होंगे।

(पृष्ठ १७ फुट नोट २३) 'यहां भी १८५७ के स्वातन्त्र्य समर का कोई गुप्त केन्द्र रहा होगा।'

(पृष्ठ १८ कालम १ के मध्य की पंक्तियां) 'अमर कंटक से स्वामी जी (सम्भवतः रायपुर एवं नागपुर होते हुये) नासिक पहुंचे। (वहां सम्भवतः उस वर्ष कार्तिक में कुम्भ मेला भरा होगा)।'

पृष्ठ २४ कालम २ की प्रारम्भिक पंक्तियां) 'स्वामी जी ने हरद्वार से फाल्गुन माह के प्रारम्भ में ही अपनी उत्तराखंड की यात्रा आरम्भ की होगी।'

पृष्ठ २५ कालम १ के मध्य की पंक्तियां) 'तदुपरान्त ही उन्होंने मार्च १८५६ से उत्तराखण्ड की यात्रा प्रारम्भ की होगी।'

समीक्षा–उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि लेखक ने सर्वत्र संदिग्ध बातें लिखी हैं जो प्रामाणिक नहीं कही जा सकतीं। अतएव लेखक ने अज्ञात जीवनी को सत्य सिद्ध करने के लिये अपने जिस शोध प्रबन्ध को दृढ़ आधार माना है वह स्वयमेव ध्वस्त हो जाता है।

लेखक के शोध प्रबन्ध तथा अज्ञात जीवनी में एक ही घटना या वृतान्त के दो या अधिक विवरण भी परस्पर में एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। उदाहरण स्वरूप निम्न लिखित स्थल दृष्टव्य हैं :–

१ (अ) 'उधर नाना साहब तथा तात्याटोपे आदि नेता लगभग ६० हजार क्रान्तिकारियों के साथ नेपाल में शरण लेने के लिये चले गये थे, किन्तु नेपाल के राजा ने उन्हें निराश किया। अतः इन क्रान्ति कारियों में से अनेकों ने जंगल का रास्ता पकड़ा। कुछ ने स्वदेश आकर महारानी विक्टोरिया की आत्म-क्षमा दान की घोषणा को स्वीकार कर लिया। परन्तु नाना साहब आदि प्रमुख नेताओं ने समर्पण न करते हुये ब्रिटिश कमांडर को एक पत्र लिखा और दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। ……… ……इनमें से नाना साहब ने तो स्वामी जी से संन्यास ग्रहण कर दिव्यानन्द नाम धारण किया और अपने दीक्षा गुरु की जन्म भूमि मोरवी में आकर अपना शेष जीवन बिताया।' [शोध प्रबन्ध पृष्ठ १८ व अज्ञात जीवनी (पूर्वार्द्ध) पृष्ठ १४४]

(ब) 'वास्तविक तात्याटोपे तो राव साहब के साथ बच निकला था जिससे ये दोनों व्यक्ति अपने अज्ञात वास में नाना साहब के पास नेपाल जाने में सफल हो गये।' [शोध प्रबन्ध के लेखक द्वारा दि. २२ जून १९८३ को प्रकाशित व प्रसारित परिपत्र पृ० १]

(स) [प्रश्न रूप में] 'नाना साहब मोरवी में थे। उनके नेपाल जाने की बात कैसे उठी और सजग, सतर्क अंग्रेजी सरकार ने मोरवी में नाना साहब को गिरफ्तार क्यों नहीं किया ?

(उत्तर के रूप में)–'नेपाल जाने वाली बात नाना साहब के सगे साथियों ने ही प्रचारित और प्रसारित की थी जिससे अंग्रेजी सरकार उन्हें नेपाल के आस-पास ही खोजा करे और उसका ध्यान किसी दूसरी ओर न जाय।' [योगी का आत्म चरित्र (पूर्वार्द्ध) पृष्ठ ११६]

समीक्षा :–उद्धरण (अ) और (ब) में उल्लिखित बातें उद्धरण (स) में लिखित वर्णन से सर्वथा भिन्न हैं। प्रथम दो उद्धरणों से नाना साहब का नेपाल जाना और वहां अज्ञात वास करना निश्चित रूप से सिद्ध होता है जब कि उद्धरण (स) में नाना साहब के नेपाल जाने वाली बात उनके साथियों द्वारा प्रचारित की गई थी ऐसा बताया गया है जिसमें ज्ञात होता है कि नाना साहब नेपाल गये ही न थे। किन्तु सभी इतिहास नाना साहब के नेपाल चले जाने का ही समर्थन करते हैं।

पुनः यदि सूक्ष्म अवलोकन किया जाय तो उद्धरण (अ) और (ब) में भी परस्पर विरोध है। उद्धरण (अ) में बताया गया है कि तात्याटोपे आदि नाना साहब के साथ नेपाल चले गये थे जब कि उद्धरण (ब) में उल्लेख है कि तात्याटोपे राव साहब के साथ बच निकला था जिससे ये दोनों व्यक्ति अपने अज्ञातवास में (बाद में) नाना साहब के पास नेपाल जाने में सफल हो गये। इन दोनों वाक्यों के आशय में स्पष्ट अन्तर है।

[क्रमशः]

चयनिका

—अधर्मात्मा अविद्वान् विचार शून्य, अजितेन्द्रिय, ईश्वरभक्ति-रहित इत्यादि दोषयुक्त मनुष्यों से वह ईश्वर बहुत दूर है, अर्थात् वे कोटि-कोटि वर्ष तक उसको नहीं प्राप्त होते।

—आर्याभि०

—अपने मन में चारों ओर बाहर-भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शंक, उत्साही, आनन्दित और पुरुषार्थी रहना चाहिए।

—जो परमात्मा का उपस्थान करते हैं वे यशस्वी और विधि कीर्तिमान होते हैं। जो योगाभ्यास करते हैं वे भेड़िया, व्याघ्र और सिंह के समान एकान्त देश का सेवन करके पराक्रम वाले होते हैं।

—यजु० १६।८२

—वही परमपद स्वरूप परमात्मा परमपद है। उसी की प्राप्ति होने से जीवन सब दुःखों से छूटता है अन्यथा जीवों को परमसुख कभी नहीं मिलता। इससे सब प्रकार परमेश्वर की प्राप्ति में यथावत् प्रयत्न करना चाहिये।

—आर्याभि०

—परस्पर मिलते समय सत्कार करना हो तब नमस्ते इस वाक्य से उच्चारण करके छोटे बड़े-बड़े छोटों, नीच उत्तमों, उत्तम नीचों और क्षत्रिय आदि ब्राह्मणों का ब्राह्मणादि क्षत्रियों का निरन्तर सत्कार करें। सब लोग इसी वेदोक्त प्रमाण से सर्वत्र शिष्टाचार में इसी वाक्य का प्रयोग करके परस्पर एक दूसरे का सत्कार करने से प्रसन्न होवें।

—यजु० १६।३२

—नमस्ते यह वेदोक्त वाक्य अभिवादन के लिए नित्य प्रति स्त्री पुरुष पिता पुत्र अथवा गुरु-शिष्य आदि के लिये है, प्रातः सायं अपूर्व समागम में जब-जब मिलें तब-तब इसी वाक्य से परस्पर वन्दन करें।

—सं० वि० विवाह०

—जो पुरुष ब्रह्मचर्य आदि व्रत आचार विद्या, योगाभ्यास, धर्म के अनुष्ठान, सत्संग और पुरुषार्थ से रहित हैं वे अज्ञानरूप अन्धकार में दबे हुये ब्रह्म को नहीं जान सकते। जो ब्रह्म जीवों से पृथक् अन्तर्यामी सब का नियन्ता और सर्वत्र व्याप्त है, उसके जानने को जिनका आत्मा पवित्र है वे ही योग्य होते हैं अन्य नहीं।

—यजु० १७।३१

—पाप-पुण्य हिस्सा बिना भोगे छुटकारा नहीं होता अर्थात् पापों को भोगना ही पड़ेगा वे कभी भी नहीं छूटते।

—उ० मञ्जरी

—पाप-पुण्य मनुष्य जन्म में ही पैदा होते हैं, पशु आदिकों के जन्म में भोग होता है, नये पाप सम्पादन नहीं होते।

—उ० मञ्जरी

—जो पाप छूट जाते हों तो दरिद्रों के धन, राजपाट और अन्धों को आंख मिल जाती, कोढ़ियों के कोढ़ रोग छूट जाते—ऐसा नहीं होता इसलिए पाप-पुण्य किसी का नहीं छूटता।

—स० प्र० एकादश समु०

—हे मनुष्यो! वे ही इस संसार में पशु के तुल्य पामर जन हैं जो स्त्री में आसक्त हैं।

—ऋ० ७।१८।६

—नारायण प्रिय

मेरठ शताब्दी स्थगित

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार मेरठ में होने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्थगित कर दी गई है। भविष्य में जब की जायगी तब सूचना दी जायगी।

—इन्द्रराज
मन्त्री सभा

सेठ बालकृष्ण जी गुप्त

[शेष पृष्ठ ६ का]

श्री गुप्त जी की दिनचर्या नियमित और घड़ी की सुई के समान गतिशील है। प्रातः चार बजे से रात्रि १० बजे तक कार्यरत रहते हैं। छोटे और बड़े सबसे एकसा स्नेह और निश्छल व्यवहार, मैंने उन्हें अपने कारखाने के बड़े अफसर और साधारण मजदूर दोनों से एकसा स्नेह भाव से बात करते देखा। उनका रहन-सहन और व्यवहार आर्य जनोचित है। पद पर न रहते हुए पदधारियों से अधिक आर्यसमाज के लिए करते हैं। कोई लेखक, कवि और संन्यासी बिना समाहृत हुए उनके निवास से नहीं गया, लोकप्रियता और जनप्रियता में फीरोजाबाद के प्रथम श्रेणी के नागरिक हैं। जनसेवा में मेरा दो ही दिन का उनके साथ सहचर्य रहा। सारे परिवार का मैं स्नेहशील बन गया तथा जब मैंने विदा मांगी तो बोले कि शरद् ऋतु में नारायण प्रिय गोस्वामी को साथ लेकर आइयेगा। कोटला के पुराने वृत्त को गोस्वामी से पूछूंगा और कोटला-विभूति मन्दिर की आयोजना को रूप प्रदान करूंगा।

प्रभु सेठ बालकृष्ण गुप्त सरीखे आदर्श आर्य जनसेवक को आयु स्वास्थ्य यश तथा वर्चस्व प्रदान करें।

माता के द्वारा बालक का लालन-पालन और शिक्षा

(शेष पृष्ठ ५ का)

पांच वर्ष की अवस्था में बच्चे को अक्षर का अभ्यास कराना आरम्भ कर दे। माता शिक्षित हो, और विनोद पूर्वक सिखावे तो बच्चा खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख लेगा।

किंडर गार्टन की प्रणाली उपयोगी है, बच्चा गाली दे तो प्रेम से समझाकर उसे उस आदत से हटावे। उसे खिलौना आदि देकर पढ़ने के लिए उत्साह बढ़ावे। हंसी-मजाक में भी बालक के सामने विवाह की चर्चा न करे। इसका प्रभाव अच्छा नहीं होता। अक्षर परिचय के बाद बालक को किसी सुयोग्य शिक्षक के देख-रेख में पढ़ने की व्यवस्था कर दे। कुछ शिक्षित हो जाने पर बालक की रुचि के अनुसार उसे आवश्यक विषयों की शिक्षा में प्रवीण बनाने की चेष्टा करे। आजीविका के लिये उपयोगी शिक्षा दे। परन्तु शिक्षा का उद्देश्य आत्मा का कल्याण है; अतः धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की ओर तो बालक को अवश्य लगाना उचित है।

कन्याओं को खास और पर ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे आदर्श गृहिणी बन सकें, सीता और सावित्री के आदर्श को अपना सकें।

प्रभु महिमा

(१)

प्रभु तूने कैसी अद्भुत लीला रचाई है।
अद्भुत सृष्टि रचकर कैसी धूम मचाई है ॥
सूरज, चाँद बनाकर तुमने हम पर दया दिखाई है।
जल, थल, निर्माण कर, वायु को गति दिखाई है ॥
सारे नक्षत्र के साथ ही विचित्र ब्रह्माण्ड रचायी है।
ऐसी कारीगरी दिखाकर, सबके मन को हर्षायी है ॥
कण-कण में तुम व्याप रहे, प्रभु तुम महान हो।
तुम्हीं को वन्दना करते सभी, तुम्हीं सारा जहान हो ॥
'ब्रह्मानन्द' हैरान है, तुम्हारी महानता देख कर।
हम सब आभारी हैं, तुम्हारी दयालुता देख कर ॥

गायत्री महिमा

(२)

माँ गायत्री तेरी महिमा अपरम्पार है।
जो तेरी शरण आये उसका बेड़ा पार है ॥
ओ३म् भू र्भुवः स्वः मन्त्र है कितना प्यारा।
मन को तरंगित करता, है कितना न्यारा ॥
माँ गायत्री तुम ही, हम सबका सहारा हो।
तुम जग पालन कर्त्री, तुम ही अधारा हो ॥
माँ तुम महान हो एवं निराकार हो।
माँ तुम दयालु हो तथा निर्विकार हो ॥
तुम ही सर्वाधार हो, तुम शक्तिदायिनी हो,
तुम शान्तिदायिनी हो, तुम शक्तिदायिनी हो ॥
तुम ही देव माता हो व देवों की भी माता हो।
तुम ही भक्तवत्सला, गायत्री, हमारी माता हो ॥
गायत्री मन्त्र जपने से मानव का कल्याण है।
इसी से सर्वसिद्धि मिलती, मन्त्र अति महान है ॥
'ब्रह्मानन्द' करता वन्दना माँ तू कृपा करना।
देकर सुबुद्धि हमको, अपने शरण में रखना ॥

मानव कल्याण

(३)

मानव तन पाया तुमने सत्कर्म हेतु, मानव जीवन का यही सार है।
हर समय ईश्वर को याद कर, बन्दे, जग का मोह माया निस्सार है ॥
मुश्किल से मानव तन को पाया है तुमने, इसको सदा तू ख्याल कर।
प्रभु से नाता जोड़, सबका हितैषी बन,इसको तू मन में विचार कर ॥
खाली हाथ आया तू, सब यहीं छोड़कर, खाली हाथ ही तू जायेगा।
इसका तू चिन्तन कर, माया को दूर कर, तेरा कल्याण हो जायेगा ॥
काम में न अंधा बन, माया का दास न बन, उत्तम यही विचार है।
प्रभु से प्रेम कर, जीवन को सार्थक कर, इसी में सबका प्यार है ॥
'ब्रह्मानन्द' का आरजू, सदा यही है, कभी किसी का अनिष्ट न कर।
तभी तू प्रभु का प्यारा बनेगा, कभी किसी का अपकार न कर ॥
मानव तन पाया तुमने सतकर्म के हेतु, मानव जीवन का यही सार है।
हर समय ईश्वर को याद कर बन्दे जग का मोह माया निस्सार है ॥

पूजा का मर्म

(४)

चन्दन टीका माथे लगाकर, मन्दिर जाना कोई धर्म नहीं है।
घण्टों बैठकर माला फेरे, यह पूजा का कोई मर्म नहीं है ॥
गेरुआ पीला वस्त्र पहन कर,
हो गये पण्डित दुनिया वालो।
अपनी अन्तर मे झांक के देखो,
ओ पण्डित ओ चन्दन वालो ॥
घड़ीघंट औ शंख बजाना, यह तो कोई धर्म नहीं है।
घण्टों बैठकर माला फेरे, यह पूजा का कोई मर्म नही है ॥
धर्म के नाम पर आज यहां,
दिन रात अधर्म हो रहा है।
मन्दिर की चहार दीवारी में,
छुप छुप कुकर्म हो रहा है ॥
चला कांवरिया लेकर जो, वह सचमुच कोई धर्म नहीं है।
घण्टों बैठकर माला फेरे, यह पूजा का कोई मर्म नहीं है ॥
अन्तर के मल मिटाने को,
यह जगत् है तैयार नहीं।
सच्ची पूजा का अर्थ है भक्ति,
और भक्ति कोई खिलवाड़ नहीं ॥
काशी प्रयाग मथुरा जाओ, पर यह कोई धर्म नहीं है।
घण्टों बैठकर माला फेरे, यह पूजा का कोई मर्म नहीं है ॥
कहां छिपे हो ओ विधाता,
मानव शून्य मे विचर रहा है।
अज्ञानता मे कैद होकर।
मन्दिर, मस्जिद भटक रहा है ॥
मानवता की माला पहनो, पाषाण पूजा कोई धर्म नहीं है।
घण्टों बैठकर माला फेरे, यह पूजा का कोई मर्म नहीं है ॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु एवं बीणारानी सिनहा, अतरदह, मुजफ्फरपुर

क्यों, अरे ! अटके ?

नर नहीं, नर है नहीं, जो छोर पर अटके !
काली निशा को देखकर, व्यथित हो भटके !!
दुःख सुख के बादल क्या, हमेशा हैं कहीं टपके ?
आये-गये-स्थिर नहीं, फिर क्यों अरे ! अटके ??
झोंकों से भरा जीवन, विषय के घोर झटके,
आपद घनेरी है यहां, कब कौन आ टपके ??
पर क्या सुघर जन गण, कभी होते व्यथित हैं ?
खिलते सुवासित सुमन सुन्दर, कण्टको मे सुविदित हैं !!
जहाँ व्यथा की आग मे, अरमान जलते हैं !
सुन्दर रुपहले स्वप्न, जहाँ अमूर्त फलते हैं !!
वहाँ बिना जागे-जगाये, तुम, क्यों अरे ! लटके ?
दुःख सुख के बादल, क्या हमेशा है कहीं टपके ??
क्यों बसन्त की आस मे, बूढे हुए तुम ?
जीवन-भार कन्धो पर, अरे ! लादे हुए तुम ??
नर वही, नर है वही, जो झेले सब झटके !
आगे बढ़े-ऊंचे चढ़े, विघ्नो मे न अटके !!

—डा० चन्द्रदत्त कौशिक, प्रो० कन्या गुरुकुल, खानपुर कलाँ, सोनीपत (हरियाणा)

साहित्य-समीक्षण

दर्शन-साहित्य समीक्षा

अध्यात्म मीमांसा लेखक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती डी-१४/१६ माडल टाउन-देहली-९, प्रकाशक विरजानन्द वैदिक (शोध) संस्थान-गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश । मूल्य ४५ रुपये–पृष्ठ २९०, साइज २२×१४ सजिल्द ।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती संन्यास ग्रहण के पूर्व पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित के नाम से सम्बोधित किए जाते थे तथा दर्शन एवं नैतिक विचार पूर्ण रचनाओं के द्वारा लब्ध प्रतिष्ठित लेखक के रूप में समादृत थे । उस समय की उनकी दो रचनायें अनादि तत्व दर्शन एवं वेद मीमांसा विद्वानो द्वारा सम्मानित हुई हैं और विद्वान् लेखक के गम्भीर अध्ययन एवं मौलिक विचार प्रतिभा की परिचायक हैं । प्रस्तुत समालोच्य ग्रन्थ इसी परम्परा एवं सरणि का है जो ईशोपनिषद् की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या है और एक संन्यासी की आभा से मण्डित है ।

भारतीय वाङ्मय मे वेद अपौरुषेय हैं । समस्त आध्यात्मिक एवं भौतिक रहस्य के द्योतक है । वेद ज्ञान पर आधारित वैदिक साहित्य का विकास दो प्रमुख रूप से हुआ । ब्राह्मण ग्रन्थ तथा उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थो में जहा यज्ञ विषयक ज्ञान का विस्तार और व्याख्या हुई वही औपनिषदिक साहित्य मे तर्क तथा उपासना दोनो पक्षो पर प्रबलता देते हुए वेदो मे सन्निहित ज्ञान - सर्वोच्च सत्ता की सरल प्रवाह पूर्ण और लक्षणा तथा व्यञ्जना शैली मे व्याख्या प्रस्तुत की गई । शंकर एवं दयानन्द सरीखे मनीषियो ने एकादश उपनिषदो को प्रमुख रूप से स्वीकार किया है जिनमे सबसे लघु केवल १८ मन्त्रो मे सम्पादित ईशोपनिषद है जो यजुर्वेदीय काण्व शाखा का चालिसवां अध्याय है और जिसका प्रथम मन्त्र 'ईश' शब्द से ही आरम्भ होता है एवं सर्वोच्च शक्तिमती सत्ता की सर्वव्यापकता की प्रतिज्ञा प्रस्तुत की जाती है । शेष मन्त्रो मे उसी प्रतिज्ञा का समर्थन और ज्ञान प्राप्ति के उपाय वर्णन किये गये हैं और सद् एवं असद् पक्षियों की ओर निदेशन है, यजुर्वेदीय व्याख्याकारो ने इस चालिसवें अध्याय का देवता आत्मा को उल्लखित किया हैं इसी कारण से 'ईशोपनिषद्' व्याख्यापरक रचना का नाम स्वामी विद्यानन्द जी ने 'अध्यात्म मीमांसा' निरूपित किया है जो ज्ञान परक तर्क सगत एव भावना तथा अनुभूति को बल प्रदान करता है ।

उपनिषदों पर आदि शंकराचार्य से लेकर हमारे वर्तमान युग के लेखकों ने व्याख्यायें प्रस्तुत की हैं । परन्तु प्रत्येक व्याख्याकार ने अपने को एक सिद्धान्त मे निरूपित कर लिया हैं और फिर उसी सिद्धांत का पोषण अपनी व्याख्या में करने की चेष्टा की है । आचार्य शंकर ने अद्वैत परक, रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत परक तथा माध्वाचार्य ने द्वैतपरक अर्थात् प्रत्येक व्याख्याकार पूर्वाग्रह में निबद्ध होकर व्याख्या करता है जिससे शब्दो के अर्थों और मन्त्रों की प्रक्रिया में स्वानुकूल खींच-तान की जाती है । विद्वान् विचारक स्वामी विद्यानन्द जी ने किसी पूर्वाग्रह बन्धन का सहारा नहीं लिया है केवल वेद मूलक उपनिषद होने के कारण वैदिक सिद्धान्त और अन्त शक्ति में अविद्या का सहारा लेकर विशद व्याख्या प्रस्तुत की है तथा आर्ष ब्रह्म विषय सिद्धान्त को स्वीकार करते हुये ब्रह्म जीवात्मा और प्रकृति के सात्विक निरूपण को प्रस्तुत किया है, स्वामी जी ने व्याख्या करते हुए पाठक पर किसी विचार या शैली का बोझ नही लादा है, अपितु कौशल से स्वतः सत्य परक भाव को जागृत करने का प्रयास किया है–इससे मौलिक विचार भावना और अनुभूति को बल मिलता है तथा अर्थ सरल और सहज बोधगम्य हो जाता है ।

स्वामी विद्यानन्द जी ने शब्दों का अर्थ करते हुए उनकी स्वाभाविकता को नष्ट नहीं किया है अपितु व्युत्पत्ति शक्ति द्वारा उनके अर्थ सौन्दर्य को निखार दिया है । उदाहरणार्थ उपनिषद के प्रथम मन्त्र के चतुर्थ पाद 'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्' का सामन्य अर्थ कर दिया जाता है कि किसी के धन का लोभ मत करो–परन्तु स्वामी विद्यानन्द जी 'मागृधः' एक आदेश मानते है कि 'लोभ मत करो' कस्य स्विद् धनम् का व्याकरणीय व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ होता है प्रश्न सूचक वाक्य में कि धन किसका है ? अर्थात् किसी का नहीं है । लक्ष्मी एक गृही नही है । उसके प्रति आसक्ति क्यों होना चाहिये । इसी प्रकार अन्यत्र भी शब्द के गम्भीर्य अर्थ में व्युत्पत्ति के द्वारा सत्य मुक्ताओं की खोज की गयी है ।

स्वामी विद्यानन्द जी ने मन्त्र की व्याख्या करते हुए वेद, उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थ–स्मृतिशास्त्र–रामायण महाभारत और भारतीय तथा योरूपीय दार्शनिक विद्वानों–कवियों–लेखकों के उद्धरणों से कथन को सम्बोधित करते हुये ज्ञान का गहन तम निकर प्रस्तुत किया है जो व्याख्याकार की विद्वत्ता का परिचायक है और पाठक के अध्ययन एवं विचार आचरण की सामग्री बन जाती है तथा साधिकार कहा जा सकता है कि गृहस्थ जीवन के आचार्य लक्ष्मी दत्त दीक्षित और संन्यास दीक्षित स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के जीवन का समस्त अध्ययन विचार अनुभूति तथा स्वतन्त्र चिन्तन एक स्थान पर समवेत रूप में प्रतिबिम्बित होकर आभावान है। स्वामी विद्यानन्द जी इस सफल रचना के लिये कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं तथा हम अपने को उपकृत मानते है । प्रसिद्ध साहित्यकार वियोगी हरि ने भूमिका तथा दर्शनशास्त्र के उद्भट विद्वान आचार्य उदयवीर शास्त्री ने प्रस्तावना लिखकर ग्रन्थ की श्रीवृद्धि की है । आशा है धर्म-दर्शन-अध्यात्म में रुचि रखने वाले पाठक इस रचना से लाभान्वित होंगे । पुस्तक प्रत्येक विद्वान् के निजी और आर्य समाज तथा महाविद्यालयो के पुस्तकालय में होना नितान्त आवश्यक है ।

विरजानन्द वैदिक (शोध)संस्थान धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य के प्रकाशन मे अग्रणी है । पुस्तक का मुद्रण–प्रयुक्त कागज और परिबन्धन (जिल्द) तथा सामान्य साज-सज्जा आकर्षक एवं सन्तोष जनक है और विरजानन्द वैदिक (शोध) संस्थान भी ग्रन्थ प्रकाशन हेतु बधाई का पात्र हैं ।

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०
संपादक

महात्मा नारायण स्वामी स्मृति महोत्सव

बरेली आर्य जगत् की महान विभूति है हैदराबाद सत्याग्रह के संचालक महात्मा नारायण स्वामी जी स्मृति मे दि० ११ से १५ अक्टूबर ८३ तक बरेली के मोती पार्क मे (३७वा) स्मृति महोत्सव आयोजित किया जायगा।

दि० ११ अक्टूबर ८३ को शोभायात्रा दि० १२, १३, १४ अक्टूबर ८३ को सार्वजनिक समारोह मोतीपार्क के प्रांगण मे सायं ६ से १० बजे तक तथा दि० १५ अक्टूबर को प्रातः ७ बजे हिन्दू सोशल ट्रस्ट के तत्वावधान में श्मशान भूमि पर यज्ञ, भजन एवं विद्वानो के प्रवचनों का आयोजन है।

—ओम्प्रकाश आर्य
एम० ए०, एल० एल० बी०
संयोजक

वीर पर्व विजयादशमी

'वीर पर्व' विजयादशमी बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ १९ अक्टूबर से ४ नवम्बर तक खेल-कूद व बौद्धिक प्रतियोगिता के रूप मे मनाई जायगी। अधिक से अधिक धन दल सहायता 'वीर निधि' के रूप मे एकत्रित कर मण्डल, प्रान्त व सार्वदेशिक को भेजी जाय।

—वेचन सिंह
संचालक
पूर्वी उ० प्र० आर्यवीरदल

—आर्य समाज आर्य नगर द्वारा श्री राजेश पक्षी भजनोपदेशक सभा का १ सप्ताह ग्राम प्रचार कराया गया और नई आर्य समाजो की स्थापना की गई। आर्य समाज आर्य नगर मे वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम हुआ।

—रामकुमार आर्य
प्रधान आर्य समाज

शोक प्रस्ताव

श्रीमती सरोजिनी देवी ले ले भूतपूर्व प्रधानाचार्या सरस्वती विद्यालय कन्या इण्टर कालेज लखनऊ के पूज्यपाद पति श्री डा० शिवराम चिन्तामणि ले ले का निधन १७-९-८३ को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि एवं पूर्णाहुति आदि संस्कार वैदिक ढंग से सम्पन्न हुये।

आर्य समाज के सभी सदस्यो ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की एवं उनके परिवार को धैर्य धारण करने की याचना की।

—अवध नारायण
मन्त्री

—आर्य समाज कैसरबाग एवं महिला समाज कैसरबाग न लखनऊ अपने सत्संगो मे २ मिनट का मौन धारण कर श्रीमती कान्तीदेवी गुप्ता भूतपूर्व प्रधाना महिला समाज कैसरबाग धर्म पत्नी श्री हरी राम गुप्ता कोषाध्यक्ष आर्य समाज कैसरबाग के निधन दि १७-९-८३ पर प्रभु से दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थनाएं की एवं उनके परिवार को इस कष्ट को सहन करने हेतु शक्ति की याचनाएं की।

उनके निधन से दोनों आर्य समाजो की जो क्षति हुई है वह अब प्राप्त होना दुर्लभ है।

—अवध नारायण
मन्त्री

—२१ से २७ अक्टूबर ८३ तक शाहगंज (जौनपुर) मे आर्य वीर दल का मण्डलीय प्रशिक्षण शिविर लगेगा।

—सूर्य प्रकाश एडवोकेट
मन्त्री मण्डल आर्यवीर दल
जौनपुर

उत्सव

आर्य समाज बिसवा सीतापुर का वार्षिकोत्सव ३, ४, ५ अक्टूबर को होगा।

मन्त्री

सूचना

प्रदेश भर की समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे दयानन्द बाल मन्दिर केवल आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा ही मान्यता प्राप्त करके चलाये जा सकते हैं। अलग रजिस्ट्रेशन या मान्यता प्राप्त करना उचित नहीं है। ये विद्यालय केवल सभा द्वारा दी गयी व्यवस्था के अन्तर्गत ही चलाये जा सकते हैं।

—इन्द्रराज
मन्त्री
आ० प्र० सभा उ०प्र०

निर्वाचन

आर्य समाज बिल ग्राम
प्रधान—श्री नेत्र नारायण
मन्त्री—श्री रामस्वरूप
कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र

आर्य उप प्रतिनिधि सभा
देहरादून
प्रधान—श्री देवदत्त पत्रकार
मन्त्री—श्री दर्नाप मिश्र
कोषाध्यक्ष—श्री ननसुख

आर्य समाज मेरठ शहर के
अन्तर्गत संचालित
गोदावरी देवी ट्रस्ट मेरठ
प्रधान—श्री मनोहरलाल जी
मन्त्री—श्री इन्द्रराज
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश
जौहरी

मदो कला (गोण्डा)
प्रधान—श्री मूलचन्द्र
मन्त्री—श्री हरपालसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री रणवीरसिंह

—निम्न आर्य समाजो ने श्रावणी से श्रीकृष्ण अष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया।

आर्यसमाज उमर्डा, सहारनपुर आर्य समाज मल्लावां (हरदोई), आर्य समाज कलकत्ता महिला समाज ना भवन लखनऊ।

नूरजहां से प्रकाशवती बनी

आर्य समाज बिजनौर के प्रांगण मे एक नूरजहाँ नामक युवती को वैदिक धर्म में दीक्षा दी गई जिसके साथ एक पुत्र १० वर्ष सजिद, पुत्री ७ वर्ष नरगिस तथा पुत्र ५ वर्ष माजिद को भी वैदिक धर्म मे दीक्षित करके गुरुकुलीय शिक्षा हेतु भेज दिया गया। नूरजहां ने स्वेच्छा से प्रकाशवती बनकर एक युवक श्री शिशुपाल सिंह से वैदिक रीत्यनुसार विवाह संस्कार कराया। माजिद का नाम मजीत, सजिद का सजीत और कन्या नरगिस का नलिनी नामकरण संस्कार हुआ—परिवार के दोनो प्राणी वैदिक धर्म मे अपने को सुखी सन्तुष्ट और सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे हैं। आचार्य प० अमीचन शर्मा प्रधान के साथ अनेक आर्य विद्वानो ने इनको उपस्थित रहकर आशीर्वाद दिया।

मन्त्री आर्य समाज बिजनौर

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज पुरैनी के प्रचार मन्त्री एवं अवकाश प्राप्त श्री रणवीर सिंह जी शास्त्री वैद्य भास्कर साहित्यरत्न का निधन ८-९-८३ ईसवी को हो गया। आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के स्नातक थे। एवं आर्य समाज अनारकली लाहौर के उपमन्त्री रह चुके थे। आर्य समाज के कार्यक्रमो की सफलता मे आपका विशेष योगदान रहा है,

आर्य समाज पुरैनी दिवंगत आत्मा के कार्यों की सराहना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है और परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दुःखी परिवार को धैर्य तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

विजय पाल सिंह
आर्य समाज

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष-45993 ४२६६१
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वा० आश्विन १०
आश्विन कृ० ११ रविवार
२ अक्टूबर १९८३ ई

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यकता

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

सभा को कुछ आर्य विद्यालय निरीक्षको की आवश्यकता है, अवकाश प्राप्त अध्यापक प्रवक्ता आचार्यो को वैदिक सिद्धान्तो से रूप रिचित हो और जो कुछ मानदेय अधिक से अधिक ४००) रु० प्रति मास प्राप्त करके आर्य विद्यालयो एव आर्य समाजो का निरीक्षण कर सकते हो वरीयता दी जायगी, आवेदन पत्र "मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा" कार्यालय मे १५।१०।८३ तक पहुच जाने चाहिए आवेदन कर्ताओ को अपने व्यय से साक्षात्कार के लिये आना होगा यदि उन्हे बुलाना उपयुक्त अथवा आवश्यक समझा गया।

—माधव सिंह मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
उ० प्र० लखनऊ

—आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाडा) मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया गया। पर्व व सुरक्षा दिवस भी मनाया गया।

मन्त्री

निर्वाचन
आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाडा)
सरक्षक—श्रीमान राजाधिराज सुदर्शन देव
प्रधान—श्री माधोसिह न्याति
मन्त्री—श्री अम्बालाल आर्य
कोषाध्यक्ष श्रीरामदयालछीपा

सफेद दाग

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

इलाज शुरू होते ही दाग का रग बदलने लगता है। परीक्षाकर अवश्य देखें कि इलाज कितना अच्छा है? रोग विवरण लिखकर एक पैकेट दवा मुफ्त मगा लें। १२५
पता—जीवन कल्याण (डी० डी०)
पो० कतरीसराय (गया)

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

सफेद दाग से दुखी क्यों?

कठिन परिश्रम से सफेद दाग की अत्यन्त लाभदायक दवा तैयार की गयी है। जिसके इस्तेमाल से दागो का रग सिर्फ तीन दिनो मे ही बदलना आरम्भ हो जाता है। और कुछ समय तक इलाज कराने से रोग जड़ से और हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। रोगी विवरण लिखकर एक फायल लगाने की दवा मुफ्त प्राप्त करें। मू० १२)
पता—देवता आश्रम (आर०एल०)
पो० कतरीसराय (गया)
८०५१०५

पशु-बलि कलंक है

नैनीताल पर्वतीय अचल के प्रबुद्ध जनो द्वारा नन्दा देवी मेला के अवसर पर पशुबलि निषेध का कार्यक्रम विज्ञापनो, प्रलेखो, प्रवचनों तथा पत्र कारिता के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्य मे पत्रकारिता ने भी लेखो का प्रकाश कर सहयोग प्रदान किया। जनता ने धर्म के नाम पर इस कलक 'पशुबलि' पर गहराई से विचार किया। जिसके फलस्वरूप इस बार बकरो की बलि की सख्या बहुत कम हो गई। जनता के इस सहयोग के लिये आर्य समाज नैनीताल आभार व्यक्त करता है। आशा की जा रही है कि समाज के प्रबुद्ध जनो के मनन [illegible] प्रचार से आगामी वर्षो मे यह कलक समूल धुल जायेगा। साथ ही समाज से धर्म भीरुता तिरोहित होगी।

—केदार सिंह
मन्त्री

महाशय रामदास चतुर्वेदी का निधन

१८-६-८३ को बरेली के एक यज्ञ प्रेमी जिन्होने कई बार चारो वेदो से यज्ञ किया।

श्री महाशय रामदास जी चतुर्वेदी का निधन हो गया। वेद तथा यज्ञो के यह विशेष प्रेमी थे अभी अक्टूबर में चारो वेदो से यज्ञ करने वाले थे। ईश्वर इनको सद्गति प्रदान करें।

—बिहारी लाल शास्त्री

—श्री सत्यदेव जी महानगर के निधन के समाचार को पाकर जिला आर्य प्रति० नि० सभा लखनऊ के साधारण बृहदधिवेशन में सर्वसम्मति से शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

सभा मन्त्री आचार्य वेद व्रत अवस्थी ने उनके कर्मठ आर्यत्व की चर्चा की और उनके प्रति सभा की ओर से सम्वेदना सन्देश उनके दुखित परिवार मे प्रेषित किया।

सभा मन्त्री जिला सभा लखनऊ

आवश्यकता

एक निजी सचिव की। वेतन योग्यतानुसार। वैदिक धर्मावलम्बी स्नातक को विशेषता।

—राजा रणञ्जय सिंह
अमेठी—२२७४०५, जनपद सुलतानपुर उ० प्र०

आवश्यकता है

द० बा० म० दूरा (आगरा) के लिए एक आर्य विचार धारा वाले वैदिक विद्वान् की। जो पुरोहित एव अध्यापन कार्य मे समर्थ हो। बी०ए०बी०एड० या इसके समकक्ष शास्त्री मध्य शिक्षाशास्त्री को वरीयता दी जायेगी। वेतन मान योग्यतानुसार इच्छुक जन निम्न पते पर सम्पर्क करें।

प्रबन्धक
दूरा जिला—आगरा
(उ० प्र०)

 प्रकाशक—उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ मे [illegible] शर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ मा० आश्विन १७ आश्विन सु० ३, रविवार सम्वत् २०४० वि०, ९ अक्टूबर सन् १९८३ ई०

आर्यजनो के जीवन मे स्वर्ण अवसर

अजमेर में आयोजित ऋषि निर्वाण शताब्दि की सफलता प्रत्येक आर्यजन की अभूतपूर्व सफलता होगी

प्रबन्ध एवं स्वागत समितियां सक्रिय

आगामी ४-५-६ नवम्बर १९८३ को अजमेर नगरी मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन हो रहा है। प्रत्येक आर्य समाज का इसमे प्रतिनिधित्व होना चाहिए। यथा सामर्थ्य धन भेजिये। प्रत्येक आर्यजन का कर्त्तव्य है कि इस अपूर्व अवसर पर स्वयं उपस्थित होकर महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें तथा इष्ट मित्रों को अजमेर जाने के लिये प्रेरित करे।

निर्वाण शताब्दि के अवसर पर महत्वपूर्ण निर्णय होंगे। जो देश की राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रभावी होगा और आर्य समाज की भावी गति विधियो पर निर्णय होंगे। धर्म-रक्षा अभियान-आन्दोलन तीव्र किया जायगा। मुसलमान तथा ईसाइयो को सावधान किया जायगा कि भारत मे अब विघटन की प्रवृत्ति को पनपने न दिया जायगा। वेद-प्रचार एवं आर्य समाज के कार्यक्रमो की नवीन रूप रेखा प्रस्तुत होगी।

आशा है कि लाखो की संख्या मे आर्यजन अजमेर पहुंचेगे। सबके लिए निवास एवं ऋषि लङ्गर में निःशुल्क भोजन की व्यवस्था होगी। स्वागत समितियां आपके स्वागत को आतुर है। ऋषिवर की जय बोलते चलिए।

ओ३म् पताका फहराते चलिये।
चलिये अजमेर चलिये॥

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

वार्षिक	१५)	प्रधान सम्पादक—	वर्ष	अङ्क
छमाही	८)	पं० इन्द्रराज		
विदेश में	३ पौंड		८६	३८
एक प्रति	४० पैसे	सभा मन्त्री		

अर्चना

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि
सहस्राक्षो अजरो भूरिरेता ।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चित
तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ।

अथर्व० १९।५३।१ ॥

अर्थ—सात रश्मियों वाला सहस्रों धुरों को चलाने वाला कभी भी जीर्ण न होने वाला महाबली काल रूपी अश्व चलता रहता है। सब उत्पन्न हुई वस्तुएं उस समय रूपी अश्व (रथ) के चक्र हैं उस घोड़े पर ज्ञानी और क्रान्तदर्शी लोग ही सवार होते हैं।

आर्यमित्र

लखनऊ—रविवार ८ अक्टूबर १९८३ दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

दिशा भ्रम

विडम्बना है कि राष्ट्र ने स्वतन्त्रता तैंतीस वर्ष पूर्व प्राप्त कर ली है, परन्तु इस देश के नेता दिशा विहीन भटक रहे हैं। न तो कोई राष्ट्रीय मापदण्ड है। न सुनिश्चित भारतीय सांस्कृतिक मर्यादा है और न कोई तथ्य यहां तक देव नागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा जो राष्ट्रीय स्वरूप से स्वीकृत है उसका भी सबल अपमान है। राष्ट्र के नेता गंगा गये गंगादास चोर यमुना गये यमुना दास की स्थिति में हैं जिसका परिणाम सामने है कि देश में आज सब का शासन तन्त्र दुर्बल हो रहा है। मानव की अवस्था पतन की ओर है। नौकरशाही सर्वोपरि है तथा विदेशों में भी हमारा तिरस्कार है। अपने ही पड़ोसी देश शत्रु हो रहे हैं और स्थिति यह आ गया है कि नेपाल जिसकी हमारी संस्कृति एक है और काठमाण्डू स्थित पशुपतिनाथ मंदिर में शिवपथ पर जहां लाखों हिन्दू यात्री जाता है और नेपाली भी जिन्हें हिन्दू मानते हैं आज अलग बना हो रहा है और दो राष्ट्रों के मध्य वीसा परमिट की बात सामने आ रही है। कभी भी भारत के चोटी के स्तर के नेताओं ने इस पर ध्यान नहीं दिया सबके सामने एक तथ्य है वह है पथ निरपेक्ष। जनता के मर्म पर अफसर नहीं दिखाना और किस प्रकार भारत के भविष्य का परम्परा गत हो जाय इसका ध्यान रखना प्राथमिक कर्तव्य है।

भारत का राष्ट्रीय परम्पराओं को छोड़ करके अब कोई नेता भटकता है तो भटका करता है। हमारे प्रधान मन्त्री सबसे आगे है। उर्दू और मुसल्मानों का वाद लगा श्रीमती इन्दिरा गांधी का विशेष दुर्बलता है। सभा उर्दू लेखकों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये आपने उर्दू का प्रशंसा के पुल बांध और यहां तक कह दिया कि भारत की एकता तथा राष्ट्रीयता का स्वरूप देने में यह सक्षम है। कितनी विडम्बना है। उर्दू ने भारत का विभाजन कराया और ईरानी लिपि पर ठहरी हुई भाषा इस देश को राष्ट्रीयता प्रदान करेगी। आज यह ही नहीं निश्चय हो सका है कि भारत का मुसलमान हिन्दी सीखे या उर्दू से चिपका रहे। नेता समस्याओं को जन्म देते रहते हैं। मतों के लिये अनुचित प्रलोभन देते हैं तथा विचारों को रिशवत प्रदान करते हैं। उर्दू की प्रशंसा के बाद इन्दिरा जी यह जानकर के श्रोता मुसलमान है सम्बोधित करती है कि देश में साम्प्रदायिक दंगे कुचलने के लिये विशेष दण्ड अदालतें बनेंगी। और सब जाति के व्यक्तियों को मला कर सुरक्षा बल गठित होगा। क्या विशेष अदालतों में एक हिन्दू और एक मुसलमान जजों का जोड़ा बनाया जायगा। भारत की प्रधान मन्त्री के यह विचार क्या हिन्दू और मुसलमानों एक राष्ट्रीय स्तर पर आने देंगे। कितना दुरुपयोग किया जा रहा है राष्ट्रीय साधनों का। नेता चाहते हैं जानिया लड़ती रहें हमारी पूजा होती रहे।

नेपाल भारत का ही अंग है। वहां आज कुचक्र चलाया जा रहा है। भारत से अलग होने का कार्य करने वाले सफल हो रहे हैं। भारत सरकार मौन है क्यों कि महाराजा का समर्थन लोक तन्त्र के कारण नहीं कर सकते हैं और धर्म निरपेक्ष का चादर ओढ़ रखा के कारण धार्मिक रुचि भी नहीं प्रदर्शित कर सकते हैं। बर्मा और लंका जो हमारे अंग हैं दूर जा रहे हैं। पाकिस्तान और बंगला देश का विरोध प्रकट है। चीन शत्रु के व्यवहार के साथ पाकिस्तान बंगला देश को बढ़ावा दे रहा है। भारत घिर रहा है। चारों ओर से जाल फेंका जा रहा है। नेता समझने में असमर्थ हैं क्योंकि वर्तमान से उन्हें असन्तोष नहीं है। भविष्य को वह अपने आधीन जानते हैं साथ ही अनुमान है कि भावी वंशधर सफलतापूर्वक हमारे आसन आ जायेंगे।

दिशा भ्रम की स्थिति है। भारत में दृढ़ता लाना है। अल्प मतों का आदर है पर भारत की एकता और राष्ट्रीयता को नष्ट करके नहीं उसे अक्षुण्ण रहते हुए। भारत संस्कृत भाषा और भारतीय भाषाओं के द्वारा गौरववान हो सकता है ईरानी लिपि और भाषा के द्वारे नहीं। इन सबके लिये आर्यसमाज सही दिशा दिखा सकता है। आर्य नेताओं को दृढ़ता के साथ सही स्थिति सामने रखनी चाहिये और शासन को सत्तारूढ़ दल को तथा अन्य राजनतिक दलों का दुर्बलता और दिशा भ्रम से जनता को सावधान किया जाय।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

समाचार

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद, के ब्रह्मचारियों का एक दल श्री विश्व मित्र मेधावी कुलपति के निर्देशन में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी में भाग लेने के लिये अजमेर पहुंच रहा है। मार्ग में भारत की राजधानी दिल्ली, आगरा आदि कई स्थानों पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का यौगिक एवं धनुर्विद्या प्रदर्शन भी होगा।

देश के सभी आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि ३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक अजमेर में मनायी जा रही ऋषि निर्वाण शताब्दी में पहुंच कर ऋषि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। —अधिष्ठाता

—दिल्ली के सुप्रसिद्ध उपदेशक श्री प० धर्मवीर झण्डाधारी ने आर्य जनता से अपील की है कि वह अजमेर शताब्दी पर अवश्य पहुंच कर शताब्दी को सफल बनावें। —वेदपथिक धर्मवीर आर्य

दयानन्द निर्वाण शताब्दि के अवसर पर

उत्तर-प्रदेश के आर्यजन

दस लाख रुपिये

श्रद्धांजलि रूप में भेंट करें

—प्रो० कैलाशनाथ सिंह

सर्व विदित है कि आगामी ४ से ६ नवम्बर १९८३ के मध्य अजमेर नगर में सार्वदेशिक सभा देहली तथा परोपकारिणी सभा अजमेर के सम्मिलित प्रयास से ऋषिवर दयानन्द निर्वाण शताब्दि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गयी है। इस अवसर पर समस्त भारत के ही आर्यजन नहीं विदेशों से भी बड़ी संख्या में आर्यजन आ रहे हैं। वृहद् आयोजन के लिए वृहद् साधन अपेक्षित होते है।

दिनांक २४ सितम्बर को लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के नव निर्वाचन के बाद प्रथम अन्तरङ्ग समिति की बैठक थी इसी अवसर पर निर्वाण शताब्दि प्रबन्ध समिति के उप-प्रधान तथा केन्द्र के भूतपूर्व राज्य रक्षा मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी एवं आर्य जगत् के वरिष्ठ उपदेशक प्रो० रत्नसिंह जी उपस्थित हुए तथा निर्वाण शताब्दि के सफलता हेतु उत्तर-प्रदेश के सहयोग की अपील की। आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने उनका उल्लास पूर्ण स्वागत किया—माल्यार्पण मन्त्री श्री इन्द्रराज द्वारा हुआ और प्रो० शेरसिंह जी तथा प्रो० रत्नसिंह जी ने अजमेर में जो व्यवस्था हो रही है उस पर प्रकाश डाला और आर्य जनों से आर्थिक सहयोग की अपील की।

सभा प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने कहा कि उ०प्र० भारत का सर्वश्रेष्ठ राज्य है। हम अपना उत्तर दायित्व समझते हैं और तदनुरूप आर्य जनो को सहयोग के लिए तत्पर होना है। हम तो चाहते हैं कि उत्तर-प्रदेश की समस्त आर्य समाजें, उप प्रतिनिधि सभायें, सामान्य तथा विशिष्ट आर्यजन सब मिल कर कम से कम दस लाख रुपिये की धन राशि ऋषिवर को श्रद्धाञ्जलि रूप से भेंट करे। समय कम है। कार्यभार एवं व्यवस्था दुस्तर हैं। अतः अविलम्ब समस्त आर्य जनों को इस दिशा में सचेष्ट होना है। अधिक से अधिक आर्यजन पहुंचे। समाचार है कि प्रदेश के कतिपय जनपदों से बसें जा रही है।

प्रो० शेर सिंह जीने सूचित किया कि उपस्थित होने वाले आर्यजनों का अजमेर में प्रत्येक सुख-सुविधा का ध्यान रहेगा। निवास की बड़े पैमाने पर व्यवस्था की गयी है और ऋषि लङ्गर में सब को अधिवेशन के दिनों में निःशुल्क भोजन प्राप्त होगा।

इस अवसर पर प्रदेश के प्रमुख आर्यजन उपस्थित थे, लखनऊ नगर के आर्यसमाजों के अधिकारी एवं प्रतिनिधि गोंवे, अमेठी नरेश राजा रणञ्जय सिंह जी आए थे। प्रसिद्ध आर्य विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा व्यास: ने भी अजमेर के आयोजन को सफल बनाने की अपील की।

आशा है उत्तर प्रदेश के आर्यजन निर्वाण शताब्दि को सफल बनाने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण की शताब्दी का भव्य समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अजमेर में ३ से ६ नवम्बर १९८३ को बड़े उत्साह और श्रद्धा से मनाया जा रहा हैं। ६ अक्टूबर १९८३ को यजुर्वेद पारायण ब्रह्म महायज्ञ प्रारम्भ होगा, पूर्णाहुति ६ नवम्बर १९८३ को सम्पन्न होगी।

महर्षि द्वारा प्रयोग में लाई गई वस्तुएं उनकी हस्तलिखित पुस्तकों की पाण्डुलिपियां एवं निर्वाण स्थली देखने का स्वर्ण अवसर है। अनेकों विद्वानो के अमूल्य विचार सुनने का अभूतपूर्व अवसर है। आर्य समाज के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा भी जान सकेंगे। ऐसा पुण्य अवसर फिर न जाने कब आवेगा ?

(१) बिलसण्डा के डाक्टर कृष्णलाल आर्य ने बस की व्यवस्था की है। यह ३१-१०-८३ को पीलीभीत से चलेगी और १०-११-८३ को वापिस पहुंचेगी। इस यात्रा से अन्यतीर्थ स्थल देखने का भी अवसर है। इसमे प्रति व्यक्ति १८०) रु० किराया है। आप डा० कृष्ण लाल से सम्पर्क करें।

(२) दिल्ली से स्पेशल बसें और स्पेशल रेल गाड़ियां भी चलेंगी इसके लिए मन्त्री, दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से सम्पर्क कर सकते हैं।

अपने साथ हल्का बिस्तर तथा भोजन करने के लिये आवश्यक बर्तन ले चलिएगा। भोजन सर्वथा निःशुल्क है।

निवेदक :—
मन्त्री आर्य समाज
अशोक नगर, पीलीभीत।

आर्यवीर दल का प्रथम प्रशिक्षण शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नव निर्वाचन के बाद आर्य वीर दल का प्रथम प्रशिक्षण शिविर फेरूपुर पो० धामपुरा वाया गुरुकुल महाविद्यालय-सहारनपुर मे श्री विनय कुमार जी के संयोजकत्व मे आयोजित किया गया। है जो १४ से २३ अक्टूबर १९८३ के मध्य होगा और सौ आर्य वीर प्रशिक्षित किए जायेंगे जो ऋषि निर्वाण शताब्दि के अवसर पर अजमेर मे सेवा कार्य हेतु जायेंगे।

—खेमसिंह आर्य
उप मन्त्री सभा

आर्य समाज बांस मण्डी मुरादाबाद द्वारा

२०१) रुपया वेद प्रचार हेतु प्राप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नव-निर्वाचित कोषाध्यक्ष श्री विद्यासागर जी का आर्य समाज बांसमण्डी मुरादाबाद में १८ सितम्बर १९८३ को भावपूर्ण स्वागत किया गया। विशिष्ट आर्यजन उपस्थित थे और उसी सभा मे प्रधान समाज ने वेद-प्रचार हेतु दो सौ एक रुपिया कोषाध्यक्ष जी को समर्पित किया तथा भविष्य में और सहायता देने का आश्वासन दिया।

श्री विद्यासागर कोषाध्यक्ष जी ने सबके प्रति आभार प्रकट किया

अज्ञात जीवनी विषयक सत्यान्वेषण कसौटी पर

[श्री काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

(गतांक से आगे)

२ (क) 'इसी आत्म चरित्र को स्वामी जी लिखा गये थे और साथ ही अपने जीवन काल में मुद्रित न करने को कह गये थे। इस आत्म चरित्र को पढ़कर प्रकाशित न कराने का कारण समझना कठिन नहीं :—स्वामी जी अपनी योगसिद्धियों का खुला प्रचार नहीं करना चाहते थे।' [अज्ञात जीवनी पूर्वार्द्ध पृष्ठ ९२]

(ख) 'अंग्रेज सरकार के विद्रोही होने के नाते उनका यह रहस्य खुलना उनके तथा उनके कार्य के लिये घातक सिद्ध होता।' [वही पृष्ठ ९२]

(ग) 'स्वामी दयानन्द उन दिनों राज्य विप्लव में सम्मिलित होने के कारण अति प्रसिद्ध थे। इसीलिये सम्भवतः स्वामी जी ने इस कालखंड का अपना आत्म चरित्र कलकत्ते में नहीं लिखाया क्योंकि उन्होंने सोचा होगा कि इसे देखने वाले तो बहुत से लोग विद्यमान हैं, उनसे यह विवरण सबको ज्ञात हो ही जायगा।'
[शोध प्रबन्ध पृष्ठ १५-१६ एवं फुट नोट १८]

समीक्षा :—खण्ड (क), (ख) और (ग) में आत्म चरित्र को प्रकाशित न एवं राजविप्लव में सम्मिलित होने के वृतान्त को न लिखाने के कारण भिन्न-भिन्न बताये गये हैं जो परस्पर में विरुद्ध हैं। एक में कहा गया है कि स्वामी जी योगसिद्धियों का खुला प्रचार नहीं करना चाहते थे इसलिये आत्म चरित्र प्रकाशित नहीं कराया। दूसरे खण्ड (ख) में उल्लेख है कि उनका यह रहस्य खुलना उनके तथा उनके कार्य के लिये घातक सिद्ध होता (इसलिये रहस्य खुलने नहीं दिया) खण्ड (ग) में राजविप्लव में सम्मिलित होने के कारण स्वामी जी की अति प्रसिद्धि बतायी गई है इसीलिये उन्होंने इस काल खण्ड का अपना आत्म चरित्र नहीं लिखाया।

३(१) 'सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में ऋषिवर ने क्रान्ति की पूरी भूमिका निभाई।'
[अज्ञात जीवनी पूर्वार्द्ध पृष्ठ २२]

(२) 'महर्षि दयानन्द १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम के अधिनायक ही नहीं वरन् योद्धा भी थे। श्री स्वामी जी उन दिनों एक अपने जैसे ही बलिष्ठ ब्रह्मचारी के साथ श्वेत घोड़े पर सवार रहते थे और तलवार हाथ में रहती थी।' [शोध प्रबन्ध पृष्ठ १५ कालम १ की प्रारम्भिक पंक्तियां]

(३) 'नाना साहब ही स्वातन्त्र्य संग्राम के चालक थे अंग्रेजों से डटकर लोहा लिया। सारे देश के हिन्दू—मुसलमानों और साधु—सन्तों को संगठित किया।' [अज्ञात जीवनी पूर्वार्द्ध पृष्ठ ११९]

(४) (सम्वत् १९१२ के हरिद्वार के कुम्भ मेले में पहुंचने के तीन रोज बाद ही पांच ...

संकीर्ण कुटीर के सम्मुख आकर पूछने लगे—अभी नीचे से आये हुये महात्मा जी कहां हैं? हम लोग उनसे मिलना चाहते हैं! ....

..........वे लोग प्रसन्न होकर चले गये। मैं तो हिमालय में योगी और साधुओं को ढूंढने के लिये तैयारी में लगा।' [अज्ञात जीवनी उत्तरार्द्ध पृष्ठ १८९ व २०७]

समीक्षा :—खण्ड (१) और (२) के लेखों से ज्ञात होता है कि स्वामी जी १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के अधिनायक एवं सक्रिय योद्धा थे। इसके विपरीत खण्ड (३) और (४) से पता चलता है कि उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग नहीं लिया अपितु स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों को केवल आशीर्वाद और परामर्श देते रहे और स्वयं योगियों एवं साधुओं की खोज में लगे रहे।

कुछ अन्य बातें भी अविश्वसनीय एवं परस्पर विरुद्ध हैं। यथा :—
(१) एक बार लॅंड साहब ने योगेश्वर से कहा—'हमें कुछ योग सिद्धियां दिखाइये।' योगी ने मना कर दिया। योगीराज ने १४ जुलाई १८८५ को कर्नल अलकाट को लिखा था—'जो मैंने सेन्ड साहब से कहा था वह ठीक है क्योंकि मैं इस इन्द्रजाल की बातों को देखना, दिखाना नहीं चाहता।' [अज्ञात जीवनी पूर्वार्द्ध पृष्ठ २१]

(२) 'ठाकुर गोपाल सिंह ने पूछा—आप पर शीत का कोई प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता। महाराज बोले—ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास ही इस का कारण है। ठाकुर—हम कैसे जानें? महाराज ने हाथों के अंगूठे दोनों घुटनों पर रखकर दबाए और सारे शरीर से पसीना चू निकला। लोग चकित रह गये। उन्हें महाराज के योग में पूरा विश्वास हो गया।' [शोध प्रबन्ध पृष्ठ १३ फुट नोट १५]

पुस्तक लिखने/लिखाने सम्बन्धी विवरणों में भी परस्पर स्पष्ट विरोध है :—

४(१) 'मेरे मुख से (अर्थात् स्वामी दयानन्द सरस्वती के मुख से) आप लोगों ने (अर्थात् इन विवरणों को लिपिबद्ध करने के लिये नियुक्त लेखकों ने) मेरे जीवन के बारे में सब कुछ सुनने के लिये आग्रह किया था। मैंने जहाँ तक सम्भव हुआ इन विषयों के बारे में सब कुछ कहा। आप लोगों से केवल एक ही अनुरोध है कि मेरे जीवन काल में यह सब मुद्रित न हो।' [अज्ञात जीवनी पृष्ठ २४१]

(२) 'यह पुस्तक जिस रूप में प्रस्तुत की गई है उसके कारण भी उसने आर्य विद्वानों की अनेक आपत्तियों को आमंत्रित किया है। यथा—इसका (पुस्तक अज्ञात जीवनी का) प्रवचन काल १८-१२-१८७२ से १९।४।१८७३ तक लिखा गया है जबकि वह वस्तुतः श्री हेमचन्द्र चक्रवर्ती की मिली डायरी के अनुसार मात्र २२ से ३१ मार्च १८७३ ई. है जिसमें इस अवधि के लिये यह लिखा है कि 'स्वामी जी एकान्त में ग्रन्थ रचना में संलग्न रहे।' [शोध प्रबन्ध पृष्ठ २]

(३) 'जिन्होंने लिखा था उनके नाम, लिखने की तारीख और विवरण किस रूप में प्राप्त हुये हैं, आदि उल्लेखनीय बातें जो उनके द्वारा दी जानी थीं जो अब पं० (दीनबन्धु शास्त्री) जी के स्वर्ग वासी हो जाने की वजह से हमें अज्ञात हैं।' [शोध प्रबन्ध पृष्ठ ३]

एक संक्षिप्त परिचय—

श्री योगेन्द्रसिंह स्नातक

एडवोकेट

मुख्याधिष्ठाता—गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, (मथुरा)

[श्री प० वेदप्रकाश आर्य मुख्य संरक्षक गुरुकुल वृन्दावन]

श्री योगेन्द्रसिंह स्नातक ने बदायूं मण्डल अन्तर्गत मंझरोली में चौ० बलरामसिंह आर्य के घर जन्म दि० १-१-४८ को लिया। आपके पिता श्री बलरामसिंह जन्मतः आर्यसमाज के प्रभाव से युक्त थे क्योंकि आपके बाबा श्री नम्बरदार तेजसिंह जी महर्षि दयानन्द के परम भक्त थे। तो पुत्र और पौत्र में महर्षि एवं आर्यसमाज के प्रति आत्मीय भाव आपूरित क्यों न होता।

आपके पिता जी ने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी सन्तानों को गुरुकुलों में ही पढ़ाऊंगा। उन्होंने अपनी प्रतीज्ञा का दृढ़ रूप से निर्वाह किया और अपनी पांचों सन्तानों जिसमें तीन पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं को गुरुकुल में ही पढ़ाया। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री वकील साहब गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के स्नातक हैं तथा वर्तमान में गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में मुख्याधिष्ठाता हैं। पुत्री श्रीमती सुशीला ने कन्या गुरुकुल सासनी से अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा तृतीय सन्तान पुत्री कु० विमला भी कन्या गुरुकुल सासनी की स्नातिका हैं चतुर्थ और पंचम सन्तान पुत्र चि० सुशीलकुमार एवं चि विनोदकुमार भी गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में ही सम्प्रति अधिकारी द्वितीय वर्ष के छात्र हैं। इतना ही नहीं आपकी पौत्री कु० नीलिमा जो स्नातक जी की पुत्री है वह भी कन्या गुरुकुल सासनी में ही कक्षा ३ में अध्ययन कर रही है। इस प्रकार श्री बलरामसिंह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए पूर्णतः आर्य हैं एवं ऋषि भक्त हैं।

श्री योगेन्द्रसिंह स्नातक ने गुरुकुल शिक्षा के साथ-साथ वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री एवं आचार्य परीक्षायें भी उत्तीर्ण की हैं। और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य रत्न' परीक्षा भी पास है तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० (हिन्दी) एवं एल० एल० बी० की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है, अपने जनपद में वकालत का कार्य करते रहे साथ ही साथ आपकी अभिरुचि सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों के प्रति भी बराबर है।

२६ जून १९८२ को श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह भू०पू० शिक्षा मन्त्री उत्तरप्रदेश शासन एवं कुलाधिपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने आपको विश्वविद्यालय का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त किया, जिसकी पुष्टि ४ जोलाई १९८२ को अन्तरंग सभा ने सर्वसम्मति से करके की है और तभी से श्री स्नातक जी मुख्याधिष्ठाता के कार्य का सम्पादन करते हुए संस्था के चतुर्मुखी विकास के लिए कृतकार्य एवं कृतसंकल्प हैं। संस्था ने भी आपके सानिध्य में सर्वांगीण विकास को प्राप्त किया है।

संस्था का कार्य अत्यन्त सफलता से चल रहा है। सरकार के वृक्षारोपण पखवारे में मास अगस्त में आपने पच्चीसों वृक्षों का रोपण कराया है। आश्रम में तीन सौ तथा आयुर्वेद में २०० छात्र इस प्रकार ५०० छात्र अध्ययन रत हैं जो स्नातक जी की विशिष्ट उपलब्धि है।

श्री योगेन्द्रसिंह स्नातक मुख्याधिष्ठाता—गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

अजमेर चलो

ऋषि के जीवन से अनुपम सी, चलो प्रेरणा लेने
चलो सपूतो! एक नये युग को उत्प्रेरणा देने
वसुन्धरा यह, आज तुम्हारी ओर निहार रही है,
'आर्य' बनाओ इस जगती को, कहती आज मही है
वेद ज्योति बिखराओ जग में, फिर कठोर हलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह, अजमेर चलो॥

उठता आज चतुर्दिक भू पर, मानवता का क्रन्दन
दानवता का होता प्रतिपल अद्भुत ताण्डव नर्तन,
रहा नहीं है, सत्य धर्म का, समरसता स्पन्दन,
'आर्यपुत्र' ही आज कर रहे, रावण का अभिनन्दन,
उठो शक्ति ले तुम अजेय, अब दुष्ट दानवी कुचलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह, अजमेर चलो॥

ऋषिवर दयानन्द का सपना, क्योंकर पड़ा अधूरा,
दयानन्द के सैनिक तुम हो, उठो! करो अब पूरा,
ईर्ष्या द्वेष तथा मन के सब, तुम दुराव अब छोड़ो,
शपथ तुम्हें है दयानन्द की, अनुचित बन्धन तोड़ो,
बंधकर एक सूत्र में वीरों! विश्व-विजय को निकलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह, अजमेर चलो।

यहीं यहीं पर, ऋषिवर ने था, अपनी अन्तिम सांस लिया,
स्वयं बुझे पर, महि-मण्डल को, नूतन दिव्य प्रकाश दिया,
उसी धरा पर आर्य सपूतो! चलो तुम्हें लेना संकल्प,
'आर्य' बनो, जग 'आर्य' बनाओ, शेष न कोई अन्य विकल्प,
सर्वनाश की ज्वालाओं को, शान्त अमर धारा में बदलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह, अजमेर चलो॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

वनिता विवेक

"समाज के लिए अभिशाप"

(श्री जयईश्वर मिश्र)

आज समाज का जीवन-स्तर इतना निम्न हो गया है कि पशुओं से यदि तुलना की जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रत्युत पशुओं का स्थान शनैः-शनैः मानव-गुण ग्रहण कर रहा है, परन्तु मानव इन चतुष्पद वाले के भी जीवन-स्तर का अतिक्रमण करके षष्ठ-पद वाले का स्थान प्राप्त कर लिया है।

समाज को पतनोन्मुख करने का सर्वप्रथम श्रेय प्रचलित इन नकली आडम्बरों, अन्धकुरीतियों एवम् अन्धविश्वास को ही सिद्ध करना अभीष्ट होगा। आज के मानव का बौद्धिक स्तर इतना ऊंचा उठ गया है कि वह अपने आपको समझने में भ्रम कर रहा है। इन कुरीतियों को बढ़ने का एक मात्र कारण मानव मात्र की पैशाचिकता ही कही जा सकती है। आज का मानव, मानव को जान लेने के लिए आतुर है, जिसका कारण सद्ग्रन्थों, वेद आदि से अनभिज्ञ रहकर अन्धविश्वास एवं झूठे चमत्कार आदि का सहारा लेकर और नहीं तो समाज में उसी का अमिट छाप प्रस्तुत कर आने वाली पीढ़ी को भी उसी कुमार्ग की ओर उद्बुद्ध करके अपने मार्ग को प्रशस्त करना ही है, जो समाज के चारित्रिक, बौद्धिक व नैतिक विकास में बढ़कर अभिशाप बन गया है। निस्सन्देह यदि ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' का सम्यक विचार कर मनन किया जाय तो मानवोचितता के लिए बाध्य करने में विशेष श्रेयस्कर होगा।

समाज को पतनोन्मुख करने वाले कारणों में से एक कारण 'दहेज-प्रथा' भी है। हमें सर्व प्रथम इस बात को जानना परमावश्यक है कि दहेज है क्या–

दहेज उस मूल्य को कहते हैं जो लड़की की शादी में लड़की के पिता या उसके संरक्षक विवश होकर वर या वरपक्ष को दब देता है। वास्तव में यदि यह कहा जाय तो अत्युत्तम होगा कि दहेज वर का मूल्य जो कन्या पक्ष चुकाता है।

आज हमारे देश में दहेज प्रथा समाज के पतन का कारण बनकर समाज के सामने अभिशाप के रूप में खड़ा है। देश के हरेक व्यक्ति विशेष के सामने इस प्रथा की भयंकरता बढ़ती ही जा रही है। इसके बढ़ने के कुछ अतिरिक्त कारण और ही हैं जो अधोलिखित है–

१- लड़का-लड़की में अतुलनीय विविधता :—

विस्मय है कि पति-पत्नी के इसी संसर्ग से प्रभु द्वारा दो ही विषय मिलता है–पुत्र या पुत्री। तथापि पुत्र के होने पर तमाम मांगलिक उत्साह दिखाया जाता है और पुत्री के होने पर नाना भांति उदासीनता आदि मनाया जाता है इस प्रकार प्रभु के विधान का एक तरफ पालन दूसरे तरफ निरादर किया जाता है। अतएव पुत्री की तरफ उदासीनता का कारण दहेज ही है जिसके कारण मानव को कितनी चिन्ता हो जाती है, एक श्लोक से स्पष्ट हो जायेगा–

'पुत्रीत् जाता महदिय चिन्ता कस्मै प्रदेति महान वितरकः।
दत्वा सुख प्राप्स्यति वा नवेति कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम् ॥'

पुत्री का पैदा होना बहुत बड़ी चिन्ता होती, किसको दिया जाय महान् वितरक है। और देने के बाद उसे सुख मिलेगा नहीं। कन्या मात्र पिता के लिये निश्चय ही कष्टदायक है।

२–विवाह क्षेत्र का संकुचित होना :—

जीवन-साथी चुनने का क्षेत्र बड़ा ही संकुचित है, इसका कारण एकमात्र जाति प्रथा है। एक जाति अपनी लड़की की शादी दूसरी जाति में नहीं कर सकता है जब करेगा शादी तो अपने ही वर्ण/जाति में करेगा। इस कारण जीवन–साथी के चुनाव का क्षेत्र संकुचित हो जाता है तथा ऐसे शुभ अवसर का लाभ जिसके पास सुपुत्र होते हैं, उठाते हैं और दहेज के रूप में लड़के पर किये गये खर्च को मय ब्याज सहित लड़की पक्ष से वसूल लेते हैं। ऐसी हालत में कन्या पक्ष के लिये दहेज एक समस्या बन गया है।

३–सुयोग्य एवं सम्पन्न वर की तलाश :—

प्रायः सभी माता-पिता के मन में यह रहता है कि उनकी लड़की सुख एवम् चैन से जीवन व्यतीत करे। ऐसी स्थिति में वह किसी धनी या ऊंचे कुल में शादी करने के लिये जाते हैं। जिनके पास लड़का है अगर हर दृष्टिकोण से अच्छे तो वह अपने पुत्र का नीलामी शुरू कर देते हैं। जो अधिक दहेज देगा उसी की लड़की के साथ हमारे लड़के की शादी होगी। ऐसी हालत में लोग विवश होकर दहेज देते हैं।

४–लड़की में किसी प्रकार का दोष होना :—

लड़की का कुरूप होना जैसे–काली, कानी इत्यादि दहेज को बढ़ावा देती है। कारण यह है कि हर पिता या संरक्षक लड़की का विवाह कर अपने सिर का भार हल्का करना चाहता है, अतः उपरोक्त कारणों के वजह से लोग दहेज देने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

इसी प्रकार अनेक कारणों में से एक कारण यह भी है कि अगर एक माता–पिता अपने लड़की की शादी में दहेज दिये रहते हैं तो अपने लड़के की शादी मेंदिये गये दहेज का ड्योढ़ा/दूना वसूल करनेका प्रयास करते हैं।

अतः उपरोक्त कारणों को दोषी ठहराकर यह कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा के बढ़ावा में इनका हाथ है जिससे समाज में तमाम दहेज प्रथा के दुष्परिणाम आये दिन देखने तथा सुनने को मिलते हैं।

१–लड़की का वध :–दहेज से परेशान होकर लड़की के पैदा होने ही वध कर डालने का समाचार सुनने/देखने को मिलता रहता है। जैसे अवसर यह तो होता ही है कि उक्त-कारण लोग पुत्र पैदा होने पर तमाम खुशियां एवं उत्सव तथा जन्म-दिन मनाते हैं और जब लड़की पैदा होती है तो कोई खुशी नहीं और नहीं तो बहुत बड़ा भार से बोझिल अपने आपको समझते हैं।

२–अयोग्य विवाह :–दहेज न दे सकने के कारण माता-पिता लड़की की शादी किसी अयोग्य वर जैसे वर की उम्र बहुत अधिक या बूढ़े वर के साथ कर देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि लड़के एवम् लड़की की विचार धारा में विशेष अन्तर मिलता है।

३–विवाह-सम्बन्ध का बीच में टूट जाना तथा बारात का लौट जाना :–बहुधा समाचार पत्रों में सुनने को मिलते हैं कि दहेज न मिलने के कारण बारात वापस चली गयी। ऐसी दशा में लड़की के होने वाले श्वसुर एवम् अतिथियों के पैरों पर लड़की का पिता मनाने के लिये गिरता है, पर वह सुने क्यों। ऐसा भी सुना गया है कि शादी के बाद दहेज की कमी के कारण छोड़ दी गई।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाजों के नाम एक उद्बोधक-पत्र

(ले० श्री सत्यदेव 'आजाद' एम० ए०, विद्यावाचस्पति शास्त्री आकाशवाणी, मथुरा)

आर्य जगत् के सम्मुख इस तथ्य की विवेचना करना सर्वथा समय नष्ट करना होगा कि देव दयानन्द ने मानवता का उद्धार, समाज सुधार तथा पाखण्ड खंडिनी पताका फहराकर क्या कुछ नहीं किया। हमारा अन्तर मन तथा शरीर के रक्त का कण-कण महर्षि के प्रति कृतज्ञ है। उनके पार्थिव शरीर को पूर्ण हुए इस दीपावली पर सौ वर्ष हो रहे हैं। इस अवधि में महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाजको हम सब ने ऋषि की भावनाओं के अनुरूप कहां तक बनाया है। हम स्वयं ही सोचें और विचारें। बीती ताहि बिसार आगे की सुधि लेय—को क्रियान्वित करते हुए महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी वर्ष के उत्तरार्द्ध में मेरा सभी आर्य समाजों व इसके सदस्यों से निवेदन है कि—

१—मात्र शेष अक्टूबर में आर्य समाजें वेद प्रचार के कार्य को तेज कर दें। सिर्फ आर्य समाज के हाल की चार दीवारी में बैठकर भजन गा लेने से ही कर्त्तव्य की इति श्री न समझें। बल्कि—

(अ) आर्य समाजों के प्रमुख विद्वान् देश, राज्य व नगर के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आर्य विचार धारा से संबंधित विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित करायें। आर्य उप प्रतिनिधि सभायें विशेष स्मारिकायें भी प्रकाशित कर वितरित कर सकती हैं।

(ब) जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभायें इस बात की व्यवस्था करें कि कुछ वैदिक धारा से युक्त विषयों का चयन कर अपने निकटस्थ आकाशवाणी केन्द्रों को प्रसारणार्थ भेजें। इस संबंध में विषय से सम्बन्ध वार्ताकारों के नामों का भी सुझाव केन्द्र पर दिया जा सकता है।

(स) नगर की बस्तियों, कालोनियों, मौहल्लों में दैनिक कहीं न कहीं यज्ञ के आयोजन की शृंखला बनाई जाये। यज्ञ के बाद क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से प्रसाद वितरण भी हो तथा कुछ प्रवचन भी।

(द) आर्य समाजों द्वारा यह व्यवस्था की जाये कि सार्वजनिक स्थानों (यथा रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, रेडियो स्टेशन, डाकघर, अजायब घर, नगर पालिका, वाचनालय, पार्क आदि) में आर्य समाज के विभिन्न नियमों, वेद वाक्यों आदि को लिखवा कर टंगवाया जाये। कुछ सार्वजनिक महत्व की संस्थाओं को महर्षि के फोटो भी निःशुल्क दिये जा सकते हैं। क्षेत्रीय समाचार पत्रों में दहेज निषेध, वृक्षारोपण, परिवार कल्याण, सदाचरण व अल्पबचत आदि से सम्बन्धित विज्ञापन भी छपवाए जायें।

(य) सार्वजनिक संस्थाओं व क्लबों आदि के पुस्तकालयों व वाचनालयों को आर्य समाज की ओर से निःशुल्क वैदिक साहित्य वितरित किया जाये तथा आर्यमित्र का एक वर्ष का चन्दा वहन कर, पत्र को इन क्लबों व संस्थाओं में भेजा जाये।

(र) सभी आर्य समाजों में सदस्यता अभियान छेड़ा जाये। पुराने वयोवृद्ध आर्यसमाजी इस बात का मोह त्यागें कि ऐसा करने से उनका एकाधिपत्य समाप्त हो जायेगा अथवा उनकी कुर्सी हिलेगी। आर्य समाजों में नवरक्त को संचरित होने दें।

(ल) समय-समय पर नगर, ग्राम जिला स्तर पर आर्य कुमार सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित हो। वैदिक मिशनरी के विद्यालयों की रैलीज निकाली जायें।

(व) गैर आर्य समाजी बुद्धि जीवियों का भी सम्मेलन कर शंका समःधान किया जा सकता हैं।

२—प्रत्येक आर्य समाज से सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में यह मांग रखी जाये कि दीपावली पर महर्षि की स्मृति में भारत सरकार एक डाक टिकट जारी करे।

३—आर्य समाजों में ६० वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति अपने पद से त्याग पत्र देकर सार्वजनिक जीवन में उतरें। पारिवारिक दायित्वों से हीन महानुभाव वानप्रस्थ धारण करें।

४—वैदिक भक्ति संगीत को भजनीक महोदय फिल्मी तर्जों मे न गाएं वरन् प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा यह व्यवस्था करे कि कुछ चुने हुए भजनों को, अच्छे संगीत निदेशकों द्वारा संगीत बद्ध करा कर कैसिट भरवाए। यह कार्य धनाढ्य समाजों द्वारा भी कराया जा सकता है।

५—प्रत्येक आर्य समाज वेद प्रचार व निर्वाण शताब्दी के लिये कुछ विशेष धन निर्धारित करें और कार्यक्रम की सफलता में सहयोग दें।

६—कुछ अल्पज्ञात आर्यसमाजी प्रायः प्रत्येक गांव व नगर में होंगे ही, उनकी खोज की जाये साथ ही जो दिवंगत कर्मठ कार्यकर्त्ता थे उन्हें प्रकाश में लाया जाए। इस दिशा में ११ अगस्त १९८३के हिन्दुस्तान हिन्दी दैनिक में प्रकाशित पं० बनारसी दास चतुर्वेदी का लेख हमें प्रेरणा दे सकता है।

७—प्रत्येक आर्यसमाजी नित्य प्रति संध्या व हवन करने का सर्वजनिक संकल्प ले।

सार्वजनिक कृतज्ञता प्रकाश

आर्य प्रतिनिधियों ने मुझ पर विश्वास करके मुझे उप मन्त्री के पद के योग्य समझा तथा दायित्व सौंपा मैं सब का आभारी हूं।

हितैषी जन शुभ कामना के पत्र भेज रहे हैं। मैं प्रयास कर रहा हूं कि सब को आभार पत्र लिखूं। फिर भी सार्वजनिक रूप से सबके प्रति आभार प्रकट करता हूं, और प्रभु से प्रार्थना है कि मुझे उत्तर दायित्व वहन का बल दे जिससे शुभाकांक्षियों की आशा पूर्ण कर सकूं।

—क्षेमसिंह आर्य
उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

—आर्यसमाज मनीकला (गोण्डा) ने श्री प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी एवं श्री इन्द्रराज जी को पुनः प्रधान और मन्त्री चुने जाने पर बधाई दी है। मन्त्री

कर्नल ब्रुक और महर्षि दयानन्द

[श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार, ५ अशोकनगर, पीलीभीत]

हम साधारणतया सुनते आये हैं कि महर्षि दयानन्द ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा के विषय में चर्चा की। कर्नल ब्रुक ने महर्षि के तर्कों से पराजित होकर गोवध रोकना स्वीकार कर लिया। परन्तु यह कार्य कर्नल ब्रुक के सामर्थ्य में नहीं था। इसलिये उन्होंने स्वामी जी को सलाह दी कि वे भारत के गवर्नर जनरल (वायसराय) से मिलें। इस हेतु उन्होंने स्वामी जी को एक पत्र भी दिया।

महर्षि दयानन्द जी जैसे प्रतापी तेजस्वी विद्वान् का कर्नल ब्रुक जो कि वायसराय का प्रतिनिधि है—से वार्तालाप की—दो सामान्य से बड़े व्यक्तियों की चर्चा मान लेने से इस घटना का वास्तविक महत्व छिप जाता है। उस समय की परिस्थितियों का अध्ययन करने से इस का जो रूप प्रकट होता है, वह वस्तुतः बड़े साहस और ध्येय की वस्तु है।

कर्नल ब्रुक भारत के सर्वशक्ति सम्पन्न एकाधिराज वायसराय के राजस्थान में एजेण्ट थे। वे कलैक्टर नहीं थे, डिप्टी कमिश्नर और कमिश्नर नहीं थे, जिनसे बड़े सेठ, साहूकार, भारतीय राजा या राय बहादुर भी आसानी से मिल सकते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें भगवा कपड़े पहिनने वालों से बेहद चिढ़ थी।

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द, मात्र संन्यासी थे जो भगवा वस्त्र पहिनते थे। सन् १८६३ में गुरुदक्षिणा देकर दीक्षा पाई थी। १८६६ अर्थात् दीक्षा के बाद तीसरा वर्ष था। अभी वे मात्र मूर्तिपूजा आदि कुरीतियों तथा मत-मतान्तर के ढोंगों का खण्डन करते थे। शास्त्रार्थ करते थे और भक्तों को सच्चे शिव की उपासना बताया करते थे। उस शिव को स्वीकार नहीं करते थे, जिसकी पत्नी पार्वती है। गुरु से शिक्षा लेकर संसार में नये-नये उतरे थे। अभी उन्होंने व्याख्यान देना आरम्भ नहीं किया था। अभी उनकी ख्याति अधिक फैली नहीं थी। अभी उन्हें किसी ने महर्षि पद से विभूषित नहीं किया था।

फिर यह घटना किस प्रकार से घटी, वह प्रसंग भी बड़ा रोचक है। जैसे आजकल साधु-महात्मा द्वार पर 'बम बम भोले' की आवाज देकर यजमान के द्वार पर खड़े-खड़े ही आशीर्वाद की वर्षा शुरू कर देते हैं। और तर्क-कुतर्क-वितर्क शुरू कर देते हैं, ऐसे नहीं हुई।

एक दिन कर्नल ब्रुक स्वामी जी के निवास स्थान बंसीलाल के बाग में चले गये। स्वामी जी सामने बैठे थे। वृद्धिचन्द्र ब्राह्मण ने स्वामी जी से कहा—'महाराज आप कुर्सी इधर करलें। ये साहब आप लोगों को देख क्रुद्ध होते हैं।" स्वामी जी ने कहा कि हम तो यही चाहते हैं। और कुर्सी को और आगे बढ़ाकर बैठ गये। कर्नल ब्रुक स्वामी जी को देख झट अन्दर घुस गये। वृद्धिचन्द्र ने कहा कि—'महाराज ! मैं आपसे कहता था। आपने न माना।' महाराज ने कहा—"कोई चिन्ता की बात नहीं, आने दो।" स्वामी जी उठकर टहलने लगे ताकि कर्नल ब्रुक का स्वागत न करना पड़े।

आश्चर्य ! कर्नल ब्रुक बाहर आए। उन्होंने अपनी टोपी उतारी, हाथ में ली, स्वामी जी से हाथ मिलाया और स्वामी जी के सामने कुर्सी पर बैठ गये और काफी देर तक बातें करते रहे।

भारत के एकाधिपति वायसराय का प्रतिनिधि कर्नल ब्रुक, जो भगवा वस्त्रधारी-मात्र से चिढ़ता था, स्वामी जी के पास स्वयं आया और ऐसा भक्त बना कि घण्टों बातें करता रहा। इतना ही नहीं, अगले दिन अपनी सवारी भेजकर स्वामी दयानन्द को अपने बंगले पर बुलाया (साथ में पण्डित रामरूप जोशी भी गये थे।) और तीन घण्टे तक चर्चायें हुईं। वायसराय के नाम उन्होंने पत्र लिखा। इतना ही नहीं, उन्होंने जयपुर के राजा रामसिंह जी को पत्र लिखकर खेद प्रकट किया कि आपने ऐसे उत्तम वेद वक्ता के साथ कुछ बातचीत न की।

स्वामी जी ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा की चर्चा आरम्भ बड़े मनोवैज्ञानिक तरीके से की।

स्वामीजी—आप धर्म का स्थापन करते हैं, या खण्डन ?

कर्नल ब्रुक—धर्म का स्थापन करना तो हमारे यहां भी अच्छा है। परन्तु जिसमें लाभ हो वह करते हैं।

स्वामी जी—आप लाभ की बात नहीं करते, हानि की बात करते हो

कर्नल ब्रुक—कैसे ?

स्वामी जी ने तब बताया कि एक गाय होती है, उसका एक बछड़ा होता है। इस प्रकार उसकी कितनी वंश वृद्धि होती है। फिर विचारना चाहिये कि उससे कितने मनुष्यों का पालन होता है। सारांश यह कि उन्होंने 'गोकरुणानिधि' विधि से गोरक्षा के लाभ बताये, और फिर पूछा—

'अब आप बतलाइये कि इसके वध से आपको लाभ है या हानि ?'

कर्नल ब्रुक—'होती तो हानि है।'

स्वामी जी—फिर आप गोवध क्यों करते हैं ?

कर्नल ब्रुक ने बात स्वीकार की। अगले दिन बंगले पर बुलाकर तीन घण्टा चर्चा की।

यह था स्वामी जी की तेजस्विता, ब्रह्मचर्य की महिमा और स्वाध्याय का प्रताप कि सन्यासियों से चिढ़ने वाला सर्वोपरि प्रभुता सम्पन्न महान् व्यक्ति उस समय के साधारण गिने जाने वाले दयानन्द का समर्थक ही नहीं, परम भक्त बन गया।

आइए पाठकवृन्द, आज हम उस महर्षि के ग्रन्थों का स्वाध्याय करने का व्रत लें और संसार से विशेषतः भारत से अविद्या रूपी अन्धकार को दूर भगावें और पदार्थों के सत्य स्वरूप को प्रकाशित करने में उत्साहित हों।

—गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून ने दिनांक ७–९–८३ से ११–९–८३ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया। इसमें श्री रणवीरसिंह जी, चैतन्यमुनि, देवमुनि, जगतसिंह जी, उम्मेदसिंह आर्य विशारद, बलबीर सिंह आर्य वि०वा० नारायणसिंह आर्य व डी०एस०प्रेमी, श्री भगवान आदि विद्वानों के उपदेश व भजनोपदेश हुए। मोहल्ले-मोहल्ले में स्थानीय जनता पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। —मन्त्री

—आर्यसमाज सम्भल का निर्वाचन—

प्रधान—श्री जगदीशशरण आर्य

उपप्रधान—श्री शिम्भूशरण व नित्यानन्द जी

मन्त्री—श्री विक्रमसिंह जी

उपमन्त्री—श्री दिनेश बाबू व श्री प्रदीपकुमार जी

कोषाध्यक्ष—श्री नवलकिशोर जी

श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी का लखनऊ में पहला सार्वजनिक अभिनन्दन

रविवार १९ सितम्बर को नगर आर्य समाज लखनऊ मे हिन्दी दिवस के उपलक्ष मे एक आयोजन अ० प्रा० जन डाक्टर श्री मोती बाबू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कैलाश नाथ सिंह ने इस आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में सहयोग देकर आयोजन की शोभा और उपयोगिता मे वृद्धि की। जैसे ही वह पधारे तो उपस्थित जन समुदाय हर्ष से व्याप्त हो गया।

आयोजन में महिला डिग्री कालेज की प्राचार्या श्रीमती मनोरमा कवियित्री, सरोजनी अग्रवाल, श्रीमती प्रमिला जी, कवि राजेश विद्रोही, व हिन्दी सस्थान के श्री द्विवेदी जी तथा उत्तर प्रदेश अधिवक्ता सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सक्सेना जी, अनन्त बिहारी जी, श्री कृष्ण गोपाल जी एवं कई अन्य विद्वानों, कवियो एवं मनीषी चिन्तको ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्री कैलाशसिंहजी ने हिन्दी के क्षेत्र में आर्य समाज के योगदान की चर्चा करते हुए भावी योजनाओं की व्याख्या की ओर बताया कि आर्य समाज हिन्दी को वास्तविक रूप से राष्ट्रभाषा बनाने के लिये चेष्टाशील ही नहीं है कृत संकल्प भी है। उन्होंने अनेक देश-विदेश की पुस्तकों व विश्व के सुप्रसिद्ध विद्वानों के उद्धरण से सिद्ध किया कि राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र की कल्पना ही पंगु है। श्री कैलाशनाथसिंहजी ने नगर आर्य समाज की कल्पनाशीलता, क्रियाशीलता की सराहना की कि वह अपने को राष्ट्रीय चेतना की मुख्यधारा से जोड़ें है। साथ ही सजग और सचेष्ट भी हैं। मेहनतकश मजदूरो और टूटी-फूटी झोपड़ियों मे रहने वाले दीन दलित लोगों के प्रति नगर समाज की जागरूकता के लिए बधाई देते हुवे श्री प्रधान जी ने प्रतिनिधि सभा और स्वयं अपने सहयोग का पूर्ण आश्वासन दिया। श्री कैलाशनाथ सिंह जी ने आयोजन के अध्यक्ष डाक्टर श्री मोती बाबू जन को सहयोग देने का आश्वासन दिया तो उनसे भी अनुरोध किया कि वह आर्यसमाज के मंच को अपनावें क्योंकि आज के युग में आर्य समाज ही एक मात्र सजग, जीवित संस्था है जो रचनात्मक संघर्ष कर सकती है।

श्री कैलाशनाथ सिंह प्रधान निर्वाचित होने के बाद लखनऊ में नगर आर्य समाज में पहली बार पधारे थे, नगर आर्य समाज को यह गौरव प्रदान करके उन्होंने नगर समाज पर उसे अपने कर्तव्य पूरा करने का और अधिक दायित्व सौंपा है।

—शान्ति प्रकाश
मन्त्री

दिवाली की शाम

[ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (पूर्व त्रिलोकचन्द्र राघव)]

१—ऋषि निर्वाण शताब्दी को, तन, मन, धन से सफल बनाये।
ऋषि के पद चिन्हों पर चल, ध्रुव सम दृढ़ संकल्प बनाये॥
२—यह वही है अति पावन स्थल, वह भवन हमे जो प्राप्त हुए।
उस तपः पूत शुचि क्रान्ती दल के, अन्तिम स्वास समाप्त हुए॥
३—हे! प्रभु तेरी इच्छा हो पूर्ण, यह अमर निशानी छोड़ गये।
आर्य जन शाम दिवाली की, इस दुनिया से मुख मोड़ गये॥
४—हे धन्य स्वजन वह ऋषि भवन, अजमेर नगर मे आयेंगे।
स्वामी जी की वस्तुओ के, आकर के दर्शन पायेंगे॥
५—यह सौ वर्षों के बाद याद को, आई है पावन वेला।
अजमेर नगर में धूमधाम से, होय निर्वाण शताब्दी मेला॥
६—चलो आर्यो जय गुंजाओ दयानन्द के नाम की।
याद दिला दो दुनियां भर को, दीवाली की शाम की॥

"समाज के लिए अभिशाप"

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस प्रकार उक्त के कारण एवम् अभाव में तमाम अवैधानिक, अनैतिक कार्य कर डालना उनके लिए समाज के समक्ष किसी तरह मुंह दिखाना रह जाता है। दहेज ही के कारण आज हमारे देश में ऋण ग्रस्तता को बढ़ावा मिलता है तथा जब वह काफी ऋणी हो जाता है तो स्वयं आत्म हत्या कर बैठता है।

उपरोक्त दुष्परिणामों को देखकर समाज सुधारकों ने दहेज-प्रथा को रोकने के विशेष बल दिया और अभी प्रयत्न जारी है। १९६१ में सरकार ने दहेज प्रथा निरोधक अधिनियम लागू किया कि २०००/— या २०००/— से अधिक रुपये या गहने, कपड़े इत्यादि लेना-देना अपराध है तथा इस को तोड़ने वाले ५०००/—जुर्माना व छः मास की सजा के भागी होंगे, किन्तु कोर्ट में पक्ष या प्रतिपक्ष द्वारा दावा करने पर यह कानून लागू होगा।

उपरोक्त अधिनियम के बन जाने पर भी आज यह देखने में आ रहा है कि दहेज-प्रथा दिनों-दिन बढती ही जा रही है, जो समाज के लिए अभिशाप है। इस प्रकार सरकार को उपरोक्त प्राविधानों को भी ध्यान में लाया जाय, तो क्या सरकार के पास इसको तोड़ने का नहीं तो भी दूर करने का कोई और प्रतिबन्ध लगाने का ध्यान नहीं था। सोचने की बात है कि जब १९६१ में सरकार ने २०००/—तक की छूट दे दी थी तो आज के बीस साल व्यतीत हो जाने पर वर्तमान दहेज की इस सीमा को देखकर कोई आश्चर्य करने की बात नहीं है और न आन्दोलन ही। कारण कि हरेक क्षेत्र/स्थान पर थोड़ी सी ही छूट भयंकरता का रूप ग्रहण कर लेती है तो यह होना कोई अनहोनी चीज नहीं है।

अन्ततोगत्वा हम कह सकते हैं कि दहेज प्रथा-उन्मूलन मे कोई अधिनियम, कानून पूर्ण रूप से तब तक सक्षम नहीं हो सकता है—जब तक कि मानव-मानव जागरूक न हों। इसके लिए मानव-मानव में सद्भावना, सदाचार और पुरुषार्थ की आवश्यकता है, जिसका उदाहरण स्वरूप 'आर्य समाज' ही एक अपनी सही भूमिका निभाते हुए मानव-कर्तव्य की ओर अग्रसर हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि इन्हें देश का पूर्ण सहयोग मिलता रहा तो फिर हमारे देश की संस्कृति इस पवित्र धरा पर अवतार लेकर इस देश को सोने की चिड़िया कहने के लिए मानव हृदय में गुंजार कर देगा और अपनी संस्कृति एवम् परम्परा के अनुसार नैतिकता का साम्राज्य आच्छादित हो जायेगा जिसे सक्रिय बनाने में आर्य समाज का योगदान था, रहा है और है।

दान सूची

श्री योगेन्द्रसिंह स्नातक एडवोकेट मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन ने बम्बई महानगर में जाकर संस्था के लिए धनसंग्रह किया तथा आर्यसमाज सान्ताक्रूज एवं आर्यसमाज काकड़वाड़ी में आप के प्रवचन हुये। वहां की उदारमना जनता ने आपकी सराहना की तथा संस्था के लिए आर्थिक सहयोग दिया, एवं देने का वचन दिया।

१–श्री कोमलप्रसाद जी अग्रवाल कमली वाड़ी मलाड ईस्ट बम्बई	१५१.००
२–निर्मल ट्रेडिंग कार्पोरेशन दादी सेठ अग्यारी लेन बम्बई	१०१.००
३–श्री गणपत राम जी आर्य प्रधान आर्यसमाज काकड़वाड़ी प्रेम प्रिन्टर्स गायवाड़ी कालबादेवी रोड बम्बई-२	१०१·००
४–श्री हरनामसिंह मोतीसिंह ३१ लुहार स्ट्रीट बम्बई-२	१०१-००
५–श्री आर्यसमाज काकड़वाड़ी वी०पी० रोड बम्बई-४	२०१-००
६–श्री प्रवीण भाई पटेल वी.पी. रोड सान्ता क्रूज पश्चिम बम्बई–५४	५०१ ००
७–श्री बालजी कृष्ण अग्रवाल रेलवे रोड बसई जिवाना महाराष्ट्र	२५१.००
८–श्री सेठ राधेलाल जी कालबादेवी रोड बम्बई-२	५५१·००
९–श्री पूरनचन्द्र आर्य २१२ बाजारगेट स्ट्रीट आर्यसमाज फोर्ट बम्बई-१	१०१.००
१०–श्री बजरंगलाल जी गोयल मंत्री आर्यसमाज फोर्ट २३२ बाजार गेट स्ट्रीट बम्बई-१	१००१-००
११–श्री जे०एस० बंसल ७३ ए. को. सो. कालीना गांव सान्ताक्रूज पूर्व बम्बई–२९	१५१.००
१२–श्री झाडूलाल जी शर्मा उपप्रधान आर्यसमाज काकड़वाड़ी मारटीप्रोसेस स्टडियो १७ खटाऊ वेलवाड़ी रोड बम्बई-४	२०१-००
१३–श्री मिठाईलाल जी प्रधान आ०स० माटुंगा वार्ड नं० धर्म कैलाश भुवन भाऊदाजी रोड बम्बई-१९	५०१-००
१४–श्री लक्ष्मी नारायण जी काणकी बम्बई	२५०-००
१५–श्री मोहन टी-शाह श्री रमेश डी० शाह ५०२ इन्दिरा एपार्टमेन्ट कारमाइकल रोड बम्बई-२६	१५०१-००
१६–श्री कुलदीप नारायण दास जी जुनेजा नेशनल हाबरी इन्डस्ट्रियल हाउस माहिम बम्बई-१६	१५००·००
१७–श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल बहल-१८५ वल्केश्वर मार्ग बम्बई-६	३०००-००
१८–श्री आर्यसमाज सान्ताक्रूज पश्चिम बम्बई-५४	१५००-००
१९–श्री भगवतीप्रसाद जी गुप्त ८९ सागर विहार होटल पी० डिमेलो रोड बम्बई-९	५००-००
	१२२६४-००

आप ५००) ५००) दो बार में भेजेंगे क्योंकि आपने जी एक छात्रवृत्ति प्रति वर्ष प्रदान करने का आश्वासन दिया है।

एवं उपरोक्त सभी महानुभावों ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को यह छात्रवृत्तियां योग्य प्रतिभाशाली निर्धन ब्रह्मचारियों को प्रदान की हैं, तथा प्रति वर्ष प्रदान करने की घोषणा की है।

श्री सदा जीवनलाल चन्दूलाल बहल दो छात्रवृत्तियां १५००) रु० वार्षिक की प्रदान की हैं विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

इस प्रकार बम्बई महानगर के उदारमना दानी महानुभावों ने अपनी पवित्र आय से सहयोग प्रदान कर एवं भविष्य में भी सहयोग का आश्वासन देकर संस्था के संचालन में हमें सहयोग प्रदान किया है। सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

नोट–११), २१) आदि की छोटी रकमें स्थानाभाव से यहां नहीं दी जा रही हैं जो कि २०००) रुपये की हैं।

शुभ कामनाओं के साथ

प्रो० कैलाशनाथसिंह कुलाधिपति

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

प्रधान–आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के कुलपति–

श्री बलभद्रकुमार हूजा की विदेश-यात्रा

मैं ३ अगस्त को शाम को लंदन पहुंच गया था। १४ को केम्ब्रिज चला गया। वहां सेन्टर आव साउथ एशियन स्टडीज देखा। उसके सचिव डा० कार्टर से भेंट हुई। साउथ एशिया और भारत पर उनका पुस्तकालय अप-टू-डेट है। इस नगर में लगभग दो दर्जन कालेज हैं। कई तो १४वीं १५वीं शताब्दी में स्थापित हुये थे। विशेषकर ट्रिनीटी कालेज देखा। इसे अष्टम हेनरी ने १५४६ में स्थापित किया था। इसकी लाइब्रेरी भी बहुत विख्यात है। इसमें ९०००० पुस्तकें हैं। न्यूटन, बेकन, बायरन, थैकरे के धड़ों के बुत लगे हैं। टेनीसन, मेकाले ड्राईडन भी यहां के विद्यार्थी रहे हैं। ठहरने को वुल्फसन कालेज में बहुत सुन्दर प्रबन्ध था। उस कालेज के अध्यक्ष से भी मिला। जो कानून पढ़ाते हैं। अगले रोज वापस लन्दन आ गया। ६ को इण्डिया हाउस में प्रो. रामलाल पारीख से मुलाकात हुई। फिर हम भारतीय हाई कमिश्नर श्री सैय्यद हुसेन से मिले। उसी दिन रात को डबलिन के लिए रवाना हुए। यहां भारत के डेलीगेशन में १४ सदस्य हैं। दयाल बाग क्रोडा शैरी भी है। भारतीय डेलीगेशन का जोरदार स्वागत हुआ टी०वी० और रेडियो ने भी खूब चर्चा की कल रात भारत के राजदूत ने बुलाया था, आज नगर के लार्ड मेयर ने।

८ को सम्मेलन का आरम्भ हुआ। ४१ देशों से ६०० प्रतिनिधि आये हुये हैं। लार्ड मेयर ने डेलीगेटों का स्वागत किया। शिक्षा मन्त्री श्रीमती हली ने शुभारम्भ किया। ट्रीनीडाड के फादर बंटन ने मुख्य भाषण दिया और उन्होंने बताया कि किस प्रकार वह गरीब पिछड़े हुए वर्ग में जागरण पैदा कर रहे हैं। उन्होंने बतलाया कि युवा लोग सम्मान से जीना चाहते हैं। और चाहते हैं उन्हें कोई अपनावे। सभी मनुष्य बराबर हैं। साथ में सभी निराले हैं। उनका सम्मान हो, उन्हें बराबर हिस्सा मिले। उन्हें कोई दुतकारे नहीं। दो दिन छोटे ग्रुपों में बातचीत होती रही। सभी की सम्मति रही कि विश्वविद्यालयों के लोगों के बीच में जाकर प्रकाश फैलाना चाहिये–अन्धकार, अन्धविश्वास, अज्ञान मिटाना चाहिये, अन्यथा विश्वविद्यालय के अस्तित्व का कोई सार नहीं। आज हम ट्रिनीटी कालेज डबलिन देखने गये, यह १५९२ में एलिजाबेथ प्रथम द्वारा स्थापित हुआ था। वहां के प्रोवोस्ट (वाइस चांसलर) डा० वाट्स से मिले। यहां का पुस्तकालय भी बहुत प्रसिद्ध है। इसमें २० लाख पुस्तकें हैं। इनकी बाईबिल 'बुक आफ कैल' कहलाती है। उसका पुराना संस्करण ८०० ई सन् का यहां रखा है। उसे देखने हेतु दर्शनार्थियों की भीड़ लगी हुई थी। सर्वत्र,यहां क्या केम्ब्रिज में, क्या लंदन में क्या गुलाब की, अन्य फूलों की क्यारियां देखते बनती हैं। लोग सभ्यता से क्यू में प्रतीक्षा करते हैं। ड्राइवर एक दूसरे को सिगनल देकर आगे बढ़ते हैं। नियमानुसार रास्ता देते हैं। सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। हां अब सफाई का वह स्तर नहीं रहा, जो २० वर्ष पहले था।

–डा० जबरसिंह सेंगर कुल सचिव

'मैं तो मोक्ष प्राप्त करना चाहता हूं। मैं पुनः जन्म नही लेना चाहता। किन्तु यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं अछूत के घर पैदा होऊँ ताकि मैं उसकी पीड़ा, विपत्ति, संकटों में उसका साथ दूं।

–बापू

राष्ट्रपिता गांधी जी ने जीवन-भर अछूतों का साथ दिया। उनकी पीड़ा, विपत्ति और संकट को अपनी पीड़ा; विपत्ति और संकट माना। उन्हें हरिजन (भगवान् का अपना आदमी) कहा और उनकी सेवा को ही अपना धर्म और कर्म समझा। आज उनके जन्म दिवस पर उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सभी अपने समाज के दीन हीन और पददलितों के उत्थान मे सक्रिय रूप से हाथ बटायें।

सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग; उत्तरप्रदेश द्वारा प्रसारित

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष–45993 ५२६६३
पंजीकरण सं० एल० डबल्यू/एन०पी० ७६
वर्ष० आश्विन १७
आश्विन शु० ३, रविवार
९ अक्टूबर १९८३ ई

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२/१६-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी वि० विद्यालय
हरिद्वार

उपदेशकों एवं प्रचारकों के कार्यक्रम

१–श्री पं० केशवदेव जी शास्त्री, महोपदेशक सभा
१७ अक्टूबर से २१ अक्टूबर–८३ तक, आर्यसमाज–साडी (हरदोई)
१० से १४ नवम्बर आ० स० मोहम्दाबाद (फर्रुखाबाद)
१७ नवम्बर से २० नवम्बर, ८३ तक आर्य समाज–बहराइच।

२–श्री शिवकुमार जी शास्त्री, महोपदेशक सभा
१ से अक्टूबर, आर्य समाज कुठिला, (हरदोई)
३ से ५ अक्टूबर, आर्य समाज बिसवा (सीतापुर)
१५ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक, आर्य समाज शाहगंज (आगरा)
२१ नवम्बर, आर्य कन्या महाविद्यालय हरदोई की प्राचार्या की कन्या का विवाह संस्कार।

३–श्री विश्वम्भरदत्त शास्त्री, उपदेशक सभा
३ अक्टूबर से ५ अक्टूबर, ८३ तक आर्य समाज बिसवा (सीतापुर)

४–श्री ठा० गजराजसिंह जी, राघव भजनोपदेशक सभा
६ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक, आर्य समाज कमालगंज (फर्रुखाबाद)

५–श्री जगतवीर सनेही, भजनोपदेशक सभा
६ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक, आर्य समाज कमालगंज (फर्रुखाबाद)

६–श्री धर्मराज सिंह जी, भजनोपदेशक सभा
१५ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक आर्य समाज रसौली (बाराबंकी)
शेष अक्टूबर से ३१ दिसम्बर तक, श्री हरिश्चन्द्र जी, संयोजक के माध्यम से।

७–श्री कमलदेव जी, भजनोपदेशक सभा
१५ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक, आर्य समाज शाहगंज (जौनपुर)
१७ „ २० „ आर्य समाज बहराइच।

८–श्री ब्रह्मानन्द जी, भजनोपदेशक सभा एवं

९–श्री ओमलाल जी, ढोलक वादक सभा

१४ से १६ „ „ „ हरदोई,
१६ से २१ अक्टूबर, आर्य समाज साडी (हरदोई)
१९ से २१ नवम्बर, आर्य समाज गोविन्दनगर (कानपुर)
शेष १ अक्टूबर से
३१ दिसम्बर, ८३ तक श्री हरिश्चन्द्र जी, संयोजक के माध्यम से।

१०–श्री [illegible] भजनोपदेशक सभा

११–श्री प्रताप आर्य, ढोलक वादक सभा
३ से ५ अक्टूबर, आर्य समाज बिसवा (सीतापुर)
६ अक्टूबर से ६ दिसम्बर तक, जिला उपसभा बुलन्दशहर

१२–श्री शिवदेव बेधड़क जी, भजनोपदेशक सभा
६ अक्टूबर से ६ दिसम्बर तक, जिला उपसभा बुलन्दशहर

१३–श्री मनोहर स्वरूप जी, ढोलक वादक सभा
१ अक्टूबर से ५ अक्टूबर तक, आर्य समाज पाली (हरदोई)
६ „ से ६ दिसम्बर तक, जिला उपसभा बुलन्दशहर।

१४–श्री राजेशकुमार जी, भजनोपदेशक सभा
३ से ५ अक्टूबर तक आर्य समाज बिसवा (सीतापुर)
२३ से २६ नवम्बर, आर्य समाज नबाबगंज (गोंडा)–शेष १ अक्टूबर से ३१ दिसम्बर, ८३ तक, श्री हरिश्चन्द्र जी संयोजक के माध्यम से।

१५–श्री खेमचन्द्र जी, भजनोपदेशक सभा
सर्वश्री सुकर्मानन्द तथा शिवनाथ सिंह जी, एवं अर्जुनसिंह जी
१ अक्टूबर से ३१ दिसम्बर तक, श्री हरिश्चन्द्र जी संयोजक के माध्यम से।

१८–श्री नेमप्रकाश जी, भजनोपदेशक सभा
० सितम्बर से २ अक्टूबर तक, आर्य समाज नयाशहर इटावा,
१८ से २० अक्टूबर, आ० स० गोविन्दनगर कानपुर।

१९ [illegible]किशोर
१८ से २० नवम्बर, आ० स० गोविन्दनगर (कानपुर)

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर द्वारा १ अक्टूबर से १० दिसम्बर तक विभिन्न ग्रामों मे वैदिक धर्म का प्रचार किया जायगा, इसमे श्री मुन्नी लाल, प्रधान, श्री तारानाथ मन्त्री, एवं श्री समरजीतसिंह भजनोपदेशक भाग लेंगे।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] आर्यभास्कर प्रेस, [illegible] मीराबाई मार्ग, लखनऊ से [illegible] वर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ आ० आश्विन २४ आश्विन शु० १० राष्ट्राब्द समस्त ४० ... १६ अक्टूबर सन् १९८३ ई०

'वनस्पति घी में गाय की चर्बी मिलाना जघन्य अपराध'

सरकार से कड़े-से-कड़ा दंड देने की मांग

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० कैलाशनाथसिंह ने वनस्पति घी मे गाय तथा अन्य जानवरो की चर्बी मिलाए जाने की तीव्र भर्त्सना तथा कडे शब्दो मे निन्दा की है। आपने इसे हिन्दुओ और गोप्रेमियो की भावनाओ पर कुठाराघात करने वाला जघन्य अपराध बताया। प्रो सिंह ने इस धंधे मे लिप्त व्यक्तियो को मिलावट तथा अन्य कानूनो के अन्तर्गत कडे-से-कड़ा दण्ड देने की जोरदार मांग सरकार से की है। आपने इस बात पर आश्चर्य एव दुःख प्रकट किया कि अहिंसावादी जैनियो द्वारा ऐसा कुकर्म किया जारहा है। श्री सिंह ने जनता से अपील की कि वह वनस्पति घी के प्रयोग का पूर्णतः बहिष्कार करे ।

अत में उन्होने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने और जिन प्रांतो मे गोहत्या पर पाबन्दी नहीं है वहां पर पाबन्दी लगाने की मांग सरकार से की है ।

(आ०मि० समाचारदाता)

वार्षिक	१६)	सम्पादक—	वर्ष	अङ्क
छमाही	८)	आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए०	८५	३८
विदेश में	१ पौंड			
एक प्रति	४० पैसे			

प्रार्थना

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ।।

अथर्व० १९-६२-१ ।।

अर्थ –हे परमात्मन् ! मुझे देवों मे प्रिय बनाओ, मुझे राजाओ मे प्रिय बनाओ, मुझे शूद्रजनो एव आर्यों में प्रिय बनाओ । मुझे समस्त ससार का प्यारा बनाओ ।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार, १६ अक्टूबर १९८१, दयानन्दाब्द १५६
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

विजय पर्व

भारतीय सस्कृति के मूल स्रोत वेद हैं । यह अपौरुषेय हैं । अपौरुषेय महाशक्ति पूर्ण–सक्षम एव सतत ओज तथा ऊर्जा से परिपूर्ण है । अथवा विश्व की समस्त शक्ति–क्रिया एव ऊर्जा उसी महाशक्ति का एक लघु अश है । यही कारण है कि भारतीय सस्कृति मे ऐसे तत्व निहित हैं जो इसे कभी प्रभा विहीन तथा चेतना रहित नहीं होने देते हैं । काल गति के प्रहार इसे ध्वस नहीं कर पाते है। कारण कि इसकी स्थिति उस प्रवाह शील सरिता के समान है जिसका स्रोत कभी सूखता ही नहीं है । वेद अमर है और उससे प्रसूत सस्कृति अमर है ।

विजय पर्व का वास्तविक अर्थ हैं । विपरीत परिस्थितियो से सघर्ष करके विजयी होना । भारतीय मनीषियों ने आश्विन मास मे विजय पर्व की स्थापना एव मान्यता देकर राष्ट्र को सतत ऊर्जा वान बनाने का प्रयास किया। असत की रेखाओ से बाहर निकल कर सत की प्रतिष्ठा तथा अन्याय अत्याचार को समाप्त करके दया-प्रेम–समता एव करुणा की मन्दाकिनी को प्रवाहित करना । इन समस्त दैवी गुणो की एकी भूत सत्ता का नाम है मर्यादा पुरुषोत्तम राम । राष्ट्र मे नवजीवन का सञ्चार रहे । प्राणो मे स्फूर्ति रहे । बाहुओ मे अत्याचारी के विनाश तथा निरीह की रक्षा एव सेवा का बल रहे अत महाकवि वाल्मीकि ने राम का प्रतीक रूपक देते हुए यशस्वी कथा का गायन किया और राष्ट्र मे नवजीवन प्रदान की प्रक्रिया सदैव जीवित रहे विजय पर्व की प्रतिष्ठा की जो सहस्राब्दियो मे राष्ट्र को प्रेरणा दे रहा है और राष्ट्रीय पर्व माना जाता है ।

आज भारतीय राष्ट्र मे बाहरी आधियां धूल फेंक रही है और स्थानीय समस्यायें भी विषमता की ओर आ रही हैं। पडोसी देश केवल रूस को छोडकर हमसे विमुख हो रहे है । पाकिस्तान अमरीकी अस्त्रो को एकत्रित कर रहा है । श्री लङ्का भी उलझने की तय्यारी कर रहा है तथा स्वार्थी तत्व देश मे भी उपद्रव करते हुए निलज्जता की हसी हस रहे हैं । अल्प सख्यक ईसाई तथा मुसलमान केवल एक ही चेष्टा मे रहते हैं कि कैसे उनकी अल्प सख्यकता बहुमत मे बदल जाय । ऐसी परिस्थितियो मे हमें बडी सावधानी से विचारशील बनकर इन सारी विषम स्थितियो से कड़ा सघर्ष करके विघटनकारी एवं गृहभेदी तत्वों से देश की रक्षा करना है । यह तभी सम्भव है जब राष्ट्र मे रामत्व की भावना जागृत हो और उस जागरण का मार्ग हमे मिलेगा महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेशों से ।

सशक्त राम ने विजय प्राप्त की अनाचार एव राक्षसी प्रवृत्ति पर । देश को विघटन की ओर ले जाना या विचार करना राक्षसी प्रवृत्ति है । वीर यशस्वी और साहस पूर्ण पञ्जाब के एक वर्ग में ऐसे स्वार्थी तत्व समावेश कर गये हैं जो मानवता के शत्रु बनाते हैं सफलता का स्वप्न देख रहे हैं । नागरिक जीवन की अवहेलना हत्या और क्रूरता इस वर्ग विशेष का दैनिक खेल है तथा राष्ट्र में नया विभाजन इनकी माग है । राक्षसी प्रवृत्ति बढ रही है । देश मे रामत्व की कमी नहीं है । परन्तु खेद है कि आज दलगत और स्वार्थ परक राजनीति के उन्मादी रोग से सभी दल ग्रसित है । सत्ता रूढ दल की दुर्बलता का अनुचित लाभ उपद्रवी एव विघटन कारी तत्व उठा रहे हैं घर मे लगी आग को जलती छोडकर पडोसी के घर को पचायत करना बुद्धिमानी नहीं हैं एव ज्वलन्त समस्याओं से मुह मोड लेना है जो दुर्बलता की प्रतीक है।

आर्य समाज की आन बान-शान निराली है । हमारा वर्ग राष्ट्र की विसगतियों को समाप्त करता है अत आर्य समाज को अपने कार्यक्रम निर्धारित करके नीर-क्षीर-विवेक का परिचय देना होगा । काले को काला और श्वेत को श्वेत हमें स्पष्ट कहना पडेगा–जिस दिन आर्य समाज राष्ट्र को जागृति करने मे सफल होगा वही हमारा वास्तविक विजय पर्व होगा । राष्ट्र मे शुद्धत्व अपेक्षित है । एतदर्थ प्रार्थना करे –

एतो न्विन्द्र स्तवाम शुद्ध शुद्धेन साम्ना ।
शुद्ध रुक्थैर्वावृध्वांस शुद्ध आशीर्वान् ममत्तु ।।
इन्द्र शुद्धो न आगहि शुद्ध शुद्धाभिरूतिभि ।
शुद्धो रयि निधारय शुद्धो ममद्धि सोम्य ।।

ऋग्वेद ८।९५।७।८

राष्ट्र शुद्ध प्रभु की शुद्ध हृदयसे ऋचाओ द्वारा उपासना करे शुद्ध की समचेतना हृदय मे विकसित हो–राष्ट्र शुद्धता का वरण करे और अशुद्ध भावना मे नष्ट होकर शाश्वत शुद्धता का आचरण करके ऐश्वर्य प्राप्त करे ।

सूचना

सभा के प्रत्येक महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा दानसग्रहकों से निवेदन है कि प्रत्येक धन का रसीद चाहे वह किस मद् को हो, पूर्ण विवरण सहित पूर्ण धन को काटनी अनिवार्यावश्यक है तथा पूर्ण धनराशि शब्दो मे अंकित होना चाहिए, डायरी–बिल तथा रसीदें बहुत ही स्पष्ट तथा साफ भरी जानी चाहिये ।

२–प्रत्येक मास की डायरी–बिल प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह में कार्यालय को प्रत्येक दशा मे प्राप्त हो जाना चाहिये ।

–सत्यवीर शास्त्री–अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सप्त मर्यादाएं (२)

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०,एल०टी० १७५ बाकरा बाजार गोरखपुर]

सप्त मर्यादाओं में दूसरी मर्यादा है 'कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।' कर्म की मर्यादा का वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रन्थों मे बहुत अधिक उल्लेख मिलता है। ईशोपनिषद के दूसरे मन्त्र या यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के दूसरे मन्त्र मे कहा गया है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषे-
च्छत ँ समा। एवं त्वयि नान्य-
थेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अर्थात कर्म करते हुए मनुष्य सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे और कर्म इस प्रकार करे कि वह मनुष्य का फसाने वाला या आसक्ति वाला न हो। कर्म कैसा हो? आत्मा के जीवन का या मरण का? आत्मा के विकास का मार्ग पर चलना आत्मा का जीवन है, आत्मा के ह्रास के मार्ग पर चलना 'आत्मा का मरण' है। आत्मा के जीवन के मार्ग पर चलने का मतलब है सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का मार्ग पकड़ना। आत्मा के जीवन का मार्ग पर चलने से आत्मा मे प्रकाश का, उत्साह का, आत्म स्फुरण का संचार होता है और आत्मा के मरण के मार्ग पर चलने से आत्मा में अन्धकार, निरुत्साह और आत्महीनता आती है।

कर्म चार प्रकार का होता है। कर्म, अकर्म, विकर्म और सुकर्म। कर्म का अर्थ है, हर प्रकार का कर्म। हम सोते, जागते, सांस लेते, आंख झपकते और छींकते हैं। इसी प्रकार के दूसरे काम भी करते हैं। ये सब भी कर्म हैं पर व्यर्थ। इनका अच्छा या बुरा कोई फल नहीं होता। इसके बाद अकर्म का नम्बर है। अकर्म भी कर्म हैं परन्तु ये कर्म अपने लिए किये जाते हैं। खाते हैं, पीते हैं, नहाते हैं, सर्दी लगे तो कपड़ा पहिनते हैं, गर्मी लगे तो हवा भी करते हैं। ये सब अकर्म हैं। इन का फल तो होता है पर बहुत देर के लिए नहीं। शारीरिक कर्म और शारीरिक फल और बल। तीसरा नम्बर विकर्म का है। विकर्म आत्मा को हानि पहुंचाने के लिये किये जाते हैं। ये कर्म वे होते हैं जो जानबूझ कर दूसरो को हानि पहुचाने के विचार से किये जाते हैं। चौथा नम्बर सुकर्म का है। सुकर्म वे कर्म हैं,जो अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरों के कल्याण और भलाई के लिए किये जाते है। इनका फल उत्तम होता है और ये कर्म आसक्ति मे फसाने वाले नहीं होते।

महर्षि दयानन्द एक बार कहीं जा रहे थे। रास्ते मे एक नाला पड़ा। शाम हो गई था। रास्ता सुनसान और खतरनाक था। एक बैलगाडी नाले में फसी हुई थी। गाड़ीवान बहुत प्रयत्न करके, बैलो को पीट कर और अपनी भी सारी शक्ति लगाकर थक चुका था। घबराया हुआ था। गाड़ी सामान से भरी थी। दयानन्द ने देखा, उसकी कठिनाई और बैलो की पिटाई देखकर वे वहां आए। उन्होंने गाड़ी मे स्वयं लग कर गाडी को बाहर कर दिया। अभी वह गाड़ीवान् स्वामी जी के पैर पकड़ कर अपनी कृतज्ञता प्रकट करे, वे आगे बढ़ लिए कोई भी उनके दिल मे उस कार्य के प्रति आसक्ति नहीं। यह सुकर्म है और इसे निष्काम कर्म भी कहना चाहिये। यह कर्म हमें फसाने वाला नहीं होगा।

इसलिए सप्त मर्यादा में दूसरी मर्यादा है—कर्म करो, कर्म करो। वेद मे स्वावलम्बी महा पुरुष गर्वोन्नत स्वर मे कहता है—
'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा'

—ऋ० ४-३३-११

बिना स्वयं परिश्रम किये स्वयं देवो की मैत्री प्राप्त नहीं होती, और अथर्व वेद मे तो परिश्रमी व्यक्ति का और भी अधिक उन्नत और गौरवशील शब्द सुनाई देता है—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते,
जयो मे सव्य आहित।
गोजिद् भूयासमश्वजिद्,
धनञ्जयो हिरण्यजित॥

मै हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नहीं हूं। पुरुषार्थ मेरे दाहिने हाथ और विजय बाएं हाथ में रखी है। इस 'कर्म' रूपी जादू की छड़ी से गौ, घोड़े, धन, धान्य, सोना, चांदी जो चाहूंगा सो मेरे सामने हाथ बांधकर खड़ा हो जाएगा।

बहुत से व्यक्ति कर्म करने से कतराते हैं और यदि प्रारम्भ भी करते हैं तो बड़े अनुत्साह से, वैदिक कर्मनिष्ठ व्यक्ति उत्साही और आत्मविश्वासी होता है। वह सोचता है कि क्या हुआ यदि कर्म कठिन है। वह उत्साह भावना के साथ कहता है—

अयुतोऽहमयुतो मे आत्मा
ऽयुतं मे चक्षुर युतं मे श्रोत्रम्।
अयुतो मे प्राणोऽयुतो मे ऽपानो
ऽयुतो मे व्यानोऽयुतो ऽहं सर्वम्॥

—अथर्व १९-५१

वह कहता है कि मै कार्य करने वाला अकेला नहीं हू, दस हजार आदमी मिलकर जिस कार्य को कर सकते है उसे मै अकेला कर लूगा। मुझ से दस हजार के बराबर आत्म बल है, मेरी आंखो की शक्ति, कानो की शक्ति भी दस हजार के बराबर है। मुझ मे प्राण बल, अपान बल, व्यान बल दस हजार के समान है। कहां तक गिनाऊं, याद रखो मेरे कान, आंख, नाक, मुख, हाथ, पैर, मन, बुद्धि, आत्मा सभी दस हजार गुना शक्ति से सम्पन्न है। मै क्या नहीं कर सकता? कौन सा काम मेरे लिए दुर्लभ है? मै अकेला हू तो क्या हुआ? कार्य करने मे मेरी शक्ति अद्भुत् है। क्या तुम देखते नहीं?

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध
एक सूर्यो विश्वमनु प्रभूत।
एकैवोषा सर्वमिदं विभाति
एकं वा इदं विबभूव सर्वम्॥

अकेली आग कितनी चमक से चमकती है? अकेला सूर्य संसार के अन्धकार को मिटाकर विश्व को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। अकेली ऊषा सभी दिखाई देने वाली वस्तुओं को चमका देती है और अकेला प्रभु सारे विश्व का नियन्ता है, पालक है, रक्षक है, धारण करने वाला है तो मै अकेला क्या नहीं कर सकूगा। कर्म की प्रेरणा देने के लिए वेद कितना विश्वास और उत्साह प्रदान करता है?

(क्रमश.)

भूल-सुधार

९ अक्टूबर के 'आर्यमित्र' में पृष्ठ ३ पर आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर फेरूपुर सहारनपुर मे श्री विजयकुमार जी के संयोजकत्व में आयोजित किया गया है, विनयकुमार की जगह विजयकुमार पढा जाय।

—सम्पादक

महर्षि के पूज्य गुरुवर-

विरजानन्द की कुटिया गुरुधाम में क्या हो ?

[श्री म०म० वेदाचार्य व्यास एम० ए०, बरेली]

महर्षि के चार धाम

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चार मुख्य धाम हैं।

१—जन्म धाम—टंकारा।

२—विद्या धाम—मथुरा।

३—आर्यसमाज स्थापना धाम—बम्बई।

४—मोक्ष धाम—अजमेर।

मैं इस समय गुरुधाम की चर्चा करता हूं। यह गुरुधाम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अधिकार में है। यहां महर्षि ने गुरु विरजानन्द से विद्या ग्रहण की और वे ऋषि बने। यह प्रधान स्थान आर्यों की दृष्टि में सबसे अधिक सम्मान के योग्य है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने उस भूमि पर ६ मंजिला विशाल भवन बनाकर खड़ा कर दिया है। प्रश्न यह है कि उसमें क्या हो। इस समय उसमें वाचनालय है। और प्रातः सायं लाउडस्पीकर पर वेद मन्त्रों का उच्चारण करा दिया जाता है।

गुरु विरजानन्द व्याकरण के सूर्य थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती उदयप्रकाश नारायण आदि अनेक विद्वानों ने यहां बैठकर गुरुवर से व्याकरण का अध्ययन किया था। मेरा प्रस्ताव उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में यह है कि इस स्थान को व्याकरण का केन्द्र बनाया जावे। कोई एक प्राचीन व्याकरण के विद्वान् यहां बैठाये जावें। एक प्राचीन व्याकरण का आचार्य हो एक नव्य व्याकरण का आचार्य हो। दोनों मिलकर यहां कार्य करें।

२—सबसे प्रथम उस स्थान पर व्याकरण के ग्रन्थों का पूर्ण पुस्तकालय बनाया जावे। प्राचीन व्याकरण नव्य व्याकरण के समस्त ग्रन्थ उन पर जितनी भाष्य टीकायें आज तक जितनी भाषाओं में लिखी गई हैं सब यहां हों, और अनुसन्धान की आवश्यकता के सब ग्रन्थ यहां रखे जावें। इस बात को अनुसन्धान करने वाले व्यक्ति ही समझ सकते हैं। मैं स्वयं उसके निर्माण में सहयोग दूंगा।

३—शिक्षा ग्रन्थों प्रभृति शास्त्रों की भी सब सामग्री यहां रहे।

४—गुरु विरजानन्द ने अलवर के महाराजा को व्याकरण पढ़ाने के लिये ग्रन्थों को तैयार किया था। जिसका नाम था व्याकरण बोध—व्याकरण प्रबोध। मथुरा दीक्षा शताब्दी के समय में सार्वदेशिक सभा का अधिकारी था, अलवर से वह ग्रन्थ लाकर सार्वदेशिक सभा में रख दिया, जो अभी तक वहां रखा ही हुआ है। हमारे साथी मित्र परम विद्वान् डा० हरिदत्त जी शास्त्री व अखिलानन्द कविरत्न के घर से अष्टाध्यायी का भाष्य गुरु विरजानन्द का लाये थे। उधर महर्षि का स्वयं अष्टाध्यायी भाष्य अजमेर में अमुद्रित रखा है। केवल दो भाग जिसमे ३ अध्याय तक ही है छपा है। शेष छापा ही नहीं गया। ये सब ग्रन्थ विरजानन्द कुटी गुरुधाम में बैठे व्याकरण के अनुसन्धान करता छापें फिर काम प्रारम्भ हों।

५—इतना हो चुकने के बाद नव्य व्याकरण और प्राचीन व्याकरण पर अनुसन्धान कार्य शुरू हो।

६—हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमने स्विटजरलैण्ड में वह काम प्रारम्भ कराया कि व्याकरण वेद का अङ्ग है तो व्याकरण का मूल वेद के किन मन्त्रों में है।

जब मैं भारत चला आता हूं तो वहां का काम बन्द हो जाता है। भारत में मेरी कोई सुनता नहीं है। एक मैं अपने हृदय की सचाई या वेदना कहीं कहता हूं कि महर्षि का काम अन्यत्र भी कराया जा सकता है। पर उसमें महर्षि का नाम वा आर्यसमाज का काम नहीं होता है, अतः मुझे अरुचि हो जाती है। हमने अपना जीवन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को दिया है किसी अन्य को नहीं।

७—आर्यसमाज के गुरुकुलों में प्रधानतया व्याकरण का अध्यापन होता है, अतः व्याकरण पर अनुसन्धान करने वाले आसानी से मिल सकते हैं पर स्कालर को निभाना हर व्यक्ति का काम नहीं है अनुसन्धान करने वाला जितना पुराना पड़ता जाता है उतना ही ऐक्सपर्ट होता जाता है। उसे पृथक् करके नया व्यक्ति रखने से वह काम नहीं हो सकता है। कुछ व्याकरण के विद्वान् आर्यसमाज में ऐसे होने चाहिये जो विरजानन्द कुटी मथुरा में बैठकर पूरा जीवन व्याकरण पर कार्य करें। संसार के व्याकरण के विद्वान् विरजानन्द कुटी में आकर व्याकरण की समस्याओं का समाधान किया करें।

परिवर्तन अपेक्षित

'आर्यमित्र' में इधर कतिपय सिद्धान्त विहीन सामग्री का प्रकाशन हुआ और पत्र की व्यवस्था भी सुचारुरूप से नहीं थी। अत: हमें हर्ष है कि आचार्य रमेशचन्द्र जी एम० ए० को सम्पादक का पूर्ण उत्तरदायित्व सौंपा गया। आशा है पत्र अब नवीन व्यवस्था के अन्तर्गत उचित एवं आकर्षक रूप से प्रकाशित होगा।

(१) खेमसिंह आर्य
अधिष्ठाता
मदनमोहन आर्यभास्कर प्रेस

(२) वीरेन्द्र रत्नम्
अधिष्ठाता
साप्ताहिक 'आर्यमित्र'

विरजानन्दकुटी मथुरा की नवीन व्यवस्था

विरजानन्द कुटी मथुरा की नवीन व्यवस्था के अन्तर्गत फर्रुखाबाद जनपद आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा कर्मठ आर्यसमाज सेवी श्री सूरजप्रसाद आर्य ने व्यवस्थापक का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। श्री कर्मानन्द का अब उस संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं है।

नवीन व्यवस्थापक ने सुचारु रूप से व्यवस्था का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। उसमें नवीन सुधार तथा जनसेवा की योजनायें प्रारम्भ कर दी गई हैं। २ अक्तूबर ८१ को सभा प्रधान श्री० कैलाशनाथसिंह ने कुटी का निरीक्षण किया और रचनात्मक सुझाव दिए।

—खेमसिंह आर्य सभा उप मन्त्री

अजमेर में

(१)

स्वतन्त्रता प्राप्त का ये अक्षय सुमेरु रहा
सदा बलवीरता के कोष का कुबेर है
शौर्य सूर्य शान से नित्य जगमगाता रहा
कायर कुचालियों का रहा न अन्धेर है।

राजपूत-आन की अनोखा अभिमान तीक्ष्ण
शत्रुओं की लाशों के लगाता रहा ढेर है
गौरव गिरीश यह वीरों का 'प्रणव' धन्य
आर्यों को प्राणों से भी प्यारा अजमेर है ।।

(२)

उमड़े उमङ्ग उत्साह का समुद्र अब
चारों ओर पुरुषार्थ होवे अजमेर में
आर्य संसार के कुबेर दें बजाना खोल
न्यूनता रहे न कोई, कैसी अजमेर में।

'प्रणव' प्रचार की प्रतिष्ठा की पताका उड़े
ऊंची जोश होश लिए अब अजमेर में
होवे धूम-धाम ऐसी धरा के प्रदेश कहें
कौतुक हुआ है भारी क्या कि अजमेर में ।।

(३)

महर्षि के जीवन की जाह्नवी हुई थी शान्त
पाकर नितान्त मोक्ष मार्ग अजमेर में
'प्रणव' पिता की गोद आ रहे समीप ऋषि
पौरुष प्रसन्नता से पूर्ण अजमेर में।

नास्तिक गुदड़ के अंकुर उगाया मनः
आस्तिकता का दिव्य दर्शन अजमेर में
पर-उपकारिणी सभा का हुआ शिलान्यास
पर-उपकार करने को अजमेर में ।।

(४)

देव दयानन्द जी के जीवन की गङ्गा शुभ—
स्रोत जिसका है, सत्य टङ्कारा की टेर में
पावनी प्रवाहित अबाधित गति से चली
आई लहराती इठलाती अजमेर में।

भागीरथी सी नित्य निर्मल पवित्र वह
मिली आनन्दसागर में प्यारे अजमेर में
पूरे उत्साह या उमङ्ग अङ्ग भरे हुए
'प्रणव' शताब्दी ये मनाओ अजमेर में ।।

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम०ए०, आगरा

अजमेर चलो

हे आर्य जनों अमृत पुत्रो, यह समय चेतना का आया।
इस सोई मानव जाति को, फिर इसे जगावे यह आया।
प्रहरी बन कर तुम आर्य वीर, अजमेर चलो अजमेर चलो।१।

मृत्यु पाश से मुक्त कराने, महर्षि जग में आये थे।
वेदों का पीयूष पिलाने, ऋषि धरा धाम पर आये थे।
अब मृत्युञ्जय बनने के हित, अजमेर चलो अजमेर चलो।२।

है ऐतिहासिक यह नगर पुराना, पृथ्वीराज चौहान का।
तीर्थस्थल बना सभी का, ऋषिवर के बलिदान का।
अब निज लोचन से लखने को, अजमेर चलो अजमेर चलो।३।

वहां अनुपम पावन मेला है, जहां कष्ट ऋषीश्वर झेला है।
दिन रात मृत्यु से खेला है, बहु दिन तक उसे ढकेला है।
श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने को, अजमेर चलो अजमेर चलो।४।

ऐहसान बहुत हैं मानव पर, सबसे ही ज्यादा आर्यों पर।
हमें वेद दिखाकर दिखलाया, सतज्ञान भी सबको सिखलाया।
ऋषि ऋण को वहां चुकाने को, अजमेर चलो अजमेर चलो।५।

निर्वाण शती यह ऋषिवर की, कुछ नया सन्देशा लाई है।
जो आई शिथिलता आर्यों में, उसे दूर भगाने आई है।
सब भेदभाव अब तज करके, अजमेर चलो अजमेर चलो।६।

वहाँ चतुर्वेद से यज्ञ होगा, सब सन्तो का संगम होगा।
विद्वानों का जमघट होगा, वह धर्म क्रान्ति उद्गम होगा।
संसार मे क्रान्ति मचाने को, अजमेर चलो अजमेर चलो।७।

हे प्यारी विदुषी महिलाओ, ओ यती! पडिता, ऋषि बालाओ।
ब्रह्मचारिणी प्यारी कन्याओ, हे बहिन, बेटियो, माताओ।
सब मिलकर ऋषि गुणगायन को, अजमेर चलो अजमेर चलो।८।

हे आर्यजगत् के नवयुवको, धन केवल आस तुम्हारी है।
इस आर्यसमाज की तरणी को अब तुमको पार लगानी है।
रग-रग में वीर रस भर करके, अजमेर चलो अजमेर चलो।९।

यह प्रेमी की करबद्ध विनय, हे आर्यजनो स्वीकार करो।
तैय्यारी करो बस चलने की, मत इसमें कोई विकल्प करो।
हो सफल ऋषी निर्वाण शती, अजमेर चलो अजमेर चलो ।।
संसार में लहरे ओ३म् ध्वजा, अजमेर चलो अजमेर चलो।१०।

—प्रकाशचन्द्र आर्य प्रेमी आर्योपदेशक वेद मन्दिर अतरौली (अलीगढ़)

उत्सव—

आर्यसमाज कसबारी का वार्षिकोत्सव १९ एवं २० नवम्बर को समारोह से मनाया जायगा। —मन्त्री

—आर्यसमाज बिसौली (बदायूं) २१ से २३ अक्टूबर तक दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनावेगा। —वेदप्रकाश मन्त्री

—जो आर्यसमाजें अपने यहाँ आर्य वीर दल का शिविर लगवायें वे मुझ से सम्पर्क स्थापित करें। देवव्रतसिंह अधिष्ठाता
आर्यवीर दल आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर-प्रदेश

पयनिका

—जो आत्महत्यारे अर्थात् आत्मस्थ ज्ञान के विरुद्ध, कहते, मानने और करने हारे हैं, वेही लोग असुर अर्थात दैत्य राक्षस नामवाले मनुष्य हैं और वे ही बड़े अधमरूप अन्धकार से युक्त होके जीते हुए और मरण को प्राप्त होकर दु:खदायक देहादि पदार्थों को सर्वदा प्राप्त होते हैं। और जो आत्मरक्षक अर्थात् आत्मा के अनुकूल ही कहते मानते और आचरण करते हैं। वे मनुष्य विद्यारूप शुद्ध प्रकाश से युक्त होकर देव अर्थात् विद्वान् नाम प्रख्यात हैं। वे ही सर्वदा सुख को प्राप्त होकर मरने के पीछे आनन्दयुक्त देहादि पदार्थों को प्राप्त होते हैं।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती व्यवहारभानु

—पुत्रो को योग्य है कि माता पिता की सब प्रकार से सेवा करें।

—पुत्र को चाहिये कि जैसे माता अपने पुत्रो को सुख देती है, वैसे ही अनुकूल सेवा से अपनी माताओं को आनन्दित करें और माता-पिता को भी चाहिये कि अपने पुत्रो को अधर्म और कुशिक्षा से युक्त कभी न करें। यजु० १८–३६

—हे मनुष्यो! जिस पुत्र के विद्यमान रहने पर माता पिता को दु:ख होता है, और सत्कार नहीं होता है वह भाग्यहीन निरन्तर पीड़ित होता है, और जिस पुत्र की उत्तम सेवा से माता पिता प्रसन्न होते हैं, उसको प्रजाओं मे प्रशंसा और उसको सुख मिलता है।

—जो मनुष्य ईश्वर के आज्ञा किये धर्म का आचरण करते और निषेध किए हुए अधर्म का सेवन नहीं करते वे सुख को प्राप्त होते हैं। जो ईश्वर धर्माधर्म को न जनावे तो धर्माधर्म के स्वरूप का ज्ञान किसी को भी न हो। जो आत्मा के अनुकूल आचरण करते और प्रतिकूल आचरण को छोड़ देते हैं, वे ही धर्माधर्म के बोध से युक्त होते हैं इतर जन नहीं। यजु० १९–७७

—किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं होता, ऐसा मानकर धर्म में रुचि और अधर्म मे अप्रीति किया करें। यजु० ४०–१५

—परमेश्वर सब प्राणियों के सकल्प से उत्पन्न हुई बातों का भी श्रवण करता है, इससे कभी अधर्म के अनुष्ठान की कल्पना मनुष्य को नहीं करनी चाहिये। ऋ० १–२५–१०

—अच्छे कर्मों के बिना किसी की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती, इसलिए सब मनुष्यों को सर्वथा अधर्म छोड़कर धर्म कार्यों का ही सेवन करना चाहिये, जिससे ससार मे निश्चय करके अविद्या रूपी अन्धकार निवृत्त होकर विद्या रूपी सूर्य प्रकाशित हो। यजु० २–१३

—चारों आश्रमों मे रहने वाले मनुष्यो को मन वाणी और कर्म से सत्य कर्मों का आचरण कर पाप या अधर्मों का त्याग करके विद्वानों की सभा विद्या तथा उत्तम-उत्तम शिक्षा का प्रचार करके प्रजा के सुखों की उन्नति करनी चाहिये। —यजु० ३–४५

—नारायण मिश्र

श्री आर्य परीक्षा मन्त्री बने

दयानन्द कालेज अजमेर मे समाजशास्त्र के प्रवक्ता तथा आर्य विद्वान् श्री प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य को डा० सूर्यदेव जी शर्मा ने अपने द्वारा सचालित 'भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद' की विद्याविनोद, विद्यारत्न, विद्याविशारद, विद्यावाचस्पति आदि परीक्षाओं के सचालन हेतु मन्त्री नियुक्त किया है। श्री आर्य ने तत्सम्बन्धी व्यवस्थायें सभाल ली हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का वर्ष १९८३ का निर्वाचन

श्री एस० बी० जौहरी उप रजिस्ट्रार द्वारा शालीनतापूर्वक सम्पन्न

रजिस्ट्रार सोसाइटीज एव चिट फण्ड उत्तरप्रदेश के निर्णयानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वर्ष १९८३ का निर्वाचन रजिस्ट्रार द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री एस० बी० जौहरी डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा ४–९–८३ को शालीनता तथा नियमानुकूल सम्पन्न किया गया। श्री जौहरी जी तथा उनके सहायकों ने अपने कर्त्तव्यों का नियमानुकूल पालन करते हुये इस जटिल एव असाध्य कार्य की पूर्ति की तथा उन्हें कार्यालय के निर्धारित समय के अतिरिक्त अवकाश के दिनो मे कार्य करना पड़ा और निर्वाचन वाले दिन-रात्रि के ११ बजे तक कार्य किया गया।

श्री एस० बी० जौहरी
निर्वाचन अधिकारी

श्री एस० बी० जौहरी प्रतिभा सम्पन्न नवयुवक प्रान्तीय सेवा में रत अधिकारी हैं, व्यवहारशील हैं, विनम्र हैं और आर्यसमाज की भावनाओं का समादर करते हुये आर्यजनों से शिष्टतापूर्ण व्यवहार के लिए सबके प्रति आदर के पात्र रहे। अपनी कुशाग्र बुद्धि एव व्यवहार कुशलता के कारण जटिल और विवादग्रस्त विषयो का सबको सन्तुष्टि देते हुये सुलझा दिया। इस उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सम्पन्नता के लिये निर्वाचन अधिकारी श्री जौहरी जी एव उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता धन्यवाद के पात्र हैं। —सम्पादक

डा० सूर्यदेव शर्मा द्वारा ५०००) रुपये का पुनीत दान

आर्यसमाज अजमेर के वर्तमान उपप्रधान तथा भूतपूर्व मन्त्री तथा अनेक आर्य सस्थाओं को उदारतापूर्वक दान देने वाले डा० सूर्यदेव जी शर्मा ने अपनी रुग्णावस्था के बावजूद महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के पुनीत अवसर पर निर्माण की जा रही यज्ञशाला के निमित्त ५०००) (पांच) हजार रुपये का दान दिया है।

डा० सूर्यदेव शर्मा अस्वस्थ

आर्यसमाज अजमेर के भू०पू० मन्त्री एव डी०ए०वी० उ० मा०वि० के भू० पू० यशस्वी प्रधानाचार्य ८४ वर्षीय डा० सूर्यदेव शर्मा इन दिनों वृद्धावस्था जन्य दुर्बलतावश काफी अस्वस्थ चल रहे हैं। आर्यजगत् में दानवीर एव शिक्षा शास्त्री के रूप में आपने जो सेवा की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। पडित जी कुशल वक्ता, लेखक, उपदेशक एव सफल प्रशासक के रूप में विख्यात रहे हैं। वर्तमान में आर्यसमाज अजमेर के उपप्रधान हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे चिरायु हों और शीघ्र स्वास्थ्य लाभकर आर्यजगत् की पूर्ववत् सेवा करते रहें।

प्रो० कैलाशनाथसिंह प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

उदात्त भावना के आर्य कवि
श्री कृष्णलाल जी
कुसुमाकर

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०, सम्पादक आर्यमित्र

आगरा जनपद साहित्यकारों एवं बौद्धिक जनों की जन्म भूमि रही है। स्वर्गीय हरिशंकर शर्मा सम्पादकाचार्य तथा पं० बनारसीदास चतुर्वेदी से सभी परिचित हैं। उसी जनपद मे श्रीकृष्णलाल जी का जन्म होलपुरा ग्राम में आज से ७१ वर्ष पूर्व हुआ तथा उसी जनपद के प्रसिद्ध सुहाग नगर फीरोजाबाद आपका कर्म क्षेत्र रहा जहां शिक्षक के रूप में ज्ञान ज्योति का प्रसारण करते हुये यश प्राप्त किया और साहित्य जगत् में कुसुमाकर के उपनाम से प्रसिद्धि प्राप्त की और विगत पचास वर्षों से आर्योचित उदात्त भावना को साहित्यिक रचनाओ एव काव्य पयस्विनी द्वारा जन मानस से सम्मान अर्जित कर रहे हैं। आर्य मित्र के पाठक कुसुमाकर जी के नाम से भली भांति परिचित है क्यों कि इनकी रचनायें आर्यमित्र में प्रायः प्रकाशित होती रहती है।

कुसुमाकर जी के सद् प्रयासों से फीरोजाबाद साहित्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा। कविता के क्षेत्र में कुसुमाकर जी को प्रेरणा कविवर नाथूराम शंकरशर्मा तथा उनके सुयोग्य पुत्र डा.हरिशंकर शर्मा से मिली और घनाक्षरी सवैया की शैली में खड़ी बोली के माध्यम से सफल घनाक्षरी सवैया की कोमल भावना का समावेश होता है तथा उदात्त भावना से पूर्ण रचना में जहां ओज है वही रससिक्त घनाक्षरियों में माधुर्य और व्यङ्ग है। वयोवृद्ध साहित्यकार एवं लेखक पं० बनारसीदास जी कुसुमाकर के सम्बन्ध में लिखते हैं :—

'आर्य समाज का प्रमुख रूप से चालिस वर्षों से कार्य करते हुवे कुसुमाकर जी की साहित्यिक प्रवृत्तियां भी व्यापक रही है। स्वर्गीय सनेही और हरिशंकर शर्मा के काव्य क्षेत्र में अनुगामी रहे है। फीरोजाबाद ऐसे व्यापार प्रधान नगर में जो साहित्यकारों के लिये रेगिस्तान है। कुसुमाकर जी ने अपनी काव्य रचना द्वारा करिश्मा दिखा दिया है। इनकी कविताएं देश भक्ति एवं सामाजिक सुधार से ओत-प्रोत है। स्वयं काव्य रचना का दूसरों को काव्य प्रेमी बनाया। मुझसे बीस वर्ष छोटे हैं और बहुत समय काम के लिये पड़ा है।'

कुसुमाकर जी ने मौलिक रचनाएं प्रतिभापूर्ण रीति से लिखी है और उपनिषदों तथा वैदिक मन्त्रों के सफल पद्यानुवाद भी किये हैं। प्रार्थना के रूप में कुसुमाकर की यह घनाक्षरी पढ़िये :—

> आओ अखिलेश अविवेक की अमा को चीर,
> विमल विवेक की विभा को भरलेंगे हम।
> ज्योतित करेंगे मन्द मोह की विभावरी को,
> कामना के कुञ्ज में किलोल कर लेंगे हम।
> मन की मलीनता मिटावेंगे मनोज्ञता से,
> वारेंगे कुलीनता कलंक हर लेंगे हम।
> भावने लगेगा मन मानस मरालमञ्जु,
> वैभव का वारिधि सहर्ष तर लेंगे हम॥

महर्षि दयानन्द के प्रति कुसुमाकर जी की भावना अर्पित है :—

> देव दयानन्द ने दीपक जला के दिव्य,
> जड़ जन जड़ों में ज्योति जीवन जगागया।
> क्रान्ति भरे भारत में क्रान्ति की अनोखी आग,
> जातियों के जाल विकराल में लगा गया।
> सभ्यता सुधाधर निकाले वेद वारिधि से,
> प्राच्य अभिमान का महान सुमार्ग दिखा गया।
> स्वार्थ के सितारे ज्ञान-सूर्य में विलीन हुए,
> तुच्छ भेद-भावना का रावण जला गया॥

शिव पर्व के अवसर पर बोध रात्रि के सम्बन्ध में कवि के उद्गार है—

> आओ शिवरात्रि आत्मज्योति को जगायें यहां,
> एक बार सत्य की ओर तो निहार ले।
> महर्षि दयानन्द का चुकाना है कितना ऋण,
> कितना किया है, करना है, यह तो विचार ले।
> वेद-विधि विहित बनाए है कितने समाज,
> निज सस्थाओ ओर दृष्टि को पसार लें।
> 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाते हैं नित्य,
> किन्तु एक बार अपने में पूर्ण आर्यत्व को उभार ले॥

आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कुसुमाकर जी कहते हैं :—

> तुम में प्रताप सा प्रताप भी रहा है कभी,
> तुममें शिवा सा शौर्य साहस निराला था।
> गुरु गोविन्द सा ओज भी अमोघ रहा,
> बन्दा बैरागी सम अजेय व्रत पाला था।
> सगर्व भक्त बाला हकीकत सा धर्मवीर,
> दिव्य दयानन्द सा वेद व्रत पाला था।
> कहैं कुसुमाकर कोई माने या न माने बात,
> जग में व्यापक आर्य वीरों का ही बोल बाला था॥

उत्साही कुसुमाकर में वीररस भी हिलोरें लेता है—चेतक विषयक पद देखिये।

> चेतक चपल चूमता था मेघ माडल को,
> पवन प्रचण्ड वेग मन्द पड़ जाता था।
> कौंधा सा लपक-लपक विलास करता रणक्षेत्र में,
> बैरियों के शीश को निशंक रौंद देता था।
> तीर के समान चीर-चीर मुगलों के झुण्ड,
> टाप लीस देता वैरी मद मिट जाता था।
> राणा रणधीर का प्रतापी प्राण प्यारा अश्व,
> जिधर जाता उधर ध्वज-निशान मिट जाता था॥

कवि की कल्पना घट को सजीवता प्रदान करते हुये कहती है :—

> सुन्दरी सुकुमारियों के शीश को सजाते रहे,
> हमसे ही शोभित अनेकों कटि तट है।

कवि कुसुमाकर जी की रचनायें सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। 'आर्यमित्र' पर उनकी सदैव कृपा रहती है काव्य संग्रह कुसुमाञ्जलि तथा प्रमुख प्रकाशित रचनायें हैं—गो-गौरव, चिनगारी, मधु बाला, ग्राम गीताञ्जलि, आलोक, वेद-वीणा सुमञ्जली आदि।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अज्ञात जीवनी विषयक सत्यान्वेषण कसौटी पर

[श्री काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

(गतांक से आगे)

(४) 'स्वामी जी ने जब 'थ्योसोफिस्ट' में अपना आत्म चरित्र प्रकाशनार्थ लिख-लिखाकर १८७९-८० में भेजा तब उनके मस्तिष्क में यह बात रही होगी कि वे अपना एक आत्म चरित्र मार्च १८७३ में अपने कलकत्ता वास के दौरान भी लिखा चुके हैं, जिसे उन्होंने उनके जीवन काल में प्रकाशित न करने का निर्देश (उनके लेखकों को) दिया हुआ। अतः उन्होंने अपनी १८७९-८२ में लिखी। लिखाई गई प्रचलित आत्मकथा में कुम्भ मेले में हरिद्वार पहुंचने तक के अति संक्षिप्त विवरण को लिखाकर केवल उन यात्रा वृतान्तों को ही लिखा जिसको उन्होंने अपने कलकत्ते वाले गोपनीय आत्म चरित्र में भावी जिज्ञासुओं को लिखाने के लिये छोड़ दिया था। [शोध प्रबन्ध पृष्ठ (३)]

(५) 'मेरे परम मित्र पंडित प्रवर ईश्वरचन्द्र जी विद्यासागर से अनुरोध पत्र आया है। योग-साधना के बारे में आपके अनुभव में जो कुछ है, आप करीब-करीब सब कुछ ही बोलने की कृपा करें। क्योंकि किताबों में ज्ञान का रहस्य मिलता है। साधना का रहस्य नहीं मिलता है। विद्यासागर जी का अनुरोध मुझे सहर्ष स्वीकार है, मैं यथाशक्ति इसका वर्णन करूंगा।' [अज्ञात जीवनी पृष्ठ १३५]

(६) 'इसके [अज्ञात जीवनी के) प्रवचन काल में स्वामी जी के पास केवल लेखक गण ही रहते थे, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, पं. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, श्री केशवचन्द्र सेन आदि सज्जन नहीं।'

[शोध प्रबन्ध पृष्ठ (२)]

(७) 'पुस्तक के पूर्वार्द्ध (अनुसंधान) में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती योगी ने व्यर्थ में ही बिना सोचे-समझे १५१ पृष्ठों में बहुत कुछ असंगत लिख दिया है, यहां तक कि पं० दीनबन्धु जी वेद शास्त्री के अपने ८ पृष्ठीय लेख में भी कई एक त्रुटियां हैं जिसके कारण यह पुस्तक अनेक आपत्तियों का शिकार होकर रह गई है। कुछेक काल्पनिक चित्रों ने भी आपत्तियों को आमंत्रित किया है।'

[शोध प्रबन्ध पृष्ठ वही (२)

समीक्षा :-खण्ड ४ (१) में उद्धृत स्वामी जी के कथन 'मैंने जहां तक सम्भव हुआ·········· सब कुछ कहा' में यदि 'सब कुछ कहा' का आशय 'सब कुछ लिखाया' मान लिया जाय तो भी खण्ड ४ (२) के वाक्य 'स्वामी जी एकान्त में ग्रन्थ रचना में संलग्न रहे' का आशय 'सब कुछ लिखाया' नहीं हो सकता क्योंकि 'किसी ग्रन्थ का लिखाना' स्वयं किसी ग्रंथ की रचना में संलग्न रहने से सर्वथा भिन्न है। अतएव शोध प्रबन्ध के प्रस्तुतकर्ता का यह अनुमान कि 'स्वामी जी उस अवधि में (२२ से ३१ मार्च १८७३ तक) आत्म चरित्र लिखाते रहे' ठीक नहीं कहा जा सकता क्योंकि हो सकता है कि स्वामी जी उस समय किसी अन्य छोटे या बड़े ग्रन्थ की रचना में संलग्न रहे हों जिसके नाम का उल्लेख स्वामी जी के जीवन चरित्र में नहीं हो पाया। पुनः खण्ड ४ (३) के लेख के अनुसार जब 'योगी के आत्म चरित्र' (अज्ञात जीवनी) के लेखकों के नाम, लिखने की तारीख और किस रूप में प्राप्त हुये हैं आदि आवश्यक जानकारी अप्राप्त है तो उसका लिखना और भी अधिक संदिग्ध हो जाता है।

खण्ड ४ (४) का यह लेख कि 'स्वामी जी ने सन् १८७९-८० में लिखी/लिखाई अपनी आत्मकथा में केवल उन यात्रा वृतान्तों को ही लिखा जिनको उन्होंने अपने कलकत्ते वाले गोपनीय आत्म चरित्र में भावी जिज्ञासुओं को लिखाने के लिये छोड़ दिया था' और भी अधिक अविश्वसनीय एवं हास्यास्पद है क्योंकि स्वामी जी को यह कैसे ज्ञात था कि भावी जिज्ञासु अभी और भी आत्म चरित्र लिखावेंगें।

खण्ड ४(५) में लिखे अनुसार पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का अनुरोध था कि योग-साधना के बारे में उनके (स्वामी जी के) अनुभव में जो कुछ था वह सब कुछ बोलने (लिखाने) की कृपा करें। किन्तु यदि खण्ड ४(६) में उद्धृत लेखानुसार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रभृति सज्जन लिखाने के समय वहां मौजूद नहीं रहते थे तो उन्हें साधना का रहस्य कैसे ज्ञात हुआ होगा क्योंकि पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अनुरोध पत्र के अनुसार किताबों से ज्ञान का रहस्य मिलता है साधना का नहीं। इस तरह भी कलकत्ते में आत्म चरित्र लिखाने की बात संदिग्ध हो जाती है।

पुनः खण्ड ४(७) में उद्धृत शोध प्रबन्ध लेखक के कथानुसार यदि स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती ने पुस्तक (अज्ञात जीवनी के पूर्वार्द्ध (अनुसंधान) में (दो, चार पृष्ठों में नहीं बल्कि) १५१ पृष्ठों में बिना सोचें समझे बहुत कुछ व्यर्थ में ही असंगत लिख दिया है तथा प० दीनबन्धु जी वेद शास्त्री के लेख में भी कई एक त्रुटियां हैं तो इस बात की क्या गारन्टी है कि इन महानुभाव द्वय ने अज्ञात जीवनी के अनुवाद करने या लिखने में भी बहुत कुछ गड़बड़ी न की हो? इस प्रकार भी अज्ञात जीवनी की प्रामाणिकता निरस्त हो जाती है।

शोध प्रबन्ध के लेखक ने प्रचलित आत्मकथा या योगी के आत्म-चरित्र में जहां कहीं किसी लेख को अस्पष्ट अथवा किसी घटना-क्रम का तारतम्य विशृंखल पाया वहीं उन्होंने लिख दिया कि इस स्थल पर स्वामी जी ने वचन कौशल से काम लिया है। ऐसा लिखकर भी उन्होंने स्वामी जी को मिथ्यात्व अथवा कपट-दाँव से मुक्त रखा है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति लोगों को संशयजाल में आच्छन्न रखने के भाव से किसी बात को सही ढंग पर न कहकर भिन्न प्रकार से या विपरीत वर्णन करे तो वह असत्य या कपट ही कहा जायगा। उदाहरण के लिये शोध प्रबन्ध के पृष्ठ २ के कालम १ में, पृष्ठ ४ के (ग) खण्ड में, पृष्ठ ५ के कालम १ व २ में तथा पृष्ठ ६ के कालम २ में तत्सम्बन्धी वाक्य दृष्टव्य हैं जिन्हें हम यहां लेख के अनावश्यक विस्तार भय से नहीं दे रहे। इसी प्रकार शोध प्रबन्ध कर्त्ता ने ७ मैंने जहां तक सम्भव हुआ इन विषयों के बारे में सब कुछ कहा' स्वामी जी के इस तथा कथित कथन से यह अनुमान लगाया है कि स्वामी जी ने बहु सब कुछ फिर भी नहीं लिखाया जो वे लिखा सकते थे। किन्तु जब स्वामी जी ने वंश परिचय अपने माता-पिता के नामादि को छोड़कर शेष सब कुछ लिखा दिया तो उन्हें वचन कौशल से काम लेने अथवा किसी बात को न लिखाने या छिपाने की क्या आवश्यकता थी मुख्यतः उस अवस्था में जब कि उन्होंने नियुक्त जीवनी लेखकों से यह अनुरोध कर दिया था कि 'मेरे जीवन काल में यह सब मुद्रित न हों।'

[क्रमशः]

मानव का चरम लक्ष्य क्या है ?

[श्री प्रकाशवती उप प्रधाना, आर्य स्त्री समाज बदायूं]

मानव का चरम लक्ष्य सुख नहीं वरन ज्ञान है। मनुष्य के लिये सुख–दुःख दोनों ही महान शिक्षक हैं। कभी-कभी तो दुःख–सुख से भी अधिक शिक्षा देता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुये हैं। दुःख और दरिद्रता ने ही उन्हें अधिक शिक्षा दी है। प्रशंसा की अपेक्षा निंदा के आघात ने ही उनकी अन्तःस्थ ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित किया है।

अतएव समस्त ज्ञान चाहे वह व्यावहारिक हो चाहे परमार्थिक हो हमारे अन्दर ही है। इसको हम स्वाध्याय द्वारा और कर्तव्य क्रिया रूप में परिणत करते जावेंगे तो हमारे ज्ञान की वृद्धि होती जायेगी।

यदि किसी मनुष्य के चरित्र को देखना हो तो उसके बड़े कार्यों से नहीं उसके साधारण कार्यों से उसके चरित्र की जांच होती है। वास्तव में महान् वही है जिसका चरित्र सदैव सब अवस्थाओं में समान रहता हो।

इच्छा शक्ति सबसे प्रबल है। इच्छा शक्ति चरित्र से उत्पन्न होती है और चरित्र कर्मों से बनता है। जैसा कर्म होगा इच्छा शक्ति का विकास भी वैसा ही होगा। प्रबल इच्छा शक्ति सम्पन्न जितने भी महापुरुष हुये हैं, उनकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल थी कि वे विश्व में महाशक्ति का संचार कर गये हैं। यह शक्ति उन्हे युग–युगान्तर ज्ञान पूर्वक कर्म करते रहने से प्राप्त हुई थी।

मनुष्य महान् से महान् अथवा नीच से नीच कार्य करने का स्वयं ही अधिकारी है यह अधिकार कर्म द्वारा ही प्राप्त होता है। हम संसार में क्या ग्रहण कर सकते हैं सबका निर्णय कर्म द्वारा ही होता है। हमारी वर्तमान अवस्था हमारे पूर्व कर्मों का फल है। और भविष्य में जो कुछ भी हम होना चाहें उसकी शक्ति भी हमीं में है।

अतएव हमें कर्म करने की शैली जानना चाहिए। कर्म करते समय ध्यान रखना चाहिए कि हमारी शक्तियां निरर्थक न जाने पावें। गीता का कथन है–कि कुशलता से अर्थात् वैज्ञानिक प्रणाली से कर्म करना।' योगः कर्म कौशलम्' योग वही है जिससे हमारे कर्तव्य ठीक प्रकार से संचालित होते रहें। लेकिन कर्म की कुशलता बिना सत्य ज्ञान के असम्भव है।

'ज्ञानेन मुक्ती'–दुःख से छूटने का मुख्य कारण ज्ञान है।

मनुष्य के कार्य कई एक हेतु लिये होते है क्योंकि बिना हेतु के कोई भी कार्य नहीं होता। कुछ लोग यश के लिये, कुछ पैसे के लिये, कुछ अधिकार प्राप्त करने के लिये, कुछ स्वर्ग प्राप्ति के लिए, कुछ अपने मृत्यु के पश्चात् ख्याति फैलाने के हेतु होते हैं। लेकिन कुछ ऐसे नर रत्न होते हैं जो केवल कर्म करने के लिये ही कर्म करते हैं। जैसे गरीबों की भलाई, किसी की सहायता आदि इसी में उनका विश्वास तथा प्रेम हैं।

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतो ऽस्ति न कर्म लिप्यते नरः॥'

मनुष्य संसार में कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। त्याग पूर्वक करने वाले पुरुष में कर्म लिप्त नहीं होता।

प्रेम, सत्य, निःस्वार्थता ही हमारे सर्वोच्च आदर्श हैं। क्योंकि वे ही शक्ति के महान् दाता है। इसका महत्व हम समझते हैं। परन्तु कार्य रूप में लाना बड़ा कठिन है। इसके लिये हमें प्रबल संयम की आवश्यकता है। हमें दूरदर्शिता के लिये धैर्य नहीं होता, इसीलिये हम दुष्ट और नीचों की गणना में आ जाते हैं। यहीं हमारी कमजोरी है और शक्ति हीनता है।

जो भी कार्य हमारे सामने आते जायें, हम उनको ज्ञान पूर्वक करते जायें। आरम्भ में हमारे कार्य स्वार्थ पूर्ण होंगे, पर धीरे-धीरे जब हम अच्छे कार्यों के अभ्यस्त हो जायेंगे। और अपने जीवन पथ में अग्रसर होते हम अन्त में पूर्ण रूप से निःस्वार्थ बन जायेंगे। हमारी समस्त शक्तियां केन्द्रित होती चली जायेंगी, और हमें कर्म करने की शक्ति तथा ज्ञान दोनों प्राप्त हो जायेंगे।

हमें कर्म योगियों की भांति कर्म करते रहना चाहिए। चाहें हम एकान्त वासी हों चाहें शोर भरी सड़क के किनारे हों। अपने मन के ऊपर विजय प्राप्त करनी चाहिए। इसी के हमें 'यम–नियम' की साधना को व्यवहार में लाते हुए संयम का रहस्य जानना चाहिए। बस यही हमारे कर्म का आदर्श है, इसी के द्वारा हम अपने चरित्र का निर्माण कर सकेंगे। तभी हमारा 'लक्ष्य' जो सुख नहीं वरन् 'ज्ञान' है हमें प्राप्त हो सकेगा।

कुसुमाकर

(पृष्ठ ७ का शेष)

आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक गोस्वामी नारायण प्रिय जी कुसुमाकर जी के ग्राम के निकट कोटला के निवासी हैं। उन्होने वर्षों से कुसुमाकर जी को निकट से विविध रूपों में देखा है। उनके प्रशंसकों में से हैं और उन्हीं के अनुरोध पर मुझे भी फीरोजाबाद में कुसुमाकर जी के दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। जैसा उनके सम्बन्ध में गोस्वामी जी से सुना था उससे बहुत अधिक उन्हे पाया। सहृदयता और अतिथि सेवा उनका आराध्य गुण है। कामना है कि कवि रत्न कुसुमाकर जी :–

जीवन में बन वासंती प्रभायुत,
अमलतास फूल सम फूले फले रहो,
कुसुमाकर बन करके कुसुमाकर तुम,
सदा रसिकों के मन में रमे रहो।
शत शरद - बसन्त विहंसते हुये,
अधरों पर मृदु मुस्कान लिये हुए पार करो।
काव्य - यश कौमुदी प्रेमियों के,
मन - मानस पर युग - युगों तक।
शीतलता भरी हुई – बिखरी रहेगी॥

आर्य समाज कृष्णनगर मथुरा का निर्वाचन

प्रधान–श्री रामकुमार सहगल
मन्त्री–श्री परमानन्द चौबदार
कोषाध्यक्ष–श्रीमती लज्जावती

सम्पादक के पत्र

'सुमेधा' का भ्रामक प्रचार

श्रीमन्,

आपके प्रतिष्ठित पत्र आर्यमित्र के द्वारा हम निम्न हस्ताक्षरी 'सुमेधा' वर्ष–३ अंक–९ सितम्बर १९८३ मे पृष्ठ २ कालम १ में प्रो० कैलाशनाथ सिंह सभा प्रधान का अभिनन्दन शीर्षक समाचार मे जो भ्रामक और तथ्य विहीन बातो का समावेश है उसका खण्डन करके सत्यता पर प्रकाश डाल रहे हैं।

पत्र में प्रकाशित है कि आर्य समाज ब्रह्मपुरी के कुछ पदाधिकारियों ने भाग लिया। जबकि समस्त सभासद् और स्त्री समाज ने अभिनन्दन किया। तथा पर्याप्त उपस्थिति थी। नगर की समाजें तो तब आती जब मेरठ उप प्रतिनिधि सभा की ओर से आयोजन होता वैसे मेरठ नगर के बहुत से नागरिक और सम्भ्रान्त आर्यजन उपस्थित थे।

सुमेधा में प्रकाशित है कि आचार्य विश्व बन्धु ने अध्यक्षता की जो प्रधान द्वारा अविधि कार्यों के कारण सभा से निष्कासित है। तथ्य यह है कि अन्तरङ्ग ने जिस बैठक में आचार्य विश्वबन्धु के निष्कासन का निर्णय लिया उसमे प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह उपस्थित नहीं थे। उन्हीं दिनो में उनके पिता का देहावसान हो गया था।

खेद है कि सुमेधा में जो कुछ प्रकाशित हुआ है वह प्रधान सभा की गरिमा के विरुद्ध है और फिर आश्चर्य इस बात का है कि सुमेधा के निर्देशक श्री इन्द्रराज जी हैं जो सभा मन्त्री है। हम एक स्पष्टीकरण और दे रहे है कि श्री इन्द्रराज जी स्वयं वार्षिक निर्वाचन से पूर्व ज्वालापुर में आचार्य विश्वबन्धु से सहयोग मांगने गये और निर्वाचन के दिन लखनऊ मे सभा की यज्ञशाला मे आचार्य जी की अध्यक्षता मे मतदाताओ को प्रभावित करने के लिये भाषण दिया। एक और उल्लेख है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा निष्कासित नेता का श्री इन्द्रराज जी ने उनका प्रभात आश्रम भोला-झाल में स्वयं स्वागत किया। इन्द्रराज जी ने मुजफ्फर नगर में स्वयं आचार्य विश्वबन्धु की उपस्थिति में भाषण दिया।

खेद है कि 'सुमेधा' को इस प्रकार से भ्रामक और तथ्यहीन समाचार प्रकाशित नहीं करना चाहिए। आशा है कि 'सुमेधा पत्रकारिता के उच्चादर्शों का पालन करके आर्य जगत की सेवा करेगा।

भवदीय–
–खेम सिंह आर्य
उपमन्त्री सभा
–वीरेन्द्र रत्नम–उपमन्त्री सभा

मास्टर जी ने एक लम्बी शिष्य परम्परा छोड़ी

[श्री ब्रह्मदत्त स्नातक (भारतीय सूचना सेवा रिटायर्ड)
पता–९/१४४ रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–११००२२]

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के सबसे पुराने अध्यापक तथा प्रबन्ध जोधसिंह वर्मा का हाल मे (२ अगस्त को) वृन्दावन में देहावसान हो गया। निधन के समय वर्मा जी की आयु ९९ वर्ष थी। जीवेम् शरदः शतम् मे उनकी पूरी आस्था थी। वे अन्तिम समय तक पूर्ण चेतना मे रहे और अपने परिवार के सदस्यों को अपने स्वर्ग प्रयाण की पूर्व सूचना देकर उन्होने प्राणोत्सर्ग किया।

गुरुकुल वृन्दावन के निर्माण मे यदि किसी एक अध्यापक का सबसे अधिक योगदान रहा है तो वह हैं स्व० मास्टर जोधसिंह जी। सन् १९१३ मे वृन्दावन के पण्डे-पुजारी गुरुकुल की स्थापना का घोर विरोध करते थे। वे नहीं चाहते थे कि आर्य समाज की कोई संस्था वृन्दावन के पौराणिक तीर्थ स्थान में स्थापित हो। वे सब मिलकर गुरुकुल का विरोध करते थे। उस समय इन्होने रात–रात भर मजदूरों के साथ खड़े रहकर सड़क का निर्माण कराया। यह तो हुई उनके द्वारा की गई विशाल सड़क के निर्माण की संक्षिप्त कहानी।

परन्तु इससे आगे मास्टर जी का योगदान मानव के निर्माण का रहा। उनकी विशाल शिष्य परम्परा है। अपने हजारों शिष्यों में से उन्होने श्रेष्ठ शिष्यो की सूची बनाई हुई थी। उस सूची में साहित्यकार, विद्वान्, मेधावी, प्रतिभाशाली, प्रशासक, राजनीतिज्ञ, प्रचारक, शिक्षक आदि सभी वर्गों के शिष्य हैं। डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री (मेरठ) पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री, आचार्य बृहस्पति, वैद्य विद्याभूषण, रमेशचन्द्र, आचार्य विश्वेश्वर, रामेश्वर, सर्वजित, ब्रह्मानन्द, वीरसेन, रत्नाकर, ब्रह्मदत्त, भूदेव, नरदेव, राजकिशोर, जयकुमार, सुरेन्द्रपाल आदि प्रमुख हैं। कुछ ऐसे भी वरेण्य शिष्य हैं जिनका स्मरण वे सदा आर्य समाज और शिक्षा क्षेत्र के कारण करते थे। स्व० पं० शंकरदेव पाठक, श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्री वीरेन्द्र सिंह पमार, भारत भूषण, विजयपालसिंह आदि का स्मरण वे सदा बड़े आदर के साथ किया करते थे।

मास्टर जी के चार पुत्र और तीन पुत्रियां हैं, जिनमें से तीन पुत्र शिक्षा और साहित्य जगत् में ही कार्यरत है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा० विजयेन्द्र स्नातक दिल्ली विश्वविद्यालय के आचार्य और अध्यक्ष रहकर सेवा निवृत्त हुए हैं। श्री सुरेन्द्रसिंह दिल्ली प्रशासन में प्रिंसिपल पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री राजेन्द्रसिंह वर्मा चम्पा अग्रवाल कालेज में अध्यापक हैं उनकी पुत्री भी कन्या विद्यालय में प्रिंसिपल हैं। वर्मा जी का विशाल परिवार है जिसमे पांच पीढ़िया उन्हे देखने को मिलीं।

ऋषि निर्वाण शताब्दी का उद्देश्य

संसार में वेदों का संदेश पहुंचाना है।

दयानन्द ने अन्धकार मे सोई हुई मानवता को जगाया था। दयानन्द के सपनो का भारत बनाने के लिए लाखों कार्यकर्त्ता समय देने वाले चाहिए, ताकि ऋषि का सदेश जन-जन तक पहुचाया जा सके। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी आगामी ३-४-५-६ नवम्बर को अजमेर नगरी मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाई जा रही है। आर्य समाज के इतिहास मे यह अभूत पूर्व समारोह होगा। समय बड़ी तेजी के साथ भाग रहा है। आर्यजनो महर्षि को श्रद्धाजलि देने के लिये अभी से समारोह की तैयारी में जुट जाओ। निर्वाण शताब्दी के मुख्य आकर्षण एव कार्यक्रम तभी सफल होंगे, जब महर्षि का एक-एक सैनिक अपना सक्रिय योगदान देगा। शताब्दी मेला एक समारोह या सम्मेलन के रूप मे ही न रह जाये बल्कि यह देव दयानन्द के सपनो का आर्य राष्ट्र बनाने की दिशा मे एक ठोस प्रयास बन कर आए तो हम अपना कार्य सफल समझेगे, और तभी महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—खेम सिह आर्य
उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

वनस्पति घी के बहिष्कार का निर्णय

आर्य समाज राजाजी पुरम् तालकटोरा, लखनऊ के कार्य कर्त्ताओ की बैठक मे निर्णयानुसार वनस्पति घी का प्रयोग न करने का सकल्प किया है। आर्य समाज राजाजीपुरम् के मन्त्री श्री खेमसिह आर्य ने बताया कि वनस्पति घी मे गाय की तथा सूअर की चर्बी मिलाने से आर्य जनता के अत्यन्त असन्तोष तथा अविश्वास के कारण धर्मनिष्ठ नागरिको ने वनस्पति घी मे प्रयोग का सामाजिक बहिष्कार करने का निर्णय किया है।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम (उ० प्र०)

बिन्दकी—फतेहपुर

माननीय उप सचालक, मण्डल सचालक, नगर सचालक आर्य वीर दल……

आपको ज्ञात होगा कि अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आगामी ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है। आपके प्रयास से आपके क्षेत्र से कितने आर्य वीर पूर्ण गणवेश मे वहाँ पहुच रहे हैं पहुचने वाले आर्यवीरों की सूची तीन प्रतियों मे हमारे पास शीघ्र भेजें जिससे हम वहाँ आर्य वीरों के ठहरने, भोजन आदि का उचित प्रबन्ध करा सकें।

नोट —सभी आर्यवीरों को गणवेश ही मे पहुचना है। ध्यान रहे! पत्र उत्तर शीघ्र भेजें।

—डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल'
प्रान्तीय संचालक
उत्तर प्रदेश
आर्य प्रकाश आर्य, कार्यालय मन्त्री

आर्य कुमार सभा

आर्य समाज मण्डी बांस के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी ने २८।७।८३ के प्रस्ताव के अनुसार निम्नलिखित तदथ समिति मनोनीत की है।

प्रधान—श्री वेद प्रकाश जी
उपप्रधान—श्री सुनीत कुमार रस्तोगी
मन्त्री—बृजेन्द्र सिंह दास
उपमन्त्री—श्री सुदर्शन गुप्ता
कोषाध्यक्ष—श्री अशोक भटनागर
सम्प्रेक्षक—श्री वीरेन्द्रनाथ गुप्ता

दिनाक २८।७।८३ के अन्तरङ्ग के प्रस्ताव के अनुसार आर्य कुमार सभा के प्रधान हैं ही।

सयोजक
—बृजेन्द्र सिंह दास

उत्सव

आर्य समाज कोसी कलां

आर्य समाज कोसी कला (मथुरा) का वार्षिकोत्सव १७ से २० अक्टूबर तक मनाया जायगा।

मन्त्री

आर्य समाज दानापुर

आर्य समाज दानापुर (पटना) का उत्सव ९ से १२ अक्टूबर तक मनाया गया।

मन्त्री

आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ

आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ का उत्सव ई ब्लाक मे १० से १२ दिसम्बर तक मनाया जायगा।

—राजेन्द्र प्रकाश
मन्त्री

आर्य समाज जलालपुर (गाजियाबाद)

आर्य समाज जलालपुर (गाजियाबाद) का उत्सव १५, १६, १७ अक्टूबर को मनाया जा रहा है।

मन्त्री

आर्य समाज आर्यपुरा बिरौरा (बुलन्दशहर)

इस समाज का उत्सव १८, १९, २० अक्टूबर को मनाया जायगा।

—रामपाल सिंह
प्रधान

आर्य समाज रसौली

आर्य समाज रसौली बाराबकी का उत्सव २१ से २३ अक्टूबर तक मनाया जायगा।

मन्त्री

—आर्य समाज सदर बाजार कैण्ट लखनऊ की अतिथिशाला मे ठहरने वाले को आर्य समाज का प्रमाणपत्र लाना आवश्यक है। तीन दिन ही ठहर सकेगा। प्रत्येक को दैनिक सत्सग मे सम्मिलित होना आवश्यक होगा। कोई भी मादक वस्तु का सेवन न कर सकेगा प्रत्येक व्यक्ति को २) तथा पखा चलाने पर ३) प्रतिदिन देना होगा।

—केदारनाथ फक्कड़
मन्त्री

—२५ सितम्बर को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का सम्मेलन श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष—45993 ,[illegible]
रजिस्टर्ड नं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वा० आश्विन २४
आश्विन शु० १०, रविवार
१६ अक्टूबर १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

—आर्य समाज दशाश्वमेध वाराणसी के उप प्रधान श्री शिव प्रसाद जी आर्य के पूज्य पिता एवं शिवपुरा चेतगंज के प्रतिष्ठित नागरिक श्री मोहन लाल जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया।

मन्त्री

निर्वाचन

जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा गोरखपुर
प्रधान—पं० द्विजराज शर्मा
मन्त्री—श्री के० एम० सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री भीम चन्द्र शर्मा

आर्य युवक सभा फीरोजपुर छावनी
प्रधान—श्री सुरिन्द्र गुप्त
मन्त्री—श्री जितेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष—बलराज खुराना

आर्य समाज कृष्ण पोल बाजार जयपुर
प्रधान—श्री सरस्वती प्रसाद
मन्त्री—श्री ओ३म प्रकाश
कोषाध्यक्ष—श्री सूरज नारायण

आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा
प्रधान—श्री हरिगोपाल सिंह चौहान
मन्त्री—श्री रोशनलाल गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री पूर्ण चन्द्र

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ अक्टूबर ८३ को समाप्त हो जायेगा। वी० पी० भेजने मे ४.५० अधिक पोस्टेज लगते हैं, इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

३६८, ४८३, २२४८, ३२१०, ३२४०, ३२९२, ४६२२, ५०५५, ५३५२, ५३५४, ५३६१, ५९५४, ५९७३, ५९८०, ६२३४, ६४११, ७०२४, ७०२५, ९०२९, ९०३५, ९२०५, ९२८०, ९३२३, ९५३४, ९५४६, ९७२१, ९७३१, ९७३२, ९७३९, ९९९६, १०००२, १०००३, १००१० ११०३९, ११२९३, ११३०६, ११३१८, ११३३३, ११३४१, ११३५४, १२४१६, १२४१७, १२४२५, १२४२८, १२४२९, १२७३७, १२७३८, १२७३९, १२७४०, १२७४१, १२७४३, १२७४४, १२७४५, १२७४८, १२७४९, १२७५०, १२७५१, १२७५२, १२७५३, १२७५४, १२७५५, १२७५७।

—विनीत
व्यवस्थापक

किशनलाल का देहान्त

बरेली—उर्दू के प्रसिद्ध शायर एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री किशन लाल 'साकिब' का गत दिनों दिल्ली मे देहान्त हो गया। उन्होंने जीवन के अन्तिम समय तक आर्य समाज की सेवा की। वे सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी मास्टर बलदेव प्रसाद 'सोजन' के शिष्य थे।

साकिब साहब ने, स्वाधीनता संग्राम, हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह आदि मे सक्रिय भाग लिया। उर्दू-हिन्दी के वे ओजस्वी शायर थे। वृद्धावस्था में भी वे काफी सक्रिय थे।

बरेली की साहित्यिक गतिविधियों मे बाबू चन्द्र नारायण एडवोकेट के साथ साकिब साहब का भी प्रमुख हाथ रहा है। वे एक शायर ही नहीं, वरन् रंगमंच के सफल कलाकार एवं ड्रामा निर्देशक थे। आर्य जगत् के प्रसिद्ध साहित्यकार बाबू चन्द्र नारायण एडवोकेट के लगभग सभी ड्रामों का निर्देशन श्री किशन लाल 'साकिब' ने ही किया था। उनके निधन से आर्य समाज की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण साहित्य जगत् की महान क्षति हुई है। समाज का मंच अब एक ओजस्वी प्रचारक से वंचित हो गया।

मैं सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से शाकिब बरेलवी को हार्दिक श्रद्धा जलि अर्पित करता हूँ।

—सन्तोष 'कण्व'

सूक्ति सुधा सागर

धर्मवीर ग्रन्थमाला का यह साहित्य रत्न ११११ सूक्तों मे लिखा गया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन १० अध्यायों मे श्री पं० शिवाकान्त जी उपाध्याय एम० ए० ने किया है। इस ग्रन्थ का मूल्य केवल मात्र २५) प्रति है।

२८ अक्टूबर १९८३ तक जिनके आडर और मनीआर्डर प्राप्त होंगे उन्हें २५ प्रतिशत छूट दी जायेगी।

एक लाख रुपयों के दान देने का संकल्प

महर्षि दयानन्द उपदेशक महा विद्यालय अजमेर के सञ्चालनार्थ परोपकारिणी सभा अजमेर को इस ग्रन्थ की बिक्री से एक लाख रुपयों का दान प्रदान किया जायेगा।

आर्डर और मनिआर्डर आज ही इस पते पर भेजें।
वेदपथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग
९८५७ महात्मा ठाकुरदास सराय रुहेला नई दिल्ली—५
फोन—५८६५४५

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से [illegible] शर्मा द्वारा मुद्रित

लखनऊ—आ० कार्तिक १, कार्तिक कृ० २, रविवार सम्वत् २०४० वि०, २३ अक्टूबर सन् १९८३ ई०

सभा प्रधान प्रो. कैलाशनाथसिंह द्वारा आर्यसमाज ब्रह्मपुरी के नवनिर्मित कमरे उद्घाटित

मेरठ २६ सितम्बर-आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ के नवनिर्मित कमरो का उद्घाटन प्रो०कैलाशनाथसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०के कर कमलो द्वारा प्रात ९ बजे किया गया, जिसमे आर्य समाज द्वारा सचालित दोनो विद्यालयो म (चावली देवी आर्य इण्टर कालिज व दयानन्द शिशु सदन) के बच्चो ने मनमोहक सास्कृतिक कार्यक्रमो का प्रदशन किया। शहनाई पर कव्वाली दहेज प्रथा पर नाटक तथा नन्हे नन्हे बच्चो द्वारा अमर हमारी धरती माता अमर हमारा देश है, सामूहिक गान विशेष रूप से सराहे गये।

प्रो० कैलाशनाथसिंह जी को उनके पुन प्रधान चुने जाने पर अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रधान जी ने कहा कि इस विद्यालय के कार्यक्रम देखकर लगता है ऋषिवर की कामना यहा साकार हो रही है। विद्या अर्जित करके व्यक्ति विनम्र हो जाता है, छात्राओ की सरक्षा के साथ साथ गुणो का समावेश तथा वैदिक धर्म के अनुसार बच्चो के निर्माण की आवश्यकता इस विद्यालय मे पूरी की जाती है। आपने दहेज प्रथा, मद्य-निषेध, देश का विघटन, क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि सामाजिक बुराइयों की ओर श्रोताओ का ध्यान आकृष्ट किया तथा उन्हे दूर करने की अपील की। आपने कहा आज नैतिक मूल्यो का पतन हो रहा है। अत हमने अपने विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का समावेश किया है।

श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी

कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री जी ने की तथा सचालन चन्द्रपाल आर्य मन्त्री, आर्यसमाज ने किया। इस अवसर पर श्रीमती सुशीला त्यागी बहिन स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए श्री जगदेव शान्त, श्री वीरेन्द्रकुमार गुप्त, श्री प्रकाश चन्द्र माहेश्वरी, श्री वीरेन्द्र रस्तगी, श्री सुधाकर आशावादी (पत्रकार) डा० राजेन्द्र आर्य व श्री राधेश्याम गुप्त को धन्यवाद दिया गया। (दैनिक 'प्रभात मेरठ से साभार)

वार्षिक १५)
छमाही ८)
विदेश में ३ पौंड
एक प्रति ४० पैसे

सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए०

वर्ष ८६ अङ्क ४०

प्रार्थना

यो यजाति यजात इत्सुनवच्च पचाति च
ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत ।
ऋ० ८।३१।१ ॥

अर्थ —जो स्वयं आदान प्रदान युक्त संगम करता है, जो यज्ञ करता है जो किसी पदार्थ आदि को उत्पन्न करता है, जो अच्छे संस्कार अपनाता है उसे परब्रह्म परमात्मा प्यार करता है अर्थात कर्तव्य परायण व्यक्ति को ईश्वर सदैव सुखी रखता है।

आर्यमित्र

लखनऊ—रविवार २३ अक्टूबर १९८३ दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

दूषित खाद्य-सामग्री

आज देश का जहां एक ओर बौद्धिक ह्रास हो रहा है। नैतिक पतन हो रहा है वहीं दूसरी ओर देश में खाद्य वस्तुओं की शुद्धता पर तेजी से प्रहार हो रहा है। खाद्य-सामग्री शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिये नितान्त आवश्यक है और शुद्ध स्तर होना अनिवार्य है, परन्तु इधर कुछ वर्षों से देश के प्रशासन में इतनी गिरावट आ गई है कि अनैतिक अपराधों की वृद्धि के साथ ही खाद्य-पदार्थों में मिलावट भी अधिकता से हो रही है साथ ही जो वस्तु मिलावट के लिये प्रयोग की जाती है वह हानिकारक और रोगों को जन्म देने वाली होती है। तेल में सस्ते किस्म के बीज का तेल मिला दिया जाता है। परन्तु इधर जिस समाचार ने सारे देश को हतप्रभ कर दिया और विस्मय में डाल दिया वह है कि जम्बु नामक उद्योगपति जो शुद्ध वनस्पति के निर्माता है। अपने वनस्पति में गाय की चर्बी मिला रहे हैं। इससे सारे देश में क्षोभ होना स्वाभाविक है परन्तु जितने कड़े शब्दों में इस मिलावट की निन्दा की जाय और मिलावट कर्ता की भर्त्सना की जाय कम है।

समाज दोष ग्रस्त क्यों है?

नितान्त स्पष्ट है कि हमारे देश के राजनैतिक दल-सत्ता और विपक्ष दोनों व्यापारी वर्ग पर आधारित हैं और अपने दल के लिये उनसे लाखों का चन्दा लेते हैं तथा उन्हें मिलावट करने की ओर अन्त तक कार्य की छूट दे देते हैं। निर्माण जिस वस्तु का हो जाता है जनता को दुर्लभ हो जाती है तथा एक ओर व्यापारी सत्तारूढ़ दल को धन की सहायता देता है दूसरी ओर असेवनीय वस्तुओं की सहायता करके अधिक धन कमाता है तथा राजनैतिक संरक्षण उसे प्राप्त रहता है जब तक राजनैतिक दल शुद्धता का आचरण नहीं करेंगे देश में प्रदूषण फैलता रहेगा।

राजनैतिक दलों से सुधार की आशा व्यर्थ है। गाय की चर्बी की मिलावट की निन्दा किसी राजनैतिक दल ने नहीं की क्यों मिलावट करने वाले उद्योगपति के सामने वह पार्टी के लिए चन्दा हेतु हाथ फैला चुके हैं और भविष्य में फैलायेंगे। केवल आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन है जो अनैतिकता को रोकने हेतु सतत संघर्ष रत रहता है। हम आशा करें कि हमारे उपदेशक एवं भजनीक जन सम्पर्क में ऐसी बातों की निन्दा कर आर मिलावट करने वालों को हतोत्साहित करें।

आर्य जगत् के समस्त आर्य जनो
निर्वाण शताब्दी पर
३ से ६ नवम्बर १९८३
अजमेर पहुंचो

सप्तर्षि मण्डल की स्थापना

आर्य विद्वान इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि उन्हें बुलाया गया है या नहीं। बन्धुओं! यह एक मेला है। निमन्त्रण की प्रतीक्षा मत करो। देश देशान्तर के आर्य विद्वान ३ से ६ नवम्बर अजमेर पहुंच रहे हैं। आप सब भी पहुंचो। सब मिल कर कुछ स्थायी विचार हम लोग करेंगे वह यह कि—

१—महर्षि को जब यह पता चल गया कि अब शरीर छूटने वाला है। तब हजारों आर्य समाजों के होते हुए भी अपने स्थानापन्न और उत्तराधिकारिणी सभा परोपकारिणी सभा की स्थापना २३ स्थायी व्यक्तियों की कर दी।

२—संसार की सब धार्मिक संस्थाओं का संचालन उनके द्वारा होता है जो उस धर्म के सर्वोच्च कोटि के विद्वान होते हैं। जैन शास्त्रों का सर्वोच्च विद्वान जैन गुरु जैन धर्म का संचालक इसी प्रकार बौद्धों में इस्लाम तथा ईसाइयों के यहां भी यही प्रकार है।

३—आर्य समाज के पिछले सौ वर्षों में आर्य समाज का संचालन किस प्रकार हुआ। उसको भी आर्य विद्वान भली भांति से जानते हैं।

४—आज दयानन्द पर महर्षि की मोक्ष हमारे सौ वर्ष पूरे होकर अगली शताब्दी इस बलिदान की भावना के जाने दिन से प्रारम्भ होगी। इस अवसर पर इन सौ वर्षों के अनुभवों को सामने रखकर आर्य विद्वान अगली शताब्दी के लिये कुछ विचार करें।

५—मौत ने हाथ देकर लगभग सब आर्य विद्वान उठा लिये हैं। आज नहीं है महर्षि के [illegible] पं० [illegible] काव्यतीर्थ पं० [illegible]मुनि और स्व० [illegible] पं० [illegible] आदि।

६—फिर भी घर घर जो बचे हैं बैठकर कुछ अगली शताब्दी पर करने की सोचो। मेरा प्रस्ताव यह है कि—

महर्षि ने पञ्च महायज्ञ विधि लिखी पितृ यज्ञ प्रकरण के ऋषि लक्षण के आधार पर इस समय जो भी योग्यतम विद्वान हैं। चाहे वे सन्यासी हों वानप्रस्थ गृहस्थ या ब्रह्मचारी उन सात व्यक्तियों के सप्तर्षि मण्डल की घोषणा निर्वाण शताब्दी पर कर देने। मैंने स्वामी सर्वानन्द जी से प्रार्थना की है कि वे अपने स्वामी सत्य प्रकाश जी पाव अन्य को और सोच लें। उस सप्तर्षिमण्डल के अधीन समस्त आर्य जगत के हजारों विद्वानों का संगठन रहे। वे सात व्यक्ति किसी प्रान्तीय सभा परोपकारिणी सभा के सदस्यता में न आवें।

७—इस संगठन का न मासिक वार्षिक कोई चन्दा हो और न इन की कोई बिल्डिंग या संस्था हो। न धन संग्रह हो। किसी आवश्यक कार्य पर यदि आवश्यकता पड़े तो किसी एक व्यक्ति के हाथों वह कार्य करा दिया जावे।

८—इस समय आर्य समाज का भाग्य आर्य समाजों प्रान्तीय सभा, सार्वदेशिक सभा परोपकारिणी सभा के हाथों में है वह रहे।

९—इस सप्तर्षिमण्डल के अधीन आर्य विद्वान् महासभा का केवल कार्य लेगा। आर्य जगत् का यह प्रबन्ध। कोई माने न माने प्रस्ताव वाली समिति के रूप में वह महासभा अपना मार्ग दर्शन जब से प्रमुख कर देते बस।

—आचार्य

(पृष्ठ ... से आगे)

वेद का सन्देश है कि 'आप जो काम कहीं करें, परन्तु अपने भावों को सदा आशावान् और शुभ सूचक बनाये रखें। इससे आपको अपनी कार्य शक्ति में वृद्धि होती दिखाई देगी और आप यह अनुभव करेंगे कि आप आगे बढ़ रहे हैं। वेद कहता है—

उद्यानं ते पुरुष नावयानं
जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथ—
मथ जिर्विर्विदथमा वदासि ॥
—अ० ८-१-६

हे मनुष्य ! तू आगे बढ़ने के लिए है पीछे हटने के लिए नहीं। तू इस अमृत—मुक्तिदाता—सुखदाता शरीर रूपी रथ पर सवार होकर आगे बढ़। इस संसार में जीवन के लिए तेरे हृदय में उत्साह का विस्तार करता हूं, तू आगे बढ़ कर उस ऊंचे स्थान को प्राप्त कर ले वहां पहुंच कर अपने शरीर से, मनसे और वाणी से ज्ञान का, शक्ति का और पवित्रता का उपदेश किया कर।

आप अपने अन्तःकरण में जिस वस्तु की अभिलाषा करते हैं, वह आपको अवश्य ही मिलेगी। जिस को आपने अपने मन, कर्म और वचन से आदर्श माना है, वह आप के सामने अवश्य प्रकट होगा। वेद कहता है, हे मनुष्य ! जाग उठ, जाग उठ, सोया मत पड़ा रह, निराश होकर मत पड़ा रह, निराश होकर मत पड़ा रह। जाग रख—

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादमतन्द्राः ।
—ऋ० ८-२-१८

जो आलस्य त्यागकर शुभ कर्मों में लगता है उसी को देवता चाहते हैं। सोये पड़े रहने वाले से वे प्रीति नहीं करते। अच्छी तरह समझ लो, प्रमादी की कोई सहायता नहीं करता। यदि आप सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको अपनी अभिलषित वस्तु पर मन, वचन और कर्म से स्थिर रहना होगा ?

सप्त मर्यादाएं-२ (कर्म)

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०, एल०टी०, १७५ जाफरा बाजार गोरखपुर]

'न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवाः'

परिश्रम करके थके हुए की ही देव रक्षा तथा वृद्धि करते हैं।

संसार युद्ध भूमि है। यहां मनुष्य को सभी ओर बड़े बड़े युद्धों का सामना करना पड़ता है। वह जब अपने चारों ओर नजर उठाता है तो सभी दिशाओं में शत्रु उसे घेरे हुए खड़े हैं। मानसिक जगत् अपनी प्रबल सेनाओं के साथ पाप सैन्य उस पर आक्रमण कर रहा होता है। आन्तरिक क्षेत्र के काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि की पैशाची सेना मन पर आक्रमण करने को तैयार खड़ी है। इनसे डटकर लोहा लेना किसी वीर का काम है। दूसरी ओर

शरीर को नष्ट करने के लिए व्याधियों की सेना शरीर पर आक्रमण करने का उपक्रम कर रही है। शेर, चीते, बाघ, भालू, सांप, बिच्छू मनुष्य को अपना शिकार बनाने को लालायित हैं, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन और आंधियां आधिदैविक विपदायें मनुष्य पर आक्रमण करने की तैयारी में हैं, धूर्त और लुटेरे उसे अपने चंगुल में फंसाना चाहते हैं। मनुष्य के पग-पग पर विघ्न हैं, पग पग पर बाधायें हैं, पग-पग पर रोड़े और कंकड़ हैं—नोकीले कंकड़ पग-पग पर चट्टानें और चोटियां। इन सब को मनुष्य को पार करना है। उसे जैसे नदी का प्रवाह तटों को तोड़ता, चट्टानों को लांघता हुआ आगे बढ़ता जाता है वैसे ही वैसे सब विघ्नों का मुकाबला करते हुए मनुष्य को आगे बढ़ना है। वेद कहता है—

अश्मन्वती रीयते संरभध्वं
मुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः ।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽसन्
छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ।
—यजु० ३५-१०

वेद में संसार को कहीं वृक्ष कहीं सागर और कहीं जंगल आदि के रूप में भी प्रस्तुत किया है और इस मन्त्र में उसे पथरीली नदी के रूप में पेश किया गया है। भर्तृहरि जी महाराज ने भी इस नदी का वर्णन करते हुए कहा है—

आशा नाम नदी मनोरथ-
जला तृष्णा तरङ्गाकुला ।
राग ग्राहवती वितर्क विहगा,
धैर्य द्रुम ध्वंसिनी ।
मोहावर्त सुदुस्तरातिगहनो,
प्रोत्तुङ्ग चिन्ता तटी ।
तस्याः पारगता विशुद्ध मनसो,
नन्दन्ति योगीश्वराः ॥

अर्थात् आशा नाम की इस नदी में मनोरथरूपी जल भरा हुआ है। इसमें तृष्णारूपी लहर और रागरूपी मगर है। नाना प्रकार के तर्क वितर्क पक्षी हैं। यह नदी धैर्य रूपी पेड़ उखाड़ देती है। मोह ही इसके कठिन भंवर है और चिन्ता रूपी इसके ऊंचे किनारे हैं। इस नदी को शुद्ध, कर्मनिष्ठ योगी ही पार कर आनन्द प्राप्त करते हैं।

'अश्मन्वती' मन्त्र में भी वेद कहता है, उठो, मित्रो, देखो यह सामने अनेक विघ्न-बाधाओं के पत्थरों से भरी संसार की दुस्तर नदी वेग से बहती चली आ रही है। उठो, तैयार हो जाओ, एक दूसरे का हाथ पकड़ लो, मिलकर उद्यम करो और उसे पार कर जाओ। जो खोटी चालें हैं, जो विकर्म हैं, उन्हें यहीं छोड़ दो और इस भयंकर नदी को पार कर ऐश्वर्य का भोग करो।

मत डर कि पार करने का मार्ग कण्टकाकीर्ण है, दुस्तर है कठिन है—

अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज ।
ऋ० १-४२-३

जो कोई चोर, कुटिल, पापी, पिशाच या राक्षस तेरे मार्ग में रास्ता रोककर खड़ा हो उसे तू पकड़कर रास्ते से दूर फेंक दे।

उद्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र
वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि ।
आ कीवतः सललूकं चकर्थ
ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥
ऋ० ३-३०-१७

हे वीर ! राक्षस को समूल उखाड़ फेंक, इसकी छाती चीर दे। सिर फोड़ डाल। इस चंचल को जहां पाए मार डाल। इस ब्रह्मद्वेषी पर तीक्ष्ण धार वज्र का प्रहार कर। इन शत्रुओं से लड़ने के लिये मनुष्य घबराये नहीं तो वेद उसकी शक्ति का बोध कराते हुए उसे बताता है कि अरे मानव तू तो इतना अधिक शक्तिशाली है है कि जिसका ठिकाना नहीं। याद रख—

सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां
समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।
वातस्येव प्रजवो नान्येन
स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ।
ऋ० ७-३३-८

अरे मनुष्य ! आदित्य मण्डल के समान तुम्हारी ज्योति है, समुद्र के समान गम्भीर तुम्हारी

(शेष पृष्ठ १० पर)

आगामी ४ नवम्बर १९८३ दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

देश विदेश में धूमधाम से मनाई जावे सार्वदेशिक सभा का आदेश

यद्यपि निर्वाण शताब्दी का मुख्य आयोजन ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ तक अजमेर में हो रहा है, सभी आर्यजन उसमें भाग लें। जो लोग वहां न पहुंच सकें, उन्हें सार्वदेशिक सभा की ओर से आदेश दिया जाता है कि वे दीपावली के दिन निर्वाण शताब्दी महोत्सव अपने अपने ग्राम, नगर और कस्बों में बड़े उत्साह पूर्वक मनावें।

प्रातः प्रभात फेरियां निकाली जावें, आर्य जन अपने घरों में ओ३म् ध्वज फहराने का विशेष कार्यक्रम रखें। सार्वजनिक सभाएं की जावें और महर्षि दयानन्द प्रतिपादित साहित्य बड़ी संख्या में बांटा जावे।

सामूहिक यज्ञ तथा यज्ञोपवीत परिवर्तन कार्यक्रम किए जावें। आर्य जनता अपने-अपने क्षेत्रों में यह सब कार्य धूम-धाम से सम्पन्न करें।

—राम गोपाल शालवाले
प्रधान—सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर शोभा यात्रा शनिवार ५ नवम्बर को प्रातः ९ बजे से आरम्भ होगी

आर्य जनता को यह सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह जो कि ३ से ६ नवम्बर तक अजमेर में मनाया जा रहा है, इस उपलक्ष में एक शोभा यात्रा निकलेगी। यह शोभा यात्रा ५ नवम्बर शनिवार को केसरगंज दयानन्द आश्रम से सुबह ९ बजे आरम्भ होगी। यह शोभा यात्रा दयानन्द आश्रम केसरगंज, स्टेशन रोड, रामविलास शारदा मार्ग, चोपड़ नगर, परिषद कार्यालय, पृथ्वी राज मार्ग, वा इलैन्ड मार्केट चौराहे से भिनाय कोठी (ऋषि निर्वाण स्थली) दौलत बाग रोड, ऋषि वाटो से ऋषि उद्यान पर समाप्त होगी।

मेरी आर्य जनता से प्रार्थना है कि इस शोभा यात्रा में सम्मिलित होने की तैयारी अभी से प्रारम्भ कर दें। विशेषकर अजमेर वालों से मेरी प्रार्थना है कि जहां से शोभा यात्रा गुजरे वहां-वहां पर स्वागत-द्वारा बनाये जायं। तथा स्वागत यात्रा में चलने वाले लोगों का स्वागत करें। अजमेर नगर में पहले कभी इतना बड़ा समारोह नहीं हुआ होगा। अजमेर में शताब्दी पर जो इतना बड़ा समारोह हो रहा है, इसलिए अजमेर वालो की यह जिम्मेदारी तो हो ही जाती है कि वे इस समारोह को सफल बनाने में हमें पूर्ण सहयोग दें। इस उपलक्ष में जो कोई व्यक्ति अधिक जानकारी लेना चाहते हैं, वे दयानन्द आश्रम केसरगंज अजमेर से इस सम्बन्ध में जानकारी ले सकते हैं। शोभा यात्रा में सम्मिलित होने वाले आर्य समाजों स्त्री आर्य समाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं, हसराज स्कूलों/कालेजों, आर्य वीर दलों, आर्य युवक परिषद गुरुकुलो तथा अन्य संस्थाओं से विशेष निवेदन है कि वे इस शोभा यात्रा में अपने नाम पट तथा ४–४ ओ३म् ध्वज अपने साथ अवश्य लावें।

रामनाथ सहगल
संयोजक—शोभा यात्रा

वनस्पति में गो चर्बी मिलाने वालों को कड़ी सजा देने की मांग

कानपुर-केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान में नगर की सभी आर्य समाजों की एक सभा प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुयी जिसमें सरकार से मांग की गयी कि वनस्पति घी मे गाय की चर्बी मिलाने वालों को कड़ी सजा दी जाये, जिससे भविष्य में कोई भी उद्योगपति जनता की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ न कर सके।

प्रस्ताव में यह भी मांग की गयी है कि भारत में गाय की चर्बी की आयात पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाये क्योंकि अब तक हजारों टन गाय की चर्बी सरकार की छत्र छाया में मंगायी गयी है। अगर सरकार प्रतिबन्ध नहीं लगायेगी तो देश में विद्रोह फल जायेगा।

ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

क्षेत्रीय आर्य समिति बहादराबाद (हरिद्वार) आर्य समाज फेरुपुर (रामखेड़ा) के विशेष सहयोग से दिनांक १४ से २३ अक्टूबर तक १०० आर्य नवयुवकों का आर्य वीर दल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर लगा रही है। शिविर का उद्घाटन दि० १४।१०।८३ को प्रातः ८ बजे श्री पं० इन्द्रराज जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उद्घाटन भाषण से हुआ। तथा शिविर का दीक्षान्त समारोह दिनांक २३।१०।८३ को सांय २ बजे माननीय प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मुख्य आतिथ्य में होगा। जनपद सहारनपुर की समाजों के प्रधान/मन्त्री उपरोक्त अवसर पर अवश्य ही शिविर स्थल पर पहुंचे।

विजय कुमार आर्य
संयोजक

उत्सव

आर्य समाज शेखूपुर (पश्चिम)

—आर्य समाज शेखूपुर (पश्चिम) बुलन्दशहर का वार्षिक उत्सव २२ से २४ अक्टूबर तक मनाया जायगा। मंत्री

आर्य समाज अमरोहा

आर्य समाज अमरोहा का वार्षिक उत्सव २३ से २५ अक्टूबर तक समारोह से मनाया जायगा। २३ अक्टूबर को १ बजे से विशाल शोभा यात्रा निकलेगी। मन्त्री

आर्य समाज सुलतानपुर

आर्य समाज सुलतानपुर २४ से २७ नवम्बर तक रामलीला मैदान में निर्वाण शताब्दि उत्सव मनावेगा। पुस्तक विक्रेता पधारें। —मन्त्री

आर्य विदुषी–

डा० शारदा पाठक

एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी दर्शन शास्त्री, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, हिन्दी प्रभाकर)

[ले० पं० बिहारी लाल शास्त्री, रामपुर गार्डन, बरेली]

जिस विदुषी आर्य देवी के विषय मे मैं लिख रहा हूं उसने जीवन पर्यन्त यथाशक्ति वैदिक धर्म का प्रचार किया। यह देवी इटावा के आर्यगर्ल्स इन्टर कालिज की प्रधानाध्यापिका थी। डाक्टरोपाधिधारिणी यह विदुषी अनेक विषयों की एम० ए० तथा आचार्य थी।' संस्कृत साहित्य मे प्रतीक काव्य' नामक विषय पर अनुसन्धान धुरन्धर आर्य विद्वान डा० हरिदत्त शास्त्री कानपुर के निर्देशन में किया था। इस संस्कृतज्ञ विदुषी को डा० हरिदत्त जी ने आशीर्वाद निम्नलिखित श्लोक द्वारा दिया था–

'या कुन्देन्दु तुषारहारधवला सद्भिः सदा शोभते
सम्या सा न दृशोः पथे क्वचिदहो स्यात कल्पना शिल्पिनी ॥
सौभाग्यं समुपेयुषी स विदुषी मातृत्व मासे दुषी,
भारये नाभिमता स्वयास्त्यधिगता सभ्या शुभा शारदा ॥

जस्टिस हाईकोर्ट प्रेमशंकर जी के अनुसार "वे आदर्श गृहिणी, आदर्श माता तथा आदर्श शिक्षिका थी। उन्हें हिन्दी तथा संस्कृत पर अच्छा अधिकार था, यों अंग्रेजी साहित्य भी उनका विषय रहा है।

इस विदुषी का जन्म बदायूं जनपद में २५ दिसम्बर १९२६ में हुआ था, तथा इसकी माँ श्रीमती सुशीला जी भी विदुषी महिला थी जिन्हें 'अष्टाध्यायी' तथा 'योगदर्शन' पूरा कठस्थ था। यजुर्वेद के अधिकांश मन्त्र कंठस्थ थे, इसके पिता पं० रामस्वरूप जी पाराशरी आर्य सिद्धान्तों तथा वेदो के अच्छे विद्वान् थे। वेदाचार्या सावित्री देवी एम० ए० इन्हीं की बहिन हैं। 'मातृमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेद' का आदर्श उनसे अंकुरित पल्लवित तथा पुष्पित हुआ। इनकी तीन सुयोग्य चरित्रवती पुत्रियाँ पोस्ट ग्रेजुएट तथा पी० एच० डी० हैं जो जनसेवी तथा पत्रकार है। इस विदुषी का पति पं.रमेशचन्द्र वेद, दर्शन, साहित्य एवं व्याकरण का धुरन्धर विद्वान् है।

संस्कृत का प्रचार :–'संस्कृत' विषय का आर्य कन्या इन्टर कालेज इटावा मे इतना स्वागत था कि लगभग तीन सौ से अधिक छात्रायें हाई स्कूल तथा इन्टर में संस्कृत लेती थी। अनेक मुस्लिम छात्राओं ने संस्कृत पढ़कर उनसे छन्दोगायन सीखा था तथा मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ में और डी० ए० वी० कालेज कानपुर में पारितोषिक तथा विशेष छात्रवृत्तियाँ पाई थीं। मंडली बा० वि० निरीक्षिका चतुर्थ मण्डल इलाहाबाद से जब भी आतीं, उनसे संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण कर उन्हें मुग्ध कर लेती। जब भी कोई नेता या विद्वान् उनके विद्यालय में आते, वे संस्कृत श्लोकों एवं संस्कृत भाषण द्वारा ही उन का स्वागत करती थीं। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तो उनकी योग्यता पर इतनी अधिक मुग्ध थी कि उनकी हार्दिक सराहना करती हुई नहीं थकी थीं।

वैदिक धर्म का प्रचार :–इटावा की कलह-क्लेश भरी संघर्षमयी आर्य कन्या पाठशाला में अनेक विघ्नों के होते हुए भी उसने सैकड़ों कन्याओं को सन्ध्या-हवन तथा वैदिक विचारधारा के गीत, निबन्ध तथा श्लोकादि याद कराके वैदिक धर्म के प्रति उन्हें निष्ठावान् बनाया था। खेद का विषय है कि आर्यत्व वहां अब क्षीणावस्था मे है। प्रधानाचार्या होकर भी वह सदा निरभिमान एवं सुसंस्कृत महिला की भांति अपनी साथी अध्यापिकाओं मे घुलीमिली रही। आज भी उसके गरिमाभरे व्यक्तित्व की प्रशंसा इटावा जनपद का प्रत्येक व्यक्ति करता है। उस जनपद के ही किसी कवि ने लिखा है–

'विप्रवर वंश अवतंस योगिराज सुत रामस्वरूप की अनूप सुषमा सी थी।

धर्मध्वजशीला श्री सुशीला पुण्य शीला जी की शारदा प्रमोदमयी मूर्ति ममता की थी।

वेश में रमेश के रमा सी सुचिता स्वरूप में धावसु ,की बन माला सुहाती थी,

माधुरी सुधा सी आदि कवि की प्रसादमयी कविता की कीर्ति महाश्वेता सी सुहाती थी॥

यह आर्य विदुषी आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पं० निरञ्जन देव की पुत्रवधू थी। इस संस्कृत विदुषी ने मातृकुल, पितृकुल, तथा पतिकुल, सभी को अपने विमल आचरण, तथा त्याग तपोमय जीवन से तार दिया, तथा एक सुन्दर आदर्श प्रस्तुत किया। प्रतिभाशील व्यक्तित्वशालिनी शारदा सभी आर्य कन्याओं एवं देवियों के लिए एक प्रेरणा हैं। जून ७३ मे मृत्यु का अनिवार्य सकट उसे साथ ले गया। दुर्लभ किन्तु यथार्थ है कि इस देवी ने प्रधानाचार्या होते हुए भी कभी किसी कर्मचारी से व्यक्तिगत या घरेलू कार्य नहीं लिया, और न कभी शक्ति का ही दुरुपयोग किया। ऐसे निस्वार्थ तथा निश्चल उदाहरण आज लुप्त प्राय ही हैं। अपने वेतन से अनेक निर्धन छात्राओं को छात्रवृत्ति भी दी। जब भी शारदा को किसी के टूटते सम्बन्धों का ज्ञान होता, यथाशक्ति उन्हे वह स्नेह बन्धन से बांधने का प्रयास करती। एक पक्षीय बात भी सुनकर निर्णय देना उसकी दृष्टि में अन्धा पक्षपात था। ऐसे ही उसके जीवन के अनेकप्रेरक संस्मरण है, जो सभी को शिक्षाप्रद हैं।

पुस्तकालय उद्घाटन

लखनऊ के डी०ए०वी० कालेज में प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्र वैज्ञानिक डा० कैलाशनाथ कौल पुस्तकालय का उद्घाटन ४ अक्टूबर को डा० कौल की पत्नी एवं भारत सरकार में राज्य शिक्षामन्त्री श्रीमती शीला कौल के कर-कमलों द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश की शिक्षा मन्त्री श्रीमती स्वरूपकुमारी बख्शी थीं। सभा की अध्यक्षता नगर कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष श्री बी०एन० खन्ना ने किया।

डी०ए०वी० कालेज के प्रबन्धक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के उपमन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने अभ्यागतों का स्वागत किया। डा० कौल का परिचय दिया तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक के नाम व स्थापित पुस्तकालय सार्थकता पर प्रकाश डाला।

केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्रीमती शीला कौल ने अपने स्वर्गीय पति की पुस्तकों के प्रति अभिमान रुचि बताते हुए रोचक स्मृतियों का उल्लेख किया और आशा व्यक्त की कि उत्साही युवक नेता श्री मनमोहन तिवारी के प्रबन्धकत्व में महाविद्यालय उन्नति करेगा तथा केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारें भी इस दिशा में सहायता देगी। –सम्वाददाता

समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

[श्री महावीर सिंह मुमुक्षु, बी० ए० एल० एल० बी०
रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद]

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिये महर्षि ने उद्‌घोष किया था कि कोई भी व्यक्ति जन्म से छोटा, बड़ा, छूत अछूत नहीं होता वरन् गुण कर्म व स्वभाव से व्यक्ति छोटा बड़ा होता है। आज आवश्यकता समाज में इसी विचारधारा प्रतिपादन की ताकि मानव के मन में ईश्वर की प्रत्येक कृति के प्रति प्रेम बना रहे। इनका कहलाने का अधिकारी है जो दूसरे के सुख दुःख में काम आवे तथा दूसरे के हानि लाभ को अपना हानि लाभ समझे।' क्या अवशेष रहेगी कोई समस्या समाज में यदि उपरोक्त विचारों को प्रत्येक मानव अपने जीवन में उतार सके और अपने जीवन का उद्देश्य *'To be a main real sence'* वास्तव में पूर्ण करे। इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर पट्टाभिसिता रामय्या ने कहा था कि 'गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं।'

महर्षि ने समस्त मानव मात्र को शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति की कामना की है। समाज का कोई ऐसा पहलू नहीं छोड़ा जिसके लिये उन्होंने अपनी कलम न उठायी हो या विचार व्यक्त नहीं किये हों। समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों का मुंह तोड़ जवाब दिया वह सत्य की बात को डंके की चोट कहते थे चाहे उसका कोई भी परिणाम हो। वह कर्मफल के अटल सिद्धान्त के प्रबल पोषक थे व प्रचारक थे, उन्होंने जीव की स्वतन्त्र सत्ता मानी है। उनका उद्‌घोष है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अधीन परतन्त्र है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि महर्षि ने किये गये कुकर्मों को प्रार्थना, प्रायश्चित द्वारा क्षमा किये जाने की भावना को समाज में जड़मूल से उखाड़ने की प्रेरणा दी। परिणामतः पापों से निवृत्त कराने वाले धर्म के झूठे ठेकेदारों का पर्दाफाश किया।

भगवान बुद्ध ने अपनी लोक हित की योजना में सदाचार को रखा था, किन्तु परमात्मा को उसमें स्थान नहीं दिया था। भगवान् शंकर ने अपनी योजना मे परमात्मा को तो स्वीकार किया, किन्तु संसार को महत्व नहीं दिया, परन्तु भगवान दयानन्द ने वैदिक धर्म का प्रतिपादन किया जिसमें भोगवाद और अध्यात्मवाद दोनों को समन्वित किया। यही कारण है आर्य समाज की योजना सर्वहितकारी और जनजीवन मंगल विधान मे समर्थ सिद्ध हो सकी है। महर्षि ने स्त्री, दलितोद्धार, अल्पआयु में विवाह से रोक (परिणामतः शारदा विवाह एक्ट बना) शुद्धि कार्यक्रम, यज्ञ, धार्मिक कथाओं की यथार्थ व्याख्या आदि प्रशंसनीय कार्यों के प्रति कदम बढ़ाया था जिसमें उन्हें संतोषजनक सफलता प्राप्त हुई। सत्य विचारों का ग्रहण तथा मिथ्या बातों का परित्याग मानव मात्रकर सके, प्रेम से मिलकर एक रस होकर रह सकें। महर्षि ने निष्कर्षोपरान्त वर्चित तत्कालीन सभी मतमतान्तरों की गुप्त बातोंकोभी प्रगट किया। इस तथ्य के महत्व से विशेषता अनभिज्ञ व्यक्ति महर्षि की आलोचना करते हैं, परन्तु वह भूल जाते हैं कि विज्ञान एक दिन अवश्य ही अन्धविश्वासों पर आधारित विचारधारा (मतमतान्तरों) की पोल खोल देगा और तब आने वाली सन्तति को यदि कहीं आश्रय मिलेगा तो वह होगा केवल एक मात्र वैदिक विचारधारा और उसका प्रतिपादन करने वाला महर्षि द्वारा स्थापित एक संगठन आर्य समाज जिस में न कोई जाति, वर्ग व विचारों की संकीर्णता है न कोई अन्धाधुंध अनुकरण करने का प्रतिबन्ध है।

भारत की भाषा, धर्म संस्कृति, साहित्य, इतिहास, देश भक्ति आदि को समाप्त करने की दृष्टि से बनाई गई लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना को विफल करने का साहस यदि किसी ने किया तो वह केवल एक मात्र वही महर्षि स्वामी दयानन्द था जबकि वेदों को गड़रिये के गीत, रामायण व गीता को काल्पनिक ग्रन्थ घोषित किया जा रहा था उन्होने वेद को प्रामाणिक ग्रन्थ सिद्ध किया तथा विरोधी पक्ष को खुलेरूप में विचार विमर्श के लिये आमंत्रित करते हुए पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई। परिणाम स्वरूप कश्मीर से कन्या कुमारी तक ही नहीं वरन् विश्व के सभी दार्शनिक, विचारक उनके प्रभाव से किसी न किसी रूप में अवश्य ही प्रभावित हुये। किसी ने लिखा है कि—

'कौम वह दिल से हश्र तक, तुमको भुला सकती नहीं।
तूवह जिन्दा है कि तुझको, मौत कभी आ सकती नहीं॥'

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखा कि पिता तुल्य पराया राज्य भी स्वशासन से अच्छा नहीं हो सकता, स्वराज्य का बिगुल बजाया था। दादाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम कांग्रेस मंच से स्वराज्य शब्द का उद्‌घोष किया था जिन्होंने लोकमान्य तिलक के पूछने पर बताया था कि मुझे सत्यार्थ प्रकाश से स्वराज्य की काफी प्रेरणा मिली है। ईश्वर का सच्चा स्वरूप, जीव का अस्तित्व न जान लेने के बाद महर्षि के अनुयायियों ने देश की स्वाधीनता के लिए अपने सिर पर कफन बांध लिये जिनमें श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, मदन लाल धींगरा, चापेकर बन्धुओं, लाला लाजपतराय, अजीत सिंह न्यायमूर्ति गोविन्दराना डे है, स्वामी श्रद्धानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह व वीर मनसाराम के नाम प्रमुख है। इनके अतिरिक्त महर्षि की प्रेरणा से अनेकों महान् विभूतियों ने नींव के पत्थर की तरह इस कार्य में सहयोग दिया है। फांसी का फन्दा हो या तोप का गोला सबसे सहर्ष आलिंगन कर आर्यवीर देश हित में मरकर अमर हो गये।

'देश हित में वार दीं अनेक ही जवानियाँ।
हमने रक्त से लिखी स्वदेश की कहानियाँ॥

महर्षि के स्वराज्य प्राप्ति के साथ-साथ चहुंमुखी विकास के कार्यक्रम को देखकर श्रीमती एनीबीसेंट ने लिखा था।' जब स्वराज्य मंदिर बनेगा तो उसमें बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां लगेगीं और सबसे ऊंची मूर्ति महर्षि दयानन्द की होगी।' महर्षि ने मानव मात्र में भावात्मक एकता व भारत का पूर्ण हित के लिये स्पष्ट घोषणा की थी कि एक धर्म, भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कर्म है।

महर्षि ने स्वयं भी मानव एकता के सूत्र में समाज को बांधने का चांदपुर (उत्तर प्रदेश) में एक धर्म मेला में प्रयास किया था। महर्षि ने इस मेले में मौलाना, पादरी, पण्डित को तर्क युक्ति प्रमाण और प्रयोग से उन सबको सहमत न होते देख अन्ततोगत्वा एक अद्वितीय विधि उपस्थित की कि सब अपने अपने मत के श्रेष्ठ विचार पृथक-पृथक पत्रों पर लिखें।

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षिनिर्वाण शताब्दी समाचार

[म०म० वेदाचार्य व्यास एम० ए०, बरेली]

अजमेर में महर्षि निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में यति मण्डल की अध्यक्षता में महर्षि की निर्वाण स्थली ऋषि उद्यान अन्नासागर में ३ अक्टूबर से एक मास तक विशाल यज्ञ नवीन निर्मित यज्ञशाला में प्रारम्भ हो रहा है। जिसमें उच्चकोटि के आर्य विद्वान् वेदपाठी यज्ञ प्रारम्भ करावेंगे। निरन्तर एक मास यज्ञ के उपरान्त यज्ञ विषय पर ही एक मास प्रवचन चलेंगे। यज्ञ के श्रद्धालु आर्य वहां यदि एक मास यज्ञ में सम्मिलित हों तो उन्हें यज्ञ विद्या का पूर्ण ज्ञान एक मास में हो जावेगा। यज्ञ दर्शकों के निवास आदि की व्यवस्था ऋषि उद्यान में कर दी जायगी। यह यज्ञ ३ अक्टूबर से ६ नवम्बर तक दोनों समय चलेगा।

ऋषि उद्यान अन्नासागर से पुष्कर की ओर विशाल जंगल में एक महर्षि नगर बसाया जा रहा है। जिसमें कई लाख व्यक्तियों की व्यवस्था रहेगी। उसमें प्रान्त बसाये जावेंगे और उन प्रान्तों की सड़कों के नाम उस प्रान्त के विद्वानों के नाम पर रखे जावेंगे। जैसे उत्तर प्रदेश में गङ्गाप्रसाद उपाध्याय मार्ग, खेमकरणदास त्रिवेदी मार्ग इत्यादि।

प्रत्येक प्रान्त की प्रतिनिधि सभाओं को लिखा जा रहा है कि सब प्रान्तीय सभाओं के कार्यालय शताब्दी पर पहुंचें। प्रत्येक अपने-अपने प्रान्त की व्यवस्था संभाले। और अपेक्षित आवश्यकता शताब्दीसमिति से प्राप्त करावें।

हरियाणा से कई सौ बसें अजमेर पहुंचेंगी। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के आर्यसमाजें भी इसी प्रकार अजमेर पहुंचने वाली बसों की या रेल के डिब्बों की व्यवस्था का कार्य प्रारम्भ कर दें। यह निर्वाण शताब्दी वर्तमान के जीवित सब आर्यों के देखने की अन्तिम शताब्दी है। अतः इस अवसर से जो चूकेगा वह बाद में पछतायेगा। अजमेर में आप क्या देखेंगे, सुनो—

१—महर्षि निर्वाण के समय जिस भिनाय कोठी में रहे जहां उनके प्राण छूटे वह स्थान देखो—

२—महर्षि का अन्त्येष्टि संस्कार जिस श्मशान घाट पर हुआ कुछ क्षण वहां चलो।

३—महर्षि की अस्थियां जहां विसर्जित करके आज भी रखी हैं, वह ऋषि उद्यान अन्नासागर भी देखो।

४—वह चारपाई जिस पर महर्षि अन्तिम समय रहे वह तथा सब सामान अभी तक सुरक्षित है।

५—महर्षि की व्यवहार में लाई हुई सब वस्तुयें महर्षि की खड़ाऊ आदि सब सुरक्षित हैं। सबको एक बार श्रद्धावनत होकर देखो।

३ से ६ नवम्बर तक शताब्दी का भव्य आयोजन उसी पुष्कर के पास जंगल में बसे महर्षि नगर में सम्मिलित होकर देखिये।

वहां संसार के आर्य पहुंचेंगे। सबसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

देश-देशान्तर के आर्य नेताओं और आर्य विद्वानों के प्रवचन सुनने को मिलेंगे।

आर्यसमाज को भविष्य में क्या करना है। सब विचारों में सम्मिलित हूजिये, सहयोग दीजिये। यह अभूतपूर्व संयोग जीवन का अन्तिम दृश्य प्रत्येक का होगा। अतः अपने-अपने नगरों तथा जिले से सब आर्यों को लेकर अजमेर पहुंचिये। जिला सभाएं जिले के लोगों को सुविधा प्रदान करें जिससे वे सरलता से अजमेर पहुंचे और आराम से यात्रा हो शुभ।

प्रश्न

प्रश्न, प्रश्न ही रहे, न कोई।
उत्तर इनका दे पाया॥

बुरा न मानो मित्र हृदय से भूल हुई है, भूल हुई,
जिसको समझा नोंक सुई की सचमुच वह तो शूल हुई।
चर्चा जो सामान्य चली जो वह तो ऐसी तूल हुई,
आदि सभी ने जाना किन्तु न अन्त अभी तक हो पाया।१।

तुम ही कह दो बात देश की बिगड़ी या कि बनी है,
केशर क्यारी में क्यों उगती दिन-दिन नागफनी है।
क्यों अमृत के बदले विष की झील यहां उफनी है,
आशाओं का कल्प वृक्ष हो जो कि यहां पर मुरझाया।२।

झुलसा-झुलसा नन्दन वन है, नहीं दीखती हरियाली,
लता, पुष्प, लतिकाएं कम्पित कम्पित तरु की प्रति डाली।
कहीं बह रही मतवालों के शोणित की गहरी नाली,
सम्प्रदाय के नाग नाथ को कृष्ण अभी तक नाथ न पाया।३।

क्यों अभाव का ताण्डव होता मुख पर चढ़ी उदासी क्यों,
गङ्गा-यमुना के संगम में दीन मीन ये प्यासी क्यों।
शान्ति सुरक्षा, सहानुभूति को किसने दे दी फांसी क्यों,
असुरों का आतङ्क-केतु जो उच्च गगन में फहराया।४।

कहां वायदे जाकर सोये कहां तुम्हारे प्यार गये,
कहां भाषणों से जो सींचे सब्जबाग उपहार गये।
मानो चाहो मत मानो प्रिय जीती बाजी हार गये,
स्वार्थ-सिन्धु में डूब गये तुम पर-हित का पर ध्यान न आया।५।

बंटवारे की ज्वालाओं में तुमने घर जब झोंक दिया था,
निज घर जाते गिद्ध उलूकों को फिर भी क्यों रोक लिया था।
समझो, तब ही यों विवेक के छुरा पीठ में भोंक दिया था,
धीरे-धीरे उसी भावना-भुजङ्ग ने फण फैलाया।६।

फंसे दलों की दल-दल में कुछ चरण, सिंह नहिं चलपाते,
कुछ हैं अटल, बिहारी कैसे जग-जीवन से क्या नाते।
कुछ सरकस की तरह विदूषक रूप अनेकों दिखलाते,
तुलसीदास उन्हीं को कहते जानो जात निशाचर माया।७।

कुछ आई के और गई के जालों में जकड़े हैं,
जनता के सेवक बन जीते शासक बन अकड़े हैं।
नहीं ज्ञात कुर्सी को पकड़े या कुर्सी ने ये पकड़े हैं,
यहां निराशा, नाश, नशा ने डङ्का खूब बजाया।८।

अरे राष्ट्र के नचिकेताओ, जो न प्रश्न ये सुलझाओगे,
तो इतिहासों के खन्दक में पड़े कहीं सड़ जाओगे।
चिड़ियों ने चुग खेत लिया तो खड़े-खड़े पछिताओगे।
जाग सको तो जागो संभलो काल चुनौती ले आया।९।

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए०, आगरा

व्योम ने है गीत गाया

जब धरा पर गूंजता है,
ओ३म् का जयनाद।
दनुज तत्वों का मिटेगा,
धरणि पर उन्माद।
जयति वैदिक धर्म, जय-
जय हो रहा ऋषिराज।
ऋषि दयानन्द के सुनहले-
स्वप्न सजते आज।
दिव्य करने जन: मन को,
खिल रहीं नव रश्मियां।
अब सुकर्मों की रहीं बन,
स्वर्ण - सी शुचि भस्मियां।
ऋषि चरण-पथ पर चलो,
अब आ रहा नव जागरण।
हट रहा ,भयभीत होकर,
दनुजता का आवरण।
तुम जगो हे आर्य पुत्रों!
भरत-भू उद्धार होना।
विकल हैं जो दुखित जन,
उनका, उठो! उपकार करना।
जल रही है आज धरती,
द्वेष-ईर्ष्या की अनल में।
भुखमरी बढ़ती, गरीबी-
बढ़ रही निर्विघ्न पल में।
जल रहा मानव हृदय है,
जल रहा आकाश, जल, थल।
बढ़ रहा उन्माद कुत्सित,
बढ़ रहा अभिशाप प्रतिपल।
तेजधारी फैलती है,
दुर्विचारों की कुसंस्कृति।
घेरती है मनुज मस्तिष्क,
आज दानव की दुष्प्रवृत्ति।
त्रस्त है जनगण यहां का,
त्रस्त है कण-कण यहां।
त्रस्त हैं सब व्यवस्थाएं,
त्रस्त है प्रति पल यहां।
सब भटकते हैं स्वपथ पर,
पा न पाते मार्ग हैं।
विभ्रमित से घोर तम में,
ढूंढ़ते सन्मार्ग हैं।
यदि हमें सत्पथ अपेक्षित,
वेद पथ पर ही चलें।
दुर्विकारों को स्वमन से।
दूर कर, उसको दलें।
रो रहा मनुजत्व देखो,
हो रहा नैतिक पतन।
सत्य भावों का हुआ है,
भूमि पर अतिशय हनन।

मेरठ आर्यसमाज द्वारा

नि:शुल्क नेत्रचिकित्सा शिविर

मेरठ नगर के शर्मा स्मारक मैदान में आर्य समाज मेरठ द्वारा विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन मेरठ जनपद के जिलाधीश श्री टी० जार्ज जोसेफ ने किया और आर्यसमाज की सेवा भावना की प्रशंसा की। अध्यक्ष पद पर नगर के प्रसिद्ध पत्रकार एवं दैनिक प्रभात के सम्पादक श्री वि०स० विनोद थे। जयपुर के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा० आर०एम० सहाय के निर्देशत्व से आपरेशन आदि हुए और निर्धन ग्रामीण जनता को नेत्र ज्योति लाभ हुआ।

नेत्र शिविर के सञ्चालन एवं व्यवस्था का सराहनीय भार श्री पं० इन्द्रराज जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश एवं मेरठ जनपद के प्रसिद्ध समाज-सेवी ने वहन किया। प्रथम दिन १२०० नेत्र रोगियों का पञ्जीकरण हुआ। सफल चिकित्सा एवं सुचारु व्यवस्था के कारण रोगी सख्या बढ़ती गयी। नाक, कान, गला रोग के प्रसिद्ध चिकित्सक डा० प्रकाश गुलेचा के सहयोग मे इन बीमारियो का भी इलाज किया गया।

निर्धन रोगियों की चिकित्सा एवं दुग्ध आदि का प्रबन्ध शिविर के संयोजक उदारमना सेठ राधेलाल जी सर्राफ द्वारा हुआ। उन्हीं के यहां डाक्टरो आदि की निवास एव भोजन की व्यवस्था थी।

शिविर में चिकित्सा कार्य सहृदय एवं सेवा भावना से हुआ। तीन हजार से ऊपर रोगियो को लाभ हुआ तथा समापन ८ अक्टूबर को भूतपूर्व केन्द्रीय राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह द्वारा हुआ।

नेत्र शिविर की सुव्यवस्था और सेवा धर्म परायणता के लिये मेरठ आर्यसमाज-उसके मन्त्री श्री इन्द्रराज जी एव समाजसेवी श्री राधेलाल जी साधुवाद के पात्र हैं। —संवाददाता

—१४ से २० अक्टूबर तक आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (कानपुर) मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

—शिव पूजन आर्य
नगर नायक

—आर्य समाज घाता (फतेहपुर) का उत्सव १६ से १९ अक्टूबर तक मनाया गया। मन्त्री

—आर्य समाज मल्हारगंज (इन्दौर) का उत्सव २९ सितम्बर से २ अक्टूबर तक समारोह से मनाया गया। मन्त्री

नर, तुम्हे उठना पड़ेगा,
यह अचल, अनिवार्य है।
सत्य पथ के शुभ गुणो को,
देख लो, अवधार्य है।
ऋषि दयानन्द ने सुपथ जो,
अवनि जन को है दिखाया।
हम बढ़ें उस पर अभय हो,
व्योम ने है गीत गाया॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

अजमेर के लिए गाजियाबाद से पद यात्रा आरम्भ

स्वा. सत्य प्रकाश का आशीर्वाद

सन्यास आश्रम गाजियाबाद में २२ सितम्बर, १९८३ को एक विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह, अजमेर में भाग लेने वाले पद यात्रियों का अभिनन्दन किया गया। इस पदयात्रा में २२ सन्यासी, वानप्रस्थी व उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी भाग ले रहे हैं। पदयात्रा का नेतृत्व आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी प्रेमानन्द जी कर रहे है। सर्वप्रथम आश्रम के उपाचार्य श्री जनार्दन भिक्षु ने पदयात्रियों को माल्यार्पण किया। आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी पूज्य स्वामी सत्य प्रकाश जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि गाजियाबाद के सन्यासियों की यह पदयात्रा एक विशेष महत्व रखती हैं। महर्षि दयानन्द जी ने गंगा यमुना के दो आबे में बहुत प्रचार किया। आज यह पदयात्रा उसी क्षेत्र से वहां के लिये प्रस्थान कर रही हैं जहाँ महर्षि ने प्राणोत्सर्ग किया था।

प्रोफेसर रत्न सिंह जी ने पूज्य सन्यासियों का अभिनन्दन करते हुए उपस्थित जन समुदाय से निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर को सर्वात्मना सहयोग देने की अपील की। आपने यह भी बतलाया कि अब तक गाजियाबाद से शताब्दी समारोह के लिये लगभग १५ हजार रुपया सग्रह हो चुका है।

—जनार्दन भिक्षु
उपाचार्य

अपहृत युवती वैश्यालय में बेची गयी युवती बरामद । एक गिरफ्तार

कानपुर :—केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर महानगर के प्रधान श्री देवी दास आर्य ने थाना मूलगंज पुलिस के सहयोग से मूलगंज वैश्यालय में छापामार कर श्रीमती उर्मिला नामक एक २२वर्षीया युवती को उसकी ४ वर्षीय बच्चे के साथ बरामद कर लिया। पुलिस ने इस सिलसिले में आंशु कान्ची नामक तवाईफ को गिरफ्तार कर लिया।

बताया जाता है कि उर्मिला को पांच माह पहले दिल बहादुर नामक व्यक्ति नौकरी दिलाने के बहाने अपहरण कर उसका २०००) दो हजार रुपये में बेच गया था। यहाँ उसको मारपीट कर बलात अवैध धंधा कराया जा रहा था।

वह हर ग्राहक के आगे रोती थी आखिर एक ने आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य को सूचना दी। उन्होंने तस्दीक करने के बाद छापा मार उसे इस नर्क से मुक्त कराया। कुछ दिन पूर्व इस प्रकार सेना के दो जवानों की अपहृत पत्नियों को श्री आर्य ने वैश्यालय से मुक्त कराया था।

ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री

—१९ सितम्बर को आर्य समाज हमीरपुर के कार्यकर्ता श्री रमाकान्त वर्मा एडवोकेट को माता का ९० वर्ष की आयु में निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया।

—सुशील चन्द्र वर्मा

आवश्यक सूचना

मैं ३२ वर्षों से भारत वर्षीय आर्य विद्या परिषद अजमेर की परीक्षाओं का संचालन करता आ रहा हूं। धर्म प्रचार का ये सशक्त माध्यम सिद्ध हुई है। अब वृद्धावस्था वश मैंने इन परीक्षाओं का कार्य श्री बुद्धि प्रकाश आर्य एम० ए० (त्रय) रामपुरा हाउस रामगंज अजमेर (राज०) को सौंप दिया है। निवेदक—

डा० सूर्य देव शर्मा, एम० ए० डी० लिट

—आर्य समाज शाहजहांपुर रजिस्टर्ड ने जिले के प्रसिद्ध कर्मठ भजनोपदेशक प्रज्ञाचक्षु साम शर्मा के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है। और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना को है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

मंत्री

—आर्य समाज शाहजहाँपुर ने प्रज्ञाचक्षु भजनोपदेशक श्री सोम शर्मा के निधन पर दुःख प्रकट किया है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। —राजेन्द्र शर्मा

—मवाना (मेरठ) के भरत सिंह का देहान्त हो गया। आर्यसमाज ने शोक प्रस्ताव पास किया है। —पाल प्रशान्त
मन्त्री

—२१ से २७ अक्टूबर तक शाहगंज जौनपुर में मण्डल प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया है। —सूर्य प्रकाश एडवोकेट
मन्त्री मण्डल आर्य वीर दल

—१५ मई को आर्य समाज लखीमपुर के तत्वावधान में कु० इवेन्जलिन को शुद्ध किया गया और नाम इलावसवा रखा गया। पश्चात् इसका विवाह श्री श्याम जी के साथ किया गया।

—आनन्द स्वरूप आर्य

—बरवाडीह पलामू के पुरोहित श्री पं० जगदीश मिश्र का निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। आप की आयु १०४ वर्ष की थी। आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया है।

—परशुराम मिश्र

—आर्य वीर दल देहरादून के तत्वावधान में आर्य समाज धामावाला में आर्य युवक सम्मेलन हुआ।

—सुबोध शर्मा

—आर्य समाज नई बाजार बक्सर (भोजपुर) का उत्सव ७ से ९ अक्टूबर तक मनाया गया। मंत्री

—नई बाजार बक्सर भोजपुर के ईश्वर चन्द्र का निधन हो गया। मंत्री

—११, १२, १३, मार्च सन् १९८४ को आर्य समाज खेड़ा अफगान में जिला आर्य महा सम्मेलन होना निश्चित हुआ है। इन्हीं दिनों उत्सव भी होगा। मंत्री

—१८ सितम्बर को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में श्री वीरेन्द्र नाम प्रस्थ मुरादाबादी को सन्यास आश्रम का दीक्षा दी गई।

—श्रद्धानन्द परि व्राजक

—आर्य समाज सदर झांसी के पूर्व प्रधान श्री ला० उदय भानु जी का ३० अगस्त को देहान्त हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। —बेहारी लाल आर्य
मन्त्री जिला सभा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी १९८३ के शुभ अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में अवश्य पधारिये ।

आनासागर के सुरम्य तट के समीप राजस्थान का हृदय अजमेर सौन्दर्य से तथा चहुं ओर अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ भरा है। जो आर्य समाज तथा सभी धर्मावलम्बियों की पुण्य स्थली है जो एक प्राचीन ऐतिहासिक तथा पुरातत्व धावगारों की नगरी है; जिसके चप्पे-चप्पे से राजस्थान के वीर तथा वीरांगनाओं की शौर्य गाथाएं गूंज रही है। उसी अजमेर नगरी में मातृशक्ति के पुजारी, नारी जाति के उद्धारक, नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक, स्वाराज्य तथा स्वदेशी के उद्घोषक, भारत के राष्ट्र निर्माता महर्षि स्वामी दयानन्द का निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर मे ३, ४, ५, ६ नवम्बर, १९८३ को शानदार रीति से मनाया जायेगा।

उस अवसर पर महिला सम्मेलन का भी भव्य आयोजन होगा। राष्ट्र तथा अन्तराष्ट्रीय जगत् से विदुषी सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अग्रणी महिलाएं उस समय पधारेंगी।

उस अवसर पर सुश्री स्नातिका बेन नानजी भाई मेहता, आचार्या आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन उपरोक्त विषयों पर विचार विमर्श होगा।

१–दहेज प्रथा, २–आत्महत्यायें, ३–नारी की नौकरी की समस्याएं, ४–नारी और राजनीति, ५–नारी और समाज, ६–छुतछात, ७–कुमारी कन्याओं की सुरक्षा। बलात्कार, बेचा जाना, ८–पारिवारिक परम्पराए तथा आधुनिक नारियां, ९–अन्धविश्वास, १०–शिक्षा का अभाव, ११–वेद शिक्षा, १२–वर्तमान शिक्षा प्रणाली, १३–चलचित्रों का प्रभाव तथा अश्लील विज्ञापनो पर रोक, १४–सहशिक्षा, १५–संस्कार और युवापीढ़ी।

आपका इस समारोह मे हार्दिक स्वागत है।

सरला शारदा
संयोजिका
महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी
अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेल, अजमेर

समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

(पृष्ठ ६ का शेष)

पुनः सबको एक साथ एकत्रित किया जाय और जो जो विचार तथा आचार सबमें उपस्थित हों ऐसे सर्वमान्य विचार आचार एक स्थल पर संकलित कर लिए जावें और हम सब उन पर हस्ताक्षर कर देवें जिससे वह आचरण संहिता संसार में सभी मनुष्यों के लिये मान्य, व्यवहारिक तथा उपयोगी घोषित हो जावे। विभाजित मानव समाज एकता के सूत्र में बंध जाये। उपस्थित किसी भी प्रतिनिधि ने इसका स्वागत अपने क्षुद्र स्वार्थ तथा नेतागिरी के कारण नहीं किया परिणामतः आज महर्षि की बात न मानने का परिणाम हमारे सम्मुख है कि मानव का जितना खून धर्म के नाम पर बहाया है शायद इसका अपवाद अन्यत्र कहीं उपलब्ध हो। महर्षि के उपकार सागर की तरह हैं उनका उल्लेख करना मेरे लिये असम्भव है।

'गिने जायें मुमकिन हैं सहरा के जर्रे,
समंदर के कतरे फलक के सितारे,
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसां।
न गिनती में आएं कभी हम से सारे ।।

सप्त मर्यादायें—२ (क्रम)

(पृष्ठ ३ का शेष)

महिमा है, वायु के समान तुम्हारा वेग है। हे वीरो ! तुम्हारे इन गुणों का कौन पार पा सकता है ?

इसलिये आधिभौतिक, आधि दैविक और आध्यात्मिक शत्रुओं और पिशाचो का मुकाबला करने के लिए तू कमर कसकर स्वयं तैयार हो।

स्वय वाजिस्तन्व कल्पयस्व
स्वय यजस्व स्वयं जुषस्व।
महिमा ते अन्येन न सन्न शे ।। य० २३।१५

हे ज्ञान क्रिया सम्पन्न ! अपने शरीर को शत्रुओ से लड़ने को समर्थ कर, सफल कर। स्वयं यज्ञ कर। स्वयं प्रीति से सेवन कर। तेरा महत्व दूसरा कोई नहीं प्राप्त कर सकता। गीता में इसी बात की पुष्टि करते हुए कहा है :–

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमव सादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।

अपना उद्धार अपने पुरुषार्थ से करे, अपने आपको मनुष्य मिटाये नहीं क्योंकि मनुष्य अपना अपने आप ही मित्र है और अपना अपने आप ही शत्रु है। गीता मे आया है :–

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः,
षडेते यत्र विद्यन्ते तत्र देवः सहायकृत्।

उद्यम, साहस, धीरज, बुद्धि शक्ति पराक्रम ये छः गुण जहां रहते हैं, वहां भगवान् सहायक होता है। हिन्दी के कवि के शब्दों मे कहूंगा।

लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ, रुकने का क्या यहां काम है,
रुकना मृत्यु और बढ़ना ही जीवन का बस एक नाम है।
जो लड़ता है, वही राम है, उसको ही मिलती है सीता,
यही युद्ध की शिक्षा देती, कृष्ण कन्हैया की है गीता।
जहाँ सत्य सुन्दर शिव बसते, बसती वहां शक्ति कल्याणी,
युद्ध निरन्तर, युद्ध विजय है, युद्धों की एक कहानी ।।

ईश स्तवन

कैसे कैसे प्रभु तेरे विलक्षण कार्य सारे,
लाख लाख योनियो मे जीवो को घुमाता है ।
शत शत धन्य प्रभु प्राणो को धारे है वायु
नाना लोक लोकान्तर अनन्य घुमाता है ।।
थल जल अर्नल सभी को धारे रहा तू हीं
सिंधु की गम्भीरता मे तू ही तो समाता है ।
हमारा हट अज्ञान कर दो प्रदान ज्ञान,
जीवन 'नरेन्द्र' बने माथ यो नमाता है ।।

—नरेन्द्र आर्य, मैनपुरी

पं० सूर्य देव शर्मा (अजमेर) का निधन

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान विचारक तथा कर्मठ कार्यकर्ता प० सूर्य देव शर्मा भूतपूर्व हैडमास्टर डा० ए० वी० हाई स्कूल अजमेर का ७ अक्टूबर १९८३ को ८३ वर्ष की आयु मे निधन हो गया।

प० सूर्य देव शर्मा

सूर्य देव शर्मा का जन्म एटा जिले मे हुआ। शिक्षा डी०ए०वी० कालेज कानपुर मे हुई और वहीं अध्यापक रहे। अजमेर मे डा०ए०वी० हाई स्कूल के हैडमास्टर होकर गये और जीवन पर्यन्त उसी स्थान मे ही आर्य समाज का सेवारत रहे। एकाकी जीवन होने के कारण अपनी अधिकांश आय आर्य समाज को दान देते रहे। लेखक के रूप मे एक दर्जन से अधिक पुस्तक आर्य समाज के सम्बन्ध मे लिखी थी।

आर्य मित्र मे चार हजार को सूर्य देव शर्मा निधि स्थापित की। समस्त आर्यजन शर्मा जी के निधन से दुखी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० कलानाथ सिंह ने निधन समाचार को सुनकर शोकपूर्ण होकर कहा कि आर्य समाज को शिक्षा क्षेत्र का स्तम्भ अस्त हो गया।

आर्य मित्र दिवंगत आत्मा के प्रति शान्ति की प्रार्थना करता है और सन्त तुल्य जीवन व्यतीत करने वाले विभूति के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।

—सम्पादक

काशी आर्य समाज शताब्दी समारोह स्थगित

आर्य समाजो की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शाल वाले के आदेशानुसार ३ से ६ नवम्बर तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाये जाने के कारण) काशी आर्य समाज का शताब्दी समारोह सम्प्रति स्थगित किया जाता है। अगली तिथिया बाद मे सूचित की जायेंगी। यह शताब्दी २७ से ३० अक्टूबर तक मनाई जानी थी।

कैलाश नाथ सिंह
सयोजक
काशी आर्य समाज शताब्दी समारोह

सभा प्रधान के प्रति—
शुभ कामना

मोक्ष भोगो सर्वदा तुम, हो कृपा भगवान की।
तुम चरम सीमा पर पहुचो उन्नती उत्थान की।।
विश्व के आकाश मे, चमको रवि सम तुम सदा
और फैले विश्व मे आप की नव ज्योतिर प्रभा।।
अभि उदय हो नित तुम्हारा नित्य प्रति उत्कर्ष हो।
प्रभु करें मंगल तुम्हारा नित्य नूतन हर्ष हो।।

आपका शुभ चिन्तक
राम नारायण अवस्थी पुरोहित आर्य समाज
मेस्टन रोड कानपुर

प्रान्तीय संचालक का दौरा सम्पन्न

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के प्रान्तीय सर संचालक डा० बालकृष्ण आर्य विकल जि की, सितम्बर मे घाटमपुर कुवांखेड़ा, सुमेरपुर पथरा हमीरपुर आदि स्थानो का दौरा किया। हमीरपुर मण्डल के सचालक श्री रामगोपाल आर्य ने परो मे संचालक जी का भव्य स्वागत किया और उनका परिचय आयोजन को दिया और इसके बाद संचालक जी के चार ओजस्वी बौद्धिक आर्य वीरो के बीच हुए भाषण जिनका आर्यवीरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा हर नगरो मे ४० से ५० आर्य वीर प्रतिदिन आते हैं।

—आर्य प्रकाश आर्य
कार्यालय मन्त्री
पश्चिम उ० प्र० आर्य वीर दल

आर्य वीरों का स्वागत करो,

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के सह संचालक श्री प्रकाश भारती १० आर्यवीरों का एक जत्था लेकर २२ अक्टूबर को साइकिल द्वारा अजमेर के लिए रवाना हो रहे हैं, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, अमरोहा, गाजियाबाद होते हुए अजमेर पहुचेंगे। सभी आर्यजनों तथा आर्यवीर दल के अधिकारियो से प्रार्थना है कि उत्साही आर्यवीरों का अपने स्थान पर स्वागत करें।—डा०बालकृष्ण आर्य विकल
प्रान्तीय सचालक

वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

(गताङ्क से आगे)

—आर्य समाज बिनौली (बदायु) आर्य समाज परमानन्द बस्ती बीकानेर, आर्य समाज खरसरा (बलिया) आर्य समाज लार आर्य समाज हिण्डौन, आर्य समाज मुस्करा।

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष—45993 ४२६६१
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वा० कार्तिक १
कार्तिक कृ० २, रविवार
२३ अक्टूबर १६८३ ई

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

उ. प्र. की आर्य समाजों के नाम परिपत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से सम्बन्धित आर्य समाजों के कार्य एवं कागजातो के निरीक्षण हेतु सभी आर्य समाजो तक निरीक्षण हेतु सभी आर्य समाजो तक निरीक्षक महोदय पहुचेंगे। कतिपय आर्य समाजो मे नियमित साप्ताहिक अधिवेशन नहीं हो रहे हैं कृपया ऐसी आर्य समाजें सूचित कर देवे। कार्यक्रम मण्डल एवं जिले वार तैयार हो रहा है और प्रत्येक आर्य समाज तक हमारे निरीक्षक महोदय आयेंगे यदि किसी आर्य समाज के अधिकारी/सदस्यो को कुछ जानकारी देनी हैं वे भी निरीक्षण के समय अवश्य दे देवें तथा निरीक्षक महोदय को सहयोग प्रदान करें।

—चन्द्र पाल आर्य, एम० काम० एल० एल० बी०
मुख्य निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
मन्त्री आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अक्टूबर ८३ को समाप्त हो जायेगा। वी० पी० भेजने मे ४ ५० अधिक पोस्टेज लगते हैं, इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआडर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

३६८, ४८३, २२४८, ३२१०, ३२४०, ३२६२, ४६२२, ५०५५, ५३५२, ५३५४, ५३६१, ५६५४, ५६७३, ५६८०, ६२३४, ६४११, ७०२४, ७०२५, ६०२६, ६०३५, ६२०५, ६२८०, ६३२३, ६५३४, ६५४६, ६७२१, ६७३१, ६७३२, ६७३६, ६६६६, १०००२, १०००३ १००१० ११०३६, ११२६३, ११३०६, ११३१८, ११३३३, ११३४१, ११३५४, १२४१६, १२४१७, १२४२५, १२४२८, १२४२६, १२७३७, १२७३८, १२७३६, १२७४०, १२७४१, १२७४३, १२७४४, १२७४५, १२७४८, १२७४६, १२७५०, १२७५१, १२७५२, १२७५३, १२७५४, १२७५५, १२७५७।

—विनीत
व्यवस्थापक

सुशीला भरतिया दिवगत

स्व० नवलकिशोर जी भरतिया, उपप्रधान आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर एवं दयानन्द कालेज ट्रस्ट एण्ड मैनेजमेण्ट सोसाइटी उ०प्र०की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला भरतिया का देहावसान २६—६—८३ को हो गया आपका संपूर्ण जीवन यज्ञमय था।जो उनके सम्पर्क में आयाउनसे देखा कि वह गया आर्य स्नेहमयी, आदर्शमयी, त्यागमयी, तपोमयी आदर्श महिला थी, जैसा उनका नाम था वैसा ही गुण भी था, आप अपने पीछे पुत्र पुत्रियां, नाती, पोते आदि भरा पूरा परिवार छोड गई है। आपका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार भैरवघाट पर हुआ देशी घी की ३ टीन, सामग्री ३ मन कपूर २५० ग्राम समिधा, ६ मन चन्दन, ५ किलो अगर तगर केसर, कस्तूरी मेवा युक्त सामग्री थी। श्री आदित्य किशोर, श्री कान्ति किशोर, श्री भरत किशोर, श्री आनन्द किशोर चारो पुत्रो ने मिलकर चिता में अग्नि लगाई। तथा शान्ति यज्ञ १०—६—८३ को डा० विजय पाल शास्त्री एम० ए० मन्त्री आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर ने कराया।

परमात्मा से प्रार्थना सद्गति प्रदान हेतु की गई तथा दीन दुखियो, अनाथालय के बच्चो को भोजन कराया, लगभग ३०० वस्त्र भी सबको दान दिये। वेद प्रचार हेतु आर्यसमाज मेस्टन रोड को ११०१०० की द दी गई।

—(डा०) विजयपाल शास्त्री
मन्त्री

सूचना

सभा के प्रत्येक महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा ढोलक वादकों से निवेदन है कि प्रत्येक धन की रसीद चाहे वह किस मद की हो, पूर्ण विवरण सहित पूर्ण धन की काटनी अतिआवश्यक है तथा पूर्ण धनराशि शब्दों में अंकित होना चाहिए, डायरी—बिल तथा रसीदें बहुत ही स्पष्ट तथा साफ भरी जानी चाहिये।

२—प्रत्येक मास की डायरी—बिल प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह में कार्यालय को प्रत्येक दशा में प्राप्त हो जाना चाहिये।

—सत्यवीर शास्त्री—अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए व्यवस्थापक आर्यभास्कर प्रेस,५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से मुद्रित

लखनऊ—मा० कार्तिक २२ कार्तिक शु० ८ रविवार सम्वत २०४० वि० १३ नवम्बर सन १९८३ ई०

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि का सफल आयोजन

अजमर मे ३ नवम्बर से ६ नवम्बर १९८३ के मध्य दयानन्द निर्वाण शताब्दि विभिन्न कार्यक्रमो के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। भारत के प्रधान मन्त्री से लेकर … आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान सार्वदेशिक स्तर के आर्य नेताओ ने भाग लिया। उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक आर्य नर नारी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

उदघाटन—

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने … दयानन्द के … हुए शताब्दि समारोह का उदघाटन किया … ऋषि … के आदर्श पर चलने की प्रेरणा …

प्रदर्शिनी उदघाटन—

ऋषि उद्यान आना सागर मे आकर्षक प्रदर्शिनी का आयोजन था … जी के हस्तलिखित सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋषिवर के वस्त्र … आदि प्रदर्शित की गयी थी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प्रो० … ने इसका … करते हुए बल दिया कि इन अमूल्य सामाग्रियो की भली प्रकार से सुरक्षा होनी चाहिये यह … की निधि है।

शिक्षा सम्मेलन—

निर्वाण शताब्दि के अवसर पर … नवम्बर का सायं शिक्षा सम्मेलन का आयोजन … प्रमुख वक्ता के रूप मे उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प्रो० कलाशनाथसिंह जी ने शिक्षा शिशु के सर्वाङ्गीण विकास का प्रथम सोपान बताया और ऋषिवर द्वारा प्रणीत शिक्षा पद्धति की पुष्टि की और शिक्षा के साथ नैतिकता की वृद्धि आवश्यक है अतः नैतिक शिक्षा पर बल दिया। साथ ही शिक्षा की दोहरी पद्धति का विरोध किया। पब्लिक स्कूल की शिक्षा देश के बालको को विदेशी बनाने का एक साधन है। समस्त देश मे एक शिक्षा होनी चाहिये उसका निदर्शन हमे ऋषि दयानन्द प्रणीत शिक्षा पद्धति से लेना चाहिये।

सर्व साधारण की प्रतिज्ञा—

ऋषि निर्वाण शताब्दि के अवसर पर ६ नवम्बर ८३ को समस्त आयजनो ने निम्न प्रतिज्ञा ग्रहण की—(१) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि—सृष्टिकर्ता परमात्मा—उसकी सृष्टि और ईश्वरीय ज्ञान मे हमारी निरन्तर आस्था रहेगी।

(२) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि—जीवन के उदात्त मानव मूल्यों की रक्षा करते हुये हम परस्पर स्नेह और सौमनस्य का प्रसार करेगे और किसी ऐसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं देगे—जिससे आपस मे द्वेष और ईर्ष्या की भावना बढ़े। (शेष पृष्ठ १२ पर)

वार्षिक १६)	सम्पादक—	वर्ष ८१
छमाही ८)	आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए०	अङ्क ४३
विदेश मे ३ पौंड		
एक प्रति ४० पैसे		

सामाजिक क्रांति दयानंद को सच्ची श्रद्धांजलि

—नारायणदत्त तिवारी

दयानन्द नगर (अजमेर) ६ नवम्बर—केन्द्रीय उद्योग मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने देश की एकता और अखण्डता के लिये सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा है कि बिना इसके आर्थिक और राजनैतिक क्रान्ति भी सम्भव नही।

यहा आज महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह के अन्तिम दिन सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उन्होंने आर्यसमाज के अनुयायियो का आह्वान किया कि वे 'मनसा वाचा कर्मणा' सामाजिक क्रान्ति के वाहक बनें, यही महर्षि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री तिवारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के शब्दो में भी आर्य वही जो सामाजिक क्रान्ति को अपने जीवन मे धारण करें।

उन्होंने कहा कि सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता सिर्फ भारत की ही नहीं अपितु समूचे विश्व के लिये है। क्योंकि अमीर और गरीब देशो के बीच बढ़ती खाइ तथा परमाणु शस्त्रो की होड़ से समूची मानवता के लिये खतरा हो गया है।

ताम्रपत्रों पर सत्यार्थप्रकाश

दयानन्द नगर [अजमेर] ६ नवम्बर—केन्द्रीय उद्योग मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने आर्यसमाज के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को ताम्र पत्रो पर खोदने वाले व्यक्तियो को आज यहा सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन मे पुरस्कृत कर सम्मानित किया।

सत्यार्थप्रकाश को ताम्र पत्रो पर खोदने वालों मे प्रमुख दिल्ली के ब्रह्मचारी श्री वृजानन्द को पाच हजार एक सो ग्यारह रुपये व सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति देकर सम्मानित किया गया। हरियाणा के श्री यशपाल शास्त्री, गुरुकुल के श्री रामवीर शास्त्री व अजमेर के श्री स्वामी सत्यप्रकाश को सत्यार्थप्रकाश की एक-एक प्रति देकर सम्मानित किया गया।

ये ताम्रपत्र रेवाड़ी में बनवाए गये व दिल्ली मे खुदवाये गये। कुल तीस मन वजनों के इन ४३० ताम्रपत्रो पर सत्यार्थ प्रकाश को खुदवाने मे ढाई लाख रुपये खर्च हुए।

अभूतपूर्व शोभा-यात्रा

अजमेर मे दयानन्द निर्वाण शताब्दि के अवसर पर ५ नवम्बर को एक विशेष शोभा यात्रा निकली। जिसमे भारत के सभी प्रान्तो से आये नर-नारी बैनरो के साथ चल रहे थे—आर्य वीर दल की सज्जा निराली थी। विशेष उल्लेखनीय है मुसलमानो द्वारा स्वागत जिसमें प्रसिद्ध ख्वाजा दरगाह के प्रबन्धक भी शामिल थे।

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ के नवनिर्मित कक्ष का उदघाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प्रा० कलाशनाथसिह साथ मे श्री वीरेन्द्र रत्नम सभा उपमन्त्री भी खड़े हैं।

जिस देश की राष्ट्र-भाषा न हो उनमें भारत अकेला है

—राजा रणञ्जयसिह

रायबरेली २५ अक्टूबर—अमेठी नरेश राजा रणञ्जयसिह ने कहा है कि भारत ही एकमात्र ऐसा प्रजातान्त्रिक देश है जहा उसकी अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है।

राजा साहब न उ०प्र० और बिहार की सरकारो द्वारा उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा बनने की चतुराई पर क्षोभ व्यक्त करते हुए कहा कि लका मे जो कुछ हो रहा है उससे भारत सरकार को सबक लेना चाहिये।

आर्यसमाज द्वारा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजा रणञ्जय सिह ने कहा कि यह बडे अफसोस की बात है कि देववाणी की ज्येष्ठ सुता हिन्दी के प्रचार प्रसार और सम्मान के लिये सरकार से याचना करनी पड़ती है। उन्होने कहा कि जो सरकार भाषा और धम और जाति को वोट की राजनीति के लिए इस्तेमाल करती हो उससे तो अच्छा यही होगा कि कोई सरकार ही न हो अगर सरकार का होना अनिवार्य हो तो राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत सरकार होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि ३५ वर्षों मे इस देश की सरकार राष्ट्र भाषा का एक छोटा सवाल नहीं सुलझा सकी तो इसमे राष्ट्रभाषा का क्या कसूर है।

राजा साहब ने आर्यसमाज सेवको से इस विसगति का विरोध करने की अपील की। प्रारम्भ मे सम्मेलन के सयोजक डा० प्रसन्न मिश्र ने राजा साहब का स्वागत किया आर्यसमाज के मन्त्री श्री महेन्द्र शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। राय अबिका नाथसिह ने राजा साहब के प्रति आभार व्यक्त किया।

महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह

विघटन कारी तत्वों के खिलाफ जनमत पैदा करने पर जोर

दयानन्द नगर (अजमेर), ६ नवम्बर। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के तीसरे दिन कल आयोजित राष्ट्रीय सामनस्यता सम्मेलन में विघटनकारी तथा साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ जनमत जागृत करने पर जोर दिया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन भूतपूर्व रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिंह ने किया। उन्होंने खालिस्तान आन्दोलन की कड़ी भर्त्सना की तथा कहा कि यह आन्दोलन सिखों का नहीं बल्कि विदेशी और साम्प्रदायिक ताकतों के हाथ बिके हुए कुछ लोगों का है।

प्रो० सिंह ने स्पष्ट शब्दों में आरोप लगाया कि इस आन्दोलन में उन्हीं लोगों का हाथ है जिन्होंने पहले तो भारत के दो टुकड़े किए तथा अब और टुकड़े चाहते हैं। यही कारण है कि खालिस्तान की मांग बजाए भारत के लन्दन (ब्रिटेन) और वेन्कूवर (कनाडा) से उठती है।

उन्होंने उग्रवादियों द्वारा पंजाब में की जा रही साम्प्रदायिक हिंसा की कड़ी आलोचना की तथा कहा कि तथाकथित उदारवादी सिख नेता भी इनसे कम नहीं हैं।

प्रो० सिंह ने शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी पर भी आन्दोलन को भड़काने का आरोप लगाया।

वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी पृथ्वी सिंह आजाद ने सरकार की तुष्टिकरण की नीति की कड़ी आलोचना की तथा कहा कि जब तक यह नीति रहेगी, राष्ट्रीय सौमनस्य कायम नहीं होगा।

श्री आजाद ने पंजाब में चल रहे खालिस्तान आन्दोलन की आलोचना करते हुए कहा कि वे वही राह अपना रहे हैं जो मुसलमानों ने अपनाई थी।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य समाज के वरिष्ठ नेता पं० शिव कुमार शास्त्री ने भी सरकारी तुष्टिकरण की नीति की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि सरकार को धर्मों के प्रति समान रुख अपनाना चाहिए, किन्तु दुःख है कि महज वोट के लिए लोग इस कदर बेबस हो जाते हैं।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता छोटूसिंह एडवोकेट ने भी खालिस्तान आन्दोलन की भर्त्सना की और आर्यसमाज के लोगों से एक होने का आह्वान किया।

पं० जयदेव शास्त्री ने देश में विघटनकारी ताकतों के रवैये के प्रति सरकारी रुख पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इस बात पर जोर दिया कि इन ताकतों को सख्ती के साथ कुचला जाए। सम्मेलन का संयोजन शताब्दी समारोह के मंत्री श्रीकरण शारदा कर रहे थे।

आर्य समाज नाई मण्डी आगरा का उत्सव

आर्य समाज नाई मण्डी आगरा का २३ वां वार्षिकोत्सव १३ से १५ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। मन्त्री

दयानन्द सरस्वती ने सोते राष्ट्र को जगाया

—इन्दिरा गांधी

३ नवम्बर को अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रथम निर्वाण शताब्दी बड़ी धूम-धाम से प्रारम्भ हुई, इस शताब्दि का उद्घाटन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सभी भारतीयों से वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्तों का पालन करने और महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने की अपील की।

आपने कहा दयानन्द जी एक महान् विचारक और क्रान्तिकारी समाज सुधारक थे तथा एक ऐसे सच्चे सन्त थे, जिन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को आत्मसात कर लिया था और अपने उपदेशों का प्रचार करते हुए सारे भारत की यात्रा की।

उन्होंने दयानन्द तथा उनके अनुयायियों की सर्व धर्म समभाव का प्रचार करने और शिक्षा संस्थान स्थापित करने के लिये सराहना की। प्रधानमन्त्री ने अपील की कि विज्ञान का उपयोग जीवन के हर पहलू में रचनात्मक कार्यों में होना चाहिए। तोड़-फोड़ और लड़ाई में उसका उपयोग नहीं होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत प्रगति करे, ऊंचा उठे, ऊंचे आदर्शों को माने, सत्यमार्ग पर चले यही दयानन्द का सन्देश है। और भारतीयों का कर्तव्य है। इन्दिरा जी ने कहा कि महान् व्यक्ति बहुमुखी होते हैं। वे अपने चरित्र बल, परिश्रम और आकांक्षाओं से जनजीवन को मोड़ देते हैं। ऋषि दयानन्द को ऋषि और सरस्वती उनके गुणों से ही कहा गया है। उन्होंने हिन्दू धर्म की खामियों को देखा, उनके सुधार की चेष्टा की और सकारात्मकता से धर्म को बचाया। उन्होंने कहा कि ऐसे महापुरुषों का मूल्यांकन इतिहास ही करता है, समकालिक लोग नहीं।

इन्दिरा जी ने कहा कि दयानन्द युग प्रवर्तक थे। उन्होंने देश को जगाया। उसकी भीतरी शक्ति को जगाया तथा अन्ध विश्वास और जाति प्रथा पर प्रहार किया।

प्रधान मन्त्री ने कहा कि आज जाति के नाम पर लोग देश में मतभेद फैला रहे हैं। तथा निजी और राजनीतिक स्वार्थों के लिये उसका उपयोग कर रहे हैं।

आरम्भ में स्वामी ओमानन्द ने इंदिरा जी को आर्य साहित्य भेंट किया। स्वागत समिति की ओर से श्री छोटू सिंह तथा लाला राम गोपाल शालवाले ने उनका स्वागत किया।

श्रीमती इंदिरा गांधी से पूर्व मोरिशस के उप प्रधान मन्त्री श्री हरीश बुधु ने कहा कि एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए। तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य विश्वविद्यालय स्थापित किया जाना चाहिए।

—आर्य समाज सहतवार ने भू० पू० कोषाध्यक्ष श्री हीरा प्रसाद की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है।

—सुदर्शन सिंह
मंत्री

अजमेर में महर्षि दयानन्द

(प्रो० रत्नसिंह जी गांधीनगर गाजियाबाद उ० प्र०)

मनुष्य जीवन के दो छोर हैं, जिनका नाम है जन्म और मृत्यु। इन्हीं दो के मध्य मे मनुष्य का समस्त जीवन व्यापार चलता है। महर्षि दयानन्द के जीवन के दो किनारों में से अन्तिम का सम्बन्ध जिस नगर से है उसका नाम है अजमेर। इस नगर से महर्षि दयानन्द का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। मथुरा मे गुरु विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर ढाई वर्ष तक महर्षि ने वेद ज्ञान प्राप्त किया और वैशाख मास के अन्त सं० १९२० वि० तदनुसार अप्रैल मास १८६३ को उनसे विदा ली। विदाई के समय गुरु जी ने कहा कि (१) देश का उपकार करो (२) सत्य शास्त्रों का उद्धार करो (३) मतमतान्तरों की अविद्या को मटाओ (४) वैदिक धर्म का प्रचार करो और (५) मनुष्यकृत ग्रंथों मे परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा और ऋषिकृत में नहीं इस कसोटी को हाथ से न छोड़ना।

महर्षि दयानन्द ने गुरु जी के आदेशों को स्वीकार किया और उनके चरणो को स्पर्श कर वहाँ से विदा हुए और वहां से सीधे आगरा पहुंचे। आगरा से लश्कर, ग्वालियर, करौली, जयपुर, पुष्कर आदि स्थानों में निरन्तर तीन वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार करने के बाद द्वितीय ज्येष्ठ सं० १९२३ तदनुसार ३०मई सन् १८६६ ई०को अजमेर नगर मे पधारे। इस नगर मे दयानन्द जी का आगमन ४ बार हुआ। यहां पधारने की तिथियां व अवधि इस प्रकार है–

प्रथम आगमन द्वितीय ज्येष्ठ सं० १९२३ तदनुसार ३० मई सन् १८६६ अवधि लगभग साढ़े तीन मास,

प्रस्थान–सितम्बर १८६६।

द्वितीय आगमन कार्तिक सुदी १३ सं० १९३२ तदनुसार ७ नवम्बर १८७८ ई० २४ दिन।

प्रस्थान–मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी सं० १९३५ तदनुसार १ दिसम्बर १८७८ ई०।

तृतीय आगमन ५ मई १८८१ ई० — ४९ दिन
प्रस्थान–२२ जून १८८१ ई०

चतुर्थ आगमन २७ अक्टूबर १८८३ ई० — ४ दिन
महाप्रयाण–३० अक्टूबर १८८३ ई०

योग–लगभग ६ मास

इन बार आगमनों में अन्तिम आगमन बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण रहा।

जोधपुर मे एक दुष्ट व्यक्ति के द्वारा विष दिए जाने पर चिकित्सा हेतु महर्षि को अजमेर लाया गया और ४ दिन तक उनकी चिकित्सा होती रही, परन्तु हाय रे अजमेर नगरी तुझे ही वह दुर्दिन देखना था जबकि ३० अक्टूबर १८८३ को दीप पंक्तियों से सारा देश जगमगा रहा था, किन्तु मानवमात्र के भाग्य को नया जन्म देने वाला महापुरुष संसार से विदा हो रहा था। जिस महान् आत्मा ने गुरु विरजानन्दजी के आदेश का पालन करते हुए भारत को बचाया धर्म, संस्कृति, ज्ञान, सत्य को नया जन्म दिया, प्रभु की वाणी 'वेद' का उद्धार और प्रचार किया, वह सच्चा महामानव परमात्मा का सन्देश फैलाने वाला,दीपकों के जगमग के साथ धरती से विदा हुआ।

इस दुर्भाग्यपूर्ण बार 'दवसीय प्रवास से पूर्व अजमेर मे अपने तीन बार के प्रवासों मे महर्षि ने मुख्यतः तीन कार्य किये। (१) मूर्ति पूजा भागवत और मालाओं का खण्डन। (२) अवैदिक मतावलम्बियो के साथ शास्त्रार्थ। (३) गोवध बन्द कराने का प्रयास।

अब प्रत्येक प्रवास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाता है–

३० मई सन् १८६६ को स्वामी जी पुष्कर से अजमेर पधारे और बंशीलाल जी के उद्यान मे ठहरे। स्वामी जी ने आते ही सारे नगर में विज्ञापन लगवा दिये कि जिस किसी को मूर्तिपूजा पर शंका हो तो वह हमसे आकर शास्त्रार्थ कर ले। पौराणिकों मे खलबली मच गई, परन्तु शास्त्रार्थ करने का साहस किसी को न हुआ। ईसाई पादरियो के साथ ४ दिन तक स्वामी जी का निरन्तर शास्त्रार्थ हुआ। प्रथम तीन दिन तक ईश्वर, जीव, सृष्टिक्रम और वेद विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। स्वामी जी ने बड़ी गम्भीरता एवं योग्यता से पादरियो के आक्षेपो का समाधान किया। चौथे दिन ईसा के ईश्वर होने और मरने के पश्चात जीवित हो आकाश पर चढ़ जाने विषयक प्रश्न पादरियो से किए गए परन्तु वे कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके। पादरी राबिन्सन स्वामी जी के विद्वत्तापूर्ण उत्तरो से बहुत प्रभावित हुआ और प्रसन्न होकर एक पत्र मे उसने स्वामी जी के बारे मे यह लिखा कि–

"यह वेद के एक प्रसिद्ध विद्वान् हैं, हमने सारी आयु मे संस्कृत का ऐसा विद्वान नहीं देखा। ऐसे मनुष्य संसार मे अप्राप्य हैं। जो इनसे मिलेगा उसे अत्यन्त लाभ होगा। जो कोई सज्जन इनसे मिले वह इनका बहुत सम्मान करे।"

एक दिन स्वामी जी कर्नल ब्रूक बहादुर एजेंट गवर्नर जनरल से भी मिले थे। स्वामी जी ने उनसे गोहत्या की हानियां और गोरक्षा के लाभ बतलाया और गोवध बन्द करने का निवेदन किया। साहब ने उत्तर दिया कि महाराज! यह कार्य मेरे अधिकार में नहीं है। मै आपको पत्र लिखकर देता हूं, आप गवर्नर जनरल से मिल लें।

स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक एवं प्रचारक होते हुए भी स्वामी दयानन्द उन दिनों स्त्रियों को उपदेश नहीं करते थे। एक दिन बहुत-सी वेश्या स्वामी जी के पास आईं। स्वामी जी ने पूछा– 'बहिनों! कहां से आई हो?' उन्होंने उत्तर दिया–'महाराज राम-स्नेही साधुओं के पास से होकर यहां आई हैं?' स्वामी जी बोले– 'साधुओं के पास क्यों गई थीं?' वेश्याओं ने कहा कि यदि आप कहें तो आपके पास आ जाया करें। स्वामी जी ने पूछा–'हमारे पास आने से क्या प्रयोजन है?' उत्तर मिला–'महाराज हम उपदेश लेना चाहती हैं।' स्वामी जी बोले–'यदि यही प्रयोजन है तो हम स्त्रियों को उपदेश नहीं दिया करते। अपने पतियों को हमारे पास भेज देना। वे यहां से उपदेश सुनकर आपको भी सुना देंगे।' यह सुनकर वे चली गईं और फिर लौटकर कभी नहीं आईं।

अजमेर में लगभग साढ़े तीन मास तक प्रचार करने के पश्चात् स्वामीजी किशनगढ़, दूदू और जयपुर मे ठहरते हुए आगरा जा पहुंचे। लगभग साढ़े बारह वर्ष के बाद स्वामी जी अजमेर मे दूसरी बार ७ नवम्बर १८७८ को पधारे। इस बार वे सेठ रामप्रसाद के बाग में ठहरे। कुछ समय पश्चात् गजमल जी की हवेली मे ईश्वर प्रतिपादन, वेद, वर्णाश्रम, नियोग, विदेश यात्रा,भक्ष्या-भक्ष्य विषयो पर व्याख्यान होने लगे। ईसाई-पादरियों से कई शास्त्रार्थ हुये। स्वामी जी के हृदय में विधर्मों के प्रति कितनी दया निवास करती थी, इसका प्रमाण तब

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दयानन्द शताब्दीसमारोह मे गोहत्या बंदी की मांग

वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री पृथ्वीसिंह आजाद की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन के प्रारम्भ मे परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं शताब्दी समारोह के अध्यक्ष श्री ओमानन्द सरस्वती ने भी कहा कि स्वामी दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब प्रत्येक आर्य जन सामाजिक विषमता मिटाने का संकल्प लें।

राजगुरु शास्त्री (महू) ने सम्मेलन में अपने भाषण के दौरान साम्प्रदायिकता मिटाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने गोहत्या बन्द करने की मांग करते हुए सुझाव दिया कि कानून में संशोधन कर गोहत्या करने वालों को मृत्यु दण्ड दिया जाए।

श्री चिंतामणि आर्य ने कहा कि आर्थिक परिवर्तन के लिए यह आवश्यक है कि पहले सामाजिक परिवर्तन हो। सांसद आचार्य भगवानदेव ने अपने भाषण में कहा कि हर आर्य सामाजिक क्रान्ति का वाहक है तथा उसे अपने इस दायित्व का निर्वाह करना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बाबा पृथ्वी सिंह आजाद ने आर्य सामाजियों का आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में हरिजन कल्याण का काम हाथ में लें ताकि उन्हें धर्म परिवर्तन के खतरे से बचाया जा सके।

सामाजिक क्रांति सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पारित कर निजाम के समय चले हैदराबाद आन्दोलन के रूप में मान्यता देने की मांग की।

प्रस्ताव में कहा गया है कि हैदराबाद आन्दोलन का भी देश के लिए उतना ही महत्व है जितना अन्य आन्दोलनों का। इसलिए इस आन्दोलन मे भाग लेने वालों को भी वही सुविधायें और प्रोत्साहन मिलना चाहिए जो स्वाधीनता सेनानियों को मिलता है।

पब्लिक स्कूल

शिक्षा सम्मेलन में गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा को प्रोत्साहन देने पर विशेष जोर दिया गया। वरिष्ठ शिक्षा विद् श्री दत्ता श्रेय वावले ने पब्लिक स्कूलों की स्थापना का विरोध करते हुए कहा कि गुरुकुल की शिक्षा से ही नई पीढ़ी को चरित्रवान तथा देश भक्त बनाया जा सकता है।

आर्य रत्न

समारोह मे आज देश-विदेश में आर्य समाज की उल्लेखनीय सेवा करने वाले १८ व्यक्तियों को आर्य रत्न की उपाधि में विभूषित किया गया।

इनमें मारीशस के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री शिवसागर रामगुलाम का भी नाम शामिल है। जिन अन्य लोगों को आर्यरत्न की उपाधि दी गई उनमें श्री सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज (लंदन) श्री शिशुपाल राम नरोत्तम (दक्षिण अफ्रीका) और डा० ओम प्रकाश (वर्मा) के नाम उल्लेखनीय है।

आर्य समाज बैंकोक का शोक प्रस्ताव

आर्य समाज बैंकोक के प्रधान श्री रामपलट पाण्डेय जी भारत में अपनी पूज्यनीया माता जी के निधन पर शोकाकुल परिवार वालों से मिलकर १० अगस्त ८३ को बैंकोक लौटे। अभी माता जी के देहावसान के दुःख को भूल भी न सके थे कि उनके आदरणीय भ्राता श्री केशमणि जी पाण्डेय का बैंकोक में हृदय रोग के कारण ५७ वर्ष की आयु में ही २० सितम्बर १९८३ को इस नश्वर शरीर को छोड़ चल बसे। इससे आर्य समाज के प्रधान श्री रामपलट पाण्डेय जी तथा परिवार व स्वजनों को तो आघात लगा ही है, किन्तु बैंकोक आर्य ने अपना एक बुद्धिजीवी शुभचिन्तक सदस्य खो दिया। २८ सितम्बर १९८३ को स्थानीय समाज मन्दिर में एक शोक सभा की गई। समाज के निरीक्षक श्री नरसिंह साही जी समाज के वरिष्ठ चिन्तक श्री सहदेव सिंह जी, कोषाध्यक्ष श्री पनकधारी चन्द्र जी, समाज मन्त्री श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी आदि महानुभावों ने (श्री देकेश मणि पाण्डेय जी) स्वर्गीय श्री केशमणि पाण्डेय जी के कार्यों समाज के प्रति योगदान की चर्चा करते हुए महान शोक व्यक्त किया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

समाज प्रधान श्री रामपलट पाण्डेय ने बोझिल मन से कहा—मै अपने दुःख को वाणी द्वारा कैसे व्यक्त कर पाऊंगा। उन पर दो दायित्व हैं। एक तरफ समाज का प्रधान तथा दूसरी ओर कनिष्ठ भाई नेत्रों में अश्रुधारा प्रवाहित होकर अपने दुःख को प्रस्तुत किया तथा शोक सभा में भाग लेने वा स्वजनों का हार्दिक धन्यवाद व अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट की।

अंत में समाज मंत्री ने शोक व्यक्त करते हुए शोक प्रस्ताव रखा, २ मिनट की मौन प्रार्थना की गई कि जगत नियन्ता प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके बिछुड़ने से दुःखी परिवार व सभी स्वजनों को इस दुःख को सहने की शक्ति दें।

—प्रसिद्ध नारायण तिवारी
मन्त्री आर्य समाज बंकोक

—आर्य समाज नया शहर इटावा में जिला सभा का उत्सव समारोह से मनाया गया। —श्याम जी आर्य भरथना

—४ से ६ अक्टूबर तक गुटकामऊ (हरदोई) में श्री ब्रह्मानन्द जी द्वारा वेद प्रचार किया। मंत्री

समारोह में विज्ञान, तकनीकी, खेल, संगीत आदि क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त १४ व्यक्तियों को शताब्दी स्वर्ण में पदक देकर सम्मानित किया गया। जिन लोगों को स्वर्ण पदक दिया गया उनमें वैज्ञानिक प्रो० बी० पी० पाल, प्रो० एम० जी० के० मेनन, डा० एस० धवन, डा० राजा रामन्न, प्रख्यात संगीतज्ञ श्रीमती लक्ष्मी, विख्यात पर्वतारोही श्री तेनसिंह तथा प्रमुख खिलाड़ी कपिल देव व अश्विनी कुमार के भी नाम थे जो इस समारोह में उपस्थित नहीं हो पाये। इनके अलावा साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा के लिये ३० लोगों को प्रशस्ति पत्र भी भेंट किये गये।

विहंगम दृष्टि

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन

भारत की राजधानी देहली में गत अक्टूबर के तृतीय सप्ताह में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उद्घाटन किया। देश-विदेश के हिन्दी लेखक एवं विद्वान् पधारे, परन्तु विगत दो सम्मेलनों की अपेक्षा यह नीरस रहा। एक राजनैतिक प्रचार का नाटक बनकर रह गया। सम्मेलन के आयोजक तथा कार्यकर्ता कांग्रेस (इ) के सांसद हैं और सारा आयोजन कांग्रेस (ई) का एक मंच प्रतीत होता था। देहली नगर में जो विज्ञापन प्रचारित हुये उसमें श्रीमती इन्दिरा गांधी का ही चित्र छपा। श्री सुधाकर पाण्डेय ने चाटुकारिता करते हुये कहा कि नेहरू परिवार ने हिन्दी के उन्नयन के लिये कार्य किया है और हिन्दी उनके परिवार की बेटी है। नेहरू और इन्दिरा जी के गीत सांसद गाते रहे किसी ने राजर्षि टण्डन, मदन मोहन मालवीय, डा० सम्पूर्णानन्द और प्रतिभाशाली लेखकों का नाम तक नहीं लिया गया।

श्रीमती गांधी ने कहा कि हिन्दी पहले समृद्धिशाली बने फिर उसके उन्नयन की बात की जाय। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के लिये संस्तुति तो कई वर्ष पहिले की गयी थी, परन्तु प्रयास बिल्कुल नहीं हुआ। लाखों रुपियों का व्यय केवल इस लिये हुआ कि श्रीमती इंदिरा गांधी को हिन्दी भाषियों में लोकप्रियता हो जाय। जब केवल कोई आयोजन व्यक्ति विशेष के प्रचार लिए होते हैं तो उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है। और यथार्थता सामने आ जाती है।

समाचार प्राप्त हुये है कि सम्मेलन में कुव्यवस्था कुप्रबन्ध तथा अभद्र व्यवहार अधिक हुआ। उच्चकोटि के विद्वान और लेखक निरादर के पात्र हुये। कूपन लिये पंक्ति में खड़े देखे गये तथा मंच पर उचित स्थान नहीं मिला। वयोवृद्ध साहित्यकार प० श्रीनारायण चतुर्वेदी श्री न पुरस्कार ठुकरा दिया दुखी होकर। श्रीमती महादेवीवर्मा ने कहा कि आश्चर्य है कि राजनीतिज्ञों को दृष्टि में हिन्दी अभी समर्थ नहीं है। राजनीतिज्ञों को स्वार्थ पूर्ण चालों पर खेद प्रकट किया। तथा दुखी मन से कहा कि यदि वे हिन्दी का नाम न लें तो बड़ा हिन्दी पर उपकार हो।

हिन्दी समृद्ध भाषा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहिले सौ पूर्व हिन्दी के महत्व को समझ लिया था तथा अपने ग्रन्थों का प्रणयन हिन्दी में किया। गुरुकुलों मे उच्च विषयो की शिक्षा आज से पचास वर्ष पूर्व ही हिन्दी के माध्यम से दी जा रही है। भारत में हिन्दी प्रचार एवं प्रसार आर्य समाज का प्रमुख कार्य है। 'आर्य्यमित्र' विगत छियासी वर्षों से हिन्दी के प्रचार में निरत है। हम मूक सेवक राजनीतिज्ञों की तरह नाटकीय वेश धारण करके क्षणिक लोकप्रियता नहीं प्राप्त करते हैं।

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का सही चित्र समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। जनता समझ गयी तथ्य क्या है और उस समय इन्द्रप्रस्थ प्रेक्षागार में हास्य का स्रोत फूट पड़ा जब सांसद् सुधाकर जी पाण्डेय नेहरू परिवार की चाटुकारिता करके वापस लौटने लगे और इन्दिरा जी कुर्सी के पास पहुंचते ही उनकी धोती खुल गयी। श्रीमती इन्दिरा जी भी हंसी के ठहाके के बीच हंस पड़ी।

साभार-निवेदन

प्रायः दस वर्ष से अधिक हो गया हैं मुझे आर्य मित्र के माध्यम से आर्य जनता तक अपने विचारों को पहुंचाने का और आर्य मित्र की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त है। इधर केवल सम्पादक के रूप में नाम प्रकाशित होना कोई विशेष बात नहीं है। पहिले भी नाम प्रकाशित होता था,

हितैषी एवं स्नेही जनों के शुभ कामना के सन्देश मेरे पास आए हैं। मै उन सब का हृदय से आभारी हूं। आर्य जनो के सहयोग से मुझे कार्य करने में उत्साह प्राप्त होगा।

आर्यमित्र गौरव शाली परम्परा का पत्र है। श्री साहित्याचार्य, प० रुद्रदत्त शर्मा, श्री प०लक्ष्मीधर वाजपेयी, प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, स्वर्गीय हरिशंकरशर्मा, वयोवृद्ध पं०बनारसीदासचतुर्वेदी, श्रीरामस्वरूप शास्त्री, श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव एम० ए०, श्री सत्येन्द्र जी इसके सम्पादक मण्डल में रहे हैं-सदैव उच्चकोटि के विद्वानों के लेख प्रकाशित होते रहे हैं। मैं उसी परिपाटी का पालन करूंगा। आर्य जगत् के विद्वानो के सार गर्भित लेख व रचनायें प्रकाशित होंगी। आर्य जगत् के अन्तर्गत देश और विदेश के आर्य समाजों के समाचार पाठकों को प्राप्त होंगे।

गौरव मय 'आर्यमित्र' में व्यक्तिगत आक्षेप। चरित्र हनन पर दोष दर्शन तथा निन्दा और द्वेष पूर्ण लेख आदि प्रकाशित होना उचित प्रतीत नहीं होता है। अतः लेखकों से प्रार्थना है कि आक्षेप पूर्ण सामग्री प्रेषित न करें। शालीनता तथा मर्यादा का ध्यान रखना ही श्रेयस्कर है। आर्य जनों की इसमें शोभा है।

समस्त शुभ चिन्तकों के प्रति आभारी हूं। सहयोग प्रार्थनीय है।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

उत्सव

—महिला आर्य समाज उन्नाव के तत्वावधान में १८ नवम्बर तक वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन किया गया है। मन्त्रिणी

—वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में वृहद्यज्ञ तथा साधना शिविर ६ से १३ नवम्बर तक होगा। —देवदत्त बाली मंत्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद द्वारा आयोजित गंगा मेला तिगरी सन्तर ६ के सामने आर्य समाज प्रचार शिविर १६ से २० नवम्बर तक लगेगा। ओजस्वी वक्ता पधारेंगे। —हरिश्चन्द्र आर्य संयोजक

—आर्यवीर दल आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का ७वां उत्सव २६ अक्टूबर को सम्पन्न हुआ

—आर्य समाज भगतपुर (आजमगढ़) का उत्सव ८ से ११ मार्च १९८४ में होगा। —शिवधर

—१४ अक्टूबर को आर्य समाज ताड़ीखेत में डा० सूर्यदेव शर्मा शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। —त्रिलोक रावत मन्त्री

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का वार्षिकोत्सव २५ से २६ फरवरी तक होगा। —विजयपाल शास्त्री मन्त्री

शिवचरण माथुर के उद्गार

दयानन्द के विचार आज भी प्रासंगिक हैं

अजमेर, ६ नवम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री शिव चरण माथुर ने कहा है कि महर्षि दयानन्द को एक संकीर्ण दायरे में सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज एक दर्शन के रूप में विश्व समाज की कल्पना करके चलता है।

श्री माथुर आज यहां महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सामाजिक कुरीतियों के समाधान में स्वामी जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जैसे कि एक सौ वर्ष पूर्व थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने आजादी से पूर्व भारत वासियों ने अपने इतिहास की महान् परम्पराओं और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना जागृत कर स्वतन्त्रता के लिये प्रेरणा दी थी इस लिये आर्य समाज और आजादी के इतिहास को अलग नहीं किया जा सकता।

बैंकोक में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

इस वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बैंकोक आर्य समाज में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस वर्ष के अध्यक्ष श्री देवदत्त जी मनोनीत किए गये थे। प्रवासी आर्य बन्धुओं ने सायकाल ५-१/२ बजे से बृहद हवन यज्ञ किया एवं रात्रि ८ से १०-१/२ बजे तक कुछ विशेष विद्वानों ने श्री योगीराज कृष्ण के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाले तथा साथ ही पं० जे० एल० शर्मा द्वारा वैदिक भजन का भी प्रोग्राम प्रशंसनीय रहा।

– प्रसिद्ध नारायण तिवारी
मन्त्री—आर्य समाज बैंकोक-थाईलैण्ड

२१ वां कच्चाहार यज्ञ

अल्मोड़ा। कमेड़ी देवी में आयोजित २१वें कच्चाहार यज्ञ में (२५ अक्टूबर) को डा० कच्चाहारी ने अपने ४८ वें जन्म दिवस पर निम्नांकित चार संकल्पों में से कोई-तीन पूर्ण होने अथवा पच्चीस वर्ष तक कच्चाहारी रहने का व्रत दुहराया :-

(१) सम्पूर्ण भारत में मद्य-निषेध,
(२) „ „ गोहत्या बन्दी
(३) „ „ निःशुल्क शिक्षण व्यवस्था एवं
(४) गुरुकुल ब्रह्मावर्त गंगाघाट (कानपुर) की स्थापना।

कच्चाहार में डा० कच्चाहारी बिना अग्नि पर पकाये भीगा अथवा अंकुरित अन्न, शाक, फल आदि लेते हैं। ४८ वर्षीय ब्रह्मचारी डा० कच्चाहारी १४ जनवरी (मकर संक्रान्ति) १९८४ को संन्यास आश्रम में प्रवेश भी करेंगे। —त्रिलोकसिंह रावत
मन्त्री

—आर्य समाज अजमेर ने डा० सूर्यदेव शर्मा के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है। और प्रभु से प्रार्थना की है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। मंत्री

—गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में २३ अक्टूबर ८३ को दंगल हुआ। अनेक युवक पहलवानों की कुश्तियां हुयीं। मन्त्री

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वावधान में २८ सितम्बर से २ अक्टूबर तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। श्री राधे श्याम के भतीजे मुसलमान हो गए थे, उन्हें पुनः शुद्ध करके अशोक कुमार नाम रक्खा। मंत्री

—आर्य समाज कैसरबाग लखनऊ ने जगन्नाथपुरी के मंदिर में प्रधान मंत्री श्री इन्दिरा गांधी को प्रवेश करने से रोकने पर खेद प्रकट किया है, और मांग की है कि मन्दिर के प्रबन्धक और पुजारी के विरुद्ध उचित कार्यवाही करे। —सत्य नारायण
मंत्री

—आर्य समाज नई बाजार बक्सर का उत्सव ७ से ९ अक्टूबर तक मनाया गया। —सुदर्शन सिंह

—आर्य समाज कासगंज ने एक मुस्लिम परिवार के १० व्यक्तियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में मिलाया। —डा० श्रीराम
मंत्री

—आर्य समाज लखीमपुर ने कर्मठ कार्यकर्ता श्री ईश्वर दास के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया है। मंत्री

—मलाही में २८ सितम्बर से २ अक्टूबर तक श्री स्वामी कात्यानन्द जी कथा हुई। वेद मन्दिर का शिलान्यास भी हुआ। मंत्री

—आर्य समाज कुण्डा (प्रतापगढ़) का उत्सव २७ से ३० अक्टूबर तक मनाया गया। मंत्री

नाम करण संस्कार

फीरोजाबाद के प्रसिद्ध उद्योग पति श्री सेठ बालकृष्ण जी गुप्त के सुपुत्र श्री प्रदीप गुप्त को युगल पुत्रों की प्राप्ति के उपलक्ष मे विजय दशमी को गुरुकुल एटा के आचार्य श्री विश्वदेव जी द्वारा नाम करण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। मन्त्री

शोक प्रस्ताव

श्री निःशुल्क गुरुकुल महा विद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) की यह साधारण सभा गुरुकुल के कुलपति माननीय राजर्षि रणञ्जय सिंह जी की धर्म पत्नी रानी सुषमा देवी जी के स्वर्गवास पर शोक प्रकट करती है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति और उनके शोक-सन्तप्त परिवार को शान्ति एवं इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। मन्त्री

रसबिन्दु जी का निधन

गोरखपुर के प्रसिद्ध आर्य भावना के कवि श्री कामता प्रसाद जी 'रसबिन्दु' का निधन ५ अक्टूबर १९८३ को हो गया। आर्य समाज के कार्यक्रमों में रुचि रखने के अतिरिक्त 'रसबिन्दु' जी सफल कवि थे तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से सम्बन्धित 'ज्वाला' नामक काव्य रसबिन्दु जी की समाज को विशेष देन है। इसके अतिरिक्त मुक्तक रचनाओं में आर्य समाज के सिद्धान्तों का उल्लेख करते रहते थे। कवि रसबिन्दु जी के निधन से आर्य जगत् का एक कवि हमसे बिछुड़ गया। आर्यमित्र शोक सन्तप्त परिवार के प्रति सद् भावना प्रकट करता है और दिवंगतात्मा को शान्ति प्राप्ति करे। यह प्रभु से प्रार्थी है। —आचार्य रमेश चन्द्र
सम्पादक

भैया सूर्यदेव शर्मा का स्वर्गमन

भाभी गई गये भया भी आज यहा मै खडा अकेला ।
सोच रहा हू बोतो बात ०य सा वर्षो ज्ञ न ननेना ।
छटवीं कक्षा से बी०ए० तक साथ पढ खाया भी खेला ।
देखा कितने गये सामने मे॑ जाने की भी वेला ।१।

छात्रवृत्ति की नाव मिली थी अक प्रथम श्रणी के पाये ।
कभी प्रथम वे कभी प्रथम मै रहे हृदय सोहार्द जगाये ।।
सम्मेलन मध्यमा विशारद कर उत्तोण नवम कक्षा मे ।
गुरुवर पूज्य सहाय जय तो के भी हाथ वढ रक्षा मे ।२।

एटा से ए ट स पास क छात्रवृत्ति दोनों ने पाई ।
दयान द कालेज कानपुर आये आगे बढी पढाई ।।
सस्कृत प्रम आदि से ही था हि दो प्रम हृदय मे गहरा ।
आयनमाज प्रम पलता था हम दोनो मे सदा सुनहरा ।३।

वदिक धम विशारद भी बन गये तरते इसी नरो मे ।
का०यतीथ मध्यमा पास की जाकर जब्बलपुर नगरी मे ।
दोनो मे श्रणिया प्रथम थीं दोनो की गुरुजन सुखदायी ।
शुद्धि सभा मे भी यवनो को आय बनाकर कीर्ति कमायी ।४

बी०ए० की उपा ध मे मैने स्वण पदक सस्कृत मे पाया
भया भी इतिहास विज्ञ थे उनका नाम उसी मे आया ।।
वे अध्यापन मे निरत हुए मै एम०ए० हित लाहौर गया ।
सस्कृत एम०ए० को दिया गया हि दो अ यापन पत्र नया ।५।

भया भी फिर लाहौर गये एम०ए० कर लौट द्वार खला ।
अजमेर दयान दा शिक्षण सस्था ने उनको लिया बुला ।
प्राचाय बने यशवान बने दोनों हाथो से दान किया ।
उनको स कृतियो मे पूज्या भाभा जी ने भी साथ दिया ।६।

वे महाभाग्य शालिनी गई पहले सम्भालने घर धाम ।
फिर भया को भी बुला लिया दोनो को मै करता प्रणाम ।।
उनके सम्ब धी सभी यहा उनके वियोग मे व्यथा विपन्न ।
भगवान शान्ति द हम सबको कर क्लेश जाल का छिन्न भिन्न ।७।

—डा० मशीराम शम सोम क नपुर

30वें सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

श्री देवीदास आर्य सम्मानित

प्रसिद्ध आयसमाज के नेता और जनसेवी श्री देवीदास जी आय सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं। विगत चालिस वर्षों के लगभग आपको समाज सेवा करते हो गया है। सहस्रो निरोह महिलाओ का उद्धार किया। ईसाई मुसलमानो के हाथो से रक्षा की और वेश्यालयो तक पहुची हुई भोली भ ली युवतियो को जान जोखिम मे डालकर बचाया। कितनी ही युवतियो का विवाह स्वय क या के पिता के रूप मे कराने का दायित्व लिया।

हष है कि अक्टूबर के तृतीय सप्ताह में देहली मे एक विशेष उत्सव मे भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिह जी ने श्री देवीदास को सम्मानित किया। समाज सेवा की उनकी कायकलापो की प्रशसा की। आ यमित्र श्री श्री आय जी को इस सम्मान के हेतु बधाई देता है। उनका अभि न दन करता है और आशा है कि भविष्य मे आय जी और अधिक समाज सेवा के कार्यों में सलग्न रहेगे।

—आचाय रमेशचन्द्र एम० ए०

सत्य समाचार

आयसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ की अ तरङ्ग सभा दिनाक १६ १० ८३ की बठक मे सुमेधा नामक मेरठ से प्रकाशित माह सितम्बर ८३ मे प्रकाशित समाचार जिसमे श्री प्रो० कलाशनार्थसिह प्रधान आय प्रति निधि सभा उत्तरप्रदेश के अभिन दन के समाचार को सत्यता से रहित प्रकाशित करने की नि दा की गई तथा भविष्य मे इस प्रकार के समा चार प्रकाशित न करने हेतु सचेत किया गया। सत्यता यह है कि आदरणीय प्रधान प्रो० कलाशनाथसिह जी ने आयसमाज के नवीन कक्षो का उद्घाटन किया तथा इसी अवसर पर उनका अभिन दन किया गया।

एक अन्य प्रस्ताव मे नव नियुक्त सम्पादक आचाय रमेशचन्द्र जी को बधाई दी गई तथा भविष्य मे आयमित्र अच्छी प्रकार प्रकाशित होता रहेगा यही कामना की गई।

—च द्रपाल आय विद्यावाचस्पति
म त्री-आयसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ

सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत

मुरादाबाद—आयसमाज रेल्वे कालोनी मुरादाबाद का वार्षिक उ सव २ से ४ अक्टूबर तक बडी धूमधाम से मनाया गया। श्री प० सुरेशच द्र वेदालकार और श्री प० गङ्गू बर जी शास्त्री तथा श्री प० राजे द्र ज जिज्ञासु के अ य त महत्व पूण भ र प्रभावोत्पादक भाषण हुए।

३ अक्टूबर को सभा प्रधान श्री प्रो० कलाशनाथसिह जी का भव्य स्वागत हुआ और उनका प्रभाव शाली भाषण भी हुआ।

—महावीरसिह मुमुक्षु म त्री

ढोंग चल रहे

आयसमाज ब्रह्मपुरी के ओर से आय जनता को सूचित किया जाता है कि मुजफ्फर प स एक ढोंगी महात्मा भोले भाले रोगियो स्त्री व पुरुषों के रोगों हाथ फेरकर ठीक करने का प्रचार कर जनता को ठग रह है आयसमाज अपना कर्त्तव्य समझ कर आम जनता को सचेत करता है।

वीरेन्द्र रत्तम
प्रधान

चन्द्रपाल आय
म त्री
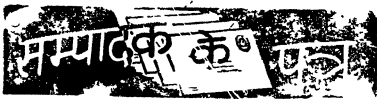
भ्रम निवारण

महर्षि दयानन्द के तप और तपस्या से आर्य समाज का प्रचार व प्रसार भारत में ही नहीं विदेशो मे भी बहुत प्रगति कर चुका है। संसार मे आर्य समाज के इस ज्ञान का सूर्य चारो ओर अपनी किरणें बिखेर रहा है।

मेरठ से प्रकाशित 'सुमेधा' पत्र का सितम्बर ८३ का अंक पढ़ने पर हृदय को चोट लगती है कि यह आर्य कर्णधार नाव को किधर लिये जा रहे हैं कुछ 'सज्जन' आर्य समाज के प्रधान के गौरव के विरुद्ध प्रचार ही अपने भ्रम वश कर्तव्य समझते है। प्रतिनिधि सभा सारे प्रदेश की सर्वोच्च संस्था है सारी आर्य समाजे उनकी शृंखला हैं उस सभा के प्रधान का स्वागत ब्रह्मपुरी आर्य समाज द्वारा किया जाना कुछ लोगों के लिये सिर दर्द बन गया है। आर्य समाज ब्रह्मपुरी ने शहर के सभी समाजों को निमन्त्रण दिये थे, परन्तु जैसा सुमेधा के पढ़ने से विदित होता है कि इन्हीं कर्णधारों ने इसका बहिष्कार किया। यह अनुचित प्रकाशन श्री कैलाशनाथ सिंह की नहीं बल्कि प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति हैं।

तथा कथित वैदिक विचार धारा का मासिक पत्र 'सुमेधा' माह सितम्बर ८३ का अंक देखने से ऐसा लगता है कि यह आर्य समाज का प्रचार-प्रसार न करके मात्र किसी व्यक्ति विशेष का प्रचारक है। क्योंकि इस पूरे पत्र में कोई वेद मन्त्र अथवा वैदिक प्रचार के लिये कोई सामग्री नहीं है।

सुमेधा के संचालकों को सम्भवतः आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री से विशेष दर्शाव नहीं हैं क्योंकि ४ सितम्बर के चुनाव से पूर्व इन्हीं विश्वबन्धु जी से अपने लिये समर्थन प्राप्त करने जाना और चुनाव के दिन लखनऊ मे यज्ञशाला मे उनका उपदेश व प्रवचन कराना व २५, २६, २७ नवम्बर ८३ मे अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी में निवेदकों मे स्वामी विवेकानन्द गुरुकुल प्रभात आश्रम के साथ-साथ आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का नाम क्या इंगित करता है। इससे स्पष्ट होता है कि आचार्य विश्वबन्धु जी का विरोध इन्हे नहीं है। अपितु विरोध मात्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रति हैं।

—वीरेन्द्र रत्नम
अधिष्ठाता आर्यमित्र
तथा प्रधान—आर्य समाज ब्रह्मपुरी—मेरठ

अनुचित

४ अक्टूबर के 'सुमेधा' पत्र में ब्रह्मपुरी आर्य समाज में प्रधान श्री कैलाशनाथ सिंह के २६।९ मे हुये स्वागत के सम्बन्ध मे जो असत्य समाचार छपा है उसने सारे आर्य जगत को क्षोभ से उद्वेलित कर दिया है। खेद है कि इस पत्र के निर्देशक उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के एक अधिकारी है और ऐसा समाचार नहीं प्रकाशित होना चाहिए।

यह सब आर्य प्रतिनिधि सभा के विपरीत है। अनुशासन होनता भी उचित नहीं है ऐसा होते रहने से कोई संस्था अथवा समाज जीवित नहीं रह सकता।

भवदीय
—जगदेव शास्त्र
४७४ ब्रह्मपुरी—मेरठ

श्रीमान सम्पादक जी,
सादर नमस्ते।

सुमेधा के भ्रामक प्रचार के सम्बन्ध में श्री खेम सिंह जी आर्य तथा श्री वीरेन्द्र रत्नम जी के विचार पढ़ने को मिले दोनों ही साधुवाद के पात्र है, आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान प्रो० कैलाश नाथ सिंह जी का स्वागत ब्रह्मपुरी आर्य समाज मेरठ द्वारा होना समस्त मेरठ और गाजियाबाद के गौरव को बढ़ाना ही था। इसमें मेरठ की समस्त आर्य समाजो और जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा को भाग लेना चाहिए था। प्रान्त के प्रधान का पद गौरव का पद है जिसे प्रो० कैलाशनाथ सिंह भली-भांति नवीन योजना बद्ध रूप में सभी का सहयोग लेकर गति दे रहे हैं।

आचार्य प० विश्व बन्धु जी शास्त्री की अध्यक्षता में स्वागत होना भी ठीक ही है। क्योंकि समस्त आर्य जगत् आचार्य जी का सम्मान करता है। स्वय सभा मन्त्री जी भी प्रत्यक्ष और परोक्ष में उनका सम्मान करते हैं।

आचार्य श्री रमेश चन्द्र जी एम० ए० को आर्य मित्र का पूर्ण प्रधान सम्पादक बनाकर अच्छा कार्य हुआ है, जिनके कारण अच्छे लेख और आर्यमित्र के कलेवर मे निखार आयेगा जो एक मात्र हिन्दी जगत का सबसे पुराना साप्ताहिक समाचार पत्र है। जिसके अनेकों ख्याति प्राप्त सम्पादक रहे हैं। इसको गति और जीवन देने में आचार्य जी भी पीछे नहीं रहेंगे।

निवेदक
डा० प्रेमदत्त शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज बोरना—अलीगढ़

—६ अक्टूबर को आर्यवीर दल मिर्जापुर के मंडल पति श्री राजेन्द्र सिंह के दो पुत्रो का यज्ञोपवीत संस्कार तथा उनके भाई श्री कमलेन्द्र सिंह इन्जीनियर की लड़की का चूड़ा कर्म संस्कार श्री वेचन सिंह मन्त्री जिला सभा मीरजापुर के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ।

—वेचन सिंह
अधिष्ठाता आर्यवीर दल उ० प्र०

—आर्यसमाज पंचपुरी गढ़वाल ने ग्राम मैठाणा सावली के देशभक्त समाज सेवी श्री औतारसिंह रावत, ग्राम बगार के स्वर्गीय श्री रघुनाथ सिंह जी बिष्ट की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती जी और ग्राम सेरातला के श्री मणिलाल जी आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती बिगारी देवी जी के निधन पर शोक सम्वेदना प्रकट करके परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिये प्रार्थना की। मन्त्री

—आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर ने श्री ब्रह्मदत्त अरोरा के निधन पर शोक व्यक्त किया है। मन्त्री

—आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर ने श्री बाबू गणेश प्रसाद जी पूर्व आचार्य दयानन्द कालेज आफला की धर्म पत्नी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है, और शोक प्रस्ताव पास करके प्रभु से प्रार्थना की है कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे। —विजयपाल शास्त्री
मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष–४४९९३ ,४२६६१
रजिस्ट्रेशन नं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वर्ष० कार्तिक २२
कार्तिक शु० ८, रविवार
१३ नवम्बर १९८३ ई०

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि का सफल आयोजन

(पृष्ठ १ का शेष)

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत रहेंगे।

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि बिना जातिभेद वर्णभेद या वर्गभेद के हम दीन हीन, पीड़ितो, असहायो, रोगियों और अशक्तो की यथाशक्ति निष्काम भाव और निस्वार्थता से सेवा करेंगे।

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि साम्प्रदायिक मतमता तरो मे जो अनैतिक तत्व अन्धविश्वास मूलक अवैज्ञानिक आस्थायें और कुरीतियां प्रविष्ट हो गयी हैं–उनको हम निर्भयता से प्रीति पूर्वक प्रतिवाद करेंगे और इन रूढ़ियो के समर्थन में–हम किसी के साथ किसी भी स्थिति में समझौता करने के लिये तैयार नहीं होंगे।

आर्य समाज लालबाग लखनऊ द्वारा मेला प्रचार

२० नवम्बर को पूर्णिमा मेला गोमतीतट इन्स्टीटयूट आफ इन्जिनीयर्स के निकट वैदिक धर्म का प्रचार होगा, सभी आर्य समाजें तथा आर्यजन उपस्थित होकर सहयोग प्रदान करें। –सत्यदेव सैनी–मन्त्री

–श्री करम र सिंह जी रायपुर मनिहारान (सहारनपुर) की ओर से ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार व सत्संग ४ से १३ नवम्बर तक हुआ।

–करतार सिंह

–श्री बचन सिंह अधिष्ठाता आर्यवीर दल ने जौनपुर में आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर में ओ३म ध्वज फहराया।

–बचन सिंह

–मेरी माता का २४ अक्टूबर को देहान्त हो गया। प्रभु उनको आत्मा को शान्ति प्रदान करे। –चन्द्रभानु हापुड़

–२६ अक्टूबर को आर्य समाज कासगंज ने एक मुसलमान परिवार के १० व्यक्तियो को शुद्ध किया। –श्रीराम आर्य मन्त्री

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ नवम्बर ८३ को समाप्त हो जायेगा। वी० पी० भेजने मे ४ ५० अधिक पोस्टेज लगते हैं, इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजी जाय। जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

६३२, १८६९, ४६३२, ५०६२ ५३५४, ५७२४, ६५५५,७०२८, ८०८८, ८१३९, ८३८२, ८३९६, ८६८२, ८८५३, ८८५४, ९०३१अ, ९३३०, ९३३१, ९३३६ ९५४३, ९५५९, ९७६०, १००२५, ११०५१ ११०५२, ११०६१, ११०६२, ११०६६, ११०६९, ११३६५, ११३६६, ११३६८, ११३६९, ११३७६, ११७६४, ११७६६, १२०५९ १२४३३, १२४४१, १२४४२, १२४४६, १२४४८, १२४५२ १२४५४,१२४६४, १२४८६, १२४८९, १२४९०, १२४९१, १२७५८, १२७६६,१२७६७, १२७६८ १२७६९ १२७७०, १२७७१, १२७७२,१२७७४, १२७७५, १२७७६, १२७७७, १२७७८, १२७७९, १२७८०।

–विनीत
व्यवस्थापक

• प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] प्रेस,१ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से [illegible] शर्मा द्वारा मुद्रित

प्रार्थना

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च
धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारय ।
यजु० १७–८२ ।-

अर्थ –हे मनुष्यो जो सबका ज्ञाता है अत्युत्तम व दृढ़ निश्चय मे युक्त है जो सबका आधार है जो सबको धारण करने वाला तथा धारकों का भी धारक है वह परमात्मा हमारे द्वारा उपास्य है ।

अब हम लोग विद्या उत्साह सत्पुरुषों के संग से सत्य एवं विशेष ज्ञान को धारण कर अन्य श्रेष्ठ बनाने वाले बनें । तभी हम सुखी रह सकते हैं और दूसरों को भी सुखी कर सकते हैं ।

आर्यमित्र

लखनऊ-रविवार, २० नवम्बर १९८३ दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

राजहंस उतर कर गगन से, धरा का कर लो स्पर्श।

विस्तीर्ण नीलाभ गगन मे राजहंस रूपहले पंख फैला कर उड़ान का सब कलायें दिखाता रहे परन्तु धरा के कणों का स्पर्श किये बिना कहीं पर उसे यथार्थ के दर्शन नहीं हुए। धरा पर उतर कर उसके कणों को स्पर्श करके ही उसे नीर-क्षीर विवेक की क्षमता प्राप्त हुई। राजहंस सार्थक बन गया।

ऋषिवर दयानन्द के सन्देश हमारे जीवन मे राजहंस बनकर उतरे तभी हमे यथार्थ के दर्शन हुए और सारे आर्य स्वाभिमानी हुए। ऋषिवर के निर्वाण के बाद प्रथम पचास वर्षों तक आर्य समाज धरा पर रहीं आर्यजन संगठित रहे और आर्य समाज का विस्तार भारत तथा विदेशों मे हुआ। विद्वानों की लेखनी से ज्ञान एवं दर्शन सम्बन्धी प्रचुर साहित्य हमे प्राप्त हुआ। आर्य समाज की जगमगाती संस्थाएं जन कल्याण के मार्ग मे अग्रणी हुई संगठन की शक्ति हमे सार्वदेशिक एवं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाओं से मिली।

अभी अजमेर मे भारत के आर्यजनों के सम्मिलित प्रयास से विशाल स्तर पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि मनायी गयी। आर्यजनों के इस विस्तृत सम्मेलन ने देश वासियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और अजमेर में आर्यजनों द्वारा निकली शोभा यात्रा आर्य शक्ति की प्रतिबिम्ब थी आज आवश्यकता है कि अजमेर से वापस आकर आर्यजन नवीन संकल्प लें और देश के निर्माण के ठोस कार्य मे दृढ़ प्रतिज्ञ हो सम्मिलित शक्ति से लगें तभी देश का कल्याण हो सकता है और आर्य समाज अमरता की ओर बढ़ सकती है। खेद है कि विगत वर्षो में हम यथार्थ के धरातल पर कम अधिक हुये हैं। हम कल्पना की उड़ान में अधिक लगे रहे हैं। हम भी कागज के कौतुक में अधिक फंस गये जिससे संगठन की शक्ति क्षीण हो गयी है।

हम आर्य जनों में आजकल प्रायः समय के प्रभाव और परिस्थितियों के कारण तीन प्रकार के दोष आ गये हैं–प्रथम पद-लोभ उचित अनुचित साधनों को अपना कर पद पर बने रहना। नैतिकता एवं सत्यता की तिलाञ्जलि देने में सकोचक नहीं होता। द्वितीय–सम्पत्ति अधिकार की स्वार्थमयी प्रवृत्ति का दूसरा नाम है। आर्य समाज के भवनों और सम्पत्तियों पर अधिकार रखना और उसके लिए विद्यालय या अन्य दिखावटी समाज सेवा के कार्य दिखाकर भवन तथा सम्पत्ति अधिकार तृतीय है। विवाद ग्रस्त हो पर संगठन की मर्यादाओं को भंग करके न्यायालयों के सोपानों की धूलि साफ करना। इसी बहाने से आर्य जन जी खोल कर वाद विवाद मे उलझ जाते हैं तथा कीचड़ उछाल कर लेते हैं। इन कार्यों के अवलम्बन से आर्य समाज के संगठन को हानि पहुचती है उसकी मर्यादा नष्ट होती है तथा हमारी जो छवि समाज मे होनी चाहिये वह धूमिल होती है। आर्य समाज का संगठन तभी शक्तिशाली होगा जब आर्यजन उपरोक्त दोषों का आत्मबोध एवं चेतना से निवारण कर। किसी के उपदेश से नहीं बाह्य प्रेरणा क्षणिक होती है आत्म प्रेरणा स्थायी।

स्वामी दयानन्द जी के समय मे आर्य (हिन्दू) जाति मे जो स्थान दोष थे किसी न किसी रूप मे आज भी विद्यमान हैं। अन्धकार अछूत–जाति बन्धन कट्टरता विधि पनप रहे हैं। ईसाई–मुसलमान प्रचार आज भी सक्रिय हैं और आज भारत सरकार की उदारता और ईसाई तथा अरब वालों के देशों में धन की प्रचुरता के कारण धर्मान्तरण का आक्रोश प्रायः तेज हो जाता है। आर्य समाज को इन सबके विरोध में सक्रिय प्रारम्भ करना है। यदि आर्यजन स्वयं पूर्ण रूप से संगठित होकर नहीं आते हैं और अपने विवेक पर शक्ति केन्द्रित नहीं होते हैं तो हमारे चारों ओर फैले संकट मे हम कैसे सफल होंगे। आत्मबोध आवश्यक है।

ऋषि के संकल्प पूर्ण करने के लिये हमें स्वयं संकल्पवान बनना होगा। कार्य दुस्तर है अपनी दुर्बलताओं को प्रथम मिटाना अनिवार्य है। तभी प्रत्येक का अनुरोध है कि राजहंस कल्पना के पंख समेट करके धरा का स्पर्श करो।

उचित दिशा बोध

आर्य जगत के प्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान श्रद्धेय प० बिहारी लाल जी शास्त्री प्रायः महत्वपूर्ण विषयों पर हमारा ध्यान आकर्षित किया करते है। आर्य मित्र का इस वर्ष का ऋष्यंक ३० अक्टूबर १९८३ में 'अजमेर' शीर्षक से प० जी का एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमे अजमेर नगर का ऐतिहासिक घटना पर प्रकाश डाला है तथा अजय मेरु कैसे अजमेर बन गया। हिन्दुओं के अन्ध–विश्वास से कैसे कब्रों की पूजा को बढ़ावा मिलता है इससे पूर्ण सहमत है।

अजमेर की भांति उत्तर प्रदेश के जनपद बहराइच के सम्बन्ध में भी पण्डित बिहारी लाल जी ने समुचित प्रकाश डाला है। परन्तु वहां के आर्य बन्धुओं ने रुचि लेकर वहां महाराजा सुहेल देव की प्रतिमा स्थापित कर दी बने हो अजमेरके आर्यसमाज कवि वर चन्द बरदाई और पृथ्वीराज के स्मारक बनवा सकते हैं।

आदरणीय बिहारी लालजी को विस्तृत जानकारी है। समाज को चेतना देने वाले लेख प्रकाश मान देखा करते है। यदि हम उनसे शिक्षा प्राप्त करे और तदनुकूल व्यवहार करे तो आर्य जगत का उचित रूप से कल्याण हो। पण्डित बिहारी लाल जी मार्ग निर्देशन हेतु धन्यवाद के पात्र हैं।

सात मर्यादाओं में से ईश्वर को सर्वव्यापक समझो और कर्म करो, मर्यादा का उल्लेख किया गया है। अब तीसरी मर्यादा है–धन या ऐश्वर्य प्राप्त करो तथा उसका दूसरों के लिए प्रयोग करो।'

सप्त मर्यादाएं–३

धन कमाओ–खूब कमाओ

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०, एल०टी०, १७५ आफरा बाजार गोरखपुर]

हमारे देश में, देश के दुर्भाग्य के कारण जैन और बौद्ध विचार-धारा का जन्म हुआ। सम्भवतः उस समय की परिस्थितियों के अनुसार अनेक बुराइयों को इन्होंने दूर किया, परन्तु वह विचारधारायें मानव कृत थीं। अतः उनके अपूर्ण होने से देश और समाज को हानि भी हुई। जैन धर्म ने यहां अहिंसा का ठीक अर्थ न समझ कर उसका सीमित अर्थ हिंसा न करना मात्र रखा, जो केवल निषेधात्मक था रचनात्मक नहीं। वहां बौद्ध धर्म ने भिक्षु संस्कृति को जन्म दिया। जैन धर्म की अहिंसा का फल हुआ कि हमारे देश से क्षात्र धर्म का लोप होने लगा। जैनी साधु कीड़े मरने के डर से मुख के आगे कपड़ा बांधने लगे, पैर के नीचे चींटियों की मृत्यु न हो हाथ में चवर से सड़क साफ करते चलने लगे, सब्जियों में प्रायः सभी सब्जियां खानी बन्द कर दीं और उनके साधु ऐसी चारपाइयों या खाटों पर सोने लगे जिनमें खटमल रहते थे और उन्हें खून पिलाना धर्म समझा जाने लगा। अरे भाई, 'खटमल' तो बना ही इसलिए है कि उसे 'खट से 'मल' दिया जाय। कैसी विचित्र बात है। हमारे ग्रन्थ तो सिखाते हैं। दिनकर कवि के शब्दों में–

जीवता हो स्वत्व तेरा और तू,
त्याग तप में लीन हो, यह पाप है।
पुण्य है उच्छिन्न कर देना उसे,
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

बौद्धों की भिक्षु संस्कृति का परिणाम तो और भी घातक हुआ लोगों ने काम करना छोड़कर भिक्षावृत्ति पर ही जीवन यापन शुरु कर दिया। दरिद्र और साधु बनना ही उनका लक्ष्य हो गया परन्तु, वैदिक धर्म की मर्यादा है–धन कमाओ–खूब कमाओ। संसार के कार्य धन से–ऐश्वर्य से चलते हैं। मानव जीवन में धन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। धन के बिना मानव जीवन चल ही नहीं सकता। वेद से लेकर प्राचीन और अर्वाचीन वैदिक वाङ्मय में स्थान–स्थान पर धन प्राप्ति के निर्देश मिलते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है–

अयं ह्यु स्वतरणि ऋ.३-११-३

इस संसार सागर को पार करने के लिए धन नौका के समान है। हम अपनी प्रतिदिन की प्रार्थना में प्रभु से कहते हैं–

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः। अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः।

–यजु ३–४३

हे प्रभो! हमारे घर गाय, बकरी, भेड़ आदि पशुओं से सदा भरे रहें तथा हमारे घरों में अन्न के ढेर लगे रहें।

अहम्भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः।
मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे विभजामि भोजनम्॥

–ऋ. म० १० सू ४८। म० १

ईश्वर सबको उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान सब जगत् का पति हूं। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूं। मुझको ही सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें। मैं सबको सुख देने हारे जगत् के लिए नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिये करता हूं।

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
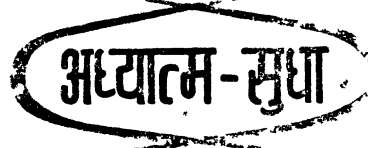
हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें। पुनः अन्त में प्रार्थना करते हैं। 'अग्ने नय सुपथा राये' हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर! हमें ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए उत्तम मार्ग से ले चलो। ऋग्वेद ४-३२-२० मन्त्र में कहा गया है–

भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्याभर। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि।

अर्थात् हे ऐश्वर्यशाली इन्द्र! तू बहुत अधिक देने वाला है, हमें भी खूब दे। कम मत देना। हमें बहुत अधिक धन बार-बार दे। हे इन्द्र! तू वास्तव में बहुत अधिक धन देने वाला है। यजुर्वेद ३-४३ मन्त्र में कहा गया है–

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन॥

ऋ. म. १०। सु ४८। म. ५

मैं परमैश्वर्यवान् सूर्य के समान सब जगत् का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता हूं। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझको ही जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।

अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्।
अहं भुवं यजमानस्य चोदिताऽयज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥

ऋ. म. १० सू. ४९। म. १

अर्थात् हे मनुष्यो! मैं सत्य भाषण रूप स्तुति करने वाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करने हारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता उससे सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता, मैं सत्य पुरुष को प्रेरक यज्ञ करने हारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है, उस सब कार्य को बनाने और धारण करने वाला हूं। इसलिये तुम लोग मुझको छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।

इन ऊपर के मन्त्रों में ईश्वर को धन का पति माना गया है। साथ ही ऐश्वर्य प्राप्ति की शिक्षा भी दी गई है।

वेदों में धन और परिग्रह के प्रति कहीं-कहीं अद्भुत अभिप्सा की भावना का प्रचार किया है। वेद के अनेक मन्त्रों में जहां धन की याचना की गई है और जिन याचनाओं–आकांक्षाओं को अपरिमित प्रलोभनों द्वारा बल साधकों ने इसलिए प्रेरित किया है कि उन का प्राप्ति म वह साक्षीदार थे, उन वेद ग्रन्थों में उत्कृष्ट त्याग भावना और अकिंचनता देखकर आधुनिक समाजवाद की नूतनता समाप्त हो जाती है। वैभव या ऐश्वर्य के प्रति उनका दृष्टिकोण है–

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः।

–ऋ. १०-११७-५

राय (धन सम्पत्ति) रथ के पहियों की तरह आवर्तित होने वाली है। कभी एक के पास रहती है, कभी दूसरे के पास।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की अजमेर को भेंट

(निज संवाददाता द्वारा)

महर्षि दयानन्द की अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण शताब्दी धूमधाम से ३ नवम्बर से ६ नवम्बर तक अजमेर में मनाई गई। चतुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्य तो ६ अक्टूबर से ही आरम्भ हो गया था। महात्मा दयानन्द जी (तपोवन देहरादून) इसके ब्रह्मा थे, और देश-देशान्तर से आए हुए अतिथियों ने श्रद्धापूर्वक इसमें भाग लिया। आप जानना चाहेंगे कि यज्ञ भी समाप्त हो गया और सम्पूर्ण समारोह भी अभूतपूर्व रहा। इतना बड़ा पण्डाल, आर्य जनता की इतनी बड़ी भीड़, इतना बड़ा ऋषि लंगर और इतना बड़ा जलूस पहले कभी नहीं देखा गया था। इतना बड़ा शोभनीय पण्डाल तो आज तक संसार के किसी समारोह में नहीं देखा। पर प्रश्न है अजमेर नगरी को स्थायी रूप से क्या मिला।

इतनी बड़ी भव्य यज्ञशाला भविष्य में अजमेर की गौरव कही जायगी

शताब्दी के अवसर पर भारत की और देशान्तरों की श्रद्धालु जनता की ओर से जो यज्ञशाला बनी है, वह अभूतपूर्व है, संसार की उल्लेखनीय यज्ञशालायें निम्न हैं-(१) डरबन की कालाईल स्ट्रीट की यज्ञशाला, (२) एटा की दण्डी स्वामी ब्रह्मानन्द जी की विशाल यज्ञशाला, (३) गाजियाबाद की सन्यास आश्रम की यज्ञशाला, (४) दिल्ली की बसन्त बिहार की यज्ञशाला, ५-अलवर के महाविद्यालय की यज्ञशाला, (६) बिजनौर आर्यसमाज की यज्ञशाला। ऋषि उद्यान की यज्ञशाला के सौंदर्य में अभी अभिवृद्धि करनी होगी। ५ लाख रुपये से अधिक इसमें व्यय हो चुका है। फर्श की घिसाई और डिस्टेम्पर बाकी है। इसके गुम्बज को और अलंकृत करना है। दानदाताओं के नाम के पत्थर सोच समझकर आयोजित रूप से किसी पृथक् स्तूप पर लगाना है, जिससे यज्ञशाला मकबरा या यादगार न मालूम हो।

यज्ञशाला में दोनों समय यज्ञ होसके इसके लिए परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी ने स्थायी निधि प्रारम्भ कर दी है। यज्ञशाला में श्रद्धालु दानदाताओं ने पूर्णाहुति के दिन जो धन की उदारता प्रदर्शित की थी, खर्च निकालकर शेष बचे दान के धन से प्रति दिन हवन की सुविधा प्रदान की जायगी।

यज्ञस्थली पर अतिथियों के भोजन के निमित्त आटा-दाल भी आदि जो सामग्री बची उसे बेचकर उसकी आय से समय-समय पर आने वाले अतिथियों के लिए पलंग, गद्दे बिछौने कम्बल आदि की व्यवस्था होगी। प्रसन्नता की बात है कि स्वामी ओमानन्द जी के प्रस्ताव पर श्री पन्नालाल बाहेती जी ने इसकी व्यवस्था का पूर्ण भार संभाल लेने का आश्वासन दिया है। श्री बाहेती जी लंगर के लगाने की सुचारु व्यवस्था की सबने सराहना की थी।

यज्ञशाला के प्रांगण में कीर्तिस्तम्भ बनाने का शिलान्यास

स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री छोटूसिंह जी, श्री वाघमारे जी आदि महानुभावों की उपस्थिति में कीर्ति स्तम्भ की नींव रखने का औपचारिक कार्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा हुआ। मराठवाड़ा के योग्य वानप्रस्थी श्री आर्य मुनि जी ने पौरोहित्य किया, और मंगल मय मन्त्रों का पाठ किया। कुशल शिल्पियों से सलाह लेकर इस स्तम्भ का चित्र तैयार किया जाय। दिल्ली के लौहस्तम्भ की ऊंचाई तक का यह कीर्ति स्तम्भ बनेगा। हमें विश्वास है कि आर्यजगत् का कोई एक दानी मानी कन्ट्रैक्टर ही इसके निर्माण का भार अपने ऊपर ले लेगा। सम्भवतः हमें मांगने की आवश्यकता भी न पड़े, छोटा ही हो, पर अत्यन्त भव्य होना चाहिये।

दयानन्द नगर की संस्थापना—

३-जिस विस्तृत भूमि पर दयानन्द नगर बसाया गया था, और जहां विशाल शामयाना लगा और दुकान बनीं, भविष्य में उस जगह जो नगरी बसेगी, उसका नाम दयानन्द नगरी घोषित कर दिया है। इस नगरी के नाम की पट्टिका का शिलान्यास स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा ७ नवम्बर को परोपकारिणी सभा और समारोह के अधिकारियों और जमीन के मालिक श्री भंवर लाल पंचोली के परिवार की उपस्थिति में कर दिया गया है। श्री पंचोली जी का समस्त परिवार बड़ा प्रसन्न और अपने को गौरवान्वित कर रहा था। शताब्दी के दिनों में उनके परिवार में जिस कन्या का जन्म हुआ, उसका नाम भी उन्होंने 'शताब्दी' रखा है और पिछले सप्ताह ही उनके संयुक्त परिवार में जिस बालक ने जन्म लिया है, उसका नाम भी अजयराजित ही रखा जा रहा है।

इन्दिरा मंच सुरक्षित रखा जायेगा-शताब्दी मंच

४-स्वामी सत्यप्रकाश ने समापन की संध्या वेला में ६ नवम्बर को घोषित किया था, कि जिस मंच पर ३ नवम्बर को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने समारोह का आरम्भ किया था, वह मंच पक्का करके सुरक्षित रखा जायेगा। इस मंच की दीवार पर जो शिलालेख रहेगा, उस पर शताब्दी की ऐतिहासिकता का उल्लेख रहेगा। श्री पंचोली जी के परिवार ने आश्वासन दिया है कि इस मंच की सुरक्षा उनका परिवार आजीवन करेगा। इस मंच के नींव की औपचारिक कार्यवाही स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा अधिकारियों और पंचोली परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में विधिवत् सम्पन्न हुई।

ध्वजारोहण स्थली पर आर्यसमाज की स्थापना—

५-जिस ऐतिहासिक स्थली पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण किया था पंचोली परिवार ने निश्चय किया है, कि उस स्थान को आर्यसमाज की गतिविधि के लिए सुरक्षित रखा जाय इसके निमित्त वे ट्रस्ट बनायेंगे। इसका भी शिलान्यास समारोह समिति के अधिकारियों, आर्य महानुभावों और पंचोली परिवार के व्यक्तियों की उपस्थिति में स्वामी सत्यप्रकाश के कर-कमलों से और उस्मानाबाद (मराठवाड़ा) के तपस्वी श्री आर्य मुनि जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार अजमेर नगरी को शताब्दी समारोह के फलस्वरूप मिल रहा है—

१-भव्य यज्ञशाला और उसका सुन्दर पर्यावरण, २-कीर्ति स्तम्भ ३-दयानन्द नगर, ऐतिहासिक मंच, ४-ध्वजा रोहण स्थली पर आर्य समाज की गतिविधियों के लिए भवन।

अजमेर की जनता को बधाई! पंचोली परिवार ने हमारे ऐतिहासिक स्मारकों के प्रति जो उदारता प्रदर्शित की है इसके लिये समस्त आर्यजगत् आभार मानेगा।

पं० बिहारीलाल शास्त्री व्यक्तित्व और कृतित्व

[डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी एम० ए० पी-एच० डा०, प्रोफेसर्स कालोनी बर०गो कालेज परिसर श्यामगंज, बरेली]

महत्ता जन्म से नहीं अपितु कर्म द्वारा मानव अर्जित करता है। महान् पुरुषों का जीवन मानव

श्री प० बिहारीलाल शास्त्री

मात्र के लिए प्रेरक एवं कल्याण प्रद होता है।

"इस चंचल जग सरिता में,
अविचल है धर्म किनारा।
डूबते जीव का सम्बल,
प्रिय महाश्वेत आधारा।

जो थाम इसे हैं लेते,
पथ दीप वही बन जाते।
तिमिराच्छाकार से चलकर,
आलोकित रवि को पाते।"

अन्य महापुरुषों की भांति प० बिहारीलाल जी शास्त्री भी तेजस्वी, वाग्पटु एवं प्रेरक विभूति हैं जिन्होंने जीवन पर्यन्त आर्यत्व के प्रचार-प्रसार में इस विश्व वन में स्वयं को अर्पित कर अमर बना लिया है।

पण्डित जी का जन्म

"पानवड़ा इति ग्राम मुरादाबाद मध्यगे, जन्म भूमिरयं यस्यो बिहारीलाल शास्त्रिणः।"

भारद्वाज गोत्रज इस द्विज का जन्म पौड़ीय त्रिगुणायत कुलीन प० अयोध्याप्रसाद जी के गृह में पानवड़ा नामक ग्राम में विक्रम १९४८ में ज्येष्ठ मास की द्वितीया को हुआ था। पानवड़ा नामक ग्राम में छीपी लोगों का तीर्थ 'सत नाम देव जी' का मन्दिर है। विप्रवर के यहां ब्राह्मणवृत्ति नहीं होती थी, अपितु रुपये का आदान प्रदान तथा कृषि कर्म ही आजीविका के साधन थे। शास्त्री जी के परदादा भूपालशाह तथा दादा का नाम बुधसेन था। पण्डित जी की मां साध्वी एवं धार्मिक महिला थीं।

पण्डित जी की शिक्षा-दीक्षा

बचपन से ही पण्डित जी कुशाग्र बुद्धि थे, तथा अनेक शास्त्रों को कण्ठस्थकर लिया था। इन्होंने सर्व प्रथम लाला सोहनलाल अग्रवाल के पास बैठकर मुड़िया लिखना, तथा मुनीम का हिसाब सीखा।

तदनन्तर पण्डित जी ने छेदालाल जी से संस्कृत पढ़ना सीखा। लघु कौमुदी पढ़कर मुरादाबाद की संस्कृत पाठशाला में प० [illegible]नाथ शास्त्री से डेढ़ साल पढ़कर प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर पण्डित जी ने नौकरी करली। इसके साथ ही 'शास्त्री' तथा 'काव्यतीर्थ' परीक्षायें भी उत्तीर्ण की। 'आचार्य परीक्षा' की तैयारी कर रहे थे कि राजकीय आदेशानुसार इन्हें इन्टर क्लास पढ़ाने की स्वीकृति मिली तथा सन् १९५६ तक पण्डित जी बदायूं के इन्टर कालेज में पढ़ाते रहे तथा मध्यावधि में चार वर्ष तक 'उपदेशक' का कार्य किया। जिसकी प्रशंसा जिले के लोग आज भी मुक्तकण्ठ से करते हैं।

मुसाफिर विद्यालय (आगरा) में शिक्षण कार्य

पण्डित जी ने सन् १९१४-१५ के श्री प० भोजदत्त जी के 'मुसाफिर विद्यालय' में भी शिक्षण कार्य किया है कुंवर सुखलाल तथा पूज्य स्वामी अमरसिंह इनके अग्रणी शिष्यों में से हैं। कुंवर सुखलाल जी ही बाद में प्रेमानन्द सरस्वती हो गये तथा वर्षों की वेदामृत पिपासु जनता को वैदिक विचारों से तृप्त किया। स्वामी जी ने जो चौबीस वर्ष आपके व्यतीत किये, उनमें भी अनेक शिष्यों को सुशिक्षित किया। इनके मित्रों में आर्योपदेशक प०निरञ्जनदेव पाठक श्री मुरारीलाल, प० वासुदेव जी, श्री रामदयाल, श्री प०रामस्वरूप जी पाराशरी आदि हैं। पण्डितजी के इन मित्रों में प० निरञ्जनदेव जी मेरे पितामह तथा प० रामस्वरूप जी मेरे नाना थे। वक्तृत्व कला कोविद पण्डित जी का स्वभाव किसी भी व्यक्ति को बिना आकृष्ट किये नहीं रहता।

पण्डित जी के शास्त्रार्थ—

शेर-ए-मज़हब पादरी ज्वालासिंह से शास्त्रार्थ

यह शास्त्रार्थ पण्डित जी का चांदपुर में हुआ था जिसमें पादरी ज्वालासिंह पूर्णरूप से पराजित हुआ था। पण्डित जी ने जब मेहतरों के ईसाई लिये जाने का विरोध किया, तब ईसाइयों ने रोब जमाने के लिए अमेरिकन पादरी रोनाल्ड साहब को बुलाया जिसका भाषण अंग्रेजी में हुआ। उन्होंने कहा कि जिनको कुछ पूछना हो पूछो। तब पण्डित जी ने 'इञ्जील' हाथ में लेकर कहा—"कोई धनी व्यक्ति स्वर्ग नहीं जा सकता। संसार का सर्वाधिक धनी देश अमेरिका है जहां से आप आए हैं। इञ्जील के अनुसार अमेरिका नरक जायेगा। उसका सारा धन हिन्दुस्तान को दिलाइये, जिसे नरक का कोई डर नहीं। हमारे कदम नरक में पड़ते ही नरक स्वर्ग हो जाएगा। ईसाई पादरी चुप हो गया। तदनन्तर पण्डित जी ने इञ्जील हाथ में लेकर ईसाई पादरी से पूछा—'क्या बपतिस्मा के बाद मनुष्य का कुछ नहीं बिगड़ता है चाहे वह जहर खाले? यदि हां, तो क्या आप एक तोला अफीम खा सकते हैं? पादरी रोनाल्ड निरुत्तर होकर बोला—मुझे पसीना आ रहा है। आपको जो कुछ पूछना हो, मेरी कोठी पर आइये। पण्डित जी ने कहा—'आपकी कोठी पर वह जाये जो आपसे कम पढ़ा हो। मैं आपको बाइबिल भी पढ़ा सकता हूं और 'वेद' भी जिसका आपने केवल नाम ही सुना होगा। इस प्रकार के अनेक शास्त्रार्थ विप्रवर के ईसाई पादरियों से हुए जिनमें पादरियों को मुंह की खानी पड़ी।

मौलवियों से 'पुनर्जन्म' पर शास्त्रार्थ

पण्डित जी के 'पुनर्जन्म' को लेकर अनेक शास्त्रार्थ मौलवियों से हुए। यह शास्त्रार्थ १९१४ में बदायूं आर्यसमाज तथा 'बरेली आर्यसमाज' दोनों ही स्थानों पर हुआ जिसमें मदान्ध यवनों को निराधार, तथा शास्त्र वर्जित, कुतर्कों के कारण करारी हार खानी पड़ी।

पौराणिक पंडित माधवाचार्य से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ

उन्होंने माधवाचार्य को समझाया कि मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है 'पुरुष सूक्त' का रूपक भी जो माधवाचार्य जी को समझाया, तब प्रखर तर्क बाणों की उज्ज्वल किरणों से भी माधवाचार्य का कुछ अज्ञानान्धकार दूर हुआ। पूर्व वैदिक बोध सुशिक्षित ऋषियों की प्रतिभा सम्पन्न महर्षि दयानन्द की शुचि सरणी में न जाने कितने पाखण्डियों एवं विधर्मियों को स्नान कराकर आपने पवित्र किया

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री प्रो. कैलाशनाथसिंहजी (प्रधान आ.प्र. सभा) के पुनः प्रधान पद पर निर्वाचित होने के लिए बधाई

(छन्द बद्ध काव्य)

श्री श्रीमान बने प्रधान पुनः मतिमान हमारे नेता जी।
कै कैलाश से उच्चादर्श रखें, श्रीमान हमारे नेताजी ॥
ला लालायित रहते दर्शन नित आर्य जगत् के नरनारी।
श शत-शत प्रेम बधाई पावें, प्रणवीर हमारे नेताजी ॥
ना नाना विध विद्याओं का मर्म धर्म जाना सारा।
थ थर्राए पोप पुजारी सारे, सद्वीर हमारे नेताजी ॥
सिं सिंह समान निर्भीकवीर सत्पथ के हैं अनुगामी।
ह हर्ष-शोक मे साम्य भाव ही दिखलाते हमारे नेताजी ॥
जी जीवन जिनका शुद्ध सरल है आर्यत्व पूर्ण पावनतम भी।
प्र प्रभु प्रेम हृदय में रखते हैं आदर्श हमारे नेताजी ॥
धा धार धर्म वेदों का चलते मन उल्लास सदामित रहता।
न नम्र भाव उर प्रेम भरा है, निधि प्रेम हमारे नेताजी ॥
को कोमल कण्ठ मधुर शब्दों से सद्बोध करें जन-मन को वे।
ब बन्धुत्व सदा सन्देश सुनाते जनमन प्यारे नेताजी ॥
धा धाम ग्राम तजकर जाते धर्मोपदेश कराते हैं।
ई ईश कृपा के पात्र बने हैं प्रबुद्ध हमारे नेताजी ॥
है है आशीर्वचन शुभेच्छकों का लघु जन के स्वीकार नमन हों।
'वेदभिक्षु' के आर्यमित्र है, शिक्षक हमारे नेताजी ॥

—स्वामी ब्रह्मानन्द 'वेदभिक्षु'
आर्य समाज गुन्नौर जनपद (बदायूं)

नमस्कार ऋषि को शतवार

अमर क्रान्ति के ऋषि थे दाता।
नवयुग के थे सृजन हार ॥
घर-घर में फूंका था ऋषि ने।
स्वतन्त्रता का उच्च विचार ॥

भारत नौका फंसी भंवर में।
दूर बहुत किनारा था ॥
ऋषि ने ले पतवार हाथ में।
इसको पार उतारा था ॥

मानव जीवन बने सभी का।
वेदों का ऋषि ज्ञान कराया ॥
मृतक समान देश भारत को।
वेद अमृत का पान कराया ॥

छोटा बड़ा नहीं है कोई।
छूत-छात को दूर किया था ॥
पाखण्डों में हम भटक रहे।
सच्चा प्रभु मार्ग बता दिया था ॥

करुणा के सागर थे ऋषिवर।
दीन दुखियों को थे वरदान ॥
विधवा अनाथ, स्त्री जाति को।
ऋषिवर ने दिया जीवनदान ॥

लड़-लड़ कर हम मिटे जा रहे।
फूट अविद्या दूर भगाई ॥
वेद धर्म की ओ३म् पताका।
सारे विश्व में फैराई ॥

मनुज नहीं ऋषि देव शक्ति थे।
सब जान गया 'शर्मा' संसार ॥
जीवन किया था देश के अर्पण।
है नमस्कार ऋषि को शतवार ॥

—बनवारी लाल 'शर्मा' प्रधान आर्य समाज मोडल बस्ती
नई दिल्ली—११०००६

द र्प सभी चूर किया पाखण्ड की क्षार क्षार,
या म आठों रत रहा वेद के प्रचार में।
नं ने सुने वेद वचनीय बता नारियों को,
द यालु ने जीवन ही लगाया उद्धार में ॥
स त्य से न विचलित नेक हुआ कभी और,
र त सत शिक्षण के रहा जो प्रसार में।
स्व को भुलाया 'नरेन्द्र' पर उपकार हित,
ती खापन तो कभी भी था न व्यवहार में ॥

द या का था अवतार दीन दुखी किये तार,
या जीवन उपकार ऋषि करता रहा।
नं ने विधवा अनाथ प्रभु कैसे हों सनाथ,
द यालु जगन्नाथ से यही ध्याता रहा ॥
स धर्म जिन्होंने छोड़ा वेद से था मुख मोड़ा,
र हा नहीं ऐसा कोड़ा जीभ लगाता रहा।
स्व को 'नरेन्द्र' भुलाया पर सेवा मन आया,
ती र को चलाया यह काम किये जा रहा ॥

—नरेन्द्र आर्य मैनपुरी

आर्य समाज आदिवासी क्षेत्र जगदलपुर की ओर ध्यान दें ।

श्रीमन्

इस वर्ष में जगदलपुर मध्य प्रदेश में दशहरा मनाने के लिए जब रायपुर से २९१ किलोमीटर की बस यात्रा करके पहुंचा तो रास्ते में यह बराबर अखरता रहा कि बड़े-बड़े पत्थरों पर कुछ वाक्य लिखे मिले जैसे 'यीशू हमारा मसीहा है ।' हमारा उद्धार यीशु करेगा आदि आदि । पत्थरों पर सफेद चूने से काली स्याही से लिखा यह प्रचार जितना ज्यादा देखा उसका व्यापक विस्तार भी बस्तर में देखने को मिला ।

अक्टूबर १६ को जापा बस्तर में पण्डवानी का विशाल आयोजन था जिसमें १५ हजार की भीड़ थी । संत बिहारीदास जी, अपनी दो पत्नियों और पुत्रों के साथ हजारों आदिवासियों से पूजित हो रहे थे । आदिवासियों में उन्होंने यह भ्रान्ति फैला दी है और प्रचारित कर रखी है कि वे स्व० प्रवीण चन्द्र भंजदेव के उत्तराधिकारी हैं और उनके पुनर्जन्म के स्वरूप हैं । इस मान्यता से ग्रस्त और त्रस्त आदिवासी उनकी हर आज्ञा का पालन करते हैं और चंदे और भेंटे देकर उन्हें सतुष्ट करते हैं । मन की अपूर्ण तक वेची जाती है हिन्दू धर्म में जहाँ ऐसे पाखण्डी हैं, उसका लाभ ईसाई उठा रहे हैं । वे लेते नहीं देते हैं । आदिवासियों को भोजन बांटते हैं । वस्त्र प्रदान करते हैं । शिक्षा के विद्यालय वहाँ सुचारु रूप से निःशुल्क चलते हैं । इनका असर है कि आदिवासी ईसाई बन रहे हैं । धर्मान्तरण हो रहा है और हम तमाशा देख रहे हैं ।

दशहरे के दिन आदिवासि क्रास लटकाये दंतेश्वरी माता की सवारी का रथ खींचते हुए देखे गये । ईसाई भले ही कहलायें, लेकिन आदिवासी अपने पूर्व प्रचलित पारम्परिक संस्कारों को बदल नहीं पाये हैं । सरकारी दफ्तरों में शरणार्थियों की तरह ठहरे आदिवासी, अपने कार्यक्रमों में देवी की उपासना में नाचते गाते देखे गये ।

जगन्नाथ जी की सवारी की परम्परा में बस्तर के दशहरे में ३० फीट ऊँचा २० आदमियों के बैठने की जगह का चौड़ा रथ, सैकड़ों आदिवासियों की धार्मिक कृति है । सहकारिता आन्दोलन वहाँ असफल हो, बैंकों ने भी ऋण दे दिये उनकी अदायगी न हो, लेकिन श्रद्धा और विश्वास का यह कार्य संगम देखने को मिला कि नियत किये गये आदिवासी रथ की तैयारी में महीनों लगे रहते हैं । बिना आरी का इस्तेमाल किये बसूले से रथ बनाते हैं और चावल की पाई लेकर अपनी भक्ति भावना का परिचय देते हैं । मूंज की मोटी रस्सी सैकड़ों मीटर की तैयार करते हैं और छत्र की शोभा यात्रा में रथ को आगे-आगे चलाते हैं । उनके आगे मुरिया जाति के लोग नृत्य करते चलते हैं । वे पशुओं की आकृति के मुखौटे धारण करते हैं ।

भतरी जाति के लोग यज्ञोपवीत धारण करते हैं । ज्ञात हुआ कि ये भतरी भक्तराज के नाम से पुरी की रथयात्रा में विभूषित किये गये थे । तब से उनके यहाँ के लोग जनेऊ पहिनते हैं भले ही क्रास लटका कर जब जुलूस में शामिल होते हैं ।

आदिवासी जनों के लिये म० प्र० सरकार ने इस वर्ष ८० हजार रुपये आवंटित किये और प्रशासन में इसका अधिक भाग खर्च हो गया म० प्र० की समाज कल्याण विभाग की मन्त्री कु० गंगा पोटाई और अन्य मंत्रियों की आगवानी में जिलाधीश भी पोर्टे व्यस्त देखे गये । काश ! आदिवासी कल्याण में इस विपुल धन राशि का सदुपयोग हुआ होता तो धर्मान्तरण होता ही क्यों ?

बस्तर क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा जिला है जिसकी सीमाएं आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि प्रदेशों को स्पर्श करती हैं । केरल प्रदेश से ज्यादा बड़ा होने पर भी यह अफसोस है कि यहां पर समाज सेवकों की कमी है । आर्य समाज का कार्य क्षेत्र भी इस दिशा के अंधेरे में ही तो उपलब्धियाँ सामने आ सकेंगी । वर्तमान में यहाँ की बोलियों का अध्यापन वाचन और उपयोगी ईसाई करते हैं । पाण्डवानी जैसे बिहारी दास जी के प्रचारक हिन्दू धर्म की अलख जगाते हैं लेकिन उसका अपना मतलब है, उनका अपना स्वार्थ है, बेहतर हो कि आर्य समाज के लोग आदिवासियों की भाषा सीख कर वहाँ रहे और उनकी समस्याओं का निराकरण करें । आर्य संस्कार जाग्रत करें । क्योंकि संत बिहारीदास जी से ईसाई धर्म के प्रचार में रोक तो हो रही है, लेकिन हिन्दू धर्म की वास्तविकता, सेवा, संस्कृति की पूर्ति नहीं हो रही है । इस दिशा में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने की जरूरत है । —राष्ट्रबन्धु

सम्पादक बाल साहित्य समीक्षा
१०९/३०९ रामकृष्ण नगर
कानपुर– २०८०१२

—गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल का उत्सव १७ से २० नवम्बर तक मनाया जायगा ।

—स्वामी आनन्दवेश

—आर्य समाज मलीहाबाद में दिवाली को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी धूमधाम से मनायी गयी । श्री विजय कुमार मन्त्री ने आर्यमित्र के ऋषि बोधांक में से प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी प्रधान सभा का 'क्रान्तिकारी कार्यक्रम' एवं श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान सभा महर्षि निर्वाण शताब्दी लेख पढ़ कर सुनाये । उपस्थित जनों से अपील की कि श्री प्रधान सभा के आदेशों का पालन किया जाना हमारा परम कर्त्तव्य है । —विजय कुमार बंसल मंत्री

—आर्य समाज दातागंज (बदायूं) में ४ अक्टूबर को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी दिवस मनाया गया ।

—कु० वीरेन्द्र सिंह चौहान

—१२, १३ सितम्बर को श्री स्वामी महावीर आर्य और श्री सीताराम आर्य भजनोपदेशक सभा ने ग्राम पुरवावां (हरदोई) में प्रवाह करके आर्य समाज की स्थापना कर दी । इसमें श्री रामनाथ जी प्रधान और सुरेश चन्द्र मन्त्री चुने गये ।

—प्रताप आर्य ढोलक वादक

—२३ अक्टूबर को फीरोजाबाद में श्री रामकृष्ण की पुत्री स्नेहलता का पाणिग्रहण संस्कार फर्रुखाबाद के श्री दुर्गाप्रसाद के पुत्र श्री कृपा स्वरूप के साथ सम्पन्न हुआ । मन्त्री

—आर्य समाज शिकोहाबाद का वार्षिकोत्सव २९ सितम्बर से १ अक्टूबर तक मनाया गया। इस में सभा के माननीय प्रधान श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी एव आचार्य विश्व बन्धु जी पधारे। १ अक्टूबर को आर्य समाज की ओर से सभा प्रधान जी का अभिनन्दन किया गया। और ५०१) की थैली आर्य समाज की ओर से और १०१) स्त्री आर्य समाज की ओर से भेंट की गयी। मन्त्री

—आर्य समाज हनूमान रोड नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ३ से ९ अक्टूबर तक मनाया गया। मन्त्री

—जिवमा किलपुर (सुलतानपुर) ने २५ से ३१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया। मन्त्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर द्वारा १ से १० अक्टूबर तक गांवो मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। मन्त्री

—१६ से १८ अक्टूबर तक जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर देहात के तरवाग्राम मे शेरपुर गुढ़ा में आर्य आदंवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। मंत्री

—आर्य समाज हरदेवेन्द्र नगर कानपुर मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर १४ से २० अक्टूबर तक मनाया गया। —शिव दुलम
अधिष्ठाता

—आर्य समाज नैनीताल मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर महर्षि दयानन्द बाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। —केदार सिंह मन्त्री

—आर्य समाज देहरादून के वार्षिकोत्सव पर आयोजित आर्य सम्मेलन मे सरकार की इस नीति का विरोध किया कि सरकार ने आयात लाईसेंस प्राप्त करके गो की चर्बी आयात की और उसे वनस्पति में मिलाकर इस देश की गो-भक्त जनता की भावनाओं को गोवध ठेस पहुंचाई। —देवदत्तबाली मन्त्री

—सरावल (एटा) के श्री विजय सिंह का १७ अक्टूबर को निधन हो गया। शोक सभा में दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गयी। —दुर्गपाल सिंह

—आर्य समाज इटारसी ने दशहरा पर्व मनाया।
—चन्द्र भूषण मन्त्री

—बिलसी (बदायूं) मे १५, १६ अक्टूबर को वेद प्रचार कैम्प लगाया। १६ अक्टूबर को श्री पीताम्बर दास का निधन हो गया।
—गिरीश चन्द्र मन्त्री

—गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के अध्यापक व ब्रह्मचारी बस से महर्षि शताब्दी अजमेर गये। —मुख्याधिष्ठाता

—आर्य समाज ताड़ीखेत में गांधी जयन्ती मनाई गयी।
—त्रिलोक रावत मंत्री

—आर्यसमाज कालपी के प्रधान जी माताजी का हसुपुरा (बिजनौर) में देहान्त हो गया। आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव किया।
—ओमप्रकाश वैतली मन्त्री

—अल्मोड़ा। लक्ष्मी आश्रम कौसानी में डा० कष्णाहारी के पौरोहित्य में आनन्दवल्लभ के प्रथम पुत्र का नामकरण संस्कार ११अक्टूबर को 'नालेश' नाम के साथ सम्पन्न हुआ। उक्त संस्कार में डेन्मार्क की कुमारी क्रिस्टेन एवं कु० कारिनलिस तथा इंग्लैण्ड के श्री हिम ब्रुक एवं श्रीमती मेरीब्रुक ने भारतीय संस्कार पर अपने विचार प्रकट किये। —त्रिलोकसिंह रावत मन्त्री

सभा प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह का भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी की विभिन्न समाजों और संस्थाओं द्वारा दुलानाला स्थित काशी आर्य समाज के सभा कक्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री कैलाशनाथ सिंह जी का उनके पुन: प्रधान चुने जाने पर हार्दिक स्वागत और अभिनन्दन श्री बिहारी लाल गुप्त की अध्यक्षता मे आयोजित सभा में दि० ११।९।८३ को किया गया। जिला सभा, आर्य समाजों, शिक्षण तथा सामाजिक संस्थाओ एवं नागरिकों द्वारा श्री कैलाशनाथ सिंह जी द्वारा आर्य समाज के क्षेत्र मे की जा रही सराहनीय सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। सर्वश्री देवराज आर्य, रामजी आर्य, गङ्गाप्रसाद आर्य, लल्लूराम आर्य, धर्मपालसिंह, रविन्द्र कुमार बेरी, मेवालाल आर्य, बुद्धदेव आर्य, रामगोपाल आर्य, स्वामी मनसाराम आर्य, अशोक कुमार त्रिपाठी ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत कर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० मे उनके द्वारा उठाये गये हर क्रान्तिकारी कदम का समर्थन का वचन दिया गया। इस अवसर पर सभा के भूतपूर्व उपमन्त्री एवं वेदप्रचार मण्डल के संयोजक श्रीप्रकाशनारायण शास्त्री, सभा के अंतरङ्ग सदस्य श्री अवध बिहारी खन्ना एवं डा० जयप्रकाश भारती, धर्मवीर गाजियाबाद ने भी अपने उद्गार प्रकट किये। सर्वश्री महानन्द आर्य, राम प्रसाद पाण्डेय और विन्ध्येश्वरी सिंह ने गीतो के माध्यम से सभा प्रधान जी द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। पं० सत्यदेव शास्त्री, पं० चन्द्रपाल शास्त्री ने वेद मंत्रों द्वारा सभा प्रधान जी को आशीर्वाद देते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना की। अन्त मे सभा प्रधान जी ने अपने स्वागत का उत्तर देते हुए अपने को आर्य समाज का एक सेवक बताया और आगे भी आर्य समाज के कार्यों में पूर्ण मनोयोग निष्ठा और लगन से कार्य करते हुये अन्य आर्यजनों का भी इस पुण्य यज्ञ मे आहुति देने की प्रेरणा की।

—रामजी आर्य
प्रचार मन्त्री

—राजस्व परिषद, इलाहाबाद के सदस्य श्री राजेश्वर प्रसाद गुप्त की सुपुत्री आयुष्मती अल्पना का पाणि ग्रहण संस्कार चिरञ्जीव सुनील कुमार गर्ग (सुपुत्र स्व० श्री जगदीश प्रसाद) कम्पनी सेक्रेटरी, यू०पी० एक्सपोर्ट कारपोरेशन कानपुर के साथ १४ अक्टूबर १९८३ को रूढ़िवादी आडम्बरो व प्रचलित कुरीतियो से मुक्त वैदिक रीति द्वारा सुर्वाच पूर्ण व सादगी से १ बजे दोपहर को सम्पन्न हुआ। जिसमे नगर के विशिष्ट भाइयों एव उच्च न्यायालय के न्यायाधीशो ने सम्मिलित होकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया। —प्रभात कुमार एडवोकेट

—आर्य समाज लालबाग लखनऊ ने ४ व ६ नवम्बर को महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह मनाया। —सत्यदेव सैनी
मन्त्री

—नैनीताल से अजमेर निर्वाण शताब्दी जाने वाली बस का हल्द्वानी आर्य समाज के द्वार पर स्वागत किया गया। इस जत्थे का नेतृत्व श्री दाकेलाल जी कौशल कर रहे थे।

—देवानन्द

'निर्फाद' का भण्डा फोड़

निर्फाद एक रहस्यमय षड्यन्त्र : डा० सुन्दरम् के कथन की निस्सारता

नौंहवारी—बाजमा क्षेत्र के भाईयों और बहिनों !

निर्फाद' के डायरेक्टर डा० सुन्दरम् की ओर से एक विज्ञप्ति 'निर्फाद' की स्थिति के स्पष्टीकरण में प्रसारित की गई है, जो सर्वदा भ्रान्ति युक्त है, असत्य और निराधार है। इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन निम्न प्रकार है।

हम निवेदन कर्त्ता आर्यसमाज के महान् सङ्गठन से सम्बन्धित हैं। जैसा कि सभी जानते हैं—'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अतः क्या देश की स्वतन्त्रता, क्या सामाजिक कुरीति निवारण, क्या राष्ट्रीय शिक्षा प्रसारण और क्या विशुद्ध मानव धर्म का प्रचार-प्रसार आदि सभी लोकहित राष्ट्रहित और समाजहित के कार्यों में आर्यसमाज अग्रगण्य रहा है, हमने भी उसी सहज कर्तव्य भावना से 'निर्फाद' के वास्तविक रहस्य और स्वरूप से परिचित न होने की स्थिति में उसे एक कल्याणकारी परियोजना समझकर हर प्रकार से सहयोग कर्त्तव्य समझा था और भूमि देने 'नया करार' कमेटी के सदस्य बनने आदि अनेकों रूपों में सहयोग किया था। किन्तु समय बीतने के साथ निर्फाद' का असली स्वरूप और उसके पीछे छिपे षड्यन्त्र का अनुभव हमें होने लगा और आज हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि 'निर्फाद' ईसाई मत प्रचार का ही एक रहस्यमय षड्यन्त्र है। इसके निम्नलिखित हेतु हैं :—

(१) विज्ञप्ति में कहा गया है कि 'निर्फाद' एक रजिस्टर्ड संस्था है। सभी जानते हैं कि हर रजिस्टर्ड संस्था का संविधान होता है। किन्तु आज तक भी यह संविधान, जिस तथाकथित कमेटी की चर्चा डा० सुन्दरम् ने की है उसके सदस्यों के बार-बार कहने पर भी उनके समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया, आखिर क्यों ?

(२) डा० सुन्दरम् के 'विश्वास पात्र सहयोगी' श्री सी०पी० गुप्त ने लगभग १॥ वर्ष पूर्व आर्यसमाज बाजमा के उत्सव में इसी विषय में आयोजित संगोष्ठी में अति शीघ्र संविधान प्रस्तुत करने की बात कही थी, किन्तु तब से निरन्तर वे झूठे वायदे ही करते रहे हैं, अभी तक भी संविधान की प्रमाणित प्रति प्रस्तुत नहीं कर सके हैं, इस प्रकार के एक-दो नहीं दसियों बार के झूठे वायदों का क्या अर्थ है ?

(३) डा० सुन्दरम् ने कमेटी निर्माण के आरम्भ में ही कहा था कि तीन वर्ष में वे 'निर्फाद' के सञ्चालन का पूर्ण अधिकार और दायित्व इस कमेटी को सौंप देंगे, किन्तु पूर्ण अधिकार सौंपना तो अलग कमेटी के वर्तमान में क्या अधिकार हैं, उसे अभी तक इस विषय में अंधेरे में रखा गया। क्या यह मात्र छलना नहीं है ! यह सर्वथा मिथ्या और सफेद झूठ है कि 'निर्फाद' का काम सदस्यों की सलाह से होता है।

(४) विदेशों से प्राप्त धन का कोई विवरण आज तक कमेटी के सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया, क्यों ?

(५) रोगियों को यह कहकर कि दूध में भी कीटाणु या जीवाणु होते हैं, फिर अण्डे और मांस-खाने में क्या दोष है ? क्या यह सब हमारे ग्रामीण क्षेत्रों के सात्विक आहार की जगह में गुप्त रूप में मांसाहार का भ्रष्ट प्रचार नहीं है ?

(६) गांवों को पिछड़ी जातियों और गरीबों को मुफ्त बछिया आदि बांटना क्या ग्राम-विकास' का अङ्ग कहा जायेगा ? क्या यह मात्र हमारे पिछड़े वर्ग को अहसान मन्द बनाकर भविष्य में उन्हें ईसाइयत के चङ्गुल में फसाने का षड्यन्त्र नहीं है, जैसा कि सर्वत्र हो किया गया है और जिसका भयङ्कर परिणाम आज नागालैण्ड, झारखण्ड, मिजोरम आदि के रूप में हमारे सामने है ?

(७) इस बीच हमें हमारे आर्य नेताओं द्वारा ईसाई मत प्रचार के तरीकों के विषय में साहित्य पढ़कर भी जानकारी हो चुकी है कि इनका प्रचार तरीकों मुसलमानों आदि से भिन्न सेवा और मानवता के आवरण लपेटकर, कितनी सूक्ष्म पकड़ के साथ और कितने गुप्त षड्यन्त्र के रूप में किया जाता है, जैसे कि आजकल क्लोरोफार्म सुंघाकर आपरेशन कर दिया जाता है। आजकल ईसाई बनाते समय नाम नहीं बदले जाते, बपतिस्मा भी नहीं दिया जाता, भवनों पर क्रास भी नहीं लगाया जाता. अन्दर-अन्दर में जिन पर अहसान किये जाते हैं, उनके मानस को बदलकर उन्हें ईसाइयत में दीक्षित किया जाता है। दिल्ली के समीप 'बाल विकास केन्द्र' के रूप में भी ऐसी ही संस्था (विदेशी एजेन्सी) काम कर रही है।

(८) डा० सुन्दरम् ने स्वीकार किया है कि संस्था के लिए विदेशों से धन आता है विदेशों से आने वाले धन द्वारा 'ईसाई' साम्राज्यवाद के काले इतिहास को सभी जानते हैं। अरब के डालरों द्वारा 'मीनाक्षीपुरम्' जैसे उदाहरण हमारे सामने हैं। हाँ, ईसाई मत प्रचार का तरीका वृक्ष में लगी दीमक की भांति है जो बाहर से पता नहीं लगती और अन्दर से वृक्ष को खोखला करके गिरा देती है।

(९) डा० सुन्दरम् को ईसाई होते हुए भी भारतीय नागरिक के नाते भारत की प्रजा की सेवा करने का पूर्ण अधिकार है। किन्तु उन्हें इस प्रकार का षड्यन्त्र रचकर हमारी सन्तति के भविष्य की नीलामी का कोई अधिकार नहीं। यदि डा० सुन्दरम् के कथन में कुछ भी सचाई है तो हम उन्हें एक मास का समय देते हैं, वे निर्फाद का संविधान प्रस्तुत करें और सारे अधिकार 'ग्राम समिति' को सौंपकर विदेशों से सर्वथा सम्पर्क हटाकर, अपनी भारतीयता का प्रमाण दें।

एक मास तक यह न होने पर हम सदस्यगण 'तथाकथित' कमेटी से अपने को पृथक् समझेंगे। और क्षेत्रीय जनता की सेवा के लिये क्षेत्रीय जनता की सहायता से ही 'सेवाश्रम' का सञ्चालन कर अपने क्षेत्र को इस षड्यन्त्र से सर्वथा मुक्त करने के रूप में अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे।

हम हैं. 'निर्फाद' ग्राम समिति के सदस्य गण—

रामचरन, राजकुमार, तुलाराम गुप्ता　　दयावती गुप्ता, गेंदालाल

संयोजक क्षेत्रीय राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

—७ से ९ अक्टूबर तक आर्य समाज नई बाजार, बक्सर (भोजपुर) का वार्षिकोत्सव समारोह से मनाया गया।

—अयोध्या प्रसाद—मन्त्री

सहारनपुर में अभिनन्दन

आर्य समाज बाजापार सहारनपुर मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के नव निर्वाचित कोषाध्यक्ष श्री विद्यासागर, प्रदेश की अन्तरङ्ग के दो सदस्यो सर्वश्री बी० बी० गौतम तथा प्रताप सिंह का जिले की आर्यसमाजो की ओर से अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर के प्रधान, वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी ठाकुर महेन्द्र सिंह ने की।

अपने स्वागत के उत्तर मे श्री विद्यासागर ने कहा कि उन्होने कभी इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा में इतने उत्तरदायित्व के पद पर काम करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे–उन्होंने कहा कि उनका प्रयास सहारनपुर जनपद के गांव गांव मे आर्य समाज स्थापित करने का रहेगा। श्री प्रतापसिंह ने कहा कि वे सहारनपुर जिले की आर्य समाजो की समस्याओ को प्रदेश तक पहुंचाने और उनका समाधान प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। श्रीगौतम ने कहा कि हमे पारस्परिक मतभेद भुलाकर ऋषि दयानन्द के सदेश को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

–बी० बी० गौतम
संवाददाता

द्वितीय – पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन

४ दिसम्बर १९८३ घटाघर पार्क मिर्जापुर

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचलीय जनपदो मे आर्य समाजो के पुनर्गठन, धर्म प्रचार एवम् सामाजिक तथा शैक्षणिक सेवा कार्यक्रमो के विस्तार हेतु मिर्जापुर, वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़ बलिया, गोरखपुर देवरिया, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, बस्ती, गोंडा, बहराइच, फैजाबाद एवम् इलाहाबाद की आर्य समाजो, जिला उपसभाओ, व दयानन्द बाल मन्दिरों के प्रतिनिधियो का एक द्विदिवसीय सम्मेलन आगामी ४ दिसम्बर ८३ को मिर्जापुर मे सम्पन्न होगा। सम्मेलन मे शीर्षस्थ आर्य नेता, उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी तथा सैकड़ो कार्यकर्ता प्रतिनिधि भाग लेगे। सम्मेलन का उदघाटन आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह (भू० पू० शिक्षा मन्त्री) करेंगे। इस अवसर पर पूर्वांचल की आर्य समाजो की ओर से माननीय प्रधान जी का अभिनन्दन भी होगा।

कपूर चन्द्र आजाद (उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा स्वागताध्यक्ष) — प्रेमदत्त तिवारी स्वागत मंत्री — चन्द्रराम वर्मा श्री मोहन सिंह कार्यकर्ता प्रधान

सूर्यदेव शर्मा (अन्तरंग सदस्य आ० प्रति० सभा संयोजक) — प्रकाश नारायण शास्त्री संयोजक पूर्वांचल वेद प्रचार मण्डल

प्रतिवेदन

–प्रकाश नारायण शास्त्री–संयोजक

–घुमरी (एटा) के श्री विजयसिंह का १७ अक्टूबर को निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

–लाला राम प्रसाद

आर्य समाज कांकरिया रोड अहमदाबाद मे महर्षि निर्वाण शताब्दि के निमित्त दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शन का उद्‌घाटन २३ अक्टूबर को हुआ गुजरात के माननीय शिक्षा मन्त्री श्री प्रबोध भाई रावल विशेष रूप से उपस्थित थे।

–कमलेशकुमार शास्त्री

–आर्य समाज पथारी (बदायूं) के गोस्वामी रामानन्द सरस्वती का देहान्त हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार २० अक्टूबर को वैदिक रीत्यनुसार किया गया।

–साधुराम आर्य
मन्त्री

–आर्य समाज रसूलपुर मिरजापुर ने १४ से १८ अक्टूबर तक वेद प्रचार किया।

–सत्य प्रकाश

–रंगवासा (राऊ) इन्दौर के श्री राजपाल जी आर्य ने प्रथमबार तीसरी भारत साइकिल यात्रा वैदिक धर्म प्रचारार्थ अजमेर में समाप्त की।

–वेद प्रकाश शर्मा

–वेद परिषद लखनऊ के मन्त्री श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने सितम्बर में आसाम का दौरा किया। गोहाटी मे आपने कई जगह प्रहो पर प्रवचन किये।

–वीरेन्द्र मुनि मन्त्री

–आर्य समाज बहराइच ने १७ से ३१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह से मनाया।

–चरनसिंह बिजनौरी
मन्त्री

–कानपुर के स्व०नवल किशोर भरतिया स्व० सुशीला भरतिया की स्मृति मे सामवेद पारायण यज्ञ श्री विजयपाल जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ।

–विजय पाल शास्त्री

–श्रीमती कृष्णा देवी ६३ छावनी कानपुर मे ७ से १५ अक्टूबर तक श्री विजय पाल शास्त्री से गायत्री महायज्ञ सम्पन्न कराया। शताब्दि हेतु श्रीमती कृष्णा देवी चड्ढा ने २००) समर्पित किया।

– विजय पाल शास्त्री

–१० अक्टूबर को श्री विजयपाल शास्त्री ने श्री बी० के०सक्सेना की पुत्री अनीता स्वरूप नगर कानपुर का चि० ... के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न कराया।

–विजयपाल शास्त्री

पं० बिहारी लाल शास्त्री : व्यक्तित्व और कृतित्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

पौराणिक पंक में फंसे न जाने कितने विप्र वर्गों को निकाल कर सुमार्ग प्रेरित किया था अविस्मरणीय रहेगा ।

इस प्रकार पण्डित जी ने शास्त्री शिक्षा तो अध्यापन से की, किन्तु उपदेशक का कार्य स्वतन्त्रता से किया तथा जो 'दक्षिणा' मिला उसे परमार्थ में लगा दिया । आपने 'वेदों' पर 'आर्य समाज' पर हुए सभी आक्षेपों और विवादास्पद प्रश्नों के उत्तर लिखे हैं । 'वैदिक पताका' नामक पुस्तक में उन्होंने माधवाचार्य के अनर्गल लेख का उत्तर दिया है । श्री माधवाचार्य जी ने अपने जीवन चरित्र में नितान्त झूठ लिखा है कि मुकदमा खारिज हो गया, पण्डित जी ने 'दम्भ-दमन' पुस्तक लिखकर श्री माधवाचार्य जी ने छल कपट पूर्ण लेखों का खण्डन किया है । माधवाचार्य जी ने जब पण्डित जी के साथ हुए इस शास्त्रार्थ को मुटिलात रूप से प्रकाशित करवाया, तब पण्डित जी ने उन पर मुकदमा चलाया, तदनन्तर अदालत में उपस्थित होने पर माधवाचार्य ने पश्चाताप किया, तब उन्हें क्षमा किया गया ।

सम्प्रति पण्डित जी के पुत्र श्री अरविन्द लाल शर्मा अच्छे व्यापारी हैं, तथा उनके भतीजे श्री रमेशचन्द्र विकट अध्यापन कार्य के साथ ही 'एम० एस० सी०' भी हैं ।

कृतित्व —पण्डित जी की अब चालीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'वेद-वाणी', पशुबलि और वेद, धर्म तुला, इस्लाम का स्वरूप, मद-भञ्जन, दम्भ दमन, अथर्ववेद रहस्य तथा ऋग्वेद-रहस्य, आदि सुप्रसिद्ध हैं । इस समय पण्डित जी ९४ वर्ष के हैं तथा अब भी उनकी लेखनी अविराम है । स्वयं लिख पढ़ नहीं सकते किन्तु अपने योग्य शिष्यों द्वारा लेख समय समय पर लिखवाकर भेजते रहते हैं । वैदिक धर्म के पुजारी पण्डित जी एक प्रेरणास्पद व्यक्ति रहे हैं ।

धन कमाओ ! खूब कमाओ !

(पृष्ठ ३ का शेष)

केवल यही नहीं कहा कि—

'मा गृध कस्यस्विद्धनम्'

—यजु० ४०-१

किसी के धन पर ललचाई दृष्टि से मत देखो । किन्तु इसके साथ यह भी घोषित किया कि जो स्वार्थी है, उसका अन्न उपजाना व्यर्थ है । इस प्रकार का स्वार्थ पूर्ण उत्पादन ही उस व्यक्ति का संहार करता है ।

'मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य'

इस ऋषि की वात्सल्य पूर्ण आग्रह पूर्ण स्वात्मानुभव पूर्ण वाणी देखिए । वह कहता हूं, इस प्रकार का स्वार्थ पूर्ण अन्न उत्पादन स्वयं उत्पादक का वध कर देता है ।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायं

केवलाघो भवति केवलादी । ऋ० १०।११७।६

जो धन को न धर्म में लगाता है, न अपने मित्र को देता है, जो 'केवलादी' अपना ही पेट पालने वाला है, वह 'केवलाघ'—साक्षात् पापरूप है ।

[क्रमशः]

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखिये

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ नवम्बर ८३ को समाप्त हो जायेगा । वी० पी० भेजने में ४ ५० अधिक पोस्टेज लगते हैं, इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर १६) मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० न भेजा जाय । जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही १६) भेज दें, अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी । अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा । कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर को नोट कर लें, नम्बर नीचे दिये जाते हैं—

६३२, १८६९, ४२३७, ५०८२, ५३५४, ५७२४, ६५५५, ७०२८, ८०८०, ८१३९, ८३८२, ८३९६, ८८८२, ८८५३, ८८५४, ९०३१७, ९३३०, ९३२१, ९३३८, ९५४३, ९५८०, ९७६०, १००२५, ११०५१, ११०५२, ११०६१, ११०६२, ११०६६, ११०६९, ११३६५, ११३६६, ११३६८, ११३६९, ११३७६, ११७६४, ११७६६, १२०५९, १२४३३, १२४४१, १२४४२, १२४४६, १२४४८, १२४५२, १२४५४, १२४६४, १२४८६, १२४८४, १२४९०, १२४९, १२७५८, १२७६६, १२७६७, १२७३८, १२७६९, १२७७०, १२७७१, १२७७२, १२७७४, १२७७५, १२७७६, १२७७७, १२७७८, १२७७९, १२७८० ।

—विनीत

व्यवस्थापक

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष–४५९९३ [illegible]
रजिस्टर्ड नं० एल० डब्लू/एन०पी०-७४
वर्ष० कार्तिक २६
कार्तिक शु० १५, रविवार
२० नवम्बर १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आ[illegible] प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

प्रो. कैलाशनाथ सिंह का तूफानी दौरा

(पृष्ठ १ का शेष)

इसके तदुपरान्त तपोभूमि के सम्पादक श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेमभिक्षु तथा प्रो० नन्दकुमार मुद्गल को रुग्ण होने के कारण निवास पर भेंट की। इसके बाद सभा प्रधान जी ने बाजना (मथुरा) के राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में भाग लिया। ज्ञातव्य है कि इस क्षेत्र मे ईसाइयों ने निर्माण (चोह ग्रीन इन्टीग्रेटेड रूरल प्रोजेक्ट फार हैल्थ एण्ड डवलपमेण्ट) नामक संस्था के माध्यम से भोली-भाली ग्रामीण जनता को अनेक प्रलोभन देकर अन्ततः धर्म परिवर्तन के लिए षड्यन्त्र रचा जा रहा है। ईसाई प्रचार निरोध की दृष्टि से यह सम्मेलन सफल रहा और इसमे भारी संख्या मे ग्रामीणों ने भाग लिया। मुख्य रूप से सभा प्रधान श्री सिंह के अलावा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले और बलराज मधोक के भाषण हुए। स्वामी ओमानन्द, श्री श्यामसुन्दर जी, और सुरेशचन्द्र आर्य [illegible] अपने विचार रक्खे। श्री चन्द्रशेखर ब्रह्मचारी और रामप्रसाद ने अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। अन्त मे वहा भारी संख्या मे उपस्थित ग्रामीण जनता ने ईसाइयों के कुत्सित प्रचार का डटकर मुकाबला करने का संकल्प लिया।

इसके उपरान्त सभा प्रधान जी ने गुरुकुल वृन्दावन पहुचकर [illegible] का निरीक्षण किया। गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता ने [illegible] का स्वागत किया। आचार्य वर्ग, ब्रह्मचारीगण तथा कर्मचारियो से उन की समस्याओ के बारे मे सभा प्रधान ने विचार-विमर्श किया। सभा प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री जी दौरे में साथ-साथ रहे।

• • •

मथुरा से अलीगढ होते हुए सभा प्रधानजी आर्य समाज मण्डीबांस मुरादाबाद पहुचे। आर्य समाज मण्डीबांस मे नई बिल्डिंग हेतु २५००/- श्री जगनाथ सिंघल ने प्रदान किया साथ ही आर्य समाज मण्डीबांस की ओरसे२०१)नकद प्राप्त हुए। सर्वश्री रामरूपलाल सर्राफ ने१००१/- वेद प्रकाश जी जैन १००१/-, और स्त्री आर्य समाज मण्डीबांस २०१/- का आश्वासन दिया। आर्य समाज मण्डीबांस की ओर से सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री राजेन्द्र गुप्त और मन्त्री श्री सुधीर कुमार ने स्वागत किया। श्री वीरेन्द्र गुप्त, श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य, श्री हरीश चन्द्र आर्य, श्री प्रकाशचन्द्र, कुमारी सुधा आर्य कुमार सभा के पदाधिकारी मानकचन्द्र आर्य ने विचार प्रकट करते हुए युवावर्ग को प्रोत्साहन देने, त्याग की भावना से काम करने, विवाद शमन करने, उपप्रतिनिधि सभाओं को भी अधिकार देने तथा धर्म पर आक्रमण रोकने आदि पर वक्ताओं ने विचार विमर्श रखा। आर्य समाज मण्डीबांस की ओर से सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। इसके बाद रात्रि में आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी की ओर से समाज के प्रधान श्री हरिवंश लाल कुमार, जिला मन्त्री महावीरसिंह मुमुक्षु और यशपाल आर्यबन्धु ने सभा प्रधान जी का स्वागत किया।

चिकित्सा हेतु सहायता

श्री सन्तराम जी बी० ए०

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री सन्तराम जी बी० ए० से प्रायः सभी परिचित हैं। इस समय आपकी आयु ९१ वर्ष की है तथा रोग शय्या पर हैं और देहली में चिकित्सा करवा रहे हैं।

हिन्दी के लेखकों में सबसे पुराने हैं और जब सरस्वती का सम्पादन स्व० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी करते थे उस समय हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हो रहे थे। हजारों से ऊपर लेख, सैकड़ो पुस्तक और पचास से अधिक समाज उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सामाजिक एकता, राष्ट्रोत्थान, चरित्र निर्माण और जाति-पांति के विरोध मे उनका प्रचुर साहित्य है। वह व्यक्ति नहीं संस्था है और प्रत्यक्ष तथा परोक्ष आर्य समाज के प्रति आस्थावान है और उसके सिद्धान्तों का अपनी लेखनी से प्रतिपादन करते रहे हैं।

सम्प्रति श्री सन्तराम जी रुग्णावस्था में है तथा देहली में चिकित्सा करवा रहे हैं। आर्थिक संकट है अतः उदार सज्जनों से अनुरोध है कि आर्थिक सहायता देकर श्री सन्तराम जी के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करे। देहली में धन इस पते पर भेजा जाय—श्री सन्तराम बी० ए० द्वारा श्रीमती मायी चड्ढा,—२१ नवजीवन विहार नई दिल्ली—१७।

आशा है कि हिन्दी जगत् तथा आर्य समाज से विद्वान् लेखक को समुचित सहयोग प्राप्त होगा।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक

सभा प्रधान जी ने अपने डेढ़ घण्टे ओजस्वी और सारगर्भित भाषण में १०० वर्षों मे आर्य समाज द्वारा मानव मात्र के कल्याण के लिये किए गए कार्यों का वि[illegible]त विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसके पश्चात रात्रि एक बजे गाड़ी द्[illegible]ार सभा प्रधान जी लखनऊ सभा कार्यालय पहुचे।

• • •

इसके पहले सभा प्रधान जी ने अगस्त और सितम्बर में मुरादाबाद, अमरोहा, बिजनौर, नजीबाबाद, कोटद्वार, हरिद्वार, देहरादून, रुड़की, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बड़ौत, मेरठ, बुलन्दशहर, खुरजा का दौरा किया। मुरादाबाद, बंग स्टेशन रोड में कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई थी। आर्य समाज बिजनौर में रात्रि प्रवचन तथा सवेरे यज्ञ में सभा प्रधान जी ने भाग लिया। कोटद्वार में सभा प्रधानजी ने वार्षिकोत्सव में दोपहर में भाषण किया, हरिद्वार में कर्मठ कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई। सहारनपुर में जिला सभा की मीटिंग, मुजफ्फरनगर आर्य कन्या इण्टर कालेज की ओर से स्वागत फिर इसके बाद आर्य समाज खुरजा में रात्रिकालीन प्रवचन के उपरान्त सभा प्रधान जी लखनऊ कार्यालय पहुँचे।

—सम्पादकाचार्य

प्रकाशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से [illegible] द्वारा मुद्रित

लखनऊ—आ० मार्गशीर्ष १२, मार्गशीर्ष कृ० १४, रविवार संवत् २०४० वि०, ४ दिसम्बर सन् १९८३ ई०

आर्यजगत् के शीर्षस्थ संन्यासी, प्रख्यात वैज्ञानिक

पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

का उत्तरप्रदेश की जनता को आशीर्वाद

सभा प्रधान प्रो. कैलाशनाथसिंह के नाम पत्र

प्रिय आदरणीय प्रो० कैलाशनाथ जी,

आपने और आपके सहयोगियों ने अजमेर निर्वाण शताब्दी समारोह में जो स्नेह और सहयोग दिया उसके लिए हम सब उपकृत हैं। आपकी उपस्थिति से समारोह की गौरव गरिमा बढ़ी। हमारा अभूतपूर्व समारोह आपके स्नेह और सौजन्य से पूर्णतः सफल रहा। देश देशान्तर की सभी आर्य जनता ने इसमें योगदान दिया। आप उत्तर प्रदेश की आर्य जनता को हम सबका आभार व्यक्त करदें। उत्तरप्रदेश के गौरव के अनुकूल ही इस प्रदेश का हमें सब कामों में सहयोग मिला।

मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद!

स्वामी सत्यप्रकाश

○ ○ ○

इसी आशय के पत्र महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के कार्यकर्ता प्रधान प्रो० शेरसिंह, अजमेर के स्वागताध्यक्ष श्री छोटूसिंह एडवोकेट तथा व्यवस्थापक प्रो० रत्नसिंह गाजियाबाद के भी पत्र सभा प्रधान को प्राप्त हुए हैं।

● ● ○

उत्तरप्रदेश के श्रद्धालु ऋषिभक्त लाखों आर्य नर-नारियों को सभा प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने अजमेर की ३से ६ नवम्बर ८३ तक सम्पन्न शताब्दी में सर्वाधिक धन और जनबल प्रदर्शित करने पर हार्दिक बधाई देते हुए अभूतपूर्व सफलता को आर्यसमाज रूपी भारतमाता के चमकते हुए मुकुट में एक और नया पुष्प जोड़ने की संज्ञा दी है। तथा सम्पूर्ण विश्व के आर्यों को आवाहन किया है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी को हम सब अपने निर्माण शताब्दी के रूप में ग्रहण कर आगे बढ़ें।

—संवाददाता

		सम्पादक—	वर्ष	अंक
वार्षिक	१५)	आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए०	८६	४६
छमाही	८)			
विदेश में	१ पौंड			
एक प्रति	४० पैसे			

प्रार्थना

सखाय आ निषीदत पुनानाय प्रगायत ।
शिशुं न: यज्ञै परिभूषत श्रिये ।
साम० उत्तरार्चिक ११५७-१ ॥

अर्थ :–हे मित्रो ! समीप बैठो तथा पवित्रात्मा विद्वान् पुरुष की प्रशंसा करो तथा अपने कल्याण के लिये उसे बच्चे के समान य ज्ञों से प्रसन्न करो ।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार, ४ सितम्बर १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८४

[सम्पादकीय]

जन-शिक्षा

प्रवाह मान जल की भांति मानव सन्तति की भी स्थिति होती है। एक स्थान का जल धीरे से आगे निकल जाता है वैसे एक सन्तति के बाद दूसरी सन्तति आती रहती है। अतः आवश्यकता रहती है जन-शिक्षा का कार्यक्रम भी निरन्तर चलता रहे। एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरों को पहुंचाने का प्रयास होता रहना आवश्यक है। नवीन पीढ़ी का बालक अपेक्षा करता है जैसे सामान्य शिक्षा को उसी प्रकार से उस उच्च अध्यात्मिक एवं सामाजिक शिक्षा भी मिलना आवश्यक है।

इस शताब्दि के प्रथम चार दशकों में प्रचुर रूप से आर्य साहित्य प्रकाशित हुआ और विद्वान् लेखकों ने आर्य दर्शन एवं सिद्धान्त पर उच्चकोटि के प्रामाणिक ग्रन्थों की रचना की साथ ही अधिक संख्या में प्रचार हेतु लघु साहित्य (ट्रैक्ट्स) भी प्रकाशित हुये, जिनके मूल्य अल्पहोता था अथवा निःशुल्क वितरित होते थे। इससे आर्य समाज का और उसके सिद्धान्तों का प्रचार सामान्य जन में होता था और जनता में ज्ञान तथा शिक्षा का उदय हुआ करता था–

प्रकाशित साहित्य के अतिरिक्त जन शिक्षा का दूसरा माध्यम है। सभा एवं अधिवेशन जिनमें विद्वान् उपदेशकों द्वारा सार गर्भित भाषण और भजनीकों द्वारा रोचक संगीत के द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार रहता था।

खेद है कि हमारे प्रचार के दोनों साधन इस समय शिथिल हो रहे हैं। इसका मूल कारण भी दो हैं। एक तो जीवन मूल्यवृद्धि जिससे प्रकाशन की प्रत्येक वस्तु दुर्लभ हो रही है। दूसरे आर्य समाज के अधिकारी पद और अधिकार के प्रलोभन में अधिक फंस रहे हैं। संघर्ष एवं कलह आज अस्सी प्रतिशत आर्य समाजों में व्याप्त है। अतः आर्यजनों की शक्ति आर्य समाज के ठोस कार्यों से विरत होकर आपसी संघर्ष में उलझ जाती है।

नवीन पीढ़ी को शिक्षित करना अनिवार्य है। अतः आर्यजनों को सजगता के साथ विचार करना चाहिए और जन शिक्षा के दोनों साधन साहित्य एवं भाषण का समुचित प्रबन्ध होना चाहिये। भारत एक विस्तृत देश है। अतः इसका प्रचार भी व्यापक होना है। नगर-नगर ग्राम-ग्राम आर्य समाज के कार्य कलापों का प्रचार हो तथा प्रत्येक आर्य समाजें शिथिलता को त्याग कर तथा आपसी कलह के स्तर से ऊपर उठकर प्रचार अवश्य करावें और वार्षिक अधिवेशनों का आयोजन करें। जब सम्भव हो जनता के बीच में जब तब भाषण प्रबन्ध करें। पुरानी पीढ़ी में आर्यसमाज के प्रति अभिरुचि है। मुझे याद भरा रखा है कि द्वार पर कोई दस्तक दें और उनकी रिक्त झोली को भर दिया जाय। आर्य समाज के प्रचार के लिए जनता धन देने में पीछे नहीं है। कोई योग्य पात्र धन लाने वाला हो।

आर्य समाज के साहित्य का प्रकाशन करने वाले अनुभव से संस्थान एवं सज्जन हैं। हम सभी भांति जानते हैं कि आज के मूल्य वृद्धि के युग में कागज और प्रकाशकों में अधिक धन अपेक्षित है। परन्तु अभी जनता धार्मिक साहित्य को क्रय करने हेतु अधिक धन नहीं व्यय करती है। अत हमें मुद्रण प्रकाशन को उचित लागत पर ही निर्धारित करना चाहिये। साहित्य का प्रसार हमारा मुख्य उद्देश्य है। लाभ प्राप्त कम। स्वामी दयानन्द लिखित पुस्तकों अन्य प्रचार साहित्य, गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के उपयोगी ट्रैक्ट लागत मात्र मूल्य पर प्रकाशित हों। प्रकाशक को तो सेवा-भावना और जनता आचरण के मुख्य कार्य की ओर अधिक देना चाहिए तथा सभी आर्यजनों के द्वार से धन एकत्रित करना अपेक्षित है।

गीता प्रेस गोरखपुर ने अपने यहां से प्रकाशित साहित्य को अल्प मूल्य पर वितरित किया। प्रेस ने भी उन्नति की और जनता को सुन्दर साहित्य प्राप्त हुआ। कई वर्ष पूर्व मुझे ज्ञात हुआ कि गीता प्रेस के प्रबन्धक देश के धनी उद्योगपतियों से सम्पर्क करके सहायता रूप में प्रचुर धन प्राप्त करने में सफल होते थे और साहित्य की बिक्री संख्या भी अधिक होती है। उनके मालिक धन कल्याण में विज्ञापन नहीं लिए जाते थे फिर भी उन समय का आभास की ओर रहता था।

आर्य समाज में प्रतिभा और गुणवान व्यक्तियों की कमी नहीं है। गम्भीरता पूर्वक विचार करके आर्य साहित्य के सस्ते प्रकाशन का प्रबन्ध किया जाय और इस समय की वर्तमान पीढ़ी जो आर्य साहित्य से दूर हो रही है। निकट का काम ; जन-शिक्षा नितान्त आवश्यक है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी का कानपुर में भाषण

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाशजी का कानपुर में २८ सितम्बर से ४ सितम्बर १९८३ तक आर्य समाज स्वरूप नगर के तत्वावधान में बाल निकुंज में सायं ७–३० बजे से भाषण होंगे।

—जगमोहन लाल—प्रधान
आर्य समाज स्वरूप नगर
कानपुर

—आर्य समाज मोहम्मदाबाद (फर्रुखाबाद) का वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ सानन्द सम्पन्न हो गया। श्री प० जय प्रकाश जी इमाम भी पधारे थे।

—सुरेश चन्द्र शास्त्री

—श्री यज्ञ नारायण जी हांसीपुर (गोरखपुर) ने दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली है, अब आप यज्ञ देव के नाम से पुकारे जायेंगे। —सूर्यदेव मंत्री

निर्वाचन—

आर्य समाज हरदोई
प्रधान—श्री डा० सूर्यदेव जी
मन्त्री—श्री अनूप कुमार
कोषाध्यक्ष—श्री ब्रह्म स्वरूप [पाण्डेय

आर्यसमाज बड़ी कांमराज (मेरठ)
प्रधान—श्री मास्टर वेदपाल सिंह
मन्त्री—श्री धर्मपाल सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री जयपाल सिंह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में—

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

विषय पर डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का भाषण

गत एक शताब्दी में आर्यसमाज ने जो प्रगति की है, वह वस्तुतः असाधारण है। महर्षि के देहावसान के समय सन् १८८३ में आर्य समाजों की कुल संख्या ९० से भी कम थी। आज वह पांच हजार से भी अधिक है। भारत का कोई भी राज्य ऐसा नहीं है, जहां आर्यसमाज न हो। विदेशों में भी सात सौ के लगभग आर्य समाज विद्यमान हैं। सन् १८८३ में एक भी ऐसी शिक्षण-संस्था नहीं थी, आर्यसमाज द्वारा जिसका संचालन किया जाता हो। आज दो हजार से भी अधिक शिक्षणालय आर्यसमाज के तत्वावधान में स्थापित हैं। महर्षि के देहावसान के पश्चात् आर्यसमाज में एक भी ऐसा विद्वान् नहीं था जो वेदों का भाष्य कर सके। गत शताब्दी में कितने ही ऐसे आर्य विद्वान् हुए, जो न केवल वेद वेदांगों के प्रकाण्ड पण्डित ही थे, अपितु जिन्होंने वेदों के भाष्य व विभिन्न लोकभाषाओं में उनके अनुवाद किये आर्यसमाज के कारण संस्कृत भाषा तथा वेद शास्त्रों का पठन-पाठन केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित नहीं रह गया, सभी जातियों—यहां तक कि अछूत समझे जाने वाले लोगों में भी वेद-वेदांगों के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा प्रारम्भ हुई। और आज ब्राह्मणेतर जातियों के भी सैकड़ों ऐसे नर-नारी विद्यमान हैं, जिन्हें वेद शास्त्रों का समुचित ज्ञान है। स्त्री शिक्षा के लिये आर्यसमाज ने अनुपम कार्य किया है। इस द्वारा सैकड़ों पुत्री पाठशालायें, बालिका विद्यालय, महिला महाविद्यालय और कन्या गुरुकुल स्थापित हैं। इनमें शिक्षा प्राप्त कर हजारों महिलायें संस्कृत तथा वेद शास्त्रों में पाण्डित्य प्राप्त कर चुकी हैं। बाल-विवाह, परदा, दहेजप्रथा, मृतकभोज आदि सामाजिक बुराइयों के निवारण, पाखण्ड के खण्डन, अछूतोद्धार, विधर्मियों के वैदिक धर्म में प्रत्यावर्तन और हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये आर्यसमाज ने जो कार्य किया है, सभी उसकी सराहना करते हैं। आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र किसी एक जाति या प्रदेश तक ही सीमित नहीं है। धनी-निर्धन छूत-अछूत, किसान-मजदूर—जनता के सभी वर्गों के लोग उसके सदस्य हैं। वह एक सशक्त जन-आन्दोलन है, जो अब सार्वभौम रूप प्राप्त करने लग गया है। गत शताब्दी में भारत का जो पुनर्जागरण हुआ है, अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों को दूर कर जो वह उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हुआ है, स्वराज्य, स्वदेशी, देशप्रेम और राष्ट्रीयता की जो भावना इस देश में उत्पन्न हुई है, और आज जो यह देश स्वतन्त्र है, उसका प्रधान श्रेय आर्यसमाज को ही दिया जाना चाहिये। आर्यसमाज का संगठन भी अनुपम है। देश-विदेश के हजारों समाज एक केन्द्रीय संगठन के अङ्ग हैं। लोकतन्त्र पर आधारित इतना सशक्त संगठन किसी अन्य समाज या संस्था का नहीं है।

आर्यसमाज के इस कार्यकलाप एवं प्रगति पर सचमुच संतोष व गर्व अनुभव किया जा सकता है। पर अभी बहुत कुछ करना शेष है। संसार के उपकार और मानवमात्र के हित-कल्याण के जिस महान् उद्देश्य को सम्मुख रखकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी, उसकी पूर्ति के लिए अभी बहुत कार्य करना होगा। अगली एक शताब्दी में हमें क्या कुछ करना है, और हमारा कार्यक्रम क्या होना चाहिये, इस विषय पर मैं भी कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूं—

१—वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, यह तथ्य आज जनता में भलीभांति प्रचारित हो चुका है। अनेक लोकभाषाओं में वेदों के भाष्य व अनुवाद हो जाने के कारण सर्वसाधारण लोगों के लिए भी बहुसंख्यक विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों में वेदों के सम्बन्ध में अब तक भी वही धारणाएं सुदृढ़ रूप से विद्यमान हैं, जिनका प्रतिपादन सायण सदृश मध्यकालीन विद्वानों के वेदभाष्यों के आधार पर पश्चात्य विद्वानों ने किया था। वैदिक शब्दों को रूढ़ि अर्थ में लेना, वैदिक ऋषियों को वेद मन्त्रों का कर्ता मानना, और इन्द्र, मित्र, वरुण आदि को ईश्वर के विभिन्न नाम न मानकर विविध देवता मानना—ये तथा कितनी ही अन्य ऐसी बातें हैं, जो महर्षि के मन्तव्यों के विरुद्ध हैं, पर जिन्हें बहु संख्यक आधुनिक विद्वान् अब तक भी सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। भारत के विश्वविद्यालयों की संस्कृत की पाठविधि में वेद-वेदांगों का जो कार्य नियत है, जो पाठ्य पुस्तकें पढ़ायी जाती हैं, उनमें यही मन्तव्य प्रतिपादित हैं, और उनका अध्यापन करने वाले प्राध्यापकों में भी अच्छी बड़ी संख्या आर्य विद्वानों की है। हमें इस दशा में परिवर्तन लाना होगा। हमें वेद विषयक इस प्रकार के उच्चकोटि के ग्रन्थ तैयार करने होंगे, जो प्राचीन भारतीय (इन्डोलोजी) के अनुशीलन व शोध की आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से लिखे गये हों, और जिन्हें पढ़कर देश विदेश के विद्वान् व बुद्धिजीवी महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद विषयक मन्तव्यों की सचाई व युक्ति-युक्तता को स्वीकार करने के लिए विवश हो जायें। तब हमारे विश्वविद्यालयों में भी इन ग्रन्थों को स्थान प्राप्त होगा। और देश के बुद्धिजीवियों की भी ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रति आस्था उत्पन्न हो सकेगी। आर्यसमाज के जो अनेक विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा की शिक्षण-संस्थाएं, शोधपीठ व संस्थान विद्यमान हैं, उन्हें इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रेरित करना होगा, और यदि आवश्यकता समझी जाए, तो इसी प्रयोजन से नये संस्थानों की भी स्थापना करनी होगी। आज सिख पंथ के इतिहास व मन्तव्यों तथा श्री गुरुग्रन्थ साहब के अनुशीलन के लिये संस्थान विद्यमान हैं, और सरकार से भी उन्हें अनुदान प्राप्त होता है। यही बात अनेक अन्य सम्प्रदायों व धर्मों के सम्बन्ध में भी है। इसी प्रकार के संस्थान हमें वेदों तथा षड्दर्शनों के विषय में महर्षि के जो मन्तव्य हैं, उनके प्रतिपादन व समर्थन के लिये स्थापित करने होंगे।

२—प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जो मन्तव्य की पुष्टि में पण्डित भगवद्दत्त एवं आचार्य रामदेव सदृश विद्वानों ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया था, उसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अन्य देशों का तो प्रश्न ही क्या, भारत के स्कूलों और कालिजों में भी भारत का जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह महर्षि के मन्तव्यों के विरुद्ध है। उनमें ऋग्वेद का काल २५०० ईस्वी पूर्व, महाभारत का काल ८०० ईस्वी पूर्व और राजा विक्रमादित्य का समय पांचवीं सदी ईस्वी में लिखा होता है। प्राचीन समय में भूमण्डल के प्रायः सभी प्रदेशों में आर्य संस्कृति का प्रचार था, और कितने ही देशों में आर्यों के राज्य विद्यमान थे, इस तथ्य का उनमें उल्लेख ही नहीं होता। हमें यह यत्न करना होगा कि प्राचीन भारतीय इतिहास में शोधकर वैज्ञानिक विधि से ऐसे इतिहास ग्रन्थ लिखे जाएं जिनसे महर्षि के मन्तव्यों की पुष्टि हो और जिन द्वारा उन असत्य धारणाओं को दूर किया जा सके, जो प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में शिक्षित लोगों में प्रचलित हैं।

(क्रमशः)

आर्यसमाज और हिन्दी

[श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', दिलशाद कालोनी, शाहदरा, दिल्ली]

आर्यसमाज हमारे देश की ऐसी क्रान्तिकारी संस्था है, जिसने बहुत थोड़े समय में इतना बड़ा कार्य कर दिखाया, जो सदियों तक लगे रहने पर भी पूरा न हो पाता। यदि हम यह कहें तो कदाचित् अतिशयोक्ति न होगी कि भारत के स्वतन्त्र्य-संघर्ष का मार्ग निर्देश करके उस दिशा में आगे बढ़ने का साहस भी आर्यसमाज ने ही देश के नागरिकों में उत्पन्न किया था। इसके स्वनामधन्य संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने हाथ में उन्हीं कार्यों को लिया था जिन्हें बाद में भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) और उसके अनन्य सूत्रधार महात्मा गांधी ने अपनाया था। महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी सौभाग्यवश दोनों ही अहिन्दी भाषी थे। दोनों की मातृभाषा गुजराती थी। महर्षि दयानन्द ने अपनी घनघोर तपस्या तथा अनन्य कर्तव्य निष्ठा से जहां देश को सांस्कृतिक दृष्टि से सुपुष्ट और समृद्ध किया वहां महात्मा गांधी ने राजनीतिक दृष्टि से उसे आगे बढ़ाया। हमारी ऐसी मान्यता है कि महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" लिखकर जहां देश में 'स्वराज्य' का पावन मन्त्र प्रचलित किया था—वहां शिक्षा, धर्म, संस्कृति तथा सदाचार आदि की दृष्टि से उसे समृद्ध करने की दिशा में भी परिश्रम किया था। अपनी इस पावन भावना की सम्पूर्ति के निमित्त ही उन्होंने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

जिन दिनों हमारे देश में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का अवतरण हुआ था उन दिनों जहां सन् १८५७ की क्रान्ति के उपरान्त मुगल साम्राज्य सर्वथा ध्वस्त हो चुका था और अंग्रेजी शासन की जड़ें मजबूती से जम गई थीं, साथ ही महारानी विक्टोरिया की घोषणा से देश में विचार स्वातन्त्र्य की भावना उद्भूत हो गई थी। देश के कोने-कोने में ईसाइयों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए केन्द्र स्थापित कर लिये थे। उधर बंगाल में राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन निरन्तर 'हिन्दी' हिन्दू हिन्दुस्तान की आवाज ऊंची कर रहे थे। दुर्भाग्यवश उक्त दोनों महानुभाव, क्योंकि संस्कृत के पण्डित न थे। अतः उन्होंने अपने-अपने धार्मिक आन्दोलनों की नींव पाश्चात्य जीवन प्रणाली के आधार पर डाली थी। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द ने आर्य भावनामूलक संस्कृति का प्रचार करने की दिशा में देश का उल्लेखनीय नेतृत्व किया था। उक्त दोनों महानुभावों का झुकाव जहां ईसाइयत और पाश्चात्य जीवन पद्धति की ओर था वहां महर्षि दयानन्द भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठापना की ओर अग्रसर थे। यदि हम कहें तो कदाचित् अप्रासंगिक न होगा कि केशवचन्द्र सेन की पश्चिमोन्मुख विचारधारा को पूर्वाभिमुख करने का श्रेय भी महर्षि दयानन्द को ही है। महर्षि से उनकी भेंट सन् १८७३ में उस समय हुई थी जब वे कलकत्ता गए हुए थे। श्री सेन से सम्पर्क होने से पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कृत में ही भाषण किया करते थे और शरीर पर कोई वस्त्र धारण न करके 'कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः' के अनुसार केवल कौपीन ही पहनते थे। श्री सेन प्रायः अपने विचार प्रकट किया करते थे। वे स्वामी जी की विचारधारा को जानना समझना चाहते थे, किन्तु संस्कृत से अपरिचित होने के कारण वे उससे वंचित थे। स्वामी जी के अंग्रेजी ज्ञान से विहीन होने के प्रति उन्होंने जो भाव प्रकट किये थे वे इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उन्होंने कहा था—

'शोक है कि वेदों का अद्वितीय विद्वान् अंग्रेजी नहीं जानता, अन्यथा इंगलैण्ड जाते समय वह मेरा इच्छानुकूल साथी होता।'

इस पर स्वामी जी ने जो भाव प्रकट किये थे उन्होंने भी श्री सेन को हतप्रभ कर दिया था। स्वामी ने कहा था—

'शोक है कि ब्रह्मसमाज का नेता संस्कृत नहीं जानता और लोगों को उस भाषा में उपदेश देता है जिसे वे नहीं समझते।'

हमें यहां यह मानने में तनिक भी संकोच नहीं है कि केशवचन्द्र सेन से कलकत्ता में हुआ यह सम्पर्क जहां स्वामी दयानन्द के लिये अभूतपूर्व प्रेरणादायक सिद्ध हुआ वहां उससे देश की भावी उन्नति द्वार भी उद्घाटित हो गया। श्री केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा पर स्वामी जी ने जहां हिन्दी में व्याख्यान देना स्वीकार किया वहां उनके आग्रह पर उन्होंने वस्त्र धारण करना भी प्रारम्भ कर दिया था। इन दोनों महापुरुषों का यह स्नेह सम्पर्क देश के लिए यहां तक लाभकारी सिद्ध हुआ कि उसके कारण स्वामी जी ने अपने प्रख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना संस्कृत में न करके हिन्दी में की। यहां यह उल्लेखनीय तथ्य है कि अपनी कलकत्ता-यात्रा से पूर्व स्वामी जी ने इस ग्रन्थ का लेखन संस्कृत में प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रकार हम यह निःसंकोच कह सकते हैं कि श्री केशवचन्द्र सेन देश के ऐसे पहले राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्व को हार्दिकता से समझ कर स्वामी जी को हिन्दी लेखन और भाषण के प्रति उन्मुख किया था। श्री सेन की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति कितनी निष्ठा थी उसका परिचय हमारे पाठक उनके 'सुलभ समाचार' नामक बंगला पत्र में प्रकाशित इन शब्दों से भली भांति प्राप्त कर सकते हैं—"यदि भारतवर्ष एकता न हइले भारतवर्ष एकता ना हय, तबे ताहार उपाय की? समस्त भारतवर्षे एक भाषा व्यवहार कराइ, उपाय एखन। जो भूति भाषा भारतवर्षे प्रचलित आछे ताहार मध्ये हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित एइ। हिन्दी भाषा के यदि भारतवर्षेर एकमात्र भाषा करा जाय, तबे अनायासे शीघ्र सम्पन्न हइते पारे।' अर्थात् उनकी यह दृढ़ मान्यता थी कि इस समय भारतवर्ष में जितनी भाषाएं प्रचलित हैं उनमें हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। इस हिन्दी भाषा को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाय तो यह कार्य अनायास ही शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। एक भाषा के बिना एकता नहीं हो सकती।

श्री सेन के इस सम्पर्क से प्रेरित होकर स्वामी जी ने जहां अपने भाषणों द्वारा हिन्दी का प्रशंसनीय प्रचार किया वहां उन्होंने अपने ग्रन्थ भी हिन्दी में लिखने प्रारम्भ कर दिये। जिन दिनों स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी उन दिनों देश में प्रायः उर्दू का ही बोलबाला था। स्वामी जी ने पुरानी लडुखड़ी हिन्दी को न अपनाकर उसे सर्वथा नई विचार-भूमि प्रदान की थी वे भाषा को साहित्यिक दृष्टि से अलंकृत नहीं करते थे, बल्कि एक समाज-सुधारक का दृष्टिकोण ही आपकी भाषा में परिलक्षित होता है। स्वामी जी के प्रयास से जहां हिन्दी को एक सर्वथा नया रूप मिला वहां आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी उस का देश में अधिकाधिक प्रचार हुआ।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द की महत्ता

(श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान—नई दिल्ली)

३० अक्टूबर १८८३ ई० को सायंकाल ५ बजे अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्राणों का परित्याग किया था। वह दिन दीपावली का पुण्य पर्व था। उसी दिन वह प्रचण्ड ज्योति हमारे भौतिक नेत्रों से ओझल हुई थी, जिसका प्रकाश जन-मानस के हृदयों पर युग युगान्तर तक व्याप्त रहेगा। वह दिन शीघ्र ही आएगा जब महर्षि की भावना और उनके उद्देश्यों का कार्य कलाप का ठीक ठीक मूल्यांकन होगा और भारत के घर-घर में ही नहीं विश्व के कोने-कोने में उनके नाम की पूजा होगी।

ईश्वरार्पण

महर्षि ने प्राणों का परित्याग करते समय कहा था प्रभो! तेरी इच्छा पूर्ण हो। इस अन्तिम कामना में महर्षि का ईश्वर प्रेम मूर्त रूप धारण करके हमारे सामने आ जाता है।

ईश्वर की खोज के लिए ही उन्होंने घर का परित्याग किया था। उसी की सेवा में उन्होंने अपने को मिटा दिया। वस्तुतः वे ईश्वर के आज्ञा-पालक पुत्र थे। वे सच्ची आस्तिकता का प्रचार करने के लिये आविर्भूत हुए थे। मराठा ऐम्पायर की हिस्ट्री (मराठा साम्राज्य का इतिहास) के प्रणेता जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे के शब्दों में उनमें धार्मिक उत्साह भरा हुआ था। उनमें धीरोचित कर्मण्यता की भावना विद्यमान थी जिसकी उत्पत्ति इस विश्वास से हुई थी कि कोई उच्च-सत्ता मेरे कार्य का संरक्षण कर रही है। अपने को ईश्वरार्पण रखने से वे यह कहने में समर्थ हुए प्रतीत होते थे कि जीवितावस्था में प्रभु मेरे साथ है। मृतावस्था में मैं प्रभु के साथ हूंगा।'

अगाध ज्ञान, उग्र तप, अनुपम सदाचरण जन हितैषिता, निष्काम जन-सेवा से ही उनमें अपनी इच्छा को परमात्मा की इच्छा के अर्पण रखने की योग्यता आई थी जो आध्यात्मिकता आत्मगौरव की चरम सीमा और अनूठी व्यवहारिकता होती है। अपनी इच्छा को परमात्मा की इच्छा में विलीन कर देने से उन्होंने बीहड़ वन को नन्दन कानन में परिवर्तित कर दिया था। उन्हें परमात्मा की सहायता प्राप्त थी जिसके बल पर उनका भार हल्का और कर्तव्यानुष्ठान आनन्द का स्रोत बना।

ध्येय और कार्य - कलाप

उनका लक्ष्य था कि मानव-मानव बनकर परिवार और समाज का श्रेष्ठ अङ्ग बने उनकी दिव्य दृष्टि ने देखा देशवासी धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दासता में बुरी तरह जकड़े हुए हैं। उनकी जीवन की भावना और प्रयास उन्हें पतन की ओर ले जा रहे हैं। उन्होंने लौकिक और परलौकिक उन्नति को धर्म बताकर और उनके विभिन्न साधनों को इंगित करके देश वासियों के हृदय से मायावाद, प्रारब्ध-वाद, नैष्कर्म्यवाद, शून्यवाद जगत मिथ्यावाद के अंध-विश्वास को हटाकर उद्योगवाद का पाठ पढ़ाया। मूर्ति पूजा, अद्वैतवाद, अवतार-वाद पापों की क्षमा, योग विहीन भक्ति, काल्पनिक स्वर्ग, नरक, झूठे तीर्थ, फलित ज्योतिष, यज्ञों में पशु बलि, नरबलि आदि-आदि का प्रबल खण्डन करके वेदानुकूल शुभ ज्ञान और शुभ कर्म के द्वारा निरा-कार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान……प्रभु के साक्षात्कार (मोक्ष) का मार्ग सुझाया। लौकिक उन्नति पारलौकिक उन्नति में बाधक न हो इसके लिए त्यागवाद की अमोघ प्रणाली पर बल देते हुए वर्णाश्रम व्यवस्था का पुनरुद्धार किया। झूठे और सच्चे ब्रह्म-चारियों, साधुओं, गुरुओं, आचार्यों और भगवानों की पहचान बताकर धर्म के नाम पर होने वाले अधर्म को रोकने एवं ठगी की दूकानों को हटवाने की प्रक्रिया आरम्भ कराई।

वैदिक वर्ण व्यवस्था का उज्ज्वल स्वरूप प्रस्तुत करके जन्मना जाँत पाँत की विविध श्रृंखलाओं के साथ नींव हिलाई। जन्म और धन-सम्पदा की तुलना में गुणों और योग्यता को सामाजिक सम्मान का माप दण्ड नियत किया। इससे जन्माभिमान और धनाभिमान दूर होकर अयोग्यों को योग्य बनने और गिरे हुओं को ऊंचा उठने की प्रेरणा प्राप्त हुई। ऊपर उनमें आशा का संचार हुआ। स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया। स्त्री जाति की प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना की। शिक्षा और विवाह का आदर्श ऊंचा किया। विवाह और गृहस्थाश्रम की उच्चता और पवित्रता दर्शाई, शिक्षा की आधार-शिला ब्रह्मचर्य पर रखकर गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को प्रोत्साहित किया। परिवार को समाज की इकाई ठहराकर और उसे श्रेष्ठ बनाकर समाज को स्वस्थ एवं बल शाली अच्छे नागरिक देना आवश्यक ठहराया। विवाह की आयु योग्यता और क्षमता की समानता और उचित अनुपात निर्धारित कर धर्म पूर्वक अर्थ और काम का उपयोग करते हुए गृहस्थ तथा समाज को सुखधाम बनाने का उपाय बताया। कन्या के विवाह की आयु १६ और लड़के की २४ वर्ष नियत की गई। इस प्रकार बाल विवाहों, अनमेल विवाहों, वृद्ध विवाहों को समाज से तिरस्कृत कराया। जो भाई बहिन अपनी या समाज की भूलों के कारण हिन्दू समाज से पृथक होकर विधर्मी बन गए थे अथवा जो कोई हिन्दू समाज में आने के लिये उत्सुक थे उनके लिए हिन्दू समाज का द्वार खुलवाया।

विधवाओं, अनाथों और पतितों की सुधि ली। विदेशी शासन को किसी भी देश के लिये अभिशाप सिद्ध करके, भारतीय राजनीतिक परतन्त्रता को धार्मिक एवं सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक बुराइयों का अभिशाप बताकर स्वराज्य का महत्व बताया और स्वतन्त्रता प्राप्ति का राज मार्ग बताया। साथ ही समाज सुधार का महत्व प्रति-पादित किया। विविध मतों का खण्डन करके, सामाजिक त्रुटियों पर प्रबल प्रहार करके राजनीतिक जुए को उतार फेंकने की प्रेरणा देकर हिन्दू जाति को ही नहीं अपितु विश्व के प्राणियों को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया और इसका उपाय एकभाषा, एक धर्म, एक जैसे स्वस्थ विचार धारा और चक्रवर्ती राज्य बताकर कल्याणकारी मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के युग का सूत्रपात किया और वे स्वयं युग पुरुष बन गए।

देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्ति और उसके पश्चात् की स्थिति

राजनीतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् भारत अपने इतिहास में एक विशिष्ट अध्याय जोड़ने में समर्थ हुआ परन्तु जनता के चारि-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दयानन्द सन्देश

[श्री डा० मुंशीराम जी शर्मा]

ऋषि दयानन्द ने हमें था उपदेश दिया,
पंथ-मत नहीं, एक वेद धर्म मूल है ।
वेद से ही पावन प्रवृत्ति का विकास हुआ,
वर्णाश्रम मार्ग वेद के ही अनुकूल है ।

शास्त्रकार वेद को ही परम प्रमाण मानें,
उनके भी ज्योतिज्ञान में न कहीं भूल है ।
गीता में ध्वनित ओ३म् बौद्धों में वणित ओ३म्,
शैव साधनों में ओ३म् नाम ही त्रिशूल है ।१।

आत्मा ओ३म् अक्षर से ऊपर बताई गई,
अक्षर भी मात्राओं से ऊपर विख्यात है ।
मात्राओं में पाद, मात्रा पादों में समाहित हैं,
अ+उ+म का अंत ही निखिल विश्व-व्याप्त है ।

व्यक्ति को, समष्टि को बनाते हैं उसी के अंश,
मात्रा न्यूनाधिक गुण-वृत्तियों को प्राप्त हैं ।
सत्व की अधिकता ही ऊपर उठाती, तम-
रज से पतन प्राणियों में प्रतिभात है ।२।

भूत, वर्तमान या भविष्य में तो बोलता ही,
तीनों कालों से अतीत का जो अ३म् नाम है ।
ओ३म् ही तुरीय या चतुर्थ मात्रा-हीन,
व्यवहार से रहित शिव, शान्त या अकाम है ।

इधर प्रपञ्च तो अद्वैत है उधर, गुण-
वृत्तियों से ऊपर उसी का ऊर्ध्व धाम है ।
योनि है सभी की वही, भूतों का प्रभव वहीं,
अप्यय वही है, द्वैत-अंत में ललाम है ।३।

ऋषि दयानन्द के सन्देश में यही है ज्ञान,
मुनियों महर्षियों के अनुरूप अनुमत ।
ब्रह्मा से लै जैमिनि पर्यन्त इसे मानते हैं,
शास्त्र-स्मृतियों से अनुमोदित सतत सत ।

मान्यता इसी की मानवों को श्रेय-प्रेय देती,
श्री-समृद्धि-स्वस्ति शान्ति लोक-परलोक-गत ।
ज्योति है ज्वलित, इसे निहित-मध्य,
आर्य ही करेंगे जो जगत हित में निरत ।४।

आर्यो चलो वेद ओर, पोपलीला पंथ छोड़,
आर्य पुत्र होकर न दास भाव में बहो ।
कब से रहे हो झेल परतन्त्रता के क्लेश,
अब तो स्व-तन्त्र के शील सुख में रहो ।

मल मल धोओ मल म्लेच्छता मलीनता के,
तन, मन शुद्ध कर, ओ३म् मुख से कहो ।
वेद की दया को याद कर बढ़ो जीवन में,
जिससे प्रदीप्त जीवनाम ओज तेज हो ।५।

मानवाकृतियां

चीख रहीं मानव आकृतियां—
रिक्त हृदय घट को लेकर के,
पनघट पर विस्मय उपस्थित ।
सुर सीमाओं में बसते हैं,
दानव—दल चहुंओर यहां अशोभित ।
सेवा, स्नेह, सरस भावों की,
गुंजरित नहीं यहां रागिनियां ।
अति-चालन मर्यादा पर ही,
रक्षक के साये में भक्षक ।
जिनसे उपचारों की आशा,
वही मृदुल से, कितने तक्षक ।
मन्द जागरण के शब्दोंमय
किन्तु जड़ित, तन्द्रामय सुखियां ।
बन्दीगृह में न्याय विकल बन,
निस्वर प्रतिपल चीख रहा है ।
सक्षम है जो, इंगित से ही,
असहायों सा चीख रहा है ।
धूमिल ही होती जाती हैं,
दिवा स्वप्नमय वे स्मृतियां ।।

—डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी, श्यामगंज, बरेली

वैदिक नवालोक का दिव्य दीप—
दयानन्द

शिव शंकर तुम बने काल के विषधर प्याले पीकर,
हो गये अमर ऋषिराज सुधा-सोपान धरा को देकर ।
महाव्रती सन्यासी यतिवर, ब्रह्मचर्य व्रतधारी,
नैष्ठिक, निर्भय, सिंह पुरुष तुम, योद्धा परमोदारी ।
सत्य-ज्ञान के हेतु धरा पर तुम अवतीर्ण हुए थे,
गो-नारी-विधवा-अनाथ के हेतु तुम्हीं जन्मे थे ।
अश्रुपात कर उठे नयन दुखदायी देख दशा को ।
दलितों के उद्धार हेतु तुम करुणा अमिट भरे थे ।
वेद ज्ञान की दिव्य ज्योति जो जगती पर फैलाई,
ओ३म् ध्वजा ले सकल विश्व को सच्ची राह दिखाई ।
कष्ट कठोर सहे ऋषि तुमने, जग को जीवन दान दिया है,
पीकर कालकूट विष प्याले, आहतों को मान दिया है ।
दयानन्द, भावना प्रपूरित हृदय विशाल तुम्हारा,
पावन प्रकाश के परम पुंज ! सुरलोकित सु-'यश' तुम्हारा ।
शुभ स्वनाम स्वधन्य दयानन्द तुम युग के स्रष्टा थे,
पाखण्डों से पीड़ित जग के सुखद मार्गद्रष्टा थे ।
अज्ञान-अविद्या-अन्धकार में, ज्ञान सूर्य बनकर तुम प्रकटे,
स्वतन्त्रता-प्रहरी स्वराज्य के, मन्त्र-प्रदाता तुम प्रकटे ।
दीपावलि के दिव्य दीप तुम ही थे चले जलाकर,
वसुधा को अभिसिंचित करके वैदिक ज्ञान-सुधाकर ।
ऋषिवर तुमको शत-शत प्रणाम, भावों भरे सुमन से,
भरत-भूमि के भव्य भाल पर भानु भास्वरित जैसे ।।

—यशोलता गर्ग चिरोर, मैनपुरी

स्वामी दयानन्द और इस्लाम

प्रस्तुत लेख में मैं इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, वाराणसी से प्रकाशित श्री राजेन्द्र नारायण लालकृत 'इस्लाम' नामक पुस्तक में स्वामी दयानन्द पर किये गये आक्षेप का उत्तर दे रहा हूं।

इस पुस्तक की सर्वप्रथम विशेषता यह है कि इसमें इस्लाम का समर्थन एक हिन्दू विद्वान् ने किया है। न जाने किस कारण से उसे ऐसा करने की प्रेरणा मिली। अस्तु,

हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम का विवेचन करते हुए लेखक को प्रत्येक अमुस्लिम धर्म में त्रुटियाँ और दोष मिले, परन्तु इस्लाम में केवल गुण ही गुण दिखाई दिये। इसमें उसे एक भी दोष नहीं मिला। इसी एक बात से प्रकट होता है कि लेखक का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण है।

यद्यपि यह पुस्तक प्रकट रूप में एक हिन्दू द्वारा लिखी गई है, तथापि इसके बीच-बीच छोटे अक्षरों में कुछ टिप्पणी आदि भी छपी हैं जो संभवतः प्रकाशक श्री अबू मुहम्मद इमामुद्दीन की हैं, जिनमें लेखक के विचारों को सुस्पष्ट किया गया है और कहीं-कहीं लेखक से अधिक तीव्र शब्दों में अमुस्लिम धर्मों की आलोचना भी की गई है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—'स्वामी दयानन्द जी ने महान् कुरान की भी समीक्षा की है जो उनकी दुर्वृत्ति का परिचायक है। उन्हे कुरान की समीक्षा का अधिकार ही नहीं था क्योंकि उन्होंने न कुरान को समझने का प्रयास किया और न कुरान के विरुद्ध भ्रष्ट प्रचार करना था। अतः उन्होंने कुरान पर मिथ्या आक्षेप किए हैं तथा कपटाचारपूर्ण आरोप लगाए हैं। उन्होंने कुरान की आयतें पेश करने में बड़ा कपटाचार किया। खेद है स्वामी जी के अनुयायी न केवल अब तक उसी समीक्षा को प्रकाशित करते जा रहे हैं जो स्वामी जी की मर्यादा के विरुद्ध है, किन्तु स्वयं भी उसी मार्ग पर चल रहे हैं।' श्री अबू मुहम्मद साहब या जिस किसी ने ये पंक्तियां लिखी हैं, उससे मैं यह कहना चाहता हूं कि—

श्रीमन्! दूसरे धर्मों पर इस्लाम का सिक्का जमाने के जोश में आप यह भूल गए कि—

१—स्वामी दयानन्द का आर्य समाज जो मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेव आराधना को ठुकराता है और जाति व्यवस्था को जन्म से न मान कर कर्म से मानता है, वह सिद्धान्ततः हिन्दू धर्म का ही नहीं, इस्लाम का भी सुधारक कहा जा सकता है। ४० या ४५ साल पहले पं० लक्ष्मण आर्योपदेशक ने 'आर्य समाज और इस्लाम' नामक पुस्तक में कुरान की आयतों और वेदमन्त्रों के उद्धरण देकर विभिन्न धार्मिक विषयों पर दोनों धर्मों की एकता सिद्ध की थी। उन्हीं दिनों की बात है कि पूरे हिन्दुस्तान में यह केवल आर्य समाज ही था जो मुसलमान विद्वानों को अपने मन्दिरों में शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित करता था। इसके फलस्वरूप दोनों धर्मावलम्बियों को एक दूसरे के समीप आते थे। परस्पर सहयोग का मार्ग खुला करता था। क्या आर्य समाज की इस उदारता को आप दृष्टि से ओझल कर सकते हैं?

२—हिन्दू पण्डित कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने जब आर्य समाज की सृष्टि की तो उनके मानस चक्षुओं के समक्ष 'इस्लाम' था। और एक सीमा तक यह बात सच है। मुसलमान का अल्लाह एक, धर्म पुस्तक केवल कुरान एक, उपासना पद्धति नमाज एक, भाषा उर्दू एक, चांद तारों वाला इस्लामी झंडा एक है। तो इसी प्रकार आर्य समाज का उपास्य सच्चिदानन्द ईश्वर एक, धर्म पुस्तक केवल वेद एक, उपासना पद्धति वैदिक सन्ध्या एक, आर्य भाषा हिन्दी एक, ओ३म् अंकित भगवा झंडा एक है। उस महान् सुधारक ने हिन्दुओं के सैकड़ों मत मतान्तरों के बीच वैदिक धर्म की एकता से युक्त एक ऐसा भवन निर्माण कर दिया जो हिन्दुओं में वैसा ही दृढ़ संगठन उत्पन्न कर सकता था, जैसा मुसलमानों में है। खेद है पुरोहितशाही ने संगठन के इस बीज को पुष्पित पल्लवित होने नहीं दिया। पर इससे क्या। आप से तो हमें यही पूछना है कि यदि कोई आपकी कार्य पद्धति का उपयोगी अंश अपना ले तो उससे आपको प्रसन्नता होनी चाहिये या जलन? उत्तर दीजिये।

३—हिन्दू समाज को मूर्तिपूजा से हटाने एवं एकेश्वरवाद का पाठ पढ़ाने वाले तथा उसे उसी प्रकार एकता के सांचे में ढालकर संगठित करने वाले जैसे हजरत मुहम्मद ने तेरह सौ साल पहले अरबों को किया था उन स्वामी दयानन्द को दुर्वृत्त कहना किसी भी इस्लाम-भक्त के लिये, यदि वह विचारशील हो, अत्यन्त खेद और लज्जा की बात है। डा० सर सय्यद अहमद खां और मैडम ब्लैवट्स्की जैसे गण्य मान्य मुस्लिम और ईसाई उनके मित्रों में गिने जाते हैं। वे उन्हें वेदों का उपासक तथा निर्भीक सुधारक समझकर समुचित आदर प्रदान करते थे। वह महान् पुरुष अबू मुहम्मद साहब की नजर में दुर्वृत्त हो गया, केवल इस लिये कि उसने कुरान की समीक्षा की। क्या आप उनसे यह आशा रखते थे कि कि वह कुरान को अक्षरशः वेद ही मानें जैसा आप मानते हैं? और व्यास गद्दी पर बैठकर हिन्दुओं को कुरान का पाठ पढ़ाएं? कुरान और बाइबिल की तो बात ही क्या है, उन्होंने तो वेदों को भी उस प्रकार नहीं माना जिस प्रकार हिन्दुओं के पूर्वाचार्य सायण और महीधर मानते थे। उन्होंने स्वयं बढ़कर वेदों की बुद्धिवादी व्याख्या लिखी जिसे सैकड़ों विद्वान् पढ़ते और सराहते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में उनके द्वारा की गई कुरान की आलोचना करने के बाद मुस्लिम विद्वानों ने भी कुरान की बुद्धिवादी ढङ्ग से व्याख्याएं लिखी और प्रकाशित की।

हक बात है कुरान की तफसीर के मन्दर।
सत्यार्थ के नुक्तों का असर देख रहा हूं॥

याद रखिये, सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता ने इस्लाम या किसी धर्म पर कीचड़ उछालने के लिये लेखनी नहीं उठाई थी। उन्होंने उस सीधे सच्चे वैदिक धर्म को घटाटोप अंधियारों से निकालकर प्रखर सूर्य की भांति उदित करने के लिये ग्रन्थ लिखना आरम्भ किया था जिसे स्वार्थी पण्डितों ने अपने व्यक्तिगत व जातिगत स्वार्थों की गहरी गर्त में सैकड़ों साल से दबा रखा था। इस ग्रन्थ का अधिकांश भाग जिसमें दस समुल्लास हैं शुद्ध वैदिक धर्म के सैद्धान्तिक निरूपण में लिखे गये हैं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ का
११४वां स्मृति दिवसोत्सव संपन्न

वाराणसी, १८ नवम्बर। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ का ११४ वॉ स्मृति दिवस समारोहत आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड मे १७ नवम्बर को ससमारोह प्रो० आनन्द प्रकाश काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह का उदघाटन शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान माननीय प्रो० कैलाशनाथ सिंह भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री ने करते हुए कहा कि काशी के इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ का आर्य समाज के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान है। पौराणिक जगत के अजेय दुर्ग काशी मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यहा की प्रसिद्ध १८ मूर्धन्य विद्वानों के साथ जो शास्त्रार्थ किया उसके परिणामस्वरूप सारे भारत मे स्वामी जी की धूम मच गयी थी। आज न केवल हिन्दुस्तान मे अपितु दुनिया के १८ देशो मे भी आर्य समाज की शाखायें सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। देश की आजादी मे प्रथम मन्त्र द्रष्टा के रूप मे स्वामी जी ने जो क्रान्ति फूकी उसके परिणामस्वरूप स्वतन्त्रता की लड़ाई मे सर्वाधिक सख्या मे आर्य समाजियो ने अपने को बलिवेदी पर न्योछावर किया है। सारा देश नि:सन्देह स्वामी जी का आभारी है। वर्तमान समय मे आर्य समाज विधर्मियो द्वारा धर्म परिवर्तन को रोकने, दहेज रूपी अभिशाप को समाप्त करने, समाज मे व्याप्त कुरीतियो, दुव्यसन व पाखण्ड मिटाने, हिन्दी भाषा को सर्वोच्च स्थान दिलाने तथा शिक्षा क्षेत्र मे सुधार हेतु विविध योजनायें सारे देश में चला रहा है।

समारोह के मुख्य अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रख्यात चिकित्सक डा० ज्योतिमित्र ने देश की अखण्डता की रक्षा के लिये विधर्मियों द्वारा सुनियोजित ढङ्ग से चलाये जा रहे धर्म परिवर्तन से आगाह करते हुए इसे रोकने की दिशा मे आर्य समाज को पुन शुद्धि आन्दोलन चलाने की महती आवश्यकता है। इस दिशा मे बुद्धिजीवियो, युवको व आर्य समाजियो को प्राणपण से जुटने का जोरदार आवाहन किया।

समारोह मे श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, छोटे लाल आर्य, मेवा लाल आर्य, राम जी गुप्त, दक्षिणा प्रसाद तथा डा० ओम प्रकाश शास्त्री आदि प्रमुख लोगो ने अपने विचार प्रगट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित किया। समारोह का सचालन जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० ओम प्रकाश शास्त्री ने किया एव प्रो० आनन्द प्रकाश ने अध्यक्षीय भाषण किया।

समारोह के अवसर पर वृहद वैदिक यज्ञ ब्रह्मचारी श्री सोमदेव की देख-रेख में शास्त्रार्थ स्मृति स्थल के भवन मे सम्पन्न हुआ। समारोह मे ठाकुर विन्देश्वरी सिह व राम प्रसाद पाण्डेय के सुमधुर भजनोपदेश भी हुए। जिसकी उपस्थित जन समुदाय ने काफी सराहना किया। सभा में एक प्रस्ताव पारित कर इस स्थान पर ऋषि दयानन्द के गौरव के अनुरूप एक विशाल भवन बनाने का प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ से रखा जिसका श्री कैलाश नाथ सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने स्वीकृति कराने का आश्वासन दिये है।

उक्त अवसर पर जनपद के विभिन्न आर्य समाजो के उपस्थित प्रतिनिधियों, आर्य युवक [illegible] आर्यवीर दल [illegible] सेवा [illegible] आदि [illegible] किया गया। कार्यकर्ताओं की ओर से दयानन्द को भारी सख्या मे माल्यार्पण किया गया।

[illegible] ओमप्रकाश शास्त्री
महामन्त्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, वाराणसी

महर्षि दयानन्द की महत्ता
(पृष्ठ ५ का शेष)

जिस पतन राजनीतिक एव शासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार, जीवन यापन की कठिनाइयो को देखते हुए इस अवस्था के जिसे जाने के आसार नहीं देख पड़ते। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि स्यात यह अध्याय लिखा ही न जा सके। इसका सबसे बड़ा उत्तर दायित्व हमारे नेतृत्व पर है भले ही उसके इरादे पवित्र हो।

राज्य का जितना ध्यान और प्रयास देश वासियो की भौतिक समृद्धि पर है उतना नैतिक समृद्धि पर नहीं। नैतिक असमृद्धि भौतिक समृद्धि के मार्ग मे रोड़ा बनती जा रही है।

सब प्रथम शिक्षा प्रणाली मे आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है जो पूर्वजों का स्मरण न करना सिखाए। विद्यार्थियों को उत्तम नागरिक और आजीविका कमाने मे समर्थ बना ए। समाज को इस प्रकार परिष्कृत रखा जाय जिससे अपराधो के करने की न तो प्रवृत्ति हो और किसी का साहस हो। व्यक्तियो के उत्थान में समाज बाधक न हो समाज के उत्थान मे व्यक्ति बाधक न हो। इसके लिये मनुष्य के देवत्व को विकसित और पशुत्व को निरुत्साहित और समुचित वातावरण उत्पन्न करना अनिवार्य होता है। यही धर्म और धार्मिक जीवन की अनिवार्यता स्वीकार करनी पड़ती है। यह भी मानना पड़ता है कि शासन का अभिशाप धर्म की रक्षा और अभिवृद्धि होती है।

हमारा शासन इस उद्देश्य की पूर्ति मे सफल हो इसके लिए महर्षि दयानन्द सरीखे महान् नेताओ की अत्यन्त आवश्यकता है जो देश को योग्य, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मार्ग प्रदर्शन करते हुए उसी भारत के निर्माण का कारण बन सकें जो कभी ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, उद्योग धन्धो, धन्य वैभव, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक सम्पदा मे सब देशों का सिर मौर था और जिसका विश्व भर में सांस्कृतिक और राजनीतिक वर्चस्व स्थापित था।

आर्य नेता चौधरी देशराजजी का निधन

नई दिल्ली—आर्य समाज के प्रसिद्ध आर्यनेता, दिल्ली के भूतपूर्व महापौर श्री चौ० देशराज जी का ११ नवम्बर को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे ७४ वर्ष के थे। वह राजधानी की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने आर्य अनाथालय (अब बाल गृह) आर्य कन्या सदन, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर आदि अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की। और आर्यसमाज के प्रसार में सक्रिय योगदान किया वह कांग्रेस के भी कर्मठ कार्यकर्ता थे। पटौदी हाउस का अनाथालय देखने से लगता था कि वह किसी विश्वविद्यालय का हास्टल है। सुन्दर पलंग सुन्दर सुसज्जित बिस्तर बालकों के रहते थे। भोजनशाला अत्यन्त साफ सुन्दर रहती थी। अनाथ बालकों को बढ़िया भोजन यहां मिलता था। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उनके अंतिम दर्शनों के लिये बड़ी संख्या में दिल्ली के नागरिक, राजनीतिक दलों के नेता, दिल्ली के प्रशासन एवं नगर निगम के अधिकारी पधारे थे। श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने वालों में अनेक नेता एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले एवं मंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी भी थे। शोक सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि चौधरी साहब का सारा जीवन समाज सेवा में समर्पित रहा। उनके निधन से आर्य समाज में हुए रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव है।

—सम्वाददाता

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर श्रीयुत पं० सूर्यदेव जी शर्मा, एम० ए० डी० लिट् के देहावसान पर शोक सम्वेदना प्रकट करती है, तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उन्हें सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—(डा०) दिवाकर शास्त्री मन्त्री

रम्मनपुरवा प्रयाग का उत्सव

मैंने उत्सवों में जाना बन्द कर दिया है, किन्तु रम्मनपुरवा समाज के बराबर सौभाग्यशाली और कोई समाज नहीं है, अतः वहाँ जाना पड़ा। मेरे पुत्र श्री अरविन्द लाल शर्मा मुझे कार में ले गये, और कार से ही लौटकर मैं घर आ गया। वह समाज बड़भागी इसलिए है कि इसके सदस्य माननीय श्री धर्मवीर जी केन्द्रीय सरकार में मन्त्री हैं, और उनका जीवन धर्म-कर्म से पूर्णतया युक्त है, बिना यज्ञ के उन के घर कोई भोजन नहीं करता, उनके पूज्य पिता श्री रामभरोसे लाल जी 'विकल' भी बड़े कर्मकांडी, श्रद्धावान, स्वाध्यायशील व श्रेष्ठ आर्य हैं, उत्सव तीन दिन रहा, मैं दो दिन रह पाया, तीसरे दिन प्रातः काल का प्रवचन करके चल दिया। उत्सव में श्री इन्द्रदेव जी, श्री ठाकुर महीपाल जी, श्री पुत्तूलाल जी के भजनों ने उत्सव में रस की वर्षा कर दी। रम्मनपुरवा का आर्य समाज शक्तिशाली आर्य समाज है, इसमें एक यज्ञशाला और बननी चाहिए।

—बिहारी लाल शास्त्री

—बेहटा (कानपुर) के श्री पं० राम गोपाल शास्त्री के निधन पर आर्य समाज ने शोक प्रस्ताव पास किया है

मन्त्री

आवश्यकता

एक सुन्दर सुशील, स्वस्थ आर्य परिवार की २२ वर्षीया कन्या हेतु कार्यरत आर्य वर की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं।

पत्र व्यवहार का पता :—
अमरसिंह, प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र,
बक्शी का तालाब-लखनऊ

आर्य समाजों से अपील

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आर्य प्रतिनिधि सभा की एक मात्र शिक्षण संस्था है। यहाँ पर निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध हर आर्य समाज ने गुरुकुल को सहायतार्थ कुछ न कुछ धन दान देना निश्चय किया है। गुरुकुल को धन की अति आवश्यकता है। क्योंकि गुरुकुल का हीरक जयन्ती समारोह फरवरी के अन्तिम सप्ताह में मनाया जा रहा है।

अतः समाजों से अपील की जाती है कि वह अपना देय धन गुरुकुल को भेजने का कष्ट करें। ताकि इसके समारोह में सहयोग मिल सके।

—योगेन्द्र स्नातक आर्य
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

वानप्रस्थ श्री स्वामी कर्मानन्द जी संन्यासी बने

दि० ४।११।८३ को महर्षि दयानन्द जी की निर्वाण स्थली अजमेर में निर्वाण शताब्दी के शुभ अवसर पर शुभ दीपावली के दिन लाखों आर्य नर-नारियों के सम्मुख वयोवृद्ध यतिमण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती महाराज के गुरुत्व में श्री कर्मानन्द जी ने सन्यास की दीक्षा ली। जिसका वेदपाठ श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती महाराज ने किया। इस शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री प० इन्द्रराज जी तथा श्री अग्निकिरण जी भी उपस्थित थे। जिन्होंने स्वामी कर्मानन्द जी को सन्यास वस्त्र पहनाये। वे संन्यास दीक्षा इस शुभ अवसर पर आप में आर्य जगत् में ऐतिहासिक समय था।

—इन्द्रराज
मन्त्री सभा

—आर्यसमाज फैजपुर का प्रथम शिविर दि० १४ से २१ अक्टूबर तक सम्पन्न हो गया। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता पं० बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्व० आ० वीर दल दिल्ली ने की। दीक्षान्त भाषण प्रो० कैलाशनाथ सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ ने दिया। इस शिविर में लगभग ७० नवयुवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

—भूषण लाल आर्य
संयोजक

—अल्मोड़ा। आर्य समाज मन्दिर ताड़ीखेत में ३० अक्टूबर ८३ को कमला आर्या (नैनीताल) का राजेश साह (रानीखेत) के साथ अन्तर्जातीय विवाह संस्कार पं० रामदत्त पाण्डे एवं पं० भगवती प्रसाद शर्मा के पौरोहित्य में हुआ। डा० कच्चाहारी ने उक्त अवसर पर बोलते हुये कहा कि अन्तर्जातीय विवाह के प्रोत्साहन हेतु वर को वधू के वरण (चुनाव) की सुविधा मिलनी चाहिए।

—मन्त्री त्रिलोकराम

स्वामी दयानन्द और इस्लाम

(पृष्ठ ७ का शेष)

परन्तु सत्य को सत्य के रूप में प्रतिपादित कर देने के साथ ही जब तक मिथ्या को मिथ्या सिद्ध न किया जाय, तब तक मायावी लोग नाना प्रकार से झूठ को सच बताकर सब साधारण को छलने की चेष्टा करते है। पाठकों को इससे सतर्क करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्ध में चार समुल्लास जोड़े गए जिनमें अवैदिक मतों की आलोचना है। उसमें भी ध्यान देने की बात यह है कि स्वामी जी सर्वप्रथम उसी मत को लेते हैं जो उनके अपने पूर्वजों का धर्म था, अर्थात् हिन्दू धर्म। उसके दोष बताकर और उसमें सुधार का मार्ग दिखाकर, वे उस बौद्ध धर्म को लेते हैं जो भारत में पैदा हुआ और हिन्दू धर्म के बहुत समीप है। तत्पश्चात् ईसाई और सब के बाद वे इस्लाम को लेते हैं।

स्मरण रहे, वे यह नहीं कहते कि जिन धर्मों की उन्होंने आलोचना की है, उनमें सब दोष ही दोष हैं, गुण एक भी नहीं। उनके गुण तो पंडित, पादरी, मौलवी बतलाते ही रहते हैं। परन्तु ये लोग दूसरे धर्मों की निन्दा करके अपने धर्मों की श्रेष्ठता सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। अपने धर्मों के दोष वे क्यों बताएं? इसलिए जनता उनकी अज्ञानता पूर्ण झूठे प्रचार से धोखे में पड़े, एतदर्थ यह आवश्यक था कि अपने धर्मों को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने वालों को उनके धर्म की त्रुटियां उघाड़ कर दिखाई जायें। इस एकमात्र सदुद्देश्य को लेकर स्वामी जी ने अवैदिक मतों की आलोचना में चार समुल्लास लिखे हैं जिसमें चौथा इस्लाम के विषय में है।

४—जहां तक अधिकार का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द को अपने वैदिक धर्म का प्रचार करते समय प्रत्येक अवैदिक मत की आलोचना करने का उतना ही अधिकार था जितना हजरत मुहम्मद साहब को अपने इस्लाम धर्म का प्रचार करते समय तत्कालीन अरब में प्रचलित गैर इस्लामी धार्मिक मान्यताओं की आलोचना करने का था। दोनों का उद्देश्य अपनी-अपनी दृष्टि से जनता का सुधार करना था।

स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया कि जिस प्रकार ऋग्वेद विश्व की सब से प्राचीन पुस्तक है उसी प्रकार वैदिक धर्म सब से प्राचीन धर्म है। मानव कल्याण और मनुष्यों के हित के लिये जो कुछ भी आवश्यक है उस सब की शिक्षा उसमें दी गई है। पहले सभी लोग उस पर चलते थे। कालान्तर में स्वार्थी पंडितों ने अनेकानेक वेदेतर ग्रन्थों की रचना करके वैदिक मार्ग से लोगों को भटका दिया। समाज विघटित हुआ, शक्ति विश्रृंखलित हुई, देश निर्बल होकर विदेशी आक्रान्ताओं के अधीन हुआ जिनके साथ उनके धर्म, इस्लाम और ईसाइयत भी आए। जनता बहुतेरे धार्मिक सम्प्रदायों में बंट गई। स्वामी दयानन्द की दृष्टि में देशी या विदेशी विभिन्न धर्मों में विभाजित भारतीय जनता का कल्याण वैदिक धर्म का अनुयायी बनने में था। इसलिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक धर्म का निरूपण तथा पुरानी, किरानी, कुरानी आदि सभी अवैदिक मतों का खण्डन किया है। उनके लिये हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई समान रूप से आलोच्य है।

का अध्ययन नहीं किए थे। तो श्रीमान् जी उनके चेले स्वामी दर्शनानन्द, पं० धर्मभिक्षु लखनवी, पं० रामचन्द्र देहलवी, श्री बिहारभिक्षु आर्य, जो अर्बी पढ़े और कुरान कंठस्थ किए हुए थे, क्या उनका इस्लाम सम्बन्धी मन्तव्य आपको उनकी योग्यता के कारण मान्य है? यदि नहीं, तो स्वामी दयानन्द भी यदि अर्बी पढ़े तथा कुरान कंठाग्र किए होते तो भी क्या उनका कथन आपको मान्य होता! नहीं। इसलिये भाषागत योग्यता का प्रश्न उठाना व्यर्थ है। विदित हो कि स्वामी दयानन्द जी ने कुरान का उर्दू अनुवाद अपने शिष्यों द्वारा हिन्दी में लिखवाकर उसपर मनन चिन्तन करने के पश्चात् ही जो कुछ लिखा है, वह लिखा है। अलल् टप्पू रूप में नहीं लिख दिया।

आप कहते हैं कि आयतें पेश करने में कपटाचार किया है। ज्ञातव्य है कि प्रत्येक पेश की गई आयत की सूरत संख्या तथा आयत संख्या उन्होंने दे दी है। यदि उन संख्याओं में त्रुटि हो, तो बताएं और यदि उनके अर्थ करने में कोई त्रुटि हो तो वह भी आपको बताना चाहिये। ऐसा कुछ न बताकर आरोप आपने स्वामी जी पर लगाया है, वह सभ्य समाज में माननीय नहीं हो सकता।

फिर आपको इस बात से कौन रोकता है कि आप उनके द्वारा की गई आलोचना क्रमवार उत्तर लिखें, छपवायें और आर्य समाजियों तक पहुंचाएं। यदि आपके आलेखों में सत्यता होगी तथा तर्कों में कोई दम होगा तो हो सकता कि उसे पढ़कर लोग आपके मतानुयायी बन जायें।

अन्त में एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं। वह यह है कि विद्वान् का लक्षण अपशब्द प्रयोग करना नहीं, किन्तु तर्क उपस्थित करना है। तर्क में अपशब्दों से अधिक शक्ति होती है। विद्वानों के पास जब तर्क समाप्त हो जाता है तो वे चुप हो जाते हैं। परन्तु उन में से कुछ जो हल्के पानी के होते हैं, अपशब्दों पर उतर आते हैं। सूक्ष्मदर्शी विद्वज्जन इससे यह समझ लेते हैं कि अब इनकी बुद्धि का दिवाला निकल चुका है।

—अलमिति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु।

न्यूयार्क में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि महोत्सव (अमेरिका)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी महोत्सव न्यूयार्क नगर अमेरिका में अक्टूबर २९ व ३०, १९८३ ई० को हिन्दू मन्दिर फ्लशिंग के सांस्कृतिक केन्द्र में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस महोत्सव की निम्न विशेषताएं थीं।

(१) यह आयोजन न्यूयार्क न्यूजर्सी की ६ आर्य समाजों का सम्मिलित आयोजन था।

(२) न्यूयार्क व न्यूजर्सी के लगभग समस्त धर्म मन्दिरों, संस्थाओं संन्यासियों व महापुरुषों ने न सिर्फ इस आयोजन को संरक्षता प्रदान की वरन् समस्त कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया व महर्षि दयानन्द के प्रति बड़ी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। इस आयोजन में हिन्दू, सिक्ख व जैन इत्यादि सब भाइयों ने भाग लिया।

कार्यक्रम शनिवार २९ अक्टूबर के प्रातः १० बजे प्रारम्भ हुआ। १० बजे से मध्याह्न १२ बजे तक 'वेद सम्मेलन' कार्यक्रम चला। इस सम्मेलन की निम्न विशेषतायें उल्लेखनीय हैं।

(१) सम्मेलन का प्रारम्भ चारों वेदों से संकलित मन्त्रों के मनोहारी उद्घोष के साथ हुआ। यह उद्घोष देवियों द्वारा किया गया था।

(२) सामवेद उद्गाता ने सामवेद की तीन विभिन्न शाखाओं को सामवेद गान प्रणालियों द्वारा आधा घण्टे तक सामगान करके जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

(३) संन्यासियों व विद्वानों ने वेद, सामवेद व यज्ञ के विभिन्न अङ्गों पर प्रकाश डाला।

वेद सम्मेलन के पश्चात् सम्पूर्ण सामवेद के मन्त्रों के साथ एक बृहत यज्ञ किया गया। यह यज्ञ १२ घण्टे तक इस प्रकार चला।

(१) शनिवार २९ अक्टूबर का सायं १ बजे से रात्रि ८ बजे तक। (२) अगले दिन प्रातः ९ बजे से सायं २ बजे तक। इस यज्ञ के शुद्ध वेद पाठ व अन्य भव्यताओं के कारण आश्चर्यजनक रूप से जनता काफी बड़ी संख्या में बड़ी श्रद्धा के साथ लगातार १२ घण्टे तक भाग लेती रही। यह आंखों को चौंका देने वाली घटना थी।

सामवेद यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् रविवार ३० अक्टूबर को महर्षि दयानन्द के जीवन विषयक एक फिल्म अपराह्न २ बजे से ३ बजे तक दिखलाई गई।

उसके पश्चात् ३० अक्टूबर को सायं ३ बजे से ६ बजे तक एक सभा कार्यक्रम चला, जिसमें समस्त संन्यासियों, संरक्षकों व अन्य विद्वानों ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की तथा इस बात पर बल दिया कि यहां आर्य समाज प्रसार व वेद प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। अमरीका की वैयक्तिक व सामाजिक समस्याओं के सही समाधान की वेद ही एकमात्र कुंजी है।

सभा में श्रीराम जी चिन्मय जी व उनके लगभग २५ अमेरिकन शिष्य व शिष्याओं ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये बंगाली व अंग्रेजी गान ध्वनि के साथ गाये। उस समय के अतुलनीय दिव्य वातावरण का वर्णन अवर्णनीय है। उस समय सारी जनता मंत्रमुग्ध होकर बड़ी उत्कृष्ट पवित्रता का अनुभव कर रही थी।

स्वामी डाक्टर रामपुरि जी ने कहा कि मेरे पूर्वज और मैं प्रारंभ में महर्षि दयानन्द के सक्रिय कट्टर विरोधी थे, लेकिन ज्यों-ज्यों मैं महर्षि दयानन्द को विद्वता, उनके दर्शन व जीवन का अवगाहन करता गया त्यों-त्यों अधिकाधिक मैं उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

समस्त आयोजन में बार-बार पवित्र वेदध्वनि गुंजरित होती रही और इसी महाध्वनि के साथ आयोजन समाप्त हुआ। इस आयोजन की प्रतिध्वनि अमरीका के वातावरण में लम्बे काल तक गूंजती रहेगी।

—धर्मवीर जिज्ञासु
मन्त्री आर्य समाज न्यूयार्क
प्रेषक— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान
नई दिल्ली-११०००२

आर्य समाज अलापुर बदायूं का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अलापुर का १८ वां वार्षिकोत्सव एवं दयानन्द शताब्दी समारोह दिनांक २, ३, ४, दिसम्बर १९८३ ई० दिन शुक्र शनि, रविवार को बड़े हर्षोल्लास से मनाया जायेगा। जिसमें दूर-दूर से महात्मा उपदेशक, विद्वान् पधार रहे हैं। इस अवसर पर हरिजन गोरक्षा, महिला, एवं नशानिषेध सम्मेलन भी होंगे, रोजाना रात्रि को आर्य सिनेमा द्वारा चित्र प्रदर्शन भी होगा। बाल विद्या के आश्चर्य जनक कार्यक्रम होंगे।

—हेमराज आर्य
प्रधान

उत्सव

वेद मन्दिर (विवेकानन्द नगर) गाजियाबाद का तीसरा वार्षिक महोत्सव ११, १२, १३, दिसम्बर १९८३ को बड़ा धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें अनेकों विद्वान् संन्यासी उपदेशक पधार रहे हैं।

—लाजपत राय आर्य
मन्त्री

सूक्ति सुधा सागर

धर्मवीर ग्रन्थमाला का यह साहित्य रत्न १११ सूत्रों में लिखा गया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन १० अध्यायों में श्री प० शिवाकान्त जी उपाध्याय एम० ए० ने किया है। इस ग्रन्थ का मूल्य केवल मात्र २५) प्रति है।

एक लाख रुपयों के दान देने का संकल्प

महर्षि दयानन्द उपदेशक महा विद्यालय अजमेर के संचालनार्थ परोपकारिणी सभा अजमेर को इस ग्रन्थ की बिक्री से एक लाख रुपयों का दान प्रदान किया जायेगा।

आर्डर और मनियार्डर आज ही इस पते पर भेजें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग
६८५७ अहाता ठाकुरदास सरायरुहेला नई दिल्ली-५

[illegible] साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष–४४९९३ [illegible]
रजिस्टर्ड सं० एल० डब्लू/एन०पी० ७६
वा० मार्ग शीर्ष १२
मार्ग शीर्ष कृ० १४, रविवार
४ दिसम्बर १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[illegible] गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

हिन्दी की रक्षा महर्षि दयानन्द ने की

सुवा (फीजी) स्व० श्री दयानन्द ने वही काम किया जो कभी भगवान श्री कृष्ण ने किया था। यदि फीजी और अन्य मुल्कों में हिन्दी और हिन्दू संस्कृति है तो, यह महर्षि दयानन्द की सर्वोच्च देन है। कलियुग में स्वामी दयानन्द ने शंखनाद किया और हिन्दी की रक्षा की।'

ये शब्द फीजी के सनातन धर्म सभा के प्रधान और भू० पू० कोषाध्यक्ष मन्त्री श्री विवेकानन्द शर्मा ने सुवा में एक समारोह में कहे हैं। हाल में उनका इस आशय का एक पत्र २७।८।८३ का फिरोजाबाद में श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के पास आया है (वह पत्र श्री चतुर्वेदी जी ने इस सभा को भेज दिया है) पं० विवेकानन्द को हाल में ही सरदार वल्लभभाई पटेल यूनिवर्सिटी गुजरात से हिन्दी में पी० एच० डी० की उपाधि मिली है।

स्मरण रहे कि फीजी की स्वाधीनता के दस वर्ष पूरे होने पर शाही प्रतिनिधि की उपस्थिति में जो राजकीय समारोह १९८० में हुआ था, वहां ईसाइयों के चार, मुस्लिमों के २, बहाई, कबीरपंथी और सिखों के १–१ संगठन ने अलग–अलग ईश प्रार्थना की थी, परन्तु आर्य समाज और सनातन धर्म समाजों की ओर से सम्मिलित एक ही ईश्वर प्रार्थना वैदिक मन्त्रों के द्वारा हुई थी जिसका हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद भी फीजी सरकार ने प्रकाशित करवाया था। भारत से फीजी गए भारतीय विद्वान पं० ब्रह्मदत्त स्नातक ने श्री विवेकानन्द शर्मा के साथ मिलकर समारोह में भाग लिया था जिसकी सराहना फीजी के सब पत्रों ने मुख्यपृष्ठ पर समाचार व फोटो देकर की।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा—महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली—११०००२

वैद्यराज प. भीमसेन शर्मा का निधन!

स्वतन्त्रता सेनानी पं० भीमसेन जी का निधन १०४ वर्ष की आयु में मीरनाबाद (अलीगढ) में ३१ अक्टूबर को हो गया।

पण्डित जी आरम्भ से ही आर्य विचारों के थे। आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय तथा महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों पर विशेष अधिकार था संस्कृत व्याकरण तथा तर्क शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान् थे।

पं० भीमसेन जी आयुर्वेद के भी अधिकारी विद्वान् थे और उन्होंने बहुत वर्ष निःशुल्क चिकित्सा की। उन्होंने भरापूरा परिवार छोड़ा है।

—डा० प्रेमदत्त शास्त्री, ज्वालापुरी, अलीगढ

ओ३म् नाम महिमा

[कवि ने प्रयत्न किया है कि अधिकतर ओ३म् के नामों का समावेश हो जाय। —सम्पादक]

तुम अनादि अनन्त हो आनन्द सत् चित् शुद्ध हो।
सविता कवि अद्वैत हो कूटस्थ हो तुम बुद्ध हो॥

अग्नि हो तुम चन्द्र मित्र हो तुम मनु तुम रुद्र हो।
ब्रह्म हो तुम ब्रह्मा हो तुम विष्णु हो तुम इन्द्र हो॥

अज हो अनाथ भर्ता तुम उरुक्रम देव हो।
कालाग्नि हो तुम मातरिश्वा मुक्त हो महादेव हो॥

राहू केतु यज्ञ होता शुक्र बुध भगवान् हो।
न्यायकारी हो दयालु सर्वशक्तिमान् हो॥

माता पिता बन्धु सखा आचार्य हो प्रजापति।
हो पितामह प्रपितामह विश्व हो तुम बृहस्पति॥

देवी शक्ति हो श्री तुम लक्ष्मी हो सरस्वती।
अथवा आकाश पृथ्वी प्राज्ञ हो तुम गणपति॥

दिव्य नारायण निरञ्जन हिरण्यगर्भ गणेश हो।
हो विश्वम्भर तुम विश्वेश्वर तुम गुरु अज शेष हो॥

वायु तेजस आप्त प्रिय काल शंकर हो वरुण।
भ हो परमेश्वर शनैश्चर यम पुरुष निर्गुण सगुण॥

ईश्वर वसु परमात्मा तुम सत्य हो तुम ज्ञान हो।
मंगल कुबेर सुपर्ण हो तुम विराट हो तुम प्राण हो॥

आपकी महिमा का 'शीतल' पार कैसे पा सके।
शक्ति वाणी में कहां जो ओ३म् के गुण गा सके॥

—जगदीशशरण 'शीतल' चाँदपुर, (बिजनौर)

उ. प्र. के चार विद्वानों का सम्मान

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दि अजमेर में मारीशस के श्री मोहनलाल मोहित, श्री विष्णुदयाल, श्री युधिष्ठिर मीमांसक सोनीपत श्री सत्यकाम विद्यालंकार बम्बई, उत्तरप्रदेश के श्री सत्यकाम विद्यालंकार मसूरी, श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा कानपुर, आचार्य श्री प्रियव्रत जी शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी तथा आचार्य श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री ज्वालापुर का सम्मान दयानन्द डिग्री कालेज के खचाखच भरे हाल में पूर्व राज्यपाल श्री धर्मवीर जी के आतिथ्य में स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता में श्री वेदव्यास जी द्वारा सम्मानित किया गया। राव साहब प्रतापसिंह संयोजक थे।

श्री शिवकुमार शास्त्री एवं सभामन्त्री श्री इन्द्रराज जी ने बधाई दी।

शिक्षा सम्मेलन में शताब्दि के खुले पण्डाल में प्रो० कैलाशनाथ सिंह सभाप्रधान जी ने लाखों की उपस्थिति में शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन करने के लिए आह्वान किया। आपके सारगर्भित भाषण जनसमुदाय ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। —डा० प्रेमदत्त शास्त्री, अलीगढ़

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए [illegible] प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से [illegible] शर्मा द्वारा मुद्रित

प्रार्थना

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्यो मुंक्षीय मामृतात् ।।
ऋ० ७-५९-१२ ।।

अर्थ :–सौगन्धयुक्त, पुष्टिवर्धन करने वाले संसार के तीनों लोकों के अधिष्ठाता रूप भाता का हम यजन करते हैं। जैसे लता बन्धन से पका हुआ ककड़ीफल स्वयमेव पृथक् हो जाता है वैसे ही मरते हुए हम मृत्यु भय से मुक्त हो जावें, अमृत से कभी नहीं।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार, ११ दिसम्बर १९८३, दयानन्दाब्द १५९
सृष्टिसंवत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

ज्योति एवं जीवन

वैदिक ज्ञान विश्व की महान् तम सम्पदाओं में से एक है। सर्व-श्रेष्ठ है। सौभाग्य है कि भारत के आर्यजनों को शाश्वत ज्ञान आदि काल से प्राप्त है और वही हमारा आलोक वर्त्ती रहा है। सार्वभौमिक कल्याण का पथ दर्शक वैदिक ज्ञान के सञ्चयी होने पर भी हम उस समय विपथ गामी हो जाते हैं। जब इस मार्ग से हम हट जाते हैं और भौतिक-वाद के प्रलोभन में आत्मवञ्चित हो उठते हैं। गत मास अजमेर नगर में एकत्रित होकर सहस्रों आर्यजनों ने जीवन में नवीन संकल्प को ग्रहण किया है, परन्तु उस सकल्प को हम तभी साकार कर सकते हैं जब निम्न यजुर्वेदीय मंत्र में निहित शक्ति को हम ग्रहण कर सकें :–

उत्क्राम महते सौभागायास्म
आदास्थानात् द्रविणोदा वाजिन्।
वय स्याम सुमतौ पृथिव्या,
अग्नि खनन्त उपस्थे अस्याः ।।
यजु० ११–२१

महान् सौभाग्य के प्राप्त हेतु हमें विराम स्थल से आगे बढ़ना होगा ज्योति शक्ति का सञ्चय करते हुए और इन दो सम्पदाओं की प्राप्ति के बाद ऐश्वर्य एवं धन प्राप्ति के लिए श्रम अपेक्षित है जिससे अग्नि गर्मा अर्थात् धन को छिपाये पृथ्वी का भी उत्खनन करना होगा वैदिक ऋषि का आदेश है कि राष्ट्र शक्ति एवं ओज का सञ्चय करे। जीवन को प्राप्त करें और फिर श्रम के द्वारा स्वयं पूरिता पृथ्वी के उत्ख-नन से हम प्रचुर रत्न एवं धन तथा अन्न प्राप्त करें। और राष्ट्र का जन–जन कल्याण की भावना से आन्दोलित हो उठे।

गत मास भारत में राष्ट्र-कुल सम्मेलन हुआ। इंगलैण्ड की महारानी की अध्यक्षता में सम्-मिलित राष्ट्र जो राष्ट्र कुल (कामन वेल्थ) के सदस्य थे एक-त्रित हुए। इनमें क्षेत्रफल और जन संख्या के आधार पर भारत सबसे बड़ा राष्ट्र सदस्य था और दक्षिणी अफ्रीका का नौविया सब से छोटा राष्ट्र सदस्य था जिसकी जन संख्या सात हजार ही है। विश्व की राजनैतिक गतिविधियों पर विचार हुआ। अमेरिका एवं रूस के बढ़ती हुये सैन्य शक्ति तथा उनके द्वारा उठाये कुछ पर्गों को आशंका से देखा गया। इस राष्ट्र कुल मण्डल में समृद्धिता की दृष्टि से इङ्गलैण्ड सबसे समृद्धि है परन्तु राष्ट्र–कुल के पास ज्योति तथा शक्ति का अभाव था अतएव केवल भावना भर की गयी कि विश्व की दो महाशक्तियाँ अमेरिका और रूस आपस में विचार करें और एकता की ओर बढ़ें।

भावना जीवन्तता की द्योतक है। महा शक्तियाँ भावनाओं को वेग की दृष्टि से देखती हैं। भारत चाहे निर्गुट बने चाहे महान् राज-नीति आदर्शों का बखान करें परन्तु जब तक उसमें ज्योति एवं जीवन नहीं आता है–पृथ्वी खनन की श्रम शक्ति नहीं आती है तब वह विश्व में अपनी ओजस्वी सत्ता नहीं स्थापित कर सकता है। ज्योति–जीवन श्रम की प्राप्ति के लिये राष्ट्र को चरित्र प्रधान एवं आत्म विश्वास के दृढ़ नेता चाहिये। वर्तमान के नेताओं की ओर जब देखते हैं तो पाते हैं कि नब्बे प्रतिशत आत्म शक्ति रहित और चाटुकार तथा स्वार्थी हैं। तभी राष्ट्र निरन्तर आपदा की ओर जा रहा है। अकुशल सारथी का स्यन्दन गर्त में गिरता है।

वेद हमें ज्ञान मार्ग का संकेत करता है। ऋषिवर दयानन्द ने उस मार्ग पर चलने का कर्त्तव्य बोध दिया और आर्य समाज का कार्य है कि राष्ट्र को वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा दे। अजमेर में गृहीत सकल्प तभी पूर्ण होंगे जब समाज सजग होकर आपसी स्वार्थ एवं पदलिप्सा की कलह से दूर राष्ट्र को उचित दिशा दे। आर्य समाज के वर्तमान नेताओं को भी आत्म शोध करना चाहिये और न स्वयं भटकें न दूसरों को भटकने दें। 'आर्य मित्र' आशा वान है कि हमारे वर्तमान आर्य जगत के नेता आत्मशोध करके जीवन एवं ज्योति के पथ पर स्वयं आ जायेंगे। तथा राष्ट्र कल्याण मार्गी होगा।

अभिनन्दनीया महादेवी

भारती ज्ञान पीठ पुरस्कार 'नोबेल प्राइज' के समान भारत का सम्माननीय पुरस्कार है जिसके एकमात्र पुरा और ज्ञानपीठ का फलक प्रदान किया जाता है। साहित्यकला संस्कृति एवं दर्शन के क्षेत्र में श्लाघनीय प्रतिभा को यह पुरस्कार देय है।

श्रीमती महादेवी वर्मा हिन्दी की ओजस्वी कवियित्री हैं। वर्ष १९८२ का ज्ञान पीठ पुरस्कार महादेवी जी को प्रदान किया गया और यह भी सौभाग्य है कि इङ्गलैण्ड की प्रधान मन्त्री श्री-मती मारग्रेट थैचर के कर कमलों से महादेवी जी अलंकृत हुईं। दोनों महिलायें आदर्श नारी हैं और गरिमावान हैं। मारग्रेटथैचर ने इङ्गलैण्ड के राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त की है तथा महादेवी जी आर्य विचारों से अभिभूत साध्वी हैं और अपने काव्य में वैदिक गरिमा की रहस्यमयी एकेश्वर-वादिता को ध्वनित करने का प्रयास करती हैं। विगत पचास वर्षों से नारी जीवन को उदात्त बनाने में निरत रही। स्त्री शिक्षा एवं अनुस्थान में अभूतपूर्व योग-दान देती रही हैं। भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार के निर्णायकों ने उचित प्रतिभा को पुरस्कृत किया है। वह धन्यवाद के पात्र हैं।

आर्यमित्र श्रीमती महादेवी वर्मा को साधुवाद देता है। आशा है उनका स्वास्थ्य और प्रतिभा दोनों समवेत होकर महिमामयी नारी रत्न को अधिक समय तक साहित्य कला एवं दर्शन के क्षेत्र में सक्रिय बनी रहने का सुयोग्य प्राप्त होगा। आधुनिक हिन्दी काव्य को महादेवी जी ने गरिमा प्रदान की है। और उनकी कृतियाँ काल संस्कृति पर अमिट रेखायें हैं।

–आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर ने श्री रामगोपाल शास्त्री बेहटा आदमपुर के निधन पर शोक सहानुभूति प्रकट की है।

–डा० विजयपाल शास्त्री
मन्त्री

आर्यसमाज और हिन्दी

[श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', दिलशाद कालोनी, शाहदरा, दिल्ली]

(गतांक से आगे)

सर्व प्रथम सन् १८७० में शाहजहाँपुर से मुंशी बख्तावरसिंह ने 'आर्य दर्पण' नामक साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया था और उसके बाद से अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आर्यसमाज की ओर से होता चला आ रहा है।'

इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्यसमाज की स्थापना से ५ वर्ष पूर्व ही महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर मुंशी बख्तावरसिंह ने इस साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इसी प्रकार स्वामी जी के एक और अन्यतम शिष्य स्वामी समर्थदान ने सन् १८८६ में अजमेर से 'राजस्थान समाचार' नामक पत्र का सम्पादन-प्रकाशन प्रारम्भ किया था। स्वामी जी ने जहाँ हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए अपने अनेक अनुयायियों को प्रेरित किया वहाँ उसे 'आर्यभाषा' के पावन अभिधान से भी अभिषिक्त किया।

हिन्दी के व्यवहार, प्रचार तथा प्रसार के प्रति स्वामी जी कितने जागरूक रहते थे इसका ज्वलन्त प्रमाण उनका वह पत्र है जो उन्होंने ७ अक्टूबर सन् १८७८ को दिल्ली से श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को लिखा था—'अब की बार भी वेद-भाष्य के लिफाफे पर देवनागरी नहीं लिखी गई। इसलिए तुम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि से कहो कि अभी इसी पत्र के देखते ही देवनागरी जानने वाला एक मुंशी रखलें जिससे कि काम ठीक-ठीक से हो, नहीं तो वेद-भाष्य के लिफाफों पर रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता किसी देवनागरी जानने वाले से लिखवा लिया करें।' ये शब्द लगभग एक शती पूर्व के हैं।

यह महर्षि दयानन्द का ही प्रताप है कि आज हिन्दी इस रूप में पल्लवित तथा पुष्पित होकर एक ऐसे विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर गई है कि इसका साहित्य किन्हीं अंशों में भारत ही क्या विश्व की बहुत-सी भाषाओं से आगे बढ़ गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में नया प्रयोग करने के साथ-साथ अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए आर्यसमाज ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी कार्य किया उसके द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि की दिशा में भी अत्यन्त उल्लेखनीय उपलब्धि हुई। इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जहाँ हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी वहाँ उसे ऐसे अनेक कुशल सम्पादक भी मिले जिनकी सम्पादन-पटुता और लेखन-शैली का आज भी हिन्दी साहित्य में अपना सर्वथा विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे महानुभावों में सर्वश्री रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य, साहित्याचार्य पद्मसिंह शर्मा और महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रुद्रदत्त शर्मा ने जहाँ आर्यजगत् के प्रमुख पत्र 'आर्यमित्र' का सम्पादन अनेक वर्ष तक सफलतापूर्वक किया था वहाँ पं० पद्मसिंह शर्मा और महात्मा मुंशीराम ने 'भारतोदय' तथा 'सद्धर्म प्रचारक' जैसे प्रख्यात पत्रों का सम्पादन किया था। इन दोनों महानुभावों ने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के क्रमशः मुजफ्फरपुर और भागलपुर अधिवेशनों की अध्यक्षता भी की थी। महात्मा मुंशीराम जी जहाँ हिन्दी में लिखी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' साहित्य की अभूतपूर्व निधि है वहाँ शर्मा जी को सर्वप्रथम उनके समीक्षा ग्रन्थ 'बिहारी सतसई का संजीवन भाष्य' पर सम्मेलन का 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' भी सर्वप्रथम १९२२ में प्रदान किया गया था। मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त करने वाले अन्य आर्य विद्वानों में प्रो० सुधाकर, डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा, श्री सत्यकेतु, श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, श्री जयचन्द्र विद्यालंकार, श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, श्री जयवीर शास्त्री, तथा यशपाल आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं जिन्हें क्रमशः उनकी 'मनोविज्ञान', 'हमारे शरीर की रचना', 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास', 'आस्तिकवाद', 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा', 'शिक्षा मनोविज्ञान', 'हर्ष चरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'समाज शास्त्र के मूल तत्व', सांख्य दर्शन का इतिहास', तथा 'झूठा सच' आदि कृतियों पर यह पुरस्कार प्रदान किया गया था। इनमें से डा० वासुदेव शरण अग्रवाल को जहाँ उनकी 'वेद विद्या' नामक कृति पर यह पुरस्कार दुबारा मिला था। वहाँ श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सन् १९५०' में कोटा (राजस्थान) में सम्पन्न हुए ३८ वें वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता भी की थी। यहाँ यह तथ्य भी सर्वथा उल्लेखनीय है कि सम्मेलन के बम्बई में हुए ३५ वें अधिवेशन के अध्यक्ष महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक जीवन के निर्माण में भी आर्यसमाज का सराहनीय योगदान रहा है। राहुल जी का पहला हिन्दी लेख सन् १९१६ में मेरठ के श्री रघुवीरशरण दुबलिश द्वारा सम्पादित 'भास्कर' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हुआ था। उन दिनों राहुल जी आगरा के 'आर्य मुसाफिर' विद्यालय में पढ़ा करते थे और 'केदारनाथ विद्यार्थी' नाम से जाने जाते थे। इस सम्बन्ध में राहुल जी ने अपनी आत्मकथा में एक स्थल पर यह सही ही लिखा है—'आर्यसमाज को मैंने गम्भीरता से ग्रहण किया था। वैरागी पन्थ की तरह 'ग्रामम् गच्छन् तृणान् स्पृशति' के हल्के हृदय से नहीं स्वीकार किया था। इसलिये यथाशक्ति आर्यसामाजिक विचारों के अनुसार चलने की कोशिश करता था।'

हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने जहाँ 'आर्यमित्र' में सहकारी सम्पादक के रूप में अपने पत्रकार-जीवन का प्रारम्भ किया था वहाँ प्रख्यात समीक्षक डा० सत्येन्द्र और कहानीकार रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र' भी इस पत्र के सहकारी सम्पादक रहे थे। उक्त तीनों ही महानुभावों ने 'आर्यमित्र' में उन दिनों कार्य किया था जब यह आगरा से प्रकाशित होता था और श्री हरिशंकर शर्मा उसका सम्पादन किया करते थे। सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी ने भी 'सर्वमित्र' नाम से 'आर्यमित्र' का कई वर्ष तक सम्पादन किया था। आर्यसमाज के व्यापक आन्दोलन से प्रभावित होकर अतीतकाल में हिन्दी के जिन अनेक महानुभावों ने हिन्दी साहित्य में अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया उनमें सर्वश्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक आदि हैं।

आर्यसमाज ने जहाँ साहित्य की अनेक विधाओं की समृद्धि में अपना महत्वपूर्ण दाय प्रदान किया वहाँ काव्य के क्षेत्र में भी उसका स्थान सर्वथा विशिष्ट और वर्णनीय है। यह आर्यसमाज के सुधारवादी आंदोलन का प्रताप था कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी अपने काव्य का विषय उन्हीं कुरीतियों का बनाया था जिन्हें आर्यसमाज देश से सर्वथा समाप्त करना चाहता था। आर्यसमाज के इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय एवं सामाजिक जागरण के दिनों में जहाँ हिन्दी के अनेक प्रमुख लेखकों को प्रभावित किया वहाँ कवि भी उससे पूर्णतः आप्लावित हुए। हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का समग्र काव्य हमारी इस धारणा की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में—

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

विषय पर डा० सत्यकेतु विद्यालंकार का भाषण

[गताङ्क से आगे]

(३) आर्यसमाज का क्षेत्र अभी प्रधानतया हिन्दी भाषा-भाषी लोगों तक ही सीमित है। अतः हमें यह ध्यान करना होगा कि वैदिक धर्म के सुयोग्य विद्वानों व प्रचारकों को तेलगू, कन्नड़, तमिल, असमिया आदि भारतीय भाषाओं तथा फ्रेञ्च, जर्मन, चीनी, जापानी, स्पेनिश, पोर्तुगीज, रशियन, अरबी, तुर्की सावृाची आदि विदेशी भाषाओं में निष्णात किया जाए, ताकि वे विविध देशों में जाकर वहां के नागरिकों व निवासियों में वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें। प्रायः सभी विदेशी भाषाओं को सीखने की सुविधाएं दिल्ली आदि नगरों में विद्यमान हैं। समुचित छात्रवृत्तियां व वेतनादि प्रदान कर आर्य युवकों को इन भाषाओं में निष्णात कर विदेशों में प्रचार के लिये भेजना होगा, ताकि आर्य धर्म के प्रचार का विस्तार सम्पूर्ण संसार में किया जा सके।

(४) वर्तमान समय में आर्यसमाजों द्वारा भव्य व विशाल भवन मन्दिर बनवाने तथा धूमधाम के साथ वार्षिकोत्सव करने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। पर आर्य समाज की जो भी आमदनी हो, उस के खर्च के लिये प्राथमिकता ऐसे पुरोहित-प्रचारक की नियुक्ति को दी जानी चाहिए जो अपना सारा समय समाज के कार्य में लगा सके। आर्य समाज का भवन चाहे कितना ही साधारण क्यों न हो, चाहे वह फूस की झोपड़ी ही क्यों न हो, पर उसमें एक प्रचारक व पुरोहित अवश्य होना चाहिए।

(५) बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में 'गुरुकुल' के नाम से कतिपय ऐसी संस्थाएं स्थापित की गयी थीं, जिनमें महर्षि के शिक्षा विषयक मन्तव्यों को क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया गया था, और कुछ समय के लिये उन्होंने एक आन्दोलन का रूप भी प्राप्त कर लिया था। आवश्यकता इस बात की है कि अब आर्य समाज महर्षि द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति के अनुसार शिक्षण-संस्थाएं स्थापित करने, और उन्हें आधार बनाकर न्यायानुकूल समाज संगठन (गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था) का निर्माण करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दे।

(६) मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं को अपने धर्मों में दीक्षित करने का जो महान् उद्योग आजकल किया जा रहा है, उसे विफल बनाने के लिये आर्य समाज द्वारा संचालित धर्मरक्षाभियान वस्तुतः सराहनीय है। पर आवश्यकता इस बात की है, कि अछूत समझे जाने वाली पिछड़ी हुई जातियों के उद्धार के लिये उस प्रकार का बड़े पैमाने पर प्रयत्न किया जाए, जैसा कि आज से अस्सी-नब्बे वर्ष पहले ओडों, रहतियों, डूमों, मेघों और शिल्पकारों की दशा को सुधारने के लिये आर्य समाज द्वारा किया गया था।

(७) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किसी धर्म, पन्थ या सम्प्रदाय का प्रवर्तन नहीं किया। आर्य समाज की स्थापना में उनका उद्देश्य अत्यन्त महान् व व्यापक था। मनुष्यों की व्यक्तिगत (शारीरिक और आत्मिक) उन्नति के साथ-साथ उनकी सामूहिक (सामाजिक) उन्नति के लिये भी आर्य समाज को प्रयत्न करना है, क्योंकि 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये।' सत्यार्थ प्रकाश में केवल उस धर्म का ही प्रतिपादित नहीं किया गया, जिसका सम्बन्ध मनुष्यों के सदाचरण तथा मोक्ष प्राप्ति के साथ होता है। मनुष्यों के व्यक्तिगत व सामुदायिक जीवन का कोई भी अङ्ग ऐसा नहीं है, जिसके सम्बन्ध में इस ग्रन्थ द्वारा मार्ग प्रदर्शन न किया गया हो।

(८) आर्य समाज द्वारा स्थापित हजारों शिक्षण-संस्थाओं में आज न अनिवार्य रूप से धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है, और न ऐसे अध्यापकों की नियुक्ति को रोका जा सकता है, जिनकी महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों में आस्था न हो। इसका कारण सरकार की नीति के सिवाय और क्या है? आज जो जातिभेद अत्यन्त उग्र रूप धारण करता जा रहा है, उसका मुख्य कारण चुनाव की पद्धति ही तो है। विश्व के इतिहास में इस पद्धति का प्रारम्भ हुए दो सदी से अधिक समय नहीं हुआ है। यह शाश्वत नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजसंस्था के सम्बन्ध में जो मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं, वे सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक हैं।

(९) महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यकलाप का लक्ष्य 'संसार का उपकार' या 'सर्व भवन्तु सुखिनः' है। आइये, हम सम्पूर्ण विश्व के हित-कल्याण व सुख के सम्पादन के लिये प्रवृत्त हो जायें। महर्षि की निर्वाण शताब्दी के इस पुण्य अवसर पर यही संकल्प लेकर हमें अपने घर वापस जाना चाहिए।

आर्य समाजों से अपील

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आर्य प्रतिनिधि सभा की एक मात्र शिक्षण संस्था है। यहां पर निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध हर आर्य समाज ने गुरुकुल की सहायतार्थ कुछ न कुछ धन दान देना निश्चय किया है। गुरुकुल को धन की अति आवश्यकता है। क्योंकि गुरुकुल का हीरक जयन्ती समारोह फरवरी के अन्तिम सप्ताह में मनाया जा रहा है।

अतः समाजों से अपील की जाती है कि वह अपना देय धन गुरुकुल को भेजने का कष्ट करें। ताकि इसके समारोह में सहयोग मिल सके।

—योगेन्द्र स्नातक आर्य
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आवश्यक सूचना

आर्य समाज के उत्सवों के अवसर पर २००) से लेकर ४००) रु० तक का साहित्य बिना मूल्य भेजा जाता है। सेवा से लाभ उठावें।

पता—वेद प्रचारक मण्डल, ६०।१३ रामजस रोड
करोल बाग, नई दिल्ली–५

गढ़मुक्तेश्वर मेले पर वेद प्रचार कैम्प सफलतापूर्वक सम्पन्न

दि० १६ से २० नवम्बर १९८३ तक उत्तर भारत के प्रसिद्ध मेला गढ़मुक्तेश्वर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ गाजियाबाद की ओर से आयोजित वेद प्रचार कैम्प बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कैम्प को सफल बनाने के लिए सभा मन्त्री श्री इन्द्रराज जी कई दिनों से संलग्न थे। श्री चन्द्रकिरन जी शर्मा, श्री विजयपाल जी शास्त्री गाजियाबाद, श्री स्वामी कर्मानन्द जी, श्री राजेन्द्रप्रकाश जी, श्री रूपसिंह जी आदि महानुभाव भी प्रबन्ध एवं अन्य व्यवस्थाओं में संलग्न रहे। नित्यप्रति प्रातःकाल गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न होता रहा। आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ की प्रधानाचार्या श्रीमती लक्ष्मी देवी जी का अपने सहयोगी बहनों के साथ कैम्प में सेवा सराहनीय रही। वेद प्रचार कैम्प में हजारों नर नारियों ने अपने जिले के भजनोपदेशक श्री हरस्वरूप जी तथा मनवीर जी के अतिरिक्त अनेकों अन्य भजनोपदेशकों को भी सुना। इस अवसर पर श्री निरंजनदेव जी स्वर्गीय श्री स्वामी कर्मानन्द जी सभा के महोपदेशक श्री शिवकुमार जी शास्त्री, आचार्य श्री मित्र जीवन जी बम्बई तथा सभा मन्त्री श्री इन्द्रराज जी के ओजस्वी भाषण हुए। श्रीमती शकुन्तला आर्या जी धर्मपत्नी श्री इन्द्रराज जी के मधुर भजन भी होते रहे। श्री आचार्य मित्र जीवन जी, जो ईसाई परिवार में पैदा हुए तथा सपरिवार मुसलमान होकर कुरान शरीफ का विशेष अध्ययन किया, जो कई भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित हैं, इस समय वैदिक धर्म में दीक्षित हैं, ने तथा सभा मन्त्री श्री इन्द्रराज जी ने अपने ओजस्वी भाषणों में देश के विघटन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए हिन्दु जनता को चेतावनी दी कि यदि हिन्दु संगठित न हुआ और इसने छुआछूत और जातिवाद को समाप्त न किया तो निकट भविष्य में वह अल्प मत में आ जाएगा। सभा मन्त्री ने अपने भाषण में प्रान्तवाद, भाषावाद, दहेज प्रथा, मद्यपान, गोहत्या एवं छुआछूत को समाप्त करने के लिए श्री आचार्य मित्र जीवन जी के निर्देशन में एक अभियान चलाने की घोषणा की और सबको इसमें सहयोग करने की अपील की।

—निज संवाददाता द्वारा

उत्सव—

—आर्यसमाज बहराइच का वार्षिकोत्सव ८ से ११ दिसम्बर तक मनाया जायगा। —मन्त्री

—आर्यसमाज उन्नानी का उत्सव ६ से ८ दिसम्बर तक मनाया गया। —प्रबन्धक

—आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग दिल्ली का वार्षिकोत्सव ९ से ११ दिसम्बर तक मनाया जायगा। —रामनाथ सहगल मन्त्री

—नैनीताल आर्यसमाज मन्दिर में १८ नवम्बर १९८३ को उत्तराखण्ड केसरी वाकेलाल जी कन्सल की अध्यक्षता एवं डा० कच्छाहारी के पौरोहित्य में दीपक (पुत्र हरीशचन्द्र जी जोशी, अल्मोड़ा) का विवाह संस्कार गीता (पुत्री-रामदत्त जी जोशी, अल्मोड़ा) के साथ सम्पन्न हुआ। —त्रिलोक रावत मन्त्री

—दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अन्तर्गत सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन में आचार्या सुशीलादेवी शास्त्री अधिष्ठाता महिला प्रचार विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए युवा पीढ़ी को महर्षि के सिद्धान्तों के अनुकूल अपना जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। —सुशीलादेवी

ऋषि दयानंद निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के स्वागताध्यक्ष

श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट

आर्यसमाज वेद पर आधारित सार्वभौम संस्था है—प्रो. रत्नसिंह

आर्यसमाज लखनऊ [illegible] पर प्रवचन करते हुए प्रो० रत्नसिंह ने [illegible] सिद्धान्तों पर आधारित एक सार्वभौमिक संस्था है। यह कोई संकीर्ण व साम्प्रदायिक संस्था नहीं। सद्गुणों के आधार पर जीवन-यापन करते हुए जो आर्योचित व्यवहार करते हैं, वे सब आर्य हैं।

आर्यसमाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए उन्हें अपौरुषेय मानता है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

आपने बताया कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह मानता है कि किसी भी कार्य के सम्पादन के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं। उपादान कारण, निमित्त कारण तथा साधारण कारण। आर्यसमाज प्रकृति, जीव तथा ईश्वर तीनों को अनादि मानता है। दूसरे अर्थ में हम कह सकते हैं कि आर्यसमाज त्रैतवाद का पक्षधर है।

आपने बताया कि आर्यसमाज ईश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी और दयालु तथा सर्वव्यापक मानता है। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने व्यापक दृष्टिकोण को सम्मुख रखकर समाज की स्थापना की थी उन्होंने आर्यसमाज के दस नियम निर्धारित किये जिनमें प्रथम तीन नियम सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं तथा शेष सात नियम नीति से सम्बन्धित हैं। उन्होंने इस आरोप का खण्डन किया कि आर्यसमाज एक साम्प्रदायिक संस्था है।

भूल-सुधार

४ दिसम्बर के 'आर्यमित्र' पृष्ठ ७ पर स्वामी दयानन्द और इस्लाम शीर्षक लेख छपा है, इस लेख के लेखक श्री गुरु भजनलाल आर्य बन्धु बी० ए० बी० टी० साहित्यरत्न ३५९/१५१ कटरा खुदायार खाँ सआदतगंज लखनऊ हैं, खेद है कि लेख में लेखक का नाम छूट गया। —नारायणप्रिय प्रबन्ध सम्पादक

ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में सभामन्त्री श्री इन्द्रराज जी का भाषण

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के शुभवसर पर आयोजित यजुर्वेद पारायण महायज्ञ मे (१) दिनांक २८ अक्टूबर १९८३ को सायंकाल महर्षि दयानन्द उद्यान की यज्ञशाला मे सभा मन्त्री श्री पं० इन्द्रराज जी का सुमधुर भक्ति संगीत हुआ।

(२) दिनांक २९ अक्टूबर १९८३ को यज्ञ वेदी पर ही प्रवचन हुआ। जिसमे महामन्त्री जी ने आज के वैज्ञानिक युग के सदर्भ मे यज्ञ की परमावश्यकता पर प्रकाश डाला। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण शब्द प्रदूषण को दूर करने का एकमात्र उपाय यज्ञ बताया।

(३) दि० १ नवम्बर १९८३ को मध्याह्न २ बजे महर्षि दयानन्द नगर के मुख्य पण्डाल मे आयोजित प्रान्तीय सम्मेलन में सभा मन्त्रीश्री प० इन्द्रराज जी का संस्कारो के महत्व पर ओजस्वी व्याख्यान हुआ। जिसमे उन्होने आज के युग मे भ्रष्टाचार घूसखोरी, कालाधन संग्रह और तस्कर व्यापार को दूर करने का एकमात्र उपाय वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम को बताया। बड़े जोड़े समय और ओजस्वी शब्दो मे बताया कि संस्कारो द्वारा ही मानव निर्माण योजना भलीभांति सफल हो सकती है, व्यक्ति संस्कारो का पुतला है। संस्कारो से ही मनुष्य देवता बन सकता है।

—सन्दीप कुमार

डा० भवानीलाल [illegible] द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द [illegible] शोधपूर्ण जीवनी का विमोचन

अजमेर ४ नवम्बर—आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा डेढ लाख की लागत से प्रकाशित 'नवजागरण के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती' शीर्षक ६३० पृष्ठो मे समाप्त जीवन चरित का विमोचन राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री शिवचरण माथुर के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को इस ग्रन्थ की प्रति सादर भेंट की गई। डा० भारतीय ने यह जीवनचरित अपने वर्षों के अध्ययन, अनुसंधान तथा गवेषणा के पश्चात् लिखा है। —समाचारदाता

उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजो के नाम परिपत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित आर्यसमाजो के कार्य एव कागजातो के निरीक्षण हेतु निरीक्षक महोदय पहुचेंगे। कतिपय आर्यसमाजों मे नियमित साप्ताहिक अधिवेशन नहीं हो रहे हैं। कृपया ऐसी आर्यसमाजें सूचित कर देवें। कार्यक्रम मण्डल एव जिलेवार तैयार हो रहा है और प्रत्येक आर्यसमाज तक हमारे निरीक्षक महोदय जायेंगे यदि किसी आर्यसमाज के अधिकारी/सदस्यो को कुछ जानकारी देनी है वे भी निरीक्षण के समय अवश्य दे देवें तथा निरीक्षक महोदय को सहयोग प्रदान करें।

—चन्द्रपाल आर्य, एम० काम० एल० एल० बी०
मुख्य निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
मन्त्री आर्यसमाज ब्रह्मपुरी, मेरठ

आर्यसमाज और हिन्दी

(पृष्ठ ३ का शेष)

सम्पुष्टि करता है। द्विवेदी युग के सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', तथा रामनरेश त्रिपाठी प्रभृति कवियो की रचनायें इसकी साक्षी हैं। यहा तक कि प्रख्यात युगान्तरकारी कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने 'महर्षि दयानन्द और युगान्तर' लेख लिखकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के महत्व को स्वीकार किया था। आर्यसमाज के क्षेत्र में जिन कवियों की सेवायें अविस्मरणीय रही हैं उनमें सर्वश्री नारायणप्रसाद 'बेताब', और प० नाथूराम शंकर शर्मा के नाम ऐसे हैं, जिन्होने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य के इतिहास मे अपनी एक विशिष्ट छाप छोड़ी है। श्री 'बेताब' जहा उत्कृष्ट नाटककार तथा अभिनेता थे वहीं काव्य रचना के क्षेत्र मे भी उनकी विशिष्ट देन थी। कदाचित् हमारे बहुत से पाठकों को यह विदित होगा कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगों में गाये जाने वाले—

अजब हैरान हू भगवन्, तुम्हे क्यो कर रिझाऊ मै।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा मे लाऊ मैं।

गीत के लेखक श्री बेताब ही थे। उन्होने इस गीत के द्वारा जनता मे जहा निराकारोपासना की भावनाए प्रचारित कीं इसमे तर्क एवं शिष्ट व्यग्य की झलक भी दृष्टिगत होती है। 'शंकर' जी ने अपनी रचनाओ मे आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियो का अच्छा विश्लेषण किया है।

आर्यसमाज के इस ज्वलन्त अतीत की पावन परम्परा के अमर आलोक को देखकर हम यह निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि उसने सर्वथा ऐतिहासिक योगदान दिया था वहीं उसकी सवाहिका एव प्रेरणा शक्ति हिन्दी की अभिवृद्धि की दिशा में भी उसका कम महत्व नहीं कहा जा सकता। जब-जब भी हिन्दी के अस्तित्व को खतरा हुआ तब-तब ही आर्यसमाज तथा उसके अनुयायियो ने देश को दिशा देकर उस के महत्व को प्रतिष्ठापित करने मे अपने कर्तव्य का पालन किया। इसका ज्वलन्त प्रमाण सन् १९५७ मे आर्यसमाज द्वारा पजाब मे चलाया गया 'हिन्दी सत्याग्रह' है। अब भी हिन्दी का अस्तित्व खतरे मे है। आर्यसमाज को इस दिशा में पहल करके देश को दिशादान देना चाहिये। काश, महर्षि दयानन्द के निर्वाण शताब्दी उत्सव पर हम उससे कुछ प्रेरणा लेकर 'आर्यभाषा हिन्दी' की प्रतिष्ठा मे अपना उल्लेखनीय योगदान दे सकें।

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी शिवशंकर को सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर मे दयानन्द नगर के मुख्य पण्डाल मे आयोजित वेद सम्मेलन मे गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्रह्मचारी शिवशंकर को सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ करने तथा परीक्षा में शत-प्रतिशत अङ्क प्राप्त करके सर्व प्रथम आने पर विशाल जनसमुदाय के समक्ष पुरस्कृत किया गया। श्री स्वामी ओमानन्द जी अध्यक्ष शताब्दी समारोह ने अंकन १११) रु० की पुस्तकें पुरस्कार के रूप में दीं।

—इन्द्रराज मन्त्री

रजि० स० २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ३/ ०
लखनऊ-बा० मार्गशीर्ष १७, मार्गशीर्ष शु० १३, विक्रम सम्वत् २०४० वि०, १८ दिसम्बर सन १९८३ ई०

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द महाराज

२३ दिसम्बर सन १९२६ को [illegible]
मदान्ध मुसलमान ने आपको गोली मार कर शहीद कर [illegible]

वार्षिक	१५)
छमाही	८)
विदेश में	१२ पौंड

सम्पादक—
आचार्य रमेशचन्द्र एम०ए०

प्रार्थना

समह् मेवा राष्ट्र स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाऽहम् ॥

अथर्व० ३-१९-२

अर्थ—हम स्वराष्ट्र गौरव की रक्षा करने का प्रण लेंगे राष्ट्र शक्ति संरक्षण वर्धन के हित तन मन देंगे।

शत्रु गर्व खण्डित कर देंगे कोटि कोटि बाहू बलवान ।
राष्ट्र यज्ञ की अग्नि शिखा पर जीवन कर देंगे बलिदान ॥

आर्यमित्र

लखनऊ—रविवार, १८ दिसम्बर १९८१, दयानन्दाब्द १५८
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८२

वेद का मनन

[श्री प०इन्द्रराज जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा]

कौन तुझे नियुक्त करता है? और किसलिए ?

ओं कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति । कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥ (यजु० १-६)

शब्दार्थ—(कः) कौन (त्वा) तुझको (युनक्ति) नियुक्त करता है? (स) वह जगदीश्वर (त्वा) तुझे (युनक्ति) नियुक्त करता है। (कस्मै) किसलिए (त्वा) तुझे (युनक्ति) नियुक्त करता है (तस्मै) सत्यव्रत आचरण रूप यज्ञ के लिए (त्वा) तुझे युनक्ति) नियुक्त करता है। हे स्त्री पुरुषो अथवा कर्म करने वालो या विद्या पढ़ने-पढ़ाने वालो (वाम्) तुम दोनो को (वेषाय) शुभ गुण और विद्याओं की व्याप्ति के लिए नियुक्त करता है।

भावार्थ—इस मन्त्र मे प्रश्न है कौन तुझे नियुक्त करता है? उत्तर है वह जगदीश्वर! संसार में एक अद्भुत चिन्तनीय विषय है कि मनुष्य की प्रवृत्ति, सब कुछ सांसारिक वस्तुओं के उपलब्ध होने पर किस आधार पर है? और विशेष रूप से अच्छाई की तरफ कौन प्रेरित करता है? इसका निश्चित उत्तर वेद मन्त्र देता है कि वह जगदीश्वर! सारे संसार को बनाने वाला तथा सबका कल्याण चाहने वाला जगदीश्वर ही प्राणिमात्र करने के लिए मानवमात्र को अच्छाई की तरफ प्रेरित करता है। जब कुछ व्यक्ति पाप करने लगता है तो वह हितैषी प्रभु मन मे भय, शंका और लज्जा पैदा कर व्यक्ति की रक्षा करता है। जब कोई व्यक्ति अच्छा काम करता है तो वह प्रेरक देव अन्तःकरण मे प्रसन्नता और उत्साह पैदा करता है। उस सर्वरक्षक की प्रेरणाओं से व्यक्ति ऐसा अनुभव करता है जैसा कि उस जगदीश्वर ने व्यक्ति को अच्छाई के लिए नियुक्त किया हो।

दूसरा प्रश्न भी बड़े महत्व का है, किसलिए वह जगदीश्वर नियुक्त करता है? प्रयोजन क्या है? वेद मन्त्र मे उत्तर भी विस्पष्ट है (तस्मै) पूर्व मन्त्र मे वर्णित सत्यव्रत आचरण रूप यज्ञ के लिए वह मंगलप्रेरक व्यक्ति को प्रेरित करता है। ऐसा! जैसा कि उसने यज्ञ के लिए नियुक्त ही कर दिया हो।

संसार में मनुष्य का दो प्रयोजनों मे प्रवृत्त होना चाहिये—

१—प्रथम अत्यन्त पुरुषार्थ अर्थात तीन प्रकार के दुःख [आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक] को दूर कर शरीर की आरोग्यता से चक्रवर्ती राज लक्ष्मी को प्राप्त करना

२—द्वितीय सब विद्याओं को अच्छा प्रकार पढ़ कर उनसे [illegible] होकर उनका प्रचार प्रसार करना। इन दोनों प्रयोजनों को [illegible] करने के लिए इस मन्त्र ने कर्मणे शब्द प्रथम [illegible] वेषाय।

इन दोनो प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त होने के लिए कौन प्रेरित करता है? वह ही मुख्य रूप [illegible] संसार का रचयिता [illegible] और मंगलकर्ता जगदीश्वर।

आइये उसकी शरण मे चलें। आलस्य छोड़ें। पुरुषार्थी बनें वह जगदीश्वर हमें नियुक्त करता है। वह ही तो प्रेरक है। वह मनुष्य यत्न करने विद्वान बनने, श्रीमान बनने, चक्रवर्ती राज्य लक्ष्मी को प्राप्त करने, विविध विद्याओं का अध्ययन कर विद्या विलासी बनने की सतत प्रेरणा करता रहता है। उस अन्तर्यामी भगवान् की प्रेरणाओं को सुनें और उनसे लाभ उठावें।

सम्पादकीय

हुतात्मा श्रद्धानन्द

दिव्य ज्योति अन्धकार के पटल को भेदकर अपनी प्रकाश किरणें बिखेर देती है और पथ विभ्रान्तों को सुगम दिशा का बोध करा देती हैं। पावस की अभ्रमण्डित निशा में सौदामिनी की क्षणिक विद्युत [illegible] गर्त मे गिरने वालों को बचा लेती है, इसी प्रकार से [illegible] जो महान आत्माएं होती हैं वह अपने त्याग एवं बलिदान [illegible] को [illegible] और [illegible] संसार में अपनी अमिट [illegible] सफल होती हैं।

[illegible]

महर्षि दयानन्द सरस्वती का [illegible] बैरिस्टर मुंशीराम [illegible] को उसी प्रकार स्पर्श [illegible] हुआ जैसे लोह को पारस का। ऋषिवर से स्वर्णाभा को प्राप्त करके मुंशीराम जो पहिले महात्मा बने और बाद में श्रद्धानन्द। वह दिन धन्य था जब महात्मा मुंशीराम त्याग के पथ के पथिक हुए तथा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। देश और समाज मे ख्याति अर्जित की। सर्वप्रिय हुए। मुसलमानों तक ने उनका आदर करके जामा मस्जिद के सर्वोच्च स्थान पर उन्हें आसीन करके उनका प्रवचन सुना। अफ्रीका से लौटकर गांधी जी भी [illegible] श्रद्धानन्द के साथ गुरुकुल में रहे। उस समय के इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्मान मे इतना तक कह दिया [illegible] हजरत ईसा मसीह [illegible] तो उनका [illegible] और [illegible]।

[illegible] आलोचना [illegible] हुए और उनके भाषण का प्रत्येक शब्द ब्रिटिश साम्राज्य पर वज्र की भांति गिर रहा था। सत्पथ के व्रती श्रद्धानन्द जी की प्रतिभा और विवेक के वह दिव्य क्षण थे जब कांग्रेस से अलग होकर शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय हुये। कांग्रेस मे गांधी ने मुस्लिम सम्प्रदाय को आकर्षित करने के लिए खिलाफत आन्दोलन को अपनाया और मुसलमानों ने गांधी की दुर्बलता का लाभ उठाकर तब्लीग (इस्लाम प्रचार और धर्म परिवर्तन) का व्यापक प्रसार किया। स्वामी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द और उनका साहित्य

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी० ९ ए० इ० १, ओबरा [मिर्जापुर]

स्वामी श्रद्धानन्द के नाम का स्मरण आते ही एक अपार श्रद्धा से हमारा मन अनुप्राणित हो जाता है। श्रद्धानन्द वीरता का सैनिक था, भगवान् की सृष्टि का प्रदीप्त योद्धा, मनुष्यों और उसके सामूहिक प्रयासों का शिल्पी, समस्याओं का निर्भीक एवं सफल समाधान, दृढ़ आत्मशक्ति और आत्म विश्वास सम्पन्न और अजेय था। श्रद्धानन्द जी महाराज न केवल आदर्श नेता, सफल समाज सुधारक, प्रभावशाली वक्ता गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के जन्मदाता और केवल राजनैतिक नेता न थे, वे एक कुशल लेखक भी थे। उनकी लिखी पुस्तकों से भारतीय जनता को केवल प्रेरणा ही नहीं दी, उन्होंने साहित्यकारों का मार्ग प्रदर्शन भी किया। हिन्दी साहित्य में आत्म कथा लिखने का प्रारंभ स्वामी श्रद्धानन्द ने 'कल्याण मार्ग का पथिक' लिख कर किया। बाद में 'सत्य के प्रयोग' शीर्षक द्वारा गांधी नेहरू और राजेन्द्र प्रसाद ने आत्म कथायें लिखीं। साहित्य के क्षेत्र में श्री हरिवंश राय बच्चन आदि ने आत्म कथा लिखी। स्वामी जी महाराज ने यह आत्मकथा पहले उर्दू में सद्धर्म प्रचारक में धारावाही रूप में "मेरी जिन्दगी नशेबो फराज" शीर्षक से लिखी और फिर उसका हिन्दी में अनुवाद किया। स्वामी श्रद्धानन्द सद्धर्म प्रचारक भी उर्दू में निकालते थे। इसका पहला अंक प्रथम वैशाख १९४६ वि० सं० (१३ अप्रैल १८९०) को उर्दू में जालन्धर से प्रकाशित हुआ था। १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के बाद यह गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित होने लगा। १ मार्च १९०७–१८ फाल्गुन १९६२ से प्रचारक ने अपना उर्दू चोला छोड़कर हिन्दी रूप ग्रहण किया। १६ अक्टूबर १९१२ (१ कार्तिक १९६९) को प्रचारक का अन्तिम अंक गुरुकुल कांगड़ी से निकला और उसके बाद दिल्ली चला गया। श्री मुंशीराम ने इसे सम्वत् १९६५ से आर्य प्रतिनिधि सभा को दे दिया था। १९६९ में कांगड़ी में सद्धर्म प्रचारक प्रेस में आग लगी। कागज, लकड़ी का सामान तो जल गया। टाइप पिघल गया। उसके बाद दिल्ली ले जाने पर इसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। इसके बाद 'श्रद्धा' और अंग्रेजी में लिबरेटर का प्रकाशन किया। हिन्दी के प्रबल समर्थक होते हुए उन्होंने दक्षिण भारत में अपने विचारों के प्रचार के लिए, अछूतों की दयनीय स्थिति को देखकर बहुत दुःखी हुए थे और उसे दूर करने का प्रबल आन्दोलन करने तथा अपने विचार दक्षिण भारतीयों तक पहुंचाने के लिए इस पत्र का संचालन अंग्रेजी में करते रहे। इस पत्र में राष्ट्रीय महासभा के इतिहास और विकास पर २६ लेख प्रकाशित हुए। इनमें स्वामी जी के अन्तिम विचार हैं।

स्वामी जी की पुस्तकों को हम तीन भागों में बांट सकते हैं। (१) धार्मिक तथा सामाजिक–उनकी धार्मिक पुस्तकोंमें (१) पारसी-मत और वैदिक धर्म–इस पुस्तक में पारसीधर्म पर वैदिक धर्म का कितना ऋण है और उसका मूल स्रोत वेद है, इसका प्रतिपादन किया गया है।

(२) मातृभाषा का उद्धार—महर्षि दयानन्द ने हिन्दी का नाम आर्यभाषा रखा और स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्रभाषा का नाम मातृभाषा रखा और इसका सबसे पहले प्रयोग किया। इसमें हिन्दी के महत्व पर तथा शिक्षा के माध्यम मातृभाषा बनाने पर जोर दिया है और सद्धर्म प्रचारक को आर्थिक घाटा सहकर हिन्दी में परिवर्तित किया।

(३) वेद और आर्य समाज–इसमें आर्य समाज का वेदों से संबंध बतलाया तथा वेदों के अध्ययन के लिए बल दिया।

(४) मानव धर्म शास्त्र तथा शासन पद्धति–इसमें व्यक्ति के अधिकारों, देश की शासन पद्धति का आदर्श, और मनु के धर्मशास्त्र की रोम के जस्टीनियन से तुलना की गई है।

(५) आर्यों की नित्यकर्म पद्धति (६) पांच महायज्ञ की विधि (७) विस्तार पूर्वक संध्याविधि (८) आचार अनाचार और छूतछात (९) ईसाई पक्षपात और आर्य समाज (१०) गढ़वाल में १९७५ का दुर्भिक्ष और उसके निवारणार्थ गुरुकुल दल का कार्य (११) गुरु के बाग के सत्याग्रह के संबंधमें की गई जेल यात्रा का वर्णन (१२) ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार (३) जाति के दीनों को मत त्यागो–अर्थात् सात करोड़ (अब बीस करोड़) अछूतों की रक्षा करने का निर्देश दिया है।

(१४) आर्यों के नित्यकर्म (५) आर्य पथिक लेखराम–वह अमर शहीद लेखराम जी की सबसे प्रामाणिक जीवनी है। (१६) आदिम सत्यार्थ-प्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धांत। (१७) स्वामी श्रद्धानन्द जी महराज के धर्मोपदेश। जिसे लाला लब्बूराम जी नैय्यर ने संगृहीत किया और मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी ने प्रकाशित कराया।

अंग्रेजी भाषा में लिखी पुस्तकें

(१८) हिन्दू संगठन–सेवियर आफ दी डाइंग रेस–इसमें हिन्दू समाज को क्षीण करने वाली कुरीतियों –अस्पृश्यता बाल विवाह आदि का तथा इस्लाम और ईसाईमत द्वारा हिन्दू समाज पर होने वाले आक्रमणों का वर्णन तथा हिन्दू जाति की रक्षा के उपाय बताये गये हैं।

(१९) दी फ्यूचर आफ् आर्य समाज–ए फोरकास्ट। (२०) दी आर्य समाज एन्ड इट्स डिट्रेक्टर्स–ए विण्डीकेशन–सितंबर १९०९ में पटियाला के आर्य समाजियों पर चलाये गए अभियोग में आर्य समाज के प्रति कहे। गई कलंकित बातों को दूर करने और इसके वास्तविक स्वरूप दर्शाने को यह पुस्तक लिखी गई।

उर्दू भाषा की पुस्तकें

(२१) अञ्जा एतकाद और सूफिया जहाद [२२] आर्य समाज के जाना जाद दुश्मन [२३] सात लेक्चरों का मजमूआ [२४] यज्ञ का पहला अंग स्वस्ति वाचन और शान्ति प्रकरण का उर्दू अनुवाद। [२५] एक मांस प्रचारक महापुरुष की गुप्त लीला का प्रकाश [२६]

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द वचनामृत

[श्री धर्मवीर विद्यालंकार, पीलीभीत]

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने समय में अनेकों क्रान्तिकारी कार्य, जो जिनकी प्रेरणा उन्हें महर्षि दयानन्द से मिली थी, किए, जैसे कि स्वराज्य आन्दोलन, अछूतोद्धार शुद्धि आंदोलन, जन्मगत जातिपांति का खण्डन, गुरुकुल कांगड़ी एवं हिन्दू महासभा की स्थापना आदि। ये समस्त कार्य, उनके बाद आने वाली पीढ़ियों में भी चलते रहे। एक कार्य ऐसा है, जिसका अनुकरण आज तक कोई न कर सका। वह है दिल्ली की जामा मस्जिद में उनका प्रवचन। वे वहां अचानक नहीं पहुंचे थे। उन्हें मुसलमानों के कर्णधार नेताओं ने मुस्लिम जनता की दृढ़ मांग पर बड़े आग्रह, आदर एवं सत्कार से आमंत्रित किया था। स्वामी जी में ऐसा कौन सा जादू था जो मुसलमानों के सिर पर चढ़ चुका था। वे शुद्धि आंदोलन (मुसलमान बने हिन्दुओं को पुनः हिन्दू परिवर्तन) के संस्थापक एवं कट्टर समर्थक थे। कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति से असन्तुष्ट होकर, जिस कांग्रेस के वे अध्यक्ष भी रहे थे, उन्होंने हिन्दू महासभा की स्थापना की थी। ऐसे स्वामी श्रद्धानन्द जी के उस 'जादू' को खोजना परम आवश्यक है। इस जादू की आज के सन्दर्भ में बड़ी आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी धीर-गम्भीर वाणी में किये गये भाषण, सरल हृदयग्राही भाषा में लिखे गये लेख, लोकहितकारी कार्यों को सम्पादन करने की आकर्षक एवं विश्वसनीय कार्य पद्धति की खोज निकालने की प्रबल इच्छा है। इसी सन्दर्भ में मुझे स्वामी जी का एक लेख मिला है, जिसे मैं पाठकों की सेवार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं।

यह लेख सन् १८९७ में लिखा गया था। तब स्वामी श्रद्धानन्द अभी सन्यासी नहीं बने थे। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के बाद वे 'श्रद्धानन्द' बने थे। और यह लेख गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से ४-१/२ वर्ष अथवा 'गुरुकुल' की स्थापना २-१/२ पूर्व लिखा गया था। इस लेख से १४ वर्ष महर्षि दयानन्द का निर्वाण हो चुका था और पं० लेखराम जी का बलिदान सम्भवतः ताजा था। मुंशीराम एडवोकेट से मुंशीराम जिज्ञासु हुये थे। हिन्दू जाति की दुर्दशा का दर्द इस लेख में स्पष्ट है। आज के सन्दर्भ में यह लेख सर्वथा उपयोगी है। मुंशीराम जिज्ञासु के उस 'जादू' को समझने में सहायता देता है जिसके कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा-मस्जिद की वेदी से अपना प्रवचन गायत्री मन्त्र से आरम्भ किया था। और जिसकी पुनरावृत्ति आजतक नहीं हो सकी।

इस लेख का अविकल रूप प्रस्तुत है -

ब्राह्मसमाजियों से निवेदन :-

श्रेष्ठ पुरुषो! बतलाओ कि वे कौन से सिद्धान्त थे, जिन्होंने एक लंगोट-धर साधु को वह शक्ति प्रदान की थी जो इस समय महाराजाओं में भी दिखाई नहीं देती। पता लगाओ कि आर्य समाज के स्थापित करने से ऋषि का क्या प्रयोजन था? दयानन्द की जीवन यात्रा के मार्ग पर पथ-प्रदर्शन के लिये चिह्नों की खोज करो और जिस समय तुम्हें उन्नति का शिखर बड़ा ऊंचा और भयावना प्रतीत हो, उस समय इस ज्योति-स्तम्भ की ओर टकटकी लगाकर ऊपर चढ़ते जाओ फिर देखो, कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे हिन्दू भाइयो! ब्राह्मण-धर्म का अभिमान करने वालो! तुम्हारे लिये महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। तुम पुराणों में सुनते आए हो कि कलियुग में भी सतयुग की लड़ी वर्तमान रहेगी। अपने हृदय से पूछो कि सतयुग किस प्रकार आ सकता है। तुम्हें बतलाया जाता है कि दयानन्द ने तुम्हारे धर्म का नाश कर दिया है। सुनी हुई बातों को कुछ समय के लिये त्याग कर के, घटनाओं के आधार पर, जरा विचार तो करो कि दयानन्द ने धर्म का नाश किया है कि तुम्हारे बिछुड़े हुए धर्म को तुमसे फिर मिलने की चेष्टा की है। क्या तुम्हारा हृदय साक्षी देता है कि -

वेदों का सम्मान करने वाला दयानन्द,
वेदों के प्रेम में पागल कहलाने वाला दयानन्द,
आर्य ग्रन्थों में रुचि रखने वाला दयानन्द,
ऋषियों की निन्दा सहन न करने वाला दयानन्द,

कभी भी धर्म को हानि पहुंचा सकता है!!! क्या तुम अस्वीकार कर सकते हो कि दयानन्द ने तुम्हें उन वेदों का पता दिया, जिनका कि चिरकाल से तुमने दर्शन तो क्या, श्रवण भी नहीं किया था। आओ, प्रकाश के एकाएक प्रगट हो जाने पर चुंधिया मत जाओ। सावधान होकर दृष्टि डालो। यह प्रकाश तुमको अविद्या रूपी गर्त से निकालने वाला है। प्रकाश का पता देने वाले के जीवन को दोष दृष्टि से पढ़ो, ताकि तुम्हें प्रकाश से लाभान्वित होने का लाभ प्राप्त हो सके।

बिछुड़े भाइयों से अपील :—

हे मेरे बिछुड़े हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो! अविद्या की अन्धकारमयी रात में जबकि हाथ पसारा नहीं सूझता था, तुमने भाइयों के हाथ छोड़कर अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया। अब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हो गया कि तुमने भूल की है, और तुम्हारे आत्माओं ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो, तो तुमने व्याकुल होकर आतुर नयनों से अपने भाइयों की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते? परन्तु अब अन्धकार दूर हो गया है। वेदरूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने इस भाई के जीवन को पढ़ो, जिसने कि तुम्हारे लिए-नहीं नहीं, केवल तुम्हारे लिये ही नहीं, प्रत्युत सत्य की खोज करने के लिये,

अपनी जान को हेय समझा,
सांसारिक सुख तथा आनन्द को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे,
सिर को झुकाए हुए, अपने मिशन को पूरा किया॥

हे शिक्षा प्राप्त भाइयों! इतिहास का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने वालो! इस सदी शताब्दी में ऋषि जीवन क्या एक अचम्भा नहीं है? भववादियों के अद्भुत से अद्भुत न्यायशास्त्रों से बढ़कर, क्या यह ऋषि जीवन एक अद्भुत और आश्चर्यमय चमत्कार नहीं है?

हे दयालु पिता? प्रत्येक मनुष्य को, चाहे वह किसी देश, स्वभाव जाति अथवा सम्प्रदाय का हो सामर्थ्य दे कि वह दयानन्द का जीवन पढ़ते हुए और इसके मिशन पर विचार करते हुए, उन सिद्धान्तों को दयानन्द से पृथक् करके उन पर विचार करने की शक्ति प्राप्त करे जिनके प्रचार के लिये तुम्हें दयानन्द को विशेष शक्तियां प्रदान की थी।

देश दशा

[डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम' डी-लिट्०, कानपुर]

मेरी भूमि मेरे पूर्वजों की ऋषियों की भूमि,
देव भूमि आज दस्युओं से पदाक्रान्त है।
वेद ध्वनि मन्द बन्द दिव्यता के द्वार सभी,
छल-छन्द-फन्द में फसी है शान्त क्लान्त है।

नाम देववाणी के भुलाने, फैले म्लेच्छ शब्द,
दूर है स्वकीय, परकीय प्रति भ्रान्त है।
देश अपना ही परदेश जैसा जान पड़े,
वेशभूषा, खानपान, सब में विभ्रान्त है।१।

खौलता है रक्त, अहंकार किलकारता है,
चित्त भी टटोलता है भूल जो बनी थी शूल।
हाथ से गई स्वभूमि ममता की ऊर्मिधूम,
परता विभाजिनी का पास बड़ा प्रतिकूल।

कुभा, स्वात, बालातुर, तक्षशिला मेरे कहां ?
गज, गौर केकय, गांधार शिर छाई धूल।
छलक उठा था किन्तु आर्य फिर एक बार,
मौर्य ने चणक-पुत्र-पाठ पढ़ा, की न भूल।२।

पुण्य भूमि भारत के गौरव-गगन मध्य,
एक बार फिर आर्य केतु फहरा उठा।
बुद्ध का सन्देश लंका, ब्रह्म, स्याम, चीन, रूस,
कोरवी, जापान, मंजुषी में लहरा उठा।

प्रणत सभी थे चरणों मे साधु, वीर व्रती,
पापी अनाचारियों का उर थहरा उठा।
विश्व इतिहास मे यशस्वी आर्य गौतम की,
गाथा का विमल शंख घोष घहरा उठा।३।

देश की समृद्धि भी को देख चोर बाहर के,
शासन जमाने, लगे आन, करवाल ले।
चौंकें हम कैसा अभियान धम आंट मे है,
चग पै चढ़े हैं शत्रु बाण विकराल ले।

अपने भी साथ थे विदेशी भालुओं का अब,
बांधना ही चाहे जल का ही मत्स्य जाल ने।
पुण्य मित्र देखो इन्हें स्वाद भी चखा था,
गाढ़ा दस्यु दल लोट न सुरक्षित हो भाल ले।४।

शक, सीथियन, हूण, यवन, मंगोल, तुर्क,
आये तो समाये या पचाये अन्तराल मे।
सब की प्रथायें भिन्न, पथ भिन्न, भाषा भिन्न,
जसे तसे बने एक सम चाल ढाल में।

मानव के नाते बन्धुता का परिवार बढ़ा,
दूर रहे फिर भी विवाह, मृत्यु काल में।
रहते यहीं हैं, गीत गाते किसी गैर के ही,
एकता विनाशी इनके ही व्याल गाल में।५।

आर्य बन रहते तो प्रश्न था न एकता का,
दस्युता के कृत्य ही अनर्थ उपजाते हैं।
प्रेम व्यवहार कहां, छाया घोर ईर्ष्या-द्वेष,
काम न करेंगे माल कूद-कूद खाते हैं।

शून्य ज्ञान से हैं किन्तु गर्व ज्ञान का भी लिये,
नाता स्नेह का न, एक धन का निभाते हैं।
जसे बने वैसे धन आवे पास स्वांग साध,
धन न मिला तो बेटे बाप को भुलाते हैं।६।

देख दस्युता का रूप, वैर भाव, हिंसा, होड़,
जीवन मे छा ई चारों ओर से विषमता।
अन्न पान साधन मे, शिक्षा अनुशासन मे,
जहाँ देखो, वहीं मूर्तिमान है अधमता।

साधु है हताश, चोर डाकुओं का त्रास,
मद्य मांस की कु- [illegible] प्राण कहीं रमता।
क्रूर कर्म कुनीति, मांस सस्ता मरना किस्ता,
जान सस्ती जान, भागी कहां दूर मोह ममता।७।

मेरे देश जिसने दिख [illegible] दयानन्द,
अभी अभी राम कृष्ण, मोहन विवेकानन्द।
तिलक, नात, चन्द्रशेखर, सुभाष वीर,
बलिदानी भावना से जिनको किया बुलन्द।

आज वही दस्यु आय-आत्मता विदारण मे,
खेल रहे विकट कपट के हैं छल-छन्द।
दोष चला शाख से जो परो तक व्याप्त हुआ,
अब व्यथा वेदना है अंग-अंग मे अमन्द।८।

स्वामी श्रद्धानन्द

अमर हुए हैं देश धर्म की, बलिवेदी पर हो कुर्बान।
श्रद्धानन्द ने फूंका देश मे, स्वतन्त्रता का शंख महान।।
ऋषि दयानन्द के शिष्य बनकर श्रद्धानन्द धर नाम लिया।
तन-मन-धन सब अर्पण करके, देश धर्म का काम किया।।
संगीनों आगे दिल्ली में, सीना खोलकर अड़े रहे।
झुकी न जब तक गोरों की गर्दन, तब तक वो वां खड़े रहे।।
बने विधर्मी जो हिन्दू भाई, शुद्धी कर स्वीकार किया।
गले लगाया उन्हें मिलाया, वेद धर्म प्रचार किया।।
संकट मे वो रुके न पल भर, हरदम आगे कदम धरे।
काल भी आया सम्मुख उनके, फिर भी उससे नहीं डरे।।
किया कांगड़ी गुरुकुल कायम, जो है वो गङ्गा के तीर।
जंगल में भी मंगल कर दिया, ऐसे थे वो अनुपम वीर।।
संगठन करके देश बचाया, हमें लक्ष्य तक पहुंचाया।
आजादी का सुख सन्देशा, घर घर जा जा समझाया।।
छोटा बड़ा नहीं है कोई, दूर छूत का भूत किया।
धर्म कर्म का शुभ मर्म बताकर अविद्या अंधेरा दूर किया।।
गोली निशाने खा सीने पर, श्रद्धानन्द हमे जगा गये।
रुकने ना पाये शुद्धी कार्य, कर्त्तव्य हमारा बता गये।।
मनुज नहीं वह देव तुल्य थे, जान गया 'शादा' संसार।
जीवन किया देश के अर्पण, नमस्कार मेरा शतबार।।

—बनवारीलाल 'शादा' प्रधान आ० स० मौडल बस्ती, नई दिल्ली

सभा मंत्री श्री इन्द्रराज जी का पंजाब के दौरे का विवरण

२१/११/८३ की रात्रि को जनता एक्स प्रेस द्वारा मैंने अमृतसर के लिये प्रस्थान किया। गाड़ी में कुछ मुसलिम परिवारों के अमृतसर के लिए प्रस्थान ने कुछ जिज्ञासा पैदा की। मालूम करने पर पता चला कि पाकिस्तान लाहौर से ट्रेन द्वारा सीधा सम्पर्क होने के कारण मुसलिम व्यापारी बहुधा अमृतसर आया करते हैं। परन्तु अब एक दो दिन से पाकिस्तान लाहौर से आने वाली ट्रेन के पंजाब की बिगड़ती स्थिति को देखते हुए स्थगित की बात सुनने को मिली। २२/११/८३ प्रातः ९ बजे अमृतसर रेलवे स्टेशन पर पहुंचा ट्रेन से उतरने पर रावी के नाम के लिए रिक्षा ली। रिक्षा वाला दूसरे प्रदेश का प्रतीत हुआ। उससे अमृतसर की स्थिति के विषय में पूंछने पर उसने बताया कि बाबू जी कल तो पूरी हड़ताल थी। तरनतारन के निकट हुए नृशंस हत्या काण्ड का सबको अफसोस था। राष्ट्रपति शासन के पश्चात् भी यहां स्थिति पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं है। बेगुनाह लोगों की हत्याएं उग्रवादियों द्वारा होती रहती है। दि० १२/११/८३ को हड़ताल के विषय में जानकारी मि ली कि दूकानों के पूर्णतया बन्द होने के साथ साथ आर्य समाज से काली पटियों का एक मातमी जलूस भी निकाला गया। जिसमें गायत्री मन्त्र का उच्चस्वर से जाप हो रहा था। वह मातमी जलूस शान्ति पूर्वक निकल गया।

कुछ सिख भाईयों से वार्तालाप हुई। वे भी इस हत्या काण्ड के कारण दुःखी थे। परन्तु पंजाब की गम्भीर स्थिति के विषय में बड़े चिन्तित थे। आर्य समाज के नेता श्री देवराज जी अरोरा से वार्तालाप हुआ। उन्होंने राष्ट्र विरोधी शक्तियों का डटकर मुकाबला करने का संकल्प दोहराया। हिन्दू व सिखों को भाई भाई बताते हुए वर्तमान गम्भीर परिस्थितियों के प्रति वे चिन्तित दिखाई दिए। उनसे आर्य समाज के संगठन के विषय में भी महत्वपूर्ण वार्ता हुई। उन्होंने बताया कि यद्यपि वे आर० एस० एस० के भी निष्ठावान सदस्य है तथापि आर्य समाज के दृष्टि कोण को अपनाये बिना देश का उद्धार होना कठिन है।

दि० २३/११/८३ को मैं अपने एक साथी के साथ लगभग २ बजे स्वर्ण मन्दिर भी गया। मैंने केवल ५ या ६ हिन्दू देखे। शेष सब सिख थे। रोनक नहीं थी। श्रद्धालु भक्त स्वर्ण मन्दिर में गुरु ग्रन्थ साहब को मथा टेक रहे थे। कीर्तन हो रहा था। अमृतसर का अमृत भक्त लोग छक रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि जबसे ये घटनाएं हुई हैं तब दर्शनार्थी कम हो गये है। यही अवस्था स्वर्ण मन्दिर के चारो ओर के छोटे बाजारों में दिखलाई दी।

स्वर्ण मन्दिर में हिन्दू धर्म पर बलिदान हुए वीरों की समाधियो के सामने सिर झुकाते हुए श्रद्धालु भक्तों को देखकर तथा अंग्रेजी काल में जलियां वाले बाग ने नृशंस गोली काण्ड के उस स्थल को देखकर बार बार मन में ये भाव उमड़ते थे कि इस राजनीति को क्या हो गया है जिसने भाई को भाई के रक्त का प्यासा बना दिया है। बाजारों को देखने पर तथा एक दूकान पर हिन्दू और सिखों को बैठे देख कर मन में यह भी विचार आता था कि धर्म पर बलिदान व्यर्थ नहीं जावेंगे। हिन्दुओं से सिखों को कोई ताकत पृथक् नहीं कर सकती। विदेशी शक्तियों के इशारों पर उग्रवादियों के हिंसक कृत्यों पर—हिन्दू सिख और सरकार को निगाह रखने की आवश्यकता है। हिन्दू और सिखों की धमनियों में राम और कृष्ण का ही रक्त प्रवाहित हो रहा है। देश द्रोही को मिटाना ही होगा चाहे वह कोई भी क्यों न हो।

—संवाददाता

स्वामी श्रद्धानन्द और उनका साहित्य

[शेष पृष्ठ ३ से आगे]

दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान [२७] मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ [२८] मेरी जिन्दगी के नशेबो फराज [२९] वर्ण व्यवस्था [३०] हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद की कहानी—इसमें हिन्दू मुस्लिम एकता का रोचक वर्णन है, [३१] सुबह उम्मीद—इसमें वेदों के विभिन्न टीकाकारों और महर्षि दयानन्द की भाष्य शैली और वेदों की महत्ता का विवेचन है।

राजनैतिक रचनायें

[३२] इनसाइड कांग्रेस।

साहित्यिक रचनायें

[३३] कल्याण मार्ग का पथिक—यह स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मकथा है। यह आत्म कथा न केवल हिन्दी और भारतीय वाङ्मय में महत्व पूर्ण है पर विश्व साहित्य में इसका अद्वितीय स्थान है। यह महात्मा गांधी के 'सत्य के प्रयोगों' से पहले लिखी गई है। इसमें १९ शती के अन्तिम चरण में हिन्दू-समाज की क्या हालत थी, उसका बड़ा सच्चा और वास्तविक चित्र दिखलाया गया है। इसमें अपनी निर्बलताओं को भी नहीं छिपाया है। यह 'असतो मा सद्गमय' 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' असत्य से सत्य, अन्धकार से प्रकाश तथा 'मृत्योर्मा अमृतं गमय' मृत्यु से अमरत्वकी ओर जाने का एक उदाहरण है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त भी 'पुराणों की शिक्षा के नमूने' 'मुक्ति सोपान' नामक ग्रन्थ भी उन्होंने लिखे हैं, जो मिल नहीं रहे है।

धर्मोपदेश पुस्तक अत्यन्त प्रेरणादायक है। इस तरह श्रद्धानन्द हमारे धर्म गुरु, आदर्श नेता और मार्ग दर्शक है हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आइए एक हिन्दी कवि के शब्दों में हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें :—

त्याग तपस्या मूर्ति धन्य,
श्री श्रद्धानन्द महान् हुए।
धर्म धीरता ध्रुवता की,
वरवेदि पर बलिदान हुए।
उनका विमल विवेक विश्व में,
भव्य भाव भर जाएगा।
पावन पुण्य चरित्र जगत् में,
जीवन ज्योति जगाएगा।
आज अमर जिनकी सुकीर्ति है,
भला कहीं वह मरता है।
उसका तो आदर्श चरित,
कल्याण काम नित करता है॥

महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर

वेदपरिषत् के अध्यक्ष म० म० आचार्य विश्वश्रवा: व्यास

एम० ए० वेदाचार्य

का

'अध्यक्षीय भाषण'

समस्त आर्य जगत से आये महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य विद्वानो की सेवा में कुछ प्रसंग उपस्थित करता हूं—

१—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेदभाष्य में जहां सायण आदि के भाष्यों का खण्डन किया वहा 'वेदार्थ' यत्न भाष्य का भी खण्डन किया है। यह वेदार्थ यत्न भाष्य महर्षि के भाष्य से पूर्व पूना में कुछ विद्वानों ने किया और प्रकाशित किया था। यह वेदार्थ यत्न ऋग्वेद का भाष्य महर्षि के ग्रन्थ संग्रह में परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित है।

—महर्षि ने जब वेदार्थ यत्न का खण्डन किया तब उसके पक्षपातियों ने महर्षि के ऋग्वेद भाष्य के खण्डन में एक भाष्य किया जिसका नाम प्रकृतार्थ [illegible] है। यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस के सरस्वती भवन में है।

—जब महर्षि ने यजुर्वेद पर भाष्य किया प्रथम खण्डन पर पं० उदयप्रकाश नारायण ने भी एक यजुर्वेद भाष्य प्रकाशित किया। उसमे महर्षि के भाष्य को बालाकार भाष्य कहकर खण्डन किया। यह ग्रन्थ ना पत्राकार काइब में छपा था।

पं० उदयप्रकाश नारायण जी स्वामी विरजानन्द के शिष्य थे। वे अपने आप को वेद भाष्य में विरजानन्द शिष्य लिखते हैं। स्वामी विरजानन्द के प्रधान शिष्य पं० उदयप्रकाश नारायण थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के आने पर विरजानन्द जी का विशेष प्रेम उदयप्रकाश से हटकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर होगया इससे चिढ़कर उदयप्रकाश नारायण स्वामी जी का शत्रु हो गया था।

४—सत्यार्थ प्रकाश, दयानन्द तिमिर भास्कर आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए भास्कर प्रकाश ग्रन्थ दयानन्द तिमिर भास्कर के उत्तर में स्वामी तुलसीराम जी ने लिखा। वह उस समय के लिए ठीक था। पर वह पर्याप्त उत्तर नहीं। [illegible] सत्यार्थ प्रकाश के खण्डन पर ग्रन्थ हैं

५—क—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के खण्डन पर बरेली के महन्त महाकुसुम [illegible] ने ऋग्वेदादि [illegible] ग्रन्थ प्रकाशित [illegible] कुछ उत्तर [illegible] के नाम से छपा था ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकेन्दुपराग।

ख—दूसरा ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डन पर कलकत्ता से भूमिकाधिकार नाम से प्रकाशित हुआ जिस का कुछ उत्तर पं० द्विजेन्द्र नाथ शास्त्री ने भूमिकाप्रकाश नाम से दिया था।

ग—अब 'वेदार्थ पारिजात' नाम से करपात्री जी का ग्रन्थ जो हजार से अधिक पृष्ठ वाला प्रकाशित हुआ है जिस में महर्षि जी अनेक अपशब्दों का प्रयोग है।

६—महर्षि के वेद भाष्यों के खण्डन पर जो कुछ प्रकाशित हुआ उस पर कुछ कार्य नहीं हुआ है।

७—वेदार्थ पारिजात पांच छः वर्ष से प्रकाशित है, इतने वर्षों से इसके उत्तर को टाला गया। सार्वदेशिक सभा ने इसके उत्तर की जो व्यवस्था की है वह पर्याप्त नहीं है। हमें डर है कि उसका अन्यथा परिणाम न हो।

—सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने आचार्य वैद्यनाथ जी ने जो स्कीम लिखी लाला राम गोपाल शाल वाले प्रधान सार्वदेशिक ने स्वीकार नहीं की अतः आचार्य वैद्यनाथ जी ने त्याग पत्र दे दिया।

८—इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश महाभाष्य के लिये भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने आचार्य वैद्यनाथ [illegible] को नियत किया। स्कीम स्वीकार न करने पर आचार्य वैद्यनाथ ने [illegible] त्याग पत्र दे दिया।

९—सत्यार्थ प्रकाश महाभाष्य की योजना दीक्षानन्द जी ने [illegible] पं० शिवकुमार शास्त्री द्वारा कराना चाहा। [illegible] ने मुझ (आचार्य विश्वश्रवा व्यास को) सहायक बनाकर [illegible] पर सब [illegible] सार्वदेशिक सभा [illegible] किया और स्वयं भी [illegible] किया।

१०—आर्य समाज में नये नये वेद भाष्यों के सम्बन्ध में आर्य विद्वानों ने प्रश्न किया है। इस सम्बन्ध में मेरा विचार यह है कि महर्षि के वेद भाष्यों पर हमें परिश्रम करना चाहिये। हमारे वेदपरिषत के संयोजक डा० सुदर्शनदेव जी के वेद भाष्यों को सरल करने का प्रयत्न किया है। हमने ऋग्वेद महाभाष्यम प्रकाशित करके दूसरा प्रकार दिखाया है। धातुपाठ और उणादि प्रत्ययों के आधार पर किये वेद भाष्यों की प्रामाणिकता नहीं हो सकेगी। इस प्रकार भाष्य करने से 'शन्नो देवी०' मन्त्र का खिलौना अब हो सकता है। जिन पर महर्षि का भाष्य नहीं है वहां महर्षि की अनुबंध विषय सूची का सहारा लेना चाहिये। ब्राह्मण ग्रन्थों का भी आश्रय लेकर वेद भाष्य करना होगा जैसे— [illegible] मन्त्र में वर्णित पदों का अर्थ ब्राह्मण ग्रन्थों में मिल जाता है।

[illegible] यजमान। [illegible] ऋत्विज [illegible]। [illegible] उपर्युक्त सब काम तभी सम्भव है जब महर्षि मण्डल की स्थापना आर्य समाज मे हो।

नोट—इस अध्यक्षीय भाषण पर [illegible] मण्डल की स्थापना का प्रस्ताव [illegible] से पारित किया गया।

[illegible] मण्डल [illegible] योजना [illegible] विद्वानों के वेद [illegible] पृथक् [illegible]।

[illegible]

[illegible] को [illegible] १९८३ नवम्बर को [illegible] आयु ६६ वर्ष [illegible] आपका सारा [illegible] की सेवा में [illegible] हुआ परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष—४४९९३
पंजीकरण सं० एल० डब्लू/एन०पी०/७४
वा० मार्ग शीर्ष २७
मार्ग शीर्ष शु० ११, रविवार
१८ दिसम्बर १९८३ ई०

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

हुतात्मा श्रद्धानन्द

(पृष्ठ २ का शेष)

श्रद्धानन्द जी ने गांधी से कहा कि यदि हिन्दू समाप्त होता है, भारत समाप्त होता है और तब लीग के विरोध में शुद्धि आन्दोलन को व्यापकता दी और उसका ही परिणाम है कि आज हरियाणा और राजस्थान के ठाट और मेवात हिन्दू हैं नहीं तो तब लीग आंदोलन देश का रूप बदल सकता था, हिन्दुत्व की रक्षा के लिए निकली वह महानतम विभूति उसी स्वर्ण पथपर अपने प्राणों की बलि देकर अमर हो उठी और आज भी हुतात्मा श्रद्धानन्द आर्यजनों के हृदयों में अमर हैं तथा हमें नीव प्रेरणायें देते रहते हैं।

दिसम्बर मास का अन्तिम सप्ताह बलिदान सप्ताह है। दिव्य ज्योति श्रद्धानन्द जी के चरणों में हम सादर विनत हैं। आर्यजन प्रतिज्ञा करते हैं कि देवात्मा तुम्हारा मार्ग दर्शन हमारे लिए शक्ति पुञ्ज है और आज भी ऐसी परिस्थितियां देश में हो रही कि आर्य समाज को शुद्धि आन्दोलन को जीवित करना है तथा बल देना है। और क्षण-क्षण पर स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मरण हमारे लिये प्रकाश पुञ्ज है।

'आर्यमित्र' अपनी ओर से तथा समस्त पाठकों की ओर से हुतात्मा को विनत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। तथा शुद्धि आन्दोलन का व्रत ग्रहण करता है।

निर्वाचन—

महिला आर्य समाज उझानी

प्रधाना—श्रीमती कैलाश सूरी

मन्त्रिणी—श्रीमती भारती देवी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बिजनौर

प्रधान—श्री होरी सिंह

मन्त्री—श्री जय नारायण 'अरुण'

कोषाध्यक्ष—श्री प्रयाग दत्त

—आर्य समाज रायबरेली ने गौहरपुर बेहटा कानपुर के प्रसिद्ध उपदेशक पं० रामगोपाल शास्त्री के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया है।
मन्त्री

—आर्य समाज लखीमपुर का वार्षिकोत्सव १ से ४ दिसम्बर तक मनाया गया।
मन्त्री

—आर्य समाज देहरादून ने १९ नवम्बर की रात को चार निरपराध हिन्दुओं की हत्या उग्रवादियों द्वारा करने पर दुःख प्रकट किया है, और पंजाब के राज्यपाल एवं भारत सरकार से मांग की है कि इस गुण्डा गर्दी को तुरन्त रोकने के लिए सख्त कदम उठाए।
—बलराज मन्त्री

—वेद संस्थान सी० २२ राजौरी गार्डन नई दिल्ली का शीतकालिक शिविर १४ से २० नवम्बर तक हुआ।
मन्त्री

—सिमौली ताजीखेत में २१ नवम्बर को आनन्द मिस्त्री के द्वितीय पुत्र का नामकरण संस्कार डा० कल्याहारी के निर्देशन में हुआ।
मन्त्री

—आर्य समाज नजीबाबाद के प्रधान श्री सुशील कुमार आर्य की बहिन कृपावती का देहान्त हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।
—विजय कुमार मन्त्री

उत्साह पूर्ण यात्रा

आर्य समाज बिजनौर के आर्यजन श्री होरीसिंह प्रधान बिजनौर जनपद उप प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में बस से निर्वाण शताब्दि में सम्मिलित होने अजमेर गये। यात्रा सफल रही। बस की व्यवस्था प्रधान आर्य समाज धामपुर ने की थी।

—अध्यक्ष आर्य समाज बिजनौर

कनखल के वैद्य धर्मदत्त नहीं रहे

कनखल के सुप्रसिद्ध विद्वान् लोकप्रिय वैद्य श्री धर्मदत्त आयुर्वेदाचार्य का २० नवम्बर को रात्रि २.३० बजे हृदयगति रुक जाने से ८९ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातकों में से थे तथा कई वर्ष आप उक्त विश्वविद्यालय के आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रिंसिपल भी रहे। आप आयुर्वेद विषयक अनेक ग्रन्थों के लेखक हैं, जिनमें 'आधुनिक चिकित्सा शास्त्र' तथा 'सिद्धयोगसंग्रह' ग्रन्थों ने आयुर्वेद जगत् में विशेष ख्याति अर्जित की है। आपकी सेवाओं से प्रभावित होकर गुरुकुल विश्वविद्यालय ने आपको विद्यामार्तण्ड की उपाधि से सत्कृत किया था तथा अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा आपका सम्मान किया गया था। आपके अभाव से आयुर्वेद जगत को बड़ी भारी क्षति पहुंची है। १ दिसम्बर को कनखल में आपके निवास स्थान पर शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। नगरी के अनेक

गण एवं गण्य मान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिन्होंने मुक्त कण्ठ से आप की सेवाओं को सराहा।

—रामनाथ वेदालङ्कार
आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

—आर्य समाज फलवारी का उत्सव १९, २० नवम्बर को मनाया गया।
मन्त्री

—आर्य समाज डेहरियावां (फैजाबाद) ने डा० सूर्यदेव शर्मा के निधन पर शोक व्यक्त किया है।
—देव नारायण शास्त्री
मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

रजि० नं० २२५१/५७ घोषणा पत्र सं० ७/६७
लखनऊ—बा० पौष ४ पौष कृ० ६, रविवार सम्वत् २०४० वि०, २५ दिसम्बर सन् १९८३ ई०

पंजाब में उग्रवादी अराजक तत्वों के विरुद्ध कड़ी कारवायी की जाय, राष्ट्रीय एकता एवम् धर्मरक्षा के लिए आर्यसमाज सन्नद्ध

प्रो० कैलाशनाथ सिंह

४ दिसम्बर, आर्य समाज मिर्जापुर के वार्षिक समारोह के अवसर पर चौथे दिन घंटाघर मिर्जापुर के विशाल मैदान मे आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की सार्वजनिक सभा को मुख्य अतिथि पद से सम्बोधित करते हुए प्रो० कैलाशनाथ सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने कहा कि यद्यपि राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा मे भारतमाता के वीर सपूत पूरी तरह चौकस तथा अडिग हैं, समूचे राष्ट्र को उनके ऊपर गर्व है, परन्तु देश की आन्तरिक समस्यायें विशेषत पंजाब की समस्या राष्ट्र के समक्ष गम्भीर चुनौती के रूप मे विद्यमान है। पंजाब मे उग्रवादी तत्व अराजकता पैदा कर रहे हैं, तथा वे राष्ट्रीय अखण्डता को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। आर्य समाज ऐसे तत्वो का प्रबल विरोधी है जो राष्ट्रीय एकता और सौहार्द को नष्ट कर राष्ट्रीय जीवन मे विष घोलना चाहते हैं। आगे सभा प्रधान जी ने सरकार से प्रबल शब्दो मे माग की कि वह पंजाब के उग्रवादियों के खिलाफ कड़ी कारवायी करने मे तत्परता अपनाये। उन्होने कहा कि किसी भी धार्मिक क्षेत्र मे अराजक तत्वों का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध होना चाहिये। आपने करतल ध्वनि के बीच घोषित किया कि वस्तुत हिन्दू सिक्ख एक हैं, इस एकता में बाधक तत्वो का आर्य समाज डटकर विरोध करेगा।

आगे सभा प्रधान जी ने बतलाया कि आर्य समाज, समाज के कमजोर तथा पिछड़ लोगो के सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवम् आर्थिक उत्थान के लिये कृतसंकल्प है, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अन्तर्गत सम्पूर्ण हिन्दू समाज को कमजोर वर्गों की सामाजिक धार्मिक तथा आर्थिक सुरक्षा के लिये आर्य समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे आना चाहिये।

मिर्जापुर से आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुये सभा प्रधान जी ने बतलाया कि स्वामी जी मिर्जापुर अपनी प्रचार यात्रा के दौरान मिर्जापुर भी आये थे। वह यहाँ की गरीबी देखकर बहुत द्रवित हुये थे उनका दृष्टिकोण और कार्यक्रम न केवल धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र के लिये है अपितु जनसामान्य के अभाव (आर्थिक विषमता) दूर करने से भी सम्बन्धित है।

अपने भाषण में सभा प्रधान जी ने कांग्रेस के इतिहास के सम्बन्ध मे बतलाया कि कांग्रेस की स्थापना को सौ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं उसका इतिहास लिखा जा रहा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई में आर्य समाजियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है, यह सर्वविदित है। आजादी की लड़ाई

(शेष पृष्ठ ७ पर)

[illegible]

सम्पादक
आचार्य [illegible] एम०ए०

वर्ष ८६ अङ्क ४६

प्रार्थना

सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा हंसः शुचिषत् ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥ यजु० १९-७४ ॥

जिस प्रकार सूर्य जलों में से सोमतत्व को पी लेता है, उसी प्रकार प्राण अपने स्वच्छन्द गति से सारतत्व को ग्रहण कर लेता है। नियम के साथ अन्नरस का विवेकपूर्वक पान करना सचमुच ही प्राणेन्द्रियों को बल देने वाला तेज है और यह अमृतरूप मधुर रस सचमुच ही जीवात्मा को प्राणबल देने वाला है।

आर्यमित्र

लखनऊ–रविवार, २१ दिसम्बर १९८१, दयानन्दाब्द १५६
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४

सम्पादकीय

स्पष्टोक्ति

श्री शहाबुद्दीन जी जनता पार्टी के व्यक्ति हैं और सांसद हैं परन्तु उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय न होकर मुस्लिम साम्प्रदायिक अधिक रहा है। मेरठ के विगत दंगे में आपने मुस्लिम साम्प्रदायिकता का परिचय दिया और इधर आपने संसद में एक प्रश्न पूछा कि तामिलनाडु में स्वेच्छा धर्मान्तरण स्वीकार करने वाले मुस्लिमों को पुलिस त्रसित कर रही है। सरकार वक्तव्य दे।

संसद में गृह मन्त्री माननीय प्रकाश चन्द्र जी सेठी ने स्पष्ट रूप से कहा कि भय त्रास या लालच देकर निर्धन हिन्दुओं को मुसलमान बनाना पूर्णतया अनुचित है। तामिलनाडु में अरब देशों में नौकरी देने के लालच से निर्धन हरिजनों को मुसलमान बनाया गया है, सरकार इससे अवगत है। इसी प्रकार राजस्थान में जो हुआ है, पुलिस लालच से इस्लाम स्वीकार करने वालों से पूछताछ कर रही है। सरकार चिन्तित है कि लालच देकर किसी का धर्म परिवर्तन कराना अपराध है वह रोका जाय।

आर्यमित्र गृह मन्त्री को स्पष्ट उक्ति के लिए साधुवाद देता है तथा आशा करता है कि गृह मन्त्री ऐसे व्यक्तियों एवं संगठनों के प्रति पूरी कानूनी कार्यवाही करेंगे जो निर्धन वर्ग को लालच देकर मुसलमान या ईसाई बनाने का प्रयास करते हैं।

—आर्य समाज सुरजेपुरा (गाजियाबाद) ने १२ से १६ दिसम्बर तक उत्सव किया। कई विद्वानों के उपदेश हुये।

—जयदेव आर्य मन्त्री

—आर्य केन्द्रीय समिति परीक्षित गढ़ (मेरठ), आर्य समाज, आ० स० बजूरी, सीना, बहलोलपुर ने डा० सूर्यदेव शर्मा के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

—आशाराम आर्य एम० ए० मन्त्री

—आर्य समाज दयानन्द सेवा आश्रम बदायूं के तत्वावधान में ककोड़ा के मेले में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। अनेक विद्वानों के व्याख्यान एवं भजन हुए।

—राजेश कुमार मन्त्री

—आर्य समाज बैंकोक थाईलैण्ड में महर्षि निर्वाण शताब्दी मनायी गयी। वहां के भवनाम समाज के प्रधान श्री राम प्रसाद पाण्डे थे। अध्यक्षता श्री सुरजीत सिंह जी ने की।

—प्रसिद्धनारायण तिवारी मन्त्री

२३ दिसम्बर ८१ जन्म तिथि के अवसर पर

प्रसिद्ध आर्य विचार शील जन नेता चौधरी चरण सिंह

-प्रो० कैलाशनाथ सिंह
प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

श्री चौधरी चरण सिंह जी

भारतीय जन मानस में चौधरी चरण सिंह जी की विशेष छाप है और राजनैतिक विचारों से सहमति न रखने वाले व्यक्ति भी उनका समादर करते हैं और उनके दृढ़ सिद्धान्त वादी होने के प्रबल समर्थक हैं। हमारे मध्य सत्य एवं आत्म निश्चय की दृढ़ता की यदि कोई दूसरी संज्ञा हो सकती है तो वह हैं चौधरी चरण सिंह जी।

मेरठ जनपद में जीवन की प्रथम उठान में चौधरी चरण सिंह जी आर्य समाज के कार्यकर्ता के रूप में जनता के सामने आये। तदन्तर जीवन में प्रगति करते हुए प्रदेश के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहे। राजनैतिक संगठनों के प्रमुख रहे और अन्त में भारत के प्रधान मन्त्री पद को सुशोभित किया। जैसे कसौटी अपने निकट आने ही स्वर्ण की सत्यता की परख करती है वैसे ही चौधरी चरण सिंह व्यक्ति की परीक्षा करते हैं। चाहे राजनैतिक संगठन के प्रधान रहे या भारत के प्रधान मन्त्री रहे उनके जीवन के कतिपय अक्षुण्ण सिद्धान्त हैं जिन पर वह गौरीशंकर के समान दृढ़ एवं अटल हैं। संसार में वह सिद्धान्त है वैदिक विचार धारा। भारतीय राष्ट्रीयता का वैदिक स्वरूप और भारत की कृषक जनता के सर्वोपरि हित की कामना। भारत कृषि प्रधान देश है और कृषक ही भारत का देवता है। वह राष्ट्र भाषा हिन्दी के उपासक रहे और आज भी हैं तथा देश की एकता और अखण्डता के प्रमुख पोषक तथा समर्थक हैं।

चौधरी चरण सिंह जी ने जीवन के ८३ 'बसन्त' पार कर लिये हैं। आज जब देश में विघटन की भावनायें पनप रही हैं। प्रभाव

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सभा मंत्री श्री पं० इन्द्रराज जी का कार्य विवरण

२७ अक्टूबर को श्री इन्द्रराज जी सभा मन्त्री ने अजमेर में कार्यालय एवं निवास की व्यवस्था के लिये श्री चन्द्रकिरण शर्मा एवं श्री स्वामी कर्मानन्द जी के साथ बस द्वारा अजमेर को प्रस्थान किया,

२८ अक्टूबर को अजमेर में व्यवस्था हेतु रहे। रात्रि को यज्ञशाला में धर्मोपदेश किया।

२९ अक्टूबर की शाम को मेरा और श्री चन्द्रकिरण जी का मेरठ को प्रस्थान। श्री स्वामी कर्मानन्द जी को श्री कृष्ण गोपाल जी के न आने के कारण अजमेर छोड़ा।

राश्ते में जेब कटने से हानि

२९ अक्टूबर को प्रातः दयानंद उद्यान में यज्ञ के उपरान्त यज्ञ पर प्रवचन किया।

३१ अक्टूबर को मेरठ में अजमेर जाने वालों के लिए बसों की व्यवस्था में संलग्न तथा अजमेर जाने के लिये ट्रक भेजा।

१ नवम्बर को अजमेर जाने के लिये बसों की व्यवस्था की। २ नवम्बर को ३ बसों के साथ दयानन्द नगर के लिये प्रस्थान। ३ नवम्बर को दयानन्द नगर महर्षि दयानन्द उद्यान तथा ट्रेनिङ्ग कालेज में ठहरने की व्यवस्था में संलग्न। ४ नवम्बर को स्वामी कर्मानन्द जी ने महर्षि दयानन्द उद्यान में संन्यास की दीक्षा ली। दो पहर तक उद्यान में तथा पश्चात् दयानन्द नगर में कार्यालय की देख भाल तथा वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र की व्यवस्था की। ५ नवम्बर को शोभा यात्रा में आर्य बन्धुओं से भेंट, श्री मनोहर सिंह की हृदय गति रुक गयी। उनके शव घर पहुंचाने के लिये रात्रि दो बजे तक स्वामी कर्मानन्द के द्वारा प्रबन्ध में व्यस्त।

६/११/८३ अजमेर में दोपहर १२ बजे तक श्री मनोहर सिंह जी ग्राम सिरसी (मुरादाबाद) के अन्त्येष्टि संस्कार तथा श्रद्धांजलि देने में संलग्न तथा दोपहर बाद मुख्य पण्डाल में शान्ति सम्मेलन में संस्कारों के महत्व पर व्याख्यान। तथा गुरुकुल प्रभात आश्रम का ब्रह्मचारी शिवशंकर यजुर्वेद कण्ठस्थ सुनाने में प्रथम तथा पुरस्कृत।

७/११/८३ अपनी गाड़ी से अजमेर से मेरठ के लिए प्रस्थान। स्वामी विवेकानन्द जी व अन्य आर्य बन्धु साथ थे।

८/११/८३ मेरठ वापिस तथा मेरठ के स्पोर्टस के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कर्मवीर श्री आनन्द जी के पिता जी के शांतियज्ञ में श्रद्धांजलि अर्पित। गुरुकुल प्रभात आश्रम के लिए १०००) रु० तथा आर्य समाज मेरठ शहर, साकेत और सूर्यकुण्ड के लिए पर्याप्त दान देने पर परिवार को धन्यवाद। मोदी पुरम्‌मेरठमें स्वामी धर्मवीर जी पाहुवा के शांतियज्ञ मे प्रवचन।

९/११/८३ सारा दिन सामाजिक कार्यों में संलग्न—

१०/११/८३ राजवंशी कन्या इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या जी के निधन पर शोक सभा में प्रवचन एवं श्रद्धांजलि।

११/११/८३ प्रातः मूलचन्द्र सरस्वती देवी ट्रस्ट द्वारा प्यारे लाल शर्मा मार्केट के शिलान्यास यज्ञ पर प्रवचन तथा साकेत में योग साधना एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का भवन निर्माण मुहूर्त पर विशेष यज्ञ तथा प्रवचन (योग पर) तथा गढ़मुक्तेश्वर मेले पर वेद प्रचार केन्द्र के लिये चन्दा।

१२/११/८३ सतरकली की विधवा श्री रतिराम शर्मा से गुरुकुल प्रभात आश्रम के लिये ५०००) पांच हजार रुपया दान प्राप्त। इससे १ मास पूर्व भी इनसे ५०००) रुपये दान में प्राप्त हुए थे। इस प्रकार भवन निर्माण के लिए कुल १० हजार रुपये प्राप्त।

१३ / ११ / ८३ सर्वदानन्द साधु आश्रम (हरदुआगंज नवी) अलीगढ़ श्री वीरेन्द्रपाल जी आर्य बुलन्द शहर तथा श्री धर्मपाल जी आर्य के साथ गया। रात्रि को जन सभा में भाषण।

१४/११/८ गढ़मुक्तेश्वर के लिए चन्दा करने मोदी नगर तथा गाजियाबाद गया। साथ में श्री चन्द्रकिरण जी तथा श्री विजयपाल जी शास्त्री थे।

१५/११/८३ पुनः चन्दा करने बाहर गया। तथा गढ़ मुक्तेश्वर केन्द्र के लिए ट्रक से सामान भेजा।

१६/११/८३ दिन में क्रमशः दो विवाह संस्कारों के पश्चात् भैसाली मैदान में एकात्मता यज्ञ को सम्पन्न करवाया तथा विशालजन सभा में दहेज मद्यपान आदि बुराईयों को दूर करके हिन्दुओं को संगठन के सूत्रों के अवसर पर संगठित होने की अपील की।

१७/११/८३ प्रचारार्थ बुलंद शहर गया।

१८/११/८३ गढ़ मुक्तेश्वर वेद प्रचार केन्द्र की व्यवस्था एवं।

१९/११/८३ दोनों दिन आचार्य जीवन मित्र जी के साथ विशाल जन सभाओं में भाषण।

२०/११/८३ गढ़ मुक्तेश्वर से मेरठ वापिस तथा संस्कारों में संलग्न।

२१/११/८३ अमृतसर के लिये प्रस्थान। पंजाब की स्थिति का जायजा लेने के लिए।

२२/११/८३ अमृतसर निवास तथा आर्य जनों से मिलना।

प्रभात आश्रम के बढ़ते चरण

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के उदीयमान स्नातक श्रीवत्स विद्यालंकार ने यहां दिल्ली विश्वविद्यालय में इस वर्ष संस्कृत विभाग में एम० ए० की परीक्षा में ८०/ प्रतिशत अंक लेकर सम्पूर्ण विश्वविद्यालय में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया वहां अभी इसी विश्वविद्यालय में आयोजित "इन्द्र विद्यावाचस्पति सद्यः संस्कृत भाषण प्रतियोगिता" में विजयी होकर सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी इस सफलता से कुलभूमि एवं आर्य समाज का गौरव बढ़ा।

स्नातक बन्धु को हार्दिक बधाई।

स्नातक मण्डल
प्रभात आश्रम
टीकाराम मेरठ

साहित्य-समीक्षा

स्वाराज्य-प्रवेश—लेखक एवं सम्पादक श्री विक्रमादित्य जी वसन्त-'वेदवारिधि'-तथा 'प्रभुदर्शन'-प्रकाशक-वेद संस्थान-बी-६४ 'वासन्तिका'-राजाजीपुरम्-लखनऊ-मूल्य चार रुपिया,

वेदवारिधि श्री विक्रमादित्य जी वसन्त वैदिक उपदेशक-कवि एवं वेदाध्ययन में रुचि परायण व्यक्ति हैं, ऋग्वेद के स्वराज्य सम्बन्धी सोलह मन्त्रों का इस रचना में संकलन किया गया है और विद्वान लेखक तथा संपादक ने वेदों का गम्भीर अनुशीलन के बाद प्रज्ञा-बुद्धि से उन मन्त्रों की शास्त्र सम्मत वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है-वेद मन्त्रों का पदान्वय एवं शब्द व्युत्पत्ति भी दे दी है जिससे पाठक को अर्थ समझने में सरलता होती है। स्वराज्य एवं सुराज्य की व्याख्या करके लेखक ने प्राचीन एवं अर्वाचीन विचार धारा को नवदर्शन प्रस्तुत की है।

पाठक सुगमता से वेद-पाठ कर सके अतः प्रारम्भ में मन्त्रों का संकलन है। फिर अर्थ एवं व्याख्या है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। आर्य जन अध्ययन करें और पारितोषिक आदि में देने के योग्य हैं।

मुद्रण स्वच्छ-आकर्षक-कागज उत्तम है लेखक तथा प्रकाशक रूप से श्री वसन्त जी साधुवाद के पात्र है।

महर्षि दयानन्द नाटकम्—लेखिका श्रीमती सिया सुन्दरी आर्या धर्म पत्नी श्री सीतारामजी आर्य भजनोपदेशक। प्रकाशक श्री रामचन्द्र आर्य-मन्त्री दरभंगा प्रमण्डल-आर्य सभा द्वारा मन्त्री आर्य समाज-ताजपुर-समस्तीपुर (बिहार) मूल्य पाँच रुपिया, पृष्ठ १००।

सुयोग्य लेखिका ने नाटक की रोचक शैली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के पूर्ण जीवन की झलक प्रस्तुत की है। सम्वाद प्रभावपूर्ण है और बीच में कविता एवं गीतों का भी प्रयोग है। नाटक पठनीय है तथा किशोर आयु के बालक-बालिकाओं के लिए उपयोगी है। व्यापक प्रचार हो यही कामना है। मुद्रण उचित है। कागज उपयोगी है।—

भजनावलि—लेखिका सिया सुन्दरी आर्या-प्रकाशक श्री राम-चन्द्र आर्य द्वारा प्रधान आर्य समाज-ताजपुर समस्तीपुर (बिहार) मूल्य १.५० ।—

लेखिका के रचे आर्य समाज और नैतिक विषय पूर्ण ४५ भजनों का संग्रह-पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। मुद्रण स्वच्छ है, आशा है भजनोपदेशक इससे लाभ प्राप्त करेंगे।

मेरी योरूप यात्रा—लेखक श्री रामाज्ञा वैरागी-प्रकाशक वैरागी प्रकाशन-वैरागी कुटीर कलमबाग चौक मुजफ्फरपुर (बिहार) पृष्ठ १४४- मूल्य बीस रुपिये-

श्री वैरागी जी जहां एक तथा भ्रमण के प्रति पूर्ण अनुरागी व्यक्ति हैं वहीं दूसरी ओर कुशल लेखक एवं भावना प्रधान कवि हृदय हैं-अतः देश-विदेशों का भ्रमण किया है-वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य पर मुग्ध हुए हैं और कवि एवं लेखक होने के नाते उसका मनोहारी चित्रण भी प्रस्तुत किया है-आर्य समाज के उपदेशक होने के नाते भारत और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा कई बार की है।

लन्दन में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन (१९८०) का श्री रामाज्ञा वैरागी जी को निमंत्रण प्राप्त हुआ और इंगलैण्ड की यात्रा के साथ ही समस्त योरूप की यात्रा की। प्रस्तुत पुस्तक में इटली-योगोस्लोवाकिया हंगरी आस्ट्रिया-स्लोकोस्लोवाकिया-पश्चिम जर्मन नीदरलैण्ड बेल्जियम-फ्रांस तथा इंगलैण्ड आदि प्रमुख योरूपीय देशों तथा लन्दन-रोम- वेनिस जिनेवा-बुडापेस्ट-वियना-पेरिस-म्यूनिख-मिलान-प्राग-आम्सटर्डम-ब्रसेल्स आदि योरूप के प्रमुख नगरों का मोहक एवं चमत्कारी पूर्ण वर्णन है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के वर्णन के साथ लन्दन नगर और इंगलैण्ड के सम्बन्ध में सुन्दर शब्द चित्र अंकित है। लेखक के वर्णन में उपन्यास की शैली है तथा सर्वत्र रोचकता एवं उत्सुकता बनी रहती है। प्रसिद्ध प्राकृतिक स्थलों के तथा नगरों के मोहक रंगीन चित्र भी संलग्न है जो इस यात्रा पुस्तक को पूर्णता प्रदान करते हैं। यात्रा पुस्तक का सर्वत्र स्वागत होगा तथा मैं संस्तुति करता हूं कि पुस्तक अधिक से अधिक हाथ तक पहुंचे।

मुद्रण स्वच्छ-आकर्षक-कागज; उत्तम-चित्र कई रंगों में अच्छे कागज पर है। श्री रामाज्ञा जी वैरागी लेखक एवं प्रकाशक होने के नाते बधाई के पात्र हैं।

'आर्य संदेश'—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुख्य साप्ताहिक जो ऋषि निर्वाण शताब्दि के अवसर पर विशेष सजधज से प्रकाशित हुआ है। पठनीय सामग्री से भरपूर है। तथा आर्य समाज के भूतपूर्व एवं वर्तमान कर्मठ आर्य कर्त्ताओं के चित्रों से सज्जित मूल्य ५ रुपिया [विशेषांक का) वैसे २० रुपिया वार्षिक।

श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति की योग्यता पूर्ण सम्पादन हेतु धन्यवाद।

आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

उपदेशकों और भजनीकों की आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को ऐसे उपदेशकों और भजनीकों की आवश्यकता है, जिन्हे आर्य समाज के सिद्धांतो और मान्यताओं की पूर्ण जानकारी हो। और जो आर्य समाज के इतिहास को भी जानते हों। जिन्हें इस क्षेत्र का कुछ अनुभव होगा, उन्हे प्राथमिकता दी जावेगी। वेतन रू. ग्रेड निम्न प्रकार होगा :—

उपदेशक	६००-३०-७२०/कार्य क्षमता रोक/४०-१०००)
भजनीक	३५०-१५-४५०/कार्यक्षमता रोक/३०-६००)

महंगाई अलांस इसके अतिरिक्त होगा। २२५) मासिक

जो महानुभाव पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के आधीन आर्य समाज की सेवा करना चाहते हैं, वह निम्न लिखित पते पर आवेदनपत्र भेजें, जिसमें अपनी योग्यता और अनुभव का विस्तार पूर्वक विवरण दिया गया हो।

रामचन्द्र जावेद
महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर शहर
१४४००४

द्वितीय पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन-मिर्जापुर

धार्मिक क्रान्ति एवं सामाजिक पुनरुत्थान में आर्य समाज का योगदान ऐतिहासिक ऋषि दयानन्द का संदेश जन-जन तक पहुंचाना आर्यजनों का महत्तम दायित्व—

—प्रो० कैलाशनाथ सिंह

४ दिसम्बर, पूर्वांचल वेद प्रचार मण्डल तथा आर्य समाज मिर्जापुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन में आर्य समाजों, जिला आर्य उपसभाओं, दयानन्द बालमन्दिरों, प्रबुद्ध आर्य कार्यकर्त्ताओं एवं आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान माननीय प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने कहा कि सदियों से देश में व्याप्त अज्ञान, अन्याय एवं अन्धकार की वेला में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस धार्मिक व सांस्कृतिक क्रांति का बिगुल बजाया, वह अभूतपूर्व है। महर्षि के उत्तराधिकारी 'आर्यसमाज' आन्दोलन के माध्यम से आर्यजनों ने पाखण्ड, गुरुडम तथा सामाजिक कुप्रथाओं के उन्मूलन में अथक संघर्ष और अटूट लगन का परिचय दिया है। आर्यजनों का यह कार्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है।

अपने उद्घाटन भाषण में आगे श्री सिंह ने बतलाया कि आज भी समाज में पाखण्डवाद, अन्धविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियां नये-नये रूपों में विद्यमान हैं, जिनका मुकाबला करने का सर्वाधिक सामर्थ्य आर्य समाज में है। इसलिए आर्यजनों का महत्तम दायित्व है कि वे ऋषि का सन्देश जन-जन तक समयबद्ध कार्यक्रमों द्वारा कटिबद्ध होकर पहुंचावें।

आर्य महासम्मेलन में विषय प्रवर्तन करते हुए श्री प्रकाशनारायण शास्त्री, संयोजक-पूर्वांचल वेद प्रचार मण्डल ने पूर्वी जनपदों में आर्य समाज के विस्तार, शिथिल समाजों के पुनर्गठन, कमजोर वर्गों के बीच सेवा कार्य, धर्मरक्षा तथा वेद प्रचार एवं साहित्य वितरण के सम्बन्ध में प्रतिनिधियों के विचारार्थ रूपरेखा प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्री योगेन्द्र स्नातक अधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन ने अपने भाषण में कहा कि यद्यपि पूर्वांचल के आर्यजनों के पास साधनों की न्यूनता है परन्तु कार्यकर्त्ताओं में उत्साह तथा लगन की कमी नहीं है, महर्षि दयानन्द के कार्य को उत्साही कार्यकर्त्ता ही पूरा कर सकते हैं।

आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता आर्य जगत के तपस्वी आर्य विद्वान् पं० शिवनारायण 'वेदपाठी' ने की। इस अवसर पर सभा उपमन्त्री श्री वीरेन्द्र रत्नम् भी उपस्थित थे।

सभा प्रधान माननीय प्रो० कैलाशनाथ सिंह के आर्य समाज मिर्जापुर पहुंचने पर स्वागत द्वार पर भारी संख्या में मिर्जापुर, गाजीपुर, वाराणसी, बलिया, सुल्तानपुर, गोरखा, आजमगढ़ तथा देवरिया आदि स्थानों से आये हुए प्रतिनिधियों, दयानन्द पब्लिक स्कूल की अध्यापिकाओं, छात्राओं तथा मिर्जापुर के सम्भ्रान्त नागरिकों—श्री रमई प्रसाद यादव, श्री हरिहरसिंह, एडवोकेट, प्रो० आशाराम, भू० पू० विधायक आदि ने श्री सूर्यदेव शर्मा के नेतृत्व में वैदिक धर्म की जय, आर्य समाज अमर रहे, महर्षि दयानन्द की जय, भारतमाता की जय आदि नारों से हार्दिक स्वागत कर फूलमालाओं से लाद दिया। सभा प्रधान जी के साथ श्री योगेन्द्र स्नातक, श्री देवराज आर्य, डा० जय प्रकाश भारती अन्तरङ्ग सभा गंगा प्रसाद जी आर्य भी मिर्जापुर पहुंचे। सम्मेलन की प्रथम सत्र की कारवायी आरम्भ होने पर पूर्वांचलीय जनपद के प्रतिनिधियों ने सभा प्रधान जी का आत्मीयता कर स्वागत किया तथा आर्य समाज मिर्जापुर की ओर से श्री प्रेमचन्द्र तिवारी ने अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। तथा श्री जोखोहर सिंह ने आये हुये प्रतिनिधियों के सम्मान में स्वागत भाषण दिया।

द्वितीय—सत्र

शिथिल आर्य समाजों के पुनर्गठन, दयानन्द बालमन्दिरों की सुदृढ़ व्यवस्था तथा रचनात्मक विकास के कार्यक्रमों पर जोर—

एवम्

दहेज रहित अन्तरजातीय विवाहों के लिये युवावर्ग का आह्वान

पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन द्वितीय द-सत्र की कार्यवाही ही अपराह्न ३ बजे से ईश प्रार्थना के पश्चात् आरम्भ हुई, सर्वप्रथम आर्य बन्धुओं ने अपना-अपना परिचय दिया तदुपरान्त क्रमशः श्री प्रकाश नारायण शास्त्रीनेआर्यसमाजोंके संगठन, धर्मरक्षा तथा वेदप्रचार योजना, श्री प्रेमचन्द्र तिवारी (मिर्जापुर) ने दहेज रहित अन्तरजातीय विवाहों, डा० जयप्रकाश भारती (गाजीपुर)ने ऋषि निर्वाण शताब्दी, श्री कपूरचन्द आजाद-उपप्रधान सभा ने दयानन्द बालमंदिरों में रचनात्मक विकास कार्यक्रम अपनाने के बारे में प्रस्ताव प्रस्तुत किये। प्रस्तुत प्रस्तावों के परिप्रेक्ष्य में श्री सूर्य देव शर्मा, जैराम जोशी, चन्द्रलाल वर्मा (मिर्जापुर), श्री अवध बिहारी वर्मा, संचालक आर्यवीर दल एवं अन्तरंग सदस्य उ० प्रदेश, डा० पुष्पावती आचार्या, संचालिका मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल, रविन्द्र नाथ (वाराणसी) श्री प्रकाश सिंह देवन सिंह अधि— आर्यवीर दल उदयभानु आर्य (मिर्जापुर) श्री सुदर्शन सिंह (आजमगढ़), डा० महावीर प्रसाद आर्य (गाजीपुर) श्री जगदीश सिंह (रानीपुर) श्री राधेमोहन गुप्त (जौनपुर), श्री श्रीराम शास्त्री (बलिया) श्री बसन्त सिंह (बगहा), श्री गोपालदास प्रयागदीन जयसवाल आदि प्रतिनिधियों ने प्रस्तावों के समर्थन में अपने विचार व्यक्त किये। श्री राम किशोर त्रिपाठी द्वारा बाल मंदिरों में एकरूपता प्रस्ताव का संशोधन स्वीकृत हुआ। इसके अतिरिक्त जनपद के आर्य समाजों से सम्मेलन में विचारार्थ उपयोगी सुझाव पत्र भी आये थे, उन्हें पढ़ा गया। आर्य महासम्मेलन में प्रस्तुत चारों प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए। सम्मेलन में मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी की बालिका कु० रश्मि ने 'वेदों में क्या है।' पर संक्षिप्त सारगर्भित व्याख्यान दिया।

महासम्मेलन के अन्तिम चरण में अपने समापन भाषण में सभा प्रधान प्रो० कैलाश नाथ सिंह ने प्रतिनिधियों के विभिन्न प्रश्नों तथा जिज्ञासाओं का समाधान किया। उन्होंने आर्य जनों को संगठन एव वेद प्रचार के मार्ग में आने वाली समस्याओं को सुलझाने में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। आपने आर्य समाजों के प्रतिनिधियों को यह भी निर्देश दिया कि वे अपने क्षेत्र में आर्यवीर दल अथवा आर्य कुमार सभा की स्थापना पर गम्भीरता पूर्वक ध्यान दें।

महासम्मेलन के पं० शिव नारायण 'वेदपाठी' ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आज समाज में नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है, लोग धर्म से विमुख हो अनार्यत्व के रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसे कुरीतियों के वातावरण में आर्यजन आपसी भेदभाव भुलाकर राष्ट्र और धर्म की भलाई के लिए कार्य करें तभी ऋषि दयानन्द के स्वप्नों का समाज निर्मित किया जा सकेगा। अन्त में शान्ति पाठ के उपरांत पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन की कारवायी समाप्त हुई। धन्यवाद प्रकाश आर्यसमाज मिर्जापुरके संयोजक श्री सूर्यदेव शर्मा ने किया।

(प्रकाश नारायण शास्त्री)

संयोजक,

पूर्वान्चल वेद प्रचार मण्डल

द्वितीय पूर्वांचल आर्य महा-सम्मेलन मिर्जापुर

पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव—१ संगठन एवम् वेद प्रचार

"वर्तमान सामाजिक एवम् धार्मिक वातावरण को देखते हुये यह नितान्त आवश्यक अनुभव किया जा रहा है कि पूर्वांचल की शिथिल व सुप्त आर्य समाजो को सक्रिय तथा जागृत किया जाय। प्रत्येक जिले की समर्थ आर्य समाजें अपने आस पास की अद्ध शोषित आर्य समाज को सहयोग प्रदान कर सक्रिय बनाने मे योग देवें। जहां सम्भव हो वहां नयी आर्य समाजो की स्थापना की जाय। अपनी प्रचार योजना को सुनिश्चित कर सभा के पूर्वांचल वेद प्रचार मण्डल से उपदेश भजनोपदेशकों की मांग की जाय, इस योजना के अन्तर्गत प्रचार के मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्र के पिछड़े तथा हरिजन लोग हों। प्रचार के साथ साथ कमजोर वर्ग पर हो रहे जुल्म के विरुद्ध आर्यजन सक्रिय हो। आर्य समाजें अपने अन्दर आर्य वीर दल अथवा आर्य कुमार सभाओं का गठन करें। आर्य समाजो द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को प्रतिवर्ष वार्षिक विवरण भेजे जाय।

प्रस्ताव सं० २—

दहेज रहित अन्तरजातीय विवाहो के लिये युवक युवतियां आगे आवें

आज समाज मे अस्वस्थ तथा असन्तुलित वैवाहिक जीवन के पीछे दहेज प्रथा का बहुत बड़ा हाथ है। यह समस्या आर्य जनो के लिये गम्भीर चिंता तथा क्षोभ का विषय है। सम्मेलन की दृष्टि मे दहेज रहित विवाहों के प्रचलन के लिये पढ़े लिखे शिक्षित युवक युवतियों को जात पात से ऊपर उठकर परस्पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वैवाहिक सम्बन्धों के लिए आगे आना होगा। इस सम्बन्ध में पूर्वांचल की आर्य समाजें पुनः सुनिश्चित करती हैं कि अन्तर जातीय वैवाहिक सम्बन्धों को कायम करने वाले युवक युवतियो के साथ आर्य समाज सामाजिक, सांस्कृतिक एवम् नैतिक समर्थन के लिये वचनबद्ध और सक्रिय रहेगा। सम्मेलन प्रदेश सरकार तथा केन्द्र सरकार से यह मांग करता है कि ऐसे युवक युवतियों को सरकारी नौकरियों मे प्राथमिकता दी जाय। जो अन्तर जातीय विवाह करना चाहते हैं।

प्रस्ताव सं० ३—

ऋषि निर्वाण शताब्दी पूर्वांचल मे भी मनाई जाय

"हमारे प्रदेश मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा यह समारोह शृंखलाबद्ध दो-तीन चरणों मे मनाये जाने की सम्भावना है। सार्वदेशिक सभा से भी इस आशय का पत्र आया है। काशी से आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके वेदोद्धार आन्दोलन का ऐतिहासिक सम्बन्ध विख्यात है। इसलिये हम समस्त आर्यजन पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सभा से अनुरोध करते हैं कि ऋषि निर्वाण शताब्दी समारोह को शृंखला मे पूर्वांचलीय जनपदो के केन्द्र काशी को भी सम्मिलित किया जाय।

प्रस्ताव सं० ४—

दयानन्द बाल मंदिर की सुदृढ़ व्यवस्था हो

आर्य समाज शताब्दी समारोह वाराणसी के योजना पत्र के अनुसार प्रदेश के पूर्वी जनपदो में भी छोटे बच्चों के निर्माणार्थ बाल-मन्दिरो की स्थापना का अभियान आरम्भ हो चुका है इस सम्बन्ध में कतिपय पहलुओ पर सतर्कता के साथ कार्य नीति अपनाना आवश्यकता है। दयानन्द बाल मन्दिरो मे प्रवेश पानेवाले बालकोमे जातीय संकीर्णता की भावना न पनपने पाये। वहा के अध्यापक आर्य विचारो मे दीक्षित होवें। सभा के आदेशानुसार आर्य समाज मन्दिरों मे बाल-मन्दिर कदापि न खुलने पायें। वर्ष मे कम से कम दो बार अध्यापक एवम अभिभावक सम्मेलन कराया जाय तथा सप्ताह मे एक दिन शनिवार को बाल मन्दिर मे आर्य बाल सभा बुलायी जावे। बाल-मन्दिरो की व्यवस्था, पाठयक्रम, परीक्षा आदि मे एकरूपता रक्खी जाय।

संवाददाता
प्रकाश नारायण शास्त्री

पंजाब मे उग्रवादी अराजक तत्वों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाय।

(शेष पृष्ठ १ से आगे)

से कांग्रेस के अन्दर पचहत्तर प्रतिशत से अधिक आर्य समाज के लोग सक्रिय रहे हैं। अतः हमारी मांग है कि कांग्रेस का जो इतिहास लिखा जा रहा है उसमे आर्य समाजके इतिहास तथा आर्यजनो के त्याग बलिदान का पृथक अध्याय जोड़ा जाय।

मिर्जापुर मे आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री कपूर चन्द्र आजाद उप प्रधान सभा तथा सञ्चालन श्री सुरेश [illegible] संयोजक आर्य समाज तथा अन्तरंग सदस्य उ० प्र० सभा ने किया। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अवसर पर सभा उपमन्त्री श्री वीरेन्द्र [illegible] ने भी स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के राष्ट्र रक्षा सम्बन्धी किये गये कार्यों पर सारगर्भित व्याख्यान दिया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करने के उपरान्त सभा प्रधान जी रात्रि मे २ बजे कार से वाराणसी लौटे।

संवाददाता
प्रकाश नारायण शास्त्री

उत्सव

आर्य समाज गोरखपुर

आर्य समाज [illegible] का वार्षिकोत्सव १२ फरवरी से १९ फरवरी तक मनाया जा [illegible]। मंत्री

आर्य समाज [illegible]

आर्य समाज [illegible] का वार्षिक [illegible] फरवरी से २४ तक मनाया जा रहा है। मंत्री

साप्ताहिक लखनऊ
दूरभाष—45693 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७६
वर्ष० पौष ४
पौष कृष्ण ६ रविवार
२५ दिसम्बर १९८३ ई०

आर्यमित्र

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[illegible]
गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर)

आर्य कुमार सभा गोण्डा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य कुमार सभा गोण्डा जनपद का वार्षिक अधिवेशन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के [illegible] प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी की अध्यक्षता में हुआ–प्र [illegible] पर उनका कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य स्वागत हुआ। सभा को सम्बोधित करते हुए प्रो० कैलाश नाथ सिंहजी ने आश्वासन दिया कि उनकी प्रत्येक समस्याओं का समाधान किया जायेगा और यथा सम्भव सभा सहायता करेगी। आर्यजनों में परम उत्साह और हर्ष का वातावरण रहा।

—सम्वाददाता

चौधरी चरण सिंह

(पृष्ठ २ का शेष)

ये क्षुद्र स्वार्थ को लेकर एक ही ओर [illegible] बदल रहे हैं। प्रधान मंत्री [illegible] हैं तो केवल सत्य के साथ यदि किसी में सत्य भाषण की शक्ति है तो वह व्यक्ति हैं चौधरी चरण सिंह जी का। पंजाब का विभाजन नहीं हो सकता है सिख एवं [illegible] और परिस्थितियों से शीघ्र निपटने के लिए हिन्दू आत्म रक्षा समितियां बनावें ऐसी स्पष्ट बात चौधरी जी ही कह सकते हैं।

संस्कृत में एक श्लोक है —

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा,
तेन वृद्धा ये न वदन्ति धर्मम्॥

अर्थात वह सभा नहीं जिसमें वृद्ध न हो और वह वृद्ध नहीं जो धर्म (सत्य) पर बल न दे। यही कहावत चरितार्थ है हमारे देश में चौधरी चरण सिंह जी हमारे देश के गौरव हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी जी के सच्चे अनुयायी हैं और आशा है कि परमेश की कृपा से हमारे मध्य वर्षों रहकर देश को उचित दिशा प्रदान करते रहेंगे।

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाते मैं समस्त आर्य जनों की ओर से 'आर्यमित्र' तथा उसके सम्पादक एवं पाठकों की ओर से परम प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि चौधरी जी शतायु हों और जीवन तथा ज्योति से राष्ट्र को पथ दिखाते रहें।

आर्य समाज मेंडू का शोक प्रस्ताव

आर्य समाज मेंडू के विशिष्ट संस्थापक एवं उन्नायक पं० श्री राम प्रसाद जी आर्य [illegible] का निधन दि० २७-११-८३ को सढ़ोली जिला हरदोई में अपने कनिष्ठ पुत्र श्री डा० सत्यदेव जी के घर पर हो गया, यह दुःखद समाचार सुनते ही आर्य समाज मेंडू के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण शोक संतप्त हो गये। आर्य समाज की तन मन से उन्नति चाहने वाले ऐसे आर्यजन बहुत कम देखने में आते हैं। आर्य समाज मेंडू उनको शोक संतप्त हृदय से शोक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता है, कि उनकी दिवंगतात्मा को शान्ति प्रदान करे और परिवारी जनों को धैर्य प्रदान करे। ऐसे महानुभाव और आर्य प्रेमी के स्थान की पूर्ति होना असम्भव है उनको सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि, उनके शेष कार्य को पूरा किया जाय।

—सूर्य पाल सिंह
शाखा मन्त्री

—श्री लाला राम गोपाल जी शालवाले के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि मण्डल रामनाथपुरम आदि का दौरा करने गया था। वहां से लौटकर श्री शालवाले जी ने बताया है कि रामनाथपुरम में सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों में आपस में सद्भाव का वातावरण है। [illegible] प्रमाण मिले हैं कि खाड़ी देशों से नौकरियों के लालच तथा धन आदि देकर ही धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

—प्रचार विभाग

—आर्य समाज निरालानगर लखनऊ की ओर से फैजाबाद रोड रामाधीन कालेज के सामने प्रति रविवार को प्रातः ८ से यज्ञ प्रवचन सत्सङ्ग होता है।

मंत्री

—आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव २३ से २५ दिसम्बर तक समारोह से मनाया गया। उत्सव में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री इन्द्रराज जी, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती एटा पधारे थे। अनेक महिलाओं ने दहेज प्रथा को जड़ से उखाड़ फेंकने की शपथ ली।

—देवेन्द्र कुमार

—श्री देवी प्रसाद आर्य वानप्रस्थ प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर देहात ने श्री पं० रामगोपाल शास्त्री के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है।

—देवी प्रसाद वानप्रस्थ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

necessity for the doctor to fight for his existence, and to take part in that exciting race of competition which is initiated by the progress of science, and by the larger degree of specialization. This latter fact makes people more critical, and causes them to increase their claims on the members of the profession. New difficulties and tasks, though with a quite different background, seem to face other occupational strata too. It is obvious to anybody that the general type of clergyman has had to undergo a substantial change in the direction of closer intimacy with his parishioners. And to find the members of this highly conservative profession amongst those who are calling for a reformed, socialized world, testifies also to my thesis. All this means new specialized fields of study for the social psychologist. This task is comparable to the modern science of industrial psychology, devoted to the vast problems connected with modern industrial life, a special field of psychology which has made so good a start in Great Britain.

13. The attentive reader will have understood that the present writer has not in mind an absolutely communistic State. First of all, we have to await the further development of the U S S.R., whilst carefully watching and learning, and applying in our countries what we have seen and learned, as much as is expedient. But even if one were inclined to advocate Communism, one could not justifiably waste even one page in a small volume for this end , since it is obvious that the individual countries of Europe and America are at present not prepared to accept a true copy of Russian conditions.

However, the author regards an intensified State-control as unequivocally necessary . a control of all spheres absolutely essential to a high level of well-being of the citizen. But, first of all, he advocates the absolute protection of the individual ; of all individuals, and not only of those who are clever or competitive enough. The State-organization should enable the millions of citizens to develop and to live as individuals free from unnecessary pressure, whether from external or from internal, i.e. neurotic, sources. I do not regard such a state of affairs as Utopian ; at least, not so far as concerns the material possibilities utilized in the State-organization.

It need not be said that the author's idea is not a dictatorial penal code of increased severity, but a gradual change in official and public opinion about social and anti-social behaviour. The discouragement of all the wrong in this direction should be mainly

left to the moulding *social process*. And the start of this change can be made only by the Administration. It is not possible for everybody, however high his position, to be totally just and benevolent and free from human weaknesses and prejudices. But as the judge in Great Britain puts on his wig and gown when performing his sacred duties, so any member of the Administration could put on such a ' mental wig and gown ' when dealing with the lives of others. To leave, however, to the voluntary fairness of the individual such wide spheres of decision beyond the possibility of control does not seem to be truly democratic, if this implies the care for the happiness of all benevolent members of a State-community. To rely on the spontaneous fairness of a few implies inevitably a considerable risk of harmful individualism on the part of those others who are of a different mental make-up. The best path to a gradual remedy appears to be, as pointed out repeatedly in this book, a planned improvement of public opinion and of the general *social process* that creates the social character of the individual, whether a simple citizen or a member of the Administration.

14 The legal system of a State requires an appropriate budget and an appropriate staff for carrying it out It may be asked how a theoretician, elaborating his plans of social improvement at his writing desk, can suggest a hypothetical ideal of State-management, which—if taken seriously—would involve at least the creation of a new, very large department for the physical and mental well-being of the nation.

Well, the theoretician has his ideas also about this. He is firmly convinced, and this has been stated by others in the past, that the existing administrative body could be substantially simplified , and that a not inconsiderable amount of rules and regulations, of formal requirements in jurisprudence and local administration, could be dispensed with. The lawyer will probably disagree. The average lawyer is so fond of the accumulation of details he once learned, and which he daily employs, that he would hardly be prepared to give up even a fraction of them. Yet, let him consider how many details of minor significance are temporarily—for instance, for the duration of the war—dispensed with. He knows much more than the psychologist of the historical genesis of individual regulations , how many legal formalities are only sacred because they are sanctified by the passage of time ; how many exist only because there is a

continuous need to alter and to supplement the 'primary' legal definitions and regulations, which are not themselves absolutely up to date and are not absolutely necessary for beautifying our present mode of life

No doubt the new, reformed State-idea, the new and supreme department for social well-being, would necessitate a great administrative system, both scientific and executive. Yet, as has been said above, much of what appears to the conservative lawyer and politician as absolutely necessary in the existing administration could be dispensed with.

15. It is impossible for any individual country—and especially for the many small States in Europe—to prevent wars, and pressures of a less bloody character exerted on them from outside. But it is absolutely possible for them to enjoy internal prosperity more than in the past, if they are granted years of external peace. It is definitely possible to create a more humane, more quiet, more productive and more progressive atmosphere within the State. And it is not improbable that such enviable internal conditions may at the same time command some respect in the hearts of people living in other countries and under less progressive conditions. The immediate or distant effect of such appreciation may perhaps bear political fruits not obtainable for a small country by the best armaments and fortifications.

It would be short-sighted, and even criminal, to rely again on democracy alone, as this principle has been conceived in the past. Political democracy, as we know, is incapable in itself of guaranteeing internal peace and the happiness of all its citizens, *if* the spiritual background of the mass of the people is *not* based on the absolute acknowledgment of humanity, social justice, and condemnation of prejudices. And this is never the case spontaneously! To accomplish this task, a stronger hand will have to be employed, and a management of internal affairs different from the usual conceptions. We know today, more or less well, what is the necessary amount of 'freedom' of the individual to make him genuinely happy and to make him enjoy the life within the community. It is not the freedom that gives a free hand to hate-propaganda, to the many 'anti-ideologies', or encourages a continuous fight for political aspirations that spring simply from different tastes and group-interests.

16. I have to recall here a remark made at the beginning of this

work, about the reluctant attitude of the 'efficients' toward minute analytical social research or toward 'socialistic' suggestions. Those people who are in 'a good position', and a great number of those who read much and have enough initiative to view with a critical mind what they read, and to argue in writing and in public speeches against suggestions of reform, belong in fact to the small fraction of the population that is fit to live fairly successfully under existing conditions. Their fitness, whether based on personal toughness or, incidentally, on the better circumstances of their private lives, has been the very factor that has helped them through all the existing handicaps, and permitted them to become and to be what they are, in spite of all the social deficiencies weighing on others. They may simply argue that we reformers exaggerate, that we are too sensitive, or even paranoid [1] personalities ; and that the existing order, with some additional small allowances to the masses, may be just the right state of affairs.

Others, psychologically more gifted, may realize that we have in mind the weaker but larger strata of society , and may think that it is, in fact, not worth while, for their sake, to reform society ; just as we wish the neurotic to become 'stronger', and to adapt himself to the standards of the 'normal', and not vice versa. The reader, if not acquainted with the broader and detailed facts of social life, may even think that the present writer, being a physician to the psychopaths and neurotically weak, is drawing from his material of research general conclusions that by no means justify the generality of his argument.

My reply is the following · True, we need and advocate the various fields of social reform for the benefit of those millions who are at present not happy enough, not efficient enough, but who are still very human, and potentially very estimable specimens of the genus *homo sapiens* ; and who, if put into a different social and ideological setting, could constitute more distinguished, and even more productive, members of the human community ; apart from the fact that they are morally, at any rate, entitled to have more human happiness and ease than they actually happen to enjoy, if this be possible.

The absolute number of those who participate in a more or less quiet, more or less dignified and peaceful but still stimulating life of the human communities, could be substantially greater if our social conditions, economic and cultural, were more advanced. And I declare that the great majority of those who today are

[1] Cf Ch. XV, p 91.

unable to view with sympathy and understanding the possible change of their accustomed modes of existence, will gladly accept it if once in operation. I am reminded of an aged gentleman, once a very successful business man, but a tyrant over his environment, and now a poor refugee in Great Britain, but still no less insistent on imposing his will and opinion on his people. His son, himself well over forty, and hard-working, wanted to buy a wireless-set. True, their means were very limited ; but the air of depression weighing heavily on the younger members of the refugee family—poverty, restriction of movements, relatives tortured abroad—fully justified the desire for a little entertainment. But the 'tyrant' said definitely "I will not have it." Then, a year later, somehow the old man had to agree, I do not know exactly why. First only grudgingly watching the 'younger generation' listening to the English broadcasts—he himself hardly speaks a few words, being now about eighty-five —little by little he took possession wholly of the wireless, and now there is no part of the day when he is not listening to anything available. And he is proud of the wireless-set "he had bought". Something similar may happen with our 'conservatives at any price', both young and old, both rich and only moderately well-to-do, if they be allowed to live in a world basking a little more in the warm and bright sunshine of an obviously reformed communal condition

17. There would still remain millions of backward people, sluggish, indolent and simple, and unable to enjoy and participate in higher standards ; though nobody need suffer from hunger, from lack of a proper roof, or from oppression. But there cannot be that mathematical equality advocated by unrealistic pedants, or by lazy and inefficient but rather aggressive demagogues, who themselves and whose followers were incapable of contributing in the slightest degree toward communal interests and communal harmony. That marked inequality of human living obtaining today is not wrong because of the very fact of inequality, but only because society needs a little more means and rights for millions, and cannot achieve this without taking something from the privileged few ; but not simply in order to create an artificial equality, and to satisfy the envy which lies disguised behind such tendency for a 'social symmetry'. There will always be, and has to be, some means of enabling those who are capable of utilizing the extra for a better cultural and human standard,

whether that of their fellowmen or of their own family, to have access to some ' extra allowances ' of life ; necessary, for instance, for research, for art, or necessary for meeting their more sensitive needs of body and mind, and so on. But simply to equalize means and to give a superfluity for free use to people who would not know what exactly to do with their rights and means, apart from spending more, such a state of affairs is certainly not the guiding idea of the present author. Consequently, he claims still to be a realist, though of that second kind mentioned in his introduction.

I am satisfied that people, deep down in their mind, do not want ' equality ' , this notion is a more or less artificial concept, created in response to social difficulties. So far as individual psycho-analyses lasting for several months can indicate, the only thing people want is subjective happiness , it is their neurotic trend that makes them more or less want to *submit others*, preferably their nearest relatives, to their ' prestige '. At the same time, even this latter trend does not exclude the absolute readiness on their part to *submit to others*. There is no genuine trace of an elementary urge for ' equality '.[1]

But the even distribution of means is not the fundamental principle leading toward true social improvement. One should rather say that the *more even distribution of burdens and pains*, both private and communal, is the desirable magic formula. And this latter is quite a different matter. It implies rather less pressure on the poor and uninfluential, the abolition of the continuous fear about elementary needs of the individual and his family, that is, the abolition of that sense of insecurity by which—it is true—you can rule and keep down the free individuality of millions. What is also necessary is the maximum of knowledge on vital problems of psychology and sexual character ; the granting of all available means of public assistance, to forestall the development of an advanced neurotic make-up or physical disability ; and also an appropriate share for everybody in the beauties of civilization and nature. And the enjoyment of all this should be made possible without much bureaucratism, without making the individual into a dependent child, into a docile subject of Governmental charity.

The complexity and the difficulty of materialization of such a standard is clear to everybody, the present writer included And the only possible thing to do, for our generation, is to start immediately with acknowledgment of the necessity of such an aim, and to bring about at least the manifest spirit of such a

[1] The urge for ' equality ' and prestige springs largely from neurotic sources

State-idea in the needlessly complicated organizatory mechanism existing today all over the world.

On the whole, what I advocate aims essentially at the maintenance of more or less protected privacy of every life. I have in view the possibility of private enterprise, besides the necessary State-control of all goods essential for human life ; and also a firm State-control safeguarding the individuality, the inner freedom of a person who is employed, whether by the State or by a private firm.

The world *can* be managed without such human ideals , everything can be maintained as it is, if only a strong police force prevents wars and the violence of revolutions. *People are weak, if not given the opportunity to be strong.* They have their faculty of adaptation. They could still tolerate existing conditions. They could laugh and live, as they have done so far. And they might learn again to forget the idea of a social reform, forget to visualize the possibility of altering so much which is not absolutely necessary to put up with They could be deceived again, kept in ignorance and in unawareness of what could be done for them and for all of us. *The question is only whether it is just, whether it is human, and whether it pays to prevent, for decades, the earlier materialization of that which is at a later period bound, inevitably bound, to come.*

CHAPTER XXVII

CLOSING REMARKS

1. At the end of his expositions the author feels that he has to add a few explanatory words as to the objective validity, or, let us say more modestly, as to the fair probability of his statements, interpretations, conclusions, and suggestions He thinks that the psychological part of his present work is based on fundamental findings, on which there cannot but be a more or less general agreement amongst the eclectics [1] The particular method of his presentation, and a number of new interpretations of his own, do not, he thinks, essentially alter this fact.

As to the social aspect of his expositions, there is a need for saying the following · The author has not in mind a particular

[1] Scientists choosing the best from different sources, and not dogmatically committed to one school of psychology or philosophy

country and Government, least of all Great Britain alone. He happens to know a few countries in Europe ; and he has now, for four years, been staying in Great Britain He has had the opportunity of analysing a sufficient number of people from different countries, and of different occupational strata of the working and the middle classes, to feel his conclusions on the whole justified. He is satisfied that the aspects discussed by him, in their totality, apply more or less to conditions in Europe, but this latter taken as a whole , though certainly not to the same degree, in all points, to each part of Europe. He has to admit, for instance, that the sense of ' fairness and courtesy ' and that calm leisurely way of living, both peculiar to the social life of Great Britain, make things, for the most part, easier in actual life. And this fact may induce a great number of people to believe that the social suppositions on which this work is based do not apply at all to this country. He also admits that the religious life of this country has contributed on the whole rather beneficially than not to general conditions. He would, however, find it unfair to deny the little information his book may give, especially to the reader of this country It is not the separate individual points, but the whole frame of this book, that he would like to receive consideration and to stimulate discussion. There is much in his work, though deficient, which may merit, and find, the genuine interest of the public. Psycho-analyses, carried out on people in this country, show that in the way of expressing life there may be a substantial difference between people of this country and those in other European countries. But the fundamental psychic processes, problems, conflicts, and their environmental sources, appear essentially identical all over Europe. And with this, the possible methods of remedy may, perhaps, also be substantially the same *The main thing is to grasp the essence of phenomena.* And the main idea of this book is . *Do not let us rely, in the great cause of human happiness, on the voluntary fairness of people alone, if there be a way of intensifying, through a better-planned social process, this fairness of spirit in all inter-human relations.*

The highly complicate conditions of a just distribution of opportunities of living require much mutual consideration, limitation of the individual's movements, and the creation of a well-organized community. But the author is convinced that the ultimate aim of all social progress should be the integrity and satisfactory condition of the affect-self of the individual. Man's emotions, their harmony and their full expression, as far as possible, on refined lines of living deserve the protection of the

social organization. And the latter is, in fact, not worthy of existence except as a means of enabling the individual human being to ' be ' and to enjoy his unique being. All endeavours to deny the significance of the individual and his right to live, and to put first a communal organization for its own sake, are, so the author feels, expressive of disguised hatred . hatred of self and of others based on an unjustified, neurotic inferiority-complex of individuals. The given conditions at any period of history might require maximal restrictions of the individual's life ; but the awareness of their forced necessity should never cause to disappear from consciousness the genuine aim of life : the individual's freedom to self-expression and self-experience To allow again such a mistake on this point, and even to organize it, would again pave the way for slavery, would lead to the mental self-destruction of the millions, and to the tyrannical power of a few. In the sphere of bodily well-being there has never been a mistake about what is ' normal ' and desirable. Pain and suffering, and limitation of the duration of life, are, in fact, constant untoward accompaniments of human existence. But the clear awareness about what is the ideal of desirable normality has never been doubtful to the sane mind.

2. The attentive reader must have realized that the core of the social problem is the element of aggression in its various aspects and manifestations.

Resentment, envy and hatred, competition and exploitation, educational and ' conventional ' pressure, intimidation by prejudice, superstition, and ill-conceived moral conscience, the gross inequality in social significance—these are the individual chapters of the treatise on aggression. The impulse of hatred in the individual interferes in various fields, and under various disguises, with the life of the others ; and through unsuccessful repression the emotion of hatred recoils on the personality, and produces disease, malfunctions of body and mind This is perhaps the most significant truth discovered by psycho-analysts. And the counter-force and remedy of this destructive tendency has also been unequivocally established It is *love*.[1] Not that love which only gives, not that love which gives itself up. It is rather the love that enjoys its loving. The enjoyment of oneself through fair satisfaction with oneself, and, to even a greater degree, the enjoyment of others who are the object of human love, are the

[1] Cf Freud, *Civilization and Discontent* , Stekel, *Sadism and Masochism*

factors which keep in balance the excess of aggressive and 'self-aggressive' tendencies. The faculty of love does not depend merely on will. It depends first of all on the presence of lovable objects; and then on the absence of mental complexes inhibitory to its operation. One cannot love oneself if, rightly or not, dissatisfied with oneself. And one cannot love others if to do so entails too much risks of being disappointed, under-estimated, and burdened with obligations which break one's individuality—and finally one's faculty of love. Our existing social system exposes the feeling of love in friendship, marriage, and family to constant attacks. It makes the individual neurotic, irritable, insincere, intimidated; in brief, unfit for a life of adaptation. The warm atmosphere of the family circle is at the same time permeated with tension and suppressed hatred. All social collaboration and personal friendship is overshadowed by the cloud of distrust. Religion and the moral code not only lift the mind into the heights, but press the personality down on its knees. And in this life-atmosphere the love-satisfaction decreases, and the hatred impulse, though suppressed, increases. What manifests itself as unbridled sexuality is in fact a symptom of mental unrest, of unquenched thirst for love, for satisfying love.

The diagnosis is made. The pathogenic factors are discovered. The aim of treatment appears clear But the particular ways and means are still in obscurity Man should be relieved from every avoidable pressure, and enabled to love. But how to attain this aim? Where to start with constructive demolition, where with new building? How to forestall the volcanic manifestations of transition? There is no full, no clear answer possible today But the aim is clear; and this itself is reassuring.

Reformatory attempts, whether political, social, or religious, have always met with considerable resistance. The bias of tradition, habit, and tangible interests, in brief the powerful influence of existing conditions (*social process*) on men's minds, result as a rule in the firm belief that suggested changes are neither desirable nor feasible. This subjective attitude of inertia is objectively and intensely opposed by the accumulation of historical experience Innumerable conceptions at first considered to be Utopian dreams, or even expressions of inacceptable and dangerous tendencies, have ultimately become part and parcel of universal ideologies; again and again advocates of new doctrines, once attacked as enemies of social morality, have become admired leaders; so that it is rather naive at any time of history to view existing conditions with any confident belief

in their final validity. The richer our historical and scientific experience has grown, and the more frequent has been the occurrence in the course of social and scientific history of sudden and revolutionary changes, the greater should be the doubt felt by any generation and any individual in the objectivity or finality of the existing system of beliefs and conceptions. The overwhelming lesson of historical experience should create a new attitude in thinking men toward their contemporary mode of seeing things. If anything is clearly taught by history, it is the relativity of particular human conceptions and modes of social life. There are obviously only two fixed principles the undesirability of avoidable human burdens and suffering ; and the logical duty of each generation to explore every avenue that promises improved material and spiritual life, both social and individual. The writer thinks that nothing can be more fundamental than the acknowledgment of this truth, apparently so simple ; and there should be hardly anything in the social and cultural life of men that is weighty enough to have superiority over the before-mentioned two fundamental principles.

3. Now here arises a serious practical problem. Just as the individual is entitled to adhere to conditions and principles that make him fairly happy, so each generation is fully entitled to value and cherish those traditions and ethical principles which contribute to the welfare and happiness of the substantial majority of its members. No doubt this fact might stand in the way of progress for the future. But it must not be allowed to do so. There must be a mode of wise compromise between a firm adherence to contemporary social and moral philosophy on the one hand, and the regard for a possibly different future on the other. The same conflict—and a similar compromise—has taken place from time immemorial in the life of parents with regard to the later independence of their children. There must be a mode for the present generation to live its life fully, combined with an allowance for the different needs of the future, social and cultural. One may live peacefully in one's own home, and live there after one's own fashion, without interfering with the freedom of the pathways leading into the distance. This is, of course, only a very simple analogy. And no analogy, even the best, fits exactly. But the principle of a wise compromise is nevertheless fully valid. It is the most obvious teaching of man's cultural and social history.

A substantial part, however, of the masses in all countries cannot imagine a mode of life essentially differing from that of past centuries. For innumerable people—both people with personal initiative and those of an inert and dependent type—social and national life means restless competition, struggle, and the exploitation of those in weaker positions in all fields. In view of these undeniable facts, it may appear very doubtful whether increased knowledge and the craving of merely passive or even of ethically minded masses will ever create a new world. We know a number of people who like studying in solitude, or discussing with friends, modern social conceptions and deep philosophical problems, individuals who at certain moments—on holidays as a rule—unmistakably display even metaphysical inclinations ; but when they return into the prosaic life of everyday activity, to business, politics, communal affairs, they return with the greatest naturalness to the usual *savage modes* of thinking and valuing, essentially the modes customary since time immemorial amongst the mass of ' non-idealists '. They even do not realize the contradiction in their attitude , they do not realize that their ' lofty moments ' are not only an implicit condemnation of their normal life, but pointers to a feasible different way of feeling and acting

Here is, indeed, one of the puzzles of human nature, which may make the critical mind doubt whether increased knowledge may be conducive to progressive social improvement And indeed, the writer himself has no other logical suggestion to offer than to say : The greatest possible knowledge and the greatest possible improvement of social organization, in brief the greatest gift of kindness manifested on the part of a State to its members, cannot have the desired effect without ruthless suppression of anti-social, inert, destructive tendencies on the part of those who essentially are savages in modern clothes, speaking the language of ' the ascent of man ', and employing the advances of human science, for the gratification of their traditional ' subcultural ' modes of living.

Let us keep in mind that human beauty and health are ' natural ' notions ; but their concrete existence has to be cultivated and safeguarded throughout life. Still more has social progress to be continually protected. Traditional modes of life are dynamic, not only because firmly based on the foundation of habit , but especially because they are more apt to give easy gratification to savage, aggressive, and self-destructive tendencies. Let us not deceive ourselves about this psycho-biological factor

in man's history. It is not the intellect, neither is it the idea of a spiritual soul, that is the main moving factor of life ; these are but forceful correctives, and directives pointing to a distant idealistic goal. *Consequently, there cannot be a smooth and voluntary maintenance of human achievement.* There must be a firm and militant defensive attitude, if there is to be a substantial degree of life to be lived. And similarly, let us not forget another socio-psychological fact. Aggression, and achievements attained through power and force, exert a peculiar attraction on men's minds ; not only in the Far East, but, in fact, in deeper layers of the psyche of Western dwellers too. And these ' deep ' layers are even not necessarily very deep. Finally, let us repeat what has been explained in one of the previous chapters : Any individual or any organization of individuals in executive power who are indifferent or tolerant toward the slightest sign of social aggression are in fact granting satisfaction to their own half-conscious criminal tendencies. It is too late when their indulgence has led to developments they did not wish.

A substantial part of the usual State-administration in the past was nothing but such organized destruction of human individuality and happiness. Hundreds of thousands of people were considered ' Stateless ' and either simply tolerated or limited in their elementary rights, or even shifted from frontier to frontier. And all this occurred without serious necessity for the well-being of those who did possess the scrap of paper testifying to their uationality or ' naturalization '. I have to state that the conservative Great Britain has been far ahead of all other modern countries in human toleration of foreign people who were no proven enemies of the State or of society. And the prosperity of the others, and the general standard of life, seem not to have suffered but rather to have gained in consequence of this tolerance of what has been in fact an enrichment of the autochthonous population by different elements.

I cannot help stating the following : Social organizations breed all that is good and all that is evil. The implicit spirit of the State in its legal aspect and administrative practice becomes ultimately the fertile soil of destructive movements, emerging within that piece of Earth This statement, though daring, is based on an acknowledged thesis of psycho-pathology. I have pointed out more than once in the course of this book : Neurotic phenomena are essentially only distortions or disproportionate magnifications of subconscious tendencies, present also in the normal, And similarly, pathological traits of character are in

fact distorted imitations of existing and approved social attitudes. *But it is not the 'distortion' alone that makes the normal abnormal, and transforms the approved into the not approved.* The normal and approved contains in itself the nucleus of the abnormal and not approved. The social organization itself prepares, as it were, for times that are favourable for manifest terror and destruction, the conditions for development of these manifestations. A State-organization which would persistently try to weed out corruption, exploitation, passive or active participation in aggression, could therefore never become a fertile soil for destructive manifestations, however great the influence from abroad might be.

4. And now, after having finished his work, the author would like to say a few words about some apparent deficiencies of it. The reader, if enthusiastic about a new and better life in the immediate future, may miss concrete proposals regarding methods of 'sublimating' [1]—or eliminating—those aggressive tendencies of man so much in the fore of discussion today, and so horrifyingly manifested now for some years. The present writer does not feel qualified to expound on such practical proposals. There are others, more experienced in the study of concrete social spheres, who are called upon to give their lead to their contemporaries. Besides, it will be agreed that once the mental background has started to remodel itself, the feeling and thinking of people will spontaneously create such fields of activity as, apart from their usefulness, will help to 'abreact' (neutralize) those hating and aggressive feelings. Only the spheres of actual living can suggest and bring into being such definite modes of activity. The chief task of the scientific and political leaders is to do their best to give a socially beneficial impetus and direction to the minds of people.

Other remarks of many a reader may refer to apparent contradictions, revealed to the attentive critic of this book. He may not, for instance, grasp fully the compatibility of a broad interference by the State, as advocated by the author, with that democracy and freedom so much discussed, and with that spontaneity and that individual colouring of life which has been so much approved of in this book Yet this very instance of contradiction may illustrate the general answer of the author In describing mental attitudes, it is quite possible to stress the importance of two different factors, both equally valuable, both equally desirable for the refinement and 'socialization' of man.

[1] Cf Ch VIII (6), (7), (8), pp 38-40, Ch X, p. 52, Ch XI (6), p 66

To employ a very simple analogy, acid and alkaline [1] compounds are equally needed by the living cells. Human behaviour, whether in individual or communal life, is always the result of many simultaneous, and at times contradictory, mental tendencies. (The neurologist is reminded of the 'final common pathway' of Sherrington ; this notion expresses the fact that the anterior spinal roots, directing the muscular actions, are the collectors of different impulses coming from various brain centres, which multifarious impulses, as it were, vie for the possession of this final common pathway.) And this is the author's essential reason for presenting his exposition in small chapters, each reviewing a separate field of human life ; instead of writing a book of a more coherent composition For practical purposes, the understanding of such circumscribed domains of individual and social life is definitely more expedient than the usual academic continuity of exposition, which leaves no gaps in the presentation of its subject. And this selective and separating mode of description may present the appearance of certain inconsistencies between the individual statements of the present author ; but these apparent contradictions, so he dares to say, are essentially non-existent.

He also favours the more or less essay-like journalistic fashion for his *Social Psychology*. And he rather regrets that some of the chapters [2] *had* to be written in the difficult phraseology of psycho-analytical and academic psychology If his capacity for clear and easy presentation in English had been more accomplished than is, in fact, the case, he would, with great pleasure, have discussed even these more difficult topics in the easier, popular way. Because a true social science, destined for practically minded people, does well to abandon the abstract and lengthy modes of scientific presentation, in favour of a description approaching the actual, realistic ways of thinking and seeing, usual in ordinary life.

[1] In terms of chemistry, *antagonists*

[2] They present some new suggestions to the student and research-worker of psychology The author asks his colleagues too to pay some attention to his small volume.

APPENDIX

EXPLANATION OF A FEW PSYCHOLOGICAL CONCEPTS

Bisexuality of the human individual is a psychological notion In the sexual sphere it implies that every person has the potential faculty to feel in a libidinal way towards members of the same sex. Besides, many men display feminine attitudes ; whilst a number of women would like to be in certain respects men The libidinal bisexuality is a cerebral function ; it is not directly the result of the heterosexual hormone that is present in the organism of each individual. Folliculin, the ovarian hormone, can always be found in the testes and urine of adult males Androgene, the male genital hormone is also excreted in the female urine, and thus its presence in the female organism is certain

Dreams are products of unconscious activity during sleep Their contents are mainly disguised, symbolic representations of mental problems of that person The various organic processes have their share in the stimulation of dreams ; but they do so through creating or intensifying emotional processes In the opinion of the author, dreaming is an emotional process contributory to mental health. It goes on throughout sleep, but it does not result always in recollectable dream-pictures.

Instincts are innate biological drives, prompting the individual to feel, desire and behave in a definite manner without previous educational training The instincts of self-preservation, of procreation, of pugnacious self-defence, the instinctive curiosity to explore anything new in one's environment, the parental love and care for the offspring, etc., are such innate biological drives It is clear that their particular operation is greatly subject to individual variations, such as are due to moulding influences of society and education, in brief, to human cultivation And this makes human instincts essentially different from the parallel forces in animals.

Another characteristic of these drives in man is that their operation is *not* limited to the attainment of necessary biological goals. The instinct of sex, aggression, curiosity, and the desire for food, are certainly operative far beyond the corresponding biological necessity It is intellectual and intentional suppression, followed by subsequent intra-psychic repression, that sets a limit to these urges in their manifestations as ' appetites ' and wish tendencies

Intravert (self-centred) is the type of individual whose emotional interest and thinking is in a great degree concerned with his own subject, physical and mental He has a difficulty in feeling with and for others (*empathy*=putting oneself into the other's position) , he can only insufficiently participate in general interests, to react in the ways of average people, and to conceive of himself as one of the multitude

Such an individual is subject, more than is expedient, to the influence of his subconscious, unrealistic tendencies And external reality does not sufficiently counteract and modify his own individual sentiments. (The expression '*autistic*' denotes a similar concept)

Another difficulty in escaping from the undue influence of one's subconscious processes is the result of a certain narrowness of outlook. The broader one's outlook or intellectual latitude, and the more adaptable one's emotional thinking, then the more limiting and modifying are those factors which interfere with the influence of subconscious processes This applies particularly to the process of *projection* and formation of prejudiced—logically unassailable—opinions. Such a narrow outlook is frequently the outcome of a defective development of the emotional function as a whole ; and it is in many such individuals associated with other signs of unsuccessful repression of instincts A certain type of moral education stressing too much the 'devil in man' appears greatly to increase the factors leading to such a development

Extravert denotes the alert, social and practical type of personality. If an extravert type shows the signs of intellectual and emotional limitations just described, he probably suffers from the presence of too strong pathological complexes with no sufficient counter-regulation.

Neurosis and psychosis are two different conditions, and *not*—as the layman believes—the second a stronger form of the first In the neurosis there is a disturbance in subconscious ideation, owing to an emotional disturbance (conflict) But we do not assume that the chemical functioning of the brain is substantially altered in neurosis The neurotic always knows that his abnormal feelings or obsessional ideas are the expression of an illness Besides, a very great number of neurotic subconscious disturbances create merely 'organic complaints' (felt in the heart, alimentary tract, head, etc.)

The psychotic (in popular language the 'mental patient') suffers, so it is thought, from a substantial disturbance of the chemical processes in the brain The various delusions, and loss of critical intellect, are the consequence of this basically 'physical' abnormity The psychotic always believes in the reality of his delusions He is unable

to do differently ; we say he has no insight into his condition—apart from very light cases The treatment of psychosis is thus primarily physical, not psychological *The true neurosis is not the forerunner of psychosis.*

It is, however, true that the analysis of delusions of true psychotics contributed much valuable information to psycho-analysis On the other hand, the understanding of dream symbols enabled the psychiatrist to understand many of the delusions of psychotics But it has to be pointed out once more—the delusions are not the essential illness of such a patient. A similar case is the alcoholic who speaks and behaves improperly ; all this is only due to the poisoned condition of his brain The delusions are subconscious contents, brought to the fore following the psychotic disturbance of brain-processes These psychotic conditions are at present treated by electric convulsions, by insulin-coma, or prolonged sleep induced by drugs

Normal and abnormal with respect to mental functioning are not two opposite kinds of processes With Freud and Bleuler we believe that, essentially, all that is manifested in neurosis or psychosis is only the distorted or over-accentuated contents and tendencies present in the healthy, in the ' normal ' Bleuler states . " Hence what is important, we shall only recognize from the study of the growing psyche of the child, and above all from aberrations of those already developed in psycho-pathology *At this time one of the most important, if not the most important path to a knowledge of the human psyche is by way of psycho-pathology* " (*Psychiatry*, Ch XII)

' Normal ' and ' healthy ' are adjectives applicable to a person who is capable of an average subjective satisfaction, enjoying the average gifts and pleasures of life, having an interest in an appropriate measure of work, and being able to live a life of mutuality with a number of other people It is the ultimate balance of all intra-mental processes, the fair proportioning of part-tendencies, that decides a person's ' normality ' and subjective well-being But the quality of tendencies is universally equal in all human beings Thus, a person may behave in his dreams in a manner he would never consciously choose to do And there are always so-called ' abnormal ' complexes in the normal too, but only in a dormant, subconscious and counter-regulated state.

Reaction means response. In psychology—and in general physiology—it denotes thus not a simple passive reflex. Reactive formations of the mind are complex products, in response to a certain life-situation. If, for instance, one has had a disappointing experience

with a friend, he may develop the idea that 'most friends are unreliable', and that one ought to be very cautious in trusting anyone. Clearly, this is a newly formed mental attitude of a complex nature; or more accurately, it is a complex mental content, together with a tendency to behave in a certain manner. It is obvious that in the course of life every individual acquires a great number of similar reactive formations, both of a useful and of an unjustified character What we call *experienced behaviour* is in fact that which is based on an accumulation of such useful reactive formations A great number of reactions are only of a temporary nature, they do not repeat themselves in the same way in the course of life Every individual has, however, a number of characteristic constant reaction patterns

Subconscious processes of the mind are indispensable for health. It is only their incidental disturbance that leads to neurotic manifestations And such disturbances are in the life of many people as unavoidable as are indispositions of their physical organs

LIST OF BOOKS

List of a few books which the author happens to know, that deal with individual items discussed also in the present work Since the expositions of the present author are in no way based on the works of these other authors, the reader may certainly gain added view-points and information from their perusal

J C Flugel, *The Psycho-analytic Study of the Family* (Hogarth Press), 1921.

This work contains a comprehensive analysis of the family and of related spheres of life. It is based on a very effective utilization of a vast literature. Hundreds of references to the problem, scattered in psycho-analytical publications, chiefly of the Freudian circle, are elaborated into a homogeneous whole, and enriched by the author's comments.

The psychological background of the work consists in the main in the classical conceptions of psycho-analysis (libido-theory, Oedipus-complex, etc.), and it is probable that in a new edition today the author would increase the value of his remarkable work by presenting additional new aspects of individual and social psychology However, it is certainly still modern enough to merit the attention of all engaged in social and educational research

J. C Flugel, *Sublimation*, in the Br J Ed. Psychology, 1942.

This paper is the most up-to-date presentation of the problem known to me Its references to related publications are well-nigh exhaustive, and its reasoning is convincing through its scientific objectivity.

Erich Fromm, *The Fear of Freedom* (Kegan Paul), 1942.

This work tries to account for the readiness to accept dictatorship, and even oppression, by the feeling of 'isolation of the individual' in our age, which may be followed by a genuine 'fear of freedom'. The author speaks also about the *social process*, the problem of sadism and masochism, and about the position and responsibility of the individual in a true democracy of freedom

Ad Lowe, *The Price of Liberty: A German on Contemporary Britain*, 1937.

The author in his pamphlet says clever things on individualism, collectivism, and on that spontaneous collectivism which alone is compatible with freedom of the individual.

Karl Mannheim, *Diagnosis of Our Time* (Kegan Paul), 1943.

This book comprises a number of well-written essays on a variety of social and cultural problems. Attention may be drawn especially to the chapters on 'Mass Education and Group Analysis' and 'Christianity and the Planned Democratic order'.

PETER NATHAN, *The Psychology of Fascism* (Faber and Faber), 1943

This small volume contains a graphic description of the phenomenon of prejudice and its psychological foundation, *i.e* the projection of self-contempt and self-hatred on to others

KAREN HORNEY, *The Neurotic Personality of Our Time* (Kegan Paul), 1937.

This author, for a great number of years member of the traditional Freudian school and an experienced psycho-analyst, attempts to modify Freudian conceptions in the light of Adlerian theories. The neurotic manifestations and analytical complexes are brought into relation with general social phenomena, assigning a role of priority to the latter.

INDEX

adaptation, to hardships, decreases quality of emotion-ego, 36
infant's, 23
insufficient, 136
in marriage, 28
to sex-morals of environment, 50
of stranger, 113, 114, 115
Adler, A., 104, 151
on reactive traits, 65
affect-ego, 33, 34, 39 (*See* emotion-self)
balance of its constituents, 39
aggression, its repression, 53
is the social problem of first significance, 176
as solution of all social difficulties, 8
aggressiveness, from unhealthy nerves, 4
aggressive tendencies, in bureaucratism, 13
in education, 13
and hunting, 12
in State-control, 15
in various fights for principles, 12, 13
and wars, 12
aims of individual influenced by social conditions, 60, 61, 62
ambition from dissatisfaction, 12
anti-Semitism and psycho-analysis, 104, 105
is not an elementary tendency, 105
approval of aggression by social leaders, 87, 88
art, a need for psyche, 37, 38
a means of instinctual sublimation, 41
asocial trends are reactions of the mind, 65
atavism in political ideologies, 118
attitudes to parents and to State, 58
autistic, 82, 184

balance of power in family and marriage, 30, 32
beauty, enjoyment of it is not luxury, 39
Bentham, J., 90
birth control, 138
bisexuality, 93
Bleuler, E., 82
Burt, C., 41

change of environment and improvement of individual, 64
chief and subordinate, 20, 83, 84
child-parent relationship, statistic of, 31
child's natural urge for company (social instinct), 74
sexual suppression, 43 (*See* masturbation)
children and adults, 22
are a burden, 29
their protection by State, 161
are reminders of sexuality, 29
scapegoats, 29
Church, its care for adherents, 72
enables identification of its members, 79
citizen and individual, 67
citizens claim more aid from State, 73
Civil Servant, 13, 14, 20, 57, 69, 158
claim of duty not enough without energy, 30
colds and mental trauma, 69
communal feeding, 2
compensation and satisfaction, 146, 147
and sublimation through art, 41
competition, 15, 67, 78, 82, 98, 176
conservative outlook, 2, 171, 172
psychology of, 117, 171
constancy of conditions in individual and society, 88, 89
criminal or undutiful officials, 21
criminal's responsibility limited, 21, 22
Czechoslovakia's social insurance, 136

defence through insincerity, 142
delusion is externalized complex, 101, 102
depression is disturbance of emotion-ego, 33
desires of individual and majority of others, 40
destructive types like asocial Governmental system, 85
deterrent modes of social education undignified, 139
development of personality, best if guided, 129
implies intra-psychic struggle, 24
differentiation of individual from relatives and countrymen, 112, 113
disguise, of religion, 122
of sexuality, 51
dislike of work for others is primitive reaction, 70
dislikes, personal, and Civil Servant, 13, 14, 15
disobedience and moodiness of child is natural, 25
dispositions and social process, 55
divine superiority of parents, 140
doctor and aggression, 14
dreams, projection in, 94, 183, 185
dysbalance of mental processes, 96

Education, duty of State, 138, 141
factors of, 23
of masses, 143
in moral concepts, 142, 143
with sympathetic understanding is easing intra-mental struggles, 27
educational methods, better or worse results, 27

'c' factor, 41
efficient people's attitude towards reform, 3, 171
emigration, a serious event, 117
emotional condition of individual, society's contribution, 130
emotional freedom of woman a necessity, 49
emotional life, double standard, 135
  enlightenment on this problem, 138
  processes, silent, 35
emotion-self (emotion-ego), 33
  is the social personality-factor, 34
  defective in revolutionary conditions, 36
  and environmental factors, 35, 36
  and physical factors, 35
empathy, 81, 184
employee, his psychological background, 83
encouragement has only limited power, 130, 131
energy is limited, 28
enlightenment on family problems, 31
environment against intraversion, 80
environmental change and moral foundation of individual, 117
equality, and religious freedom in history, 2
  of all men in Bible, 5
ethical conduct and energy, 36
ethics in Bible, 5, 6, 121
European social conditions approximately similar in various countries, 175
explanation of social deficiencies, 7, 8
externalization, creating inferiority feeling, 98
  in excess a constitutional debility, 96
  is a universal mental mechanism, 92
  (projection), Ch XVI
extra-physical existences, 117

fashion and social instinct, 39
fear, of love, 50
  of freedom, 187
film-motives in dreams, 147
films, mental poison, 148, 149
  social-cultural significance, 145, 146, 147
fixation, and differentiation from relatives, 113
  impediment to marriage, 32
  and sexual inhibition, 47
Flugel, C J , 38, 187
Folliculin, 93
frankness, in psycho-analysis, 135
  in social life, 135
free will, its limitation by particular emotion-ego, 37
freedom of mind and spontaneity, 127, 128
Freud, S , 38, 104, 114, 151, 176
  on aggression, 10
  on paranoia, 92
Fromm, E , 71, 187

Government, and citizen, Ch XII
  its duty to protect society's peace, 85, 86, 87
  its power to improve, 68
Governmental system and intra-mental processes of individual, 57
Great Britain's social conditions, 175, 180
grudge of parents (children's freedom), 19, 163

happiness, of adult deeper than of child's, 130
  individual aims towards, 59, 60
  and nervous constitution, 64
hatred, its definition, 10
  denies significance of individual, 176
  from dissatisfaction, 11, 12
  in education, 163
  and emotional interest for the hated, 11
  from externalization, 11, 111
  from helplessness, 12
  of the heterogeneous, 8
  from intra-psychic difficulties, 12
  and narrow mind, 8, 9
  of parents, overcoming of, 57
  and prejudice is fostered by social system, 98, 180
  from projection of self-hatred, 96
  racial, etc , 138
  and self-hatred, 11
health, subjective feeling of, 25
helpless young wives and mothers, 30
home conditions and working capacity, 69
homeostasis, 39
homosexual complex, 93
homosexual submission to leader, 75
human physiology and psychology, education in, 138
hygiene, mental, 141

identification, 25, 26
  in child-adult relationship, 25, 29
  its difficulties in markedly unequal society, 78
  its disturbances, 26
  with employer, 85
  is incorporation, 25
  of members of society, 78
ignorance, and injustice, 18
  and social progress, 143
improvement of personality by altered environment, 82
incestuous tendencies, repressed, 44
  and sexual neuroses, 44, 45
independence of mind no sufficient guarantee of social peace and progress, 130
individual, claims of our society on, 141
  his contribution to his own emotional integrity is little, 130
individualism and collectivism, 71
individuality of women, and sex problem, 43
  in marriage, 49

inertia of autonomous Civil Servant, 80
infant, its hunger and its education, 23
infantile trauma, 24
inferiority feeling, individual modes of overcoming it, 61
initiative of individual expected by social organization, 55
innate dispositions, their education, 55
their decreased significance in a reformed society, 65
instincts, disregarded by backward social system, 66
integrity of self, 175
interference from anti-religious zeal, 124
from religious zeal, 123
intraversion and subconscious, 80
isolation of individual, 129
result of our economic system, 71
isolation, solitude and productive mode, 82, 83

Janet, P , 19
jealousy of man in sex, 43
of parents, 19
Jews, in delusion of paranoid psychoses, 101, 103
as psycho-therapists, 104, 105

knowledge, contemporary and Governmental practice, 85
is counter-force of unlimited projection, 96, 184
necessary for life of individual and society, 1, 2

language, capacity for learning, 115, 116
interhuman significance, 114, 116
legal forms at times only corrective of obsolete laws, 169
legal traditions, at times obstacles of humane progress, 91
libidinal relationship in higher sense, 49
libidinal tendencies, 49
life, study of, 138
study of, not absolutely necessary for happiness, 81
loneliness of individual, 73 (*See* isolation)
love, the corrective counterforce of destructive tendencies, 176
deepest in marriage, 32
fear of, 50
for Government very rare, 72
loving collaboration in husband, 30
submission, 74, 75

McDougall, 38
manager, and aggression, 14
understanding, 134
malicious joy, 12
marriage, 31, 138
from conventional necessity, 16, 73
faulty adaptation in, 32
the school of social collaboration, 31
the source of neurotic character-traits, 31
difficulties mostly from neurotic reasons, 32
masochist, 14
mass, gullibility and its psychology, 143
mass phenomena, 76, 77
masturbation, parents' fights against, 19
mistakes about it, 19, 139
medical service socialized, 2
melancholy is disturbance of emotion-self, 33
memory of educational force, 24
of unpleasant events are warnings, 24
mind is a complex thing, 1
modern individual, expectations of society, 27
and psycho-therapy, 154
money, its significance, 60, 97
monogamic claim, its genesis, 48
monogamy, 31, 43
moral concepts, education today, 142, 143
conscience, ill-conceived, 176
morality and threats, 140
mother and wife, comparison, 32
mothers, devotion to family, 48
who increase child's fixation, 30

narrow-mindedness and hatred, 8, 96
natural automatism of individual is not contributory to happiness, 129
need for reform, 3, 170, 179
neighbour, and one's difficulties, 7, 8
neophobia, 110
neuroses, 102
from unsuccessful regulation of life, 54
neurotic character-traits are copies of social attitudes, 97
neurotic memory of past events, 24
neurotic preference for stranger, 112
non-intervention in social life, 22
normality, conception of, 174
normals and sub-normals, 171
nurse and aggression, 14

obsessional neurosis following sex-liberty of parents, 51, 142
occupational groups, 40, 167
officials of defective moral and social character, 21

pain, causation by fellow-beings, 15
paranoia, a case of, 99, etc
and externalization, 91, 92
organic factor not known, 99
paranoid, 91
parentage and necessary energy, 28
parental image is important content of mind, 29
parental love for children, 28
parents and children, Ch VI, 140, 141
envying children's pleasures, 19, 163
are full of mental conflicts, 28
neurotic, 55
are weak mortals, 27

Parliament, its limited value, 89, 106
past and present generation, 5, 178
personality is complex, 1
personification of mental tendencies (externalization), 94, 95
philosophy of suffering, 37
planning of reforms, two kinds, 4, 136
pleasures, causation through fellowmen, 15
political propaganda and mental independence, 127
political tendencies could greatly decrease, 109
political tendency is not a genuine elementary mental factor, 109
politicians of hatred, 21
Popper-Lynkeus, 2
possible and impossible for the average mind, 9, 10
prejudice and injustice, 18
prestige, in marriage, 32
social life a neurotic artefact, 173
privacy, tendency of, 132, 133, 174
private enterprise, 174
progress and religion, 6
projection *in excess from emotional* narrow-mindedness, 96, 184
psyche, its core is simply structured, 137
its overstructure, 137
psycho-analysis, is not only intellectual process, 131
and submission to guidance, 134
psycho-analyst, prototype of environment, 29
psychological characteristics of psychologist, 152, 153
psychological education, its necessity and risks, 150, 152, 153
explanation of social phenomena are only interpretations, 107
psychologists, insufficient number and type, 153, 154
psychology, traditional academic and modern, 145
psycho-therapist and social structure, 154
psycho-therapy, and money factor, 70, 154
of preventive type, 70
psychotic, 91
public spirit and State, 86, 87, 157
purity, from ethical and neurotic sources of the mind, 45, 46

reaction, biological, mental and social, 23, 31, 65, 110, 116
reactive participation of individual, 129
Read, H , 38
recent conflict in causation of neurosis, 24
Redwood, D , 56, 68, 71
reform, personality types wishing it, 81
reforms hardly substantial without revolutions and wars, 154, 155
regulation, repression of instinctual tendencies, 52
of all functions, 53
relatives, mental differentiation from, 112, 113
religion, psychic value, 118, 119
its masks and substitutes, 122, 125
its relationship to citizenship, 126, 127
its relationship to social reforms, 121, 127
in Russia, 126
and sublimation, 38, 40
religious mentality, and social participation of individual, 120, 121, 126, 127, 184
entails certain exclusiveness, 118, 120
religious quest, subconscious, 118, 122, 125
religious tolerance, 123, 124
repression, for the sake of environment, 53
of instincts and refinement, 138
of religious tendencies, 125
of sexual instinct unsuccessfully, 28
successful, 39
resentment in infant, 23
resistance to education, 54
responsibility, of paranoid persons, 21
of social transgressors, 21
of State authority in checking social tragedies, 21, 86, 87, 88, 158, 180, 181
revealed religion unproven, 119
rule, acceptance of, 74

sadist, 74
Schadenfreude, 12
science, decreasing political interests, 109
interpretative, 149, 150
schizophrenia, pathology, 92
and persecutory delusions, 93
self-deception at times necessary, 144
self-feeling, viz affect-ego
self-feeling, mutual compensation within it, 39
sensitive people and their environment, 80, 81
sensitive types, improvement through environment, 82
sexual continence, bipolar necessity of society, 46
cultural need for it, 44, 45
sexual disturbances owing to unhappy parents, 29
sexual emancipation of individual and mental health of his children, 50, 51
sexual experience before marriage, 43
sexual impotency, 45
a copy of approved ethical attitude, 97
sexual instinct, subconscious inhibition of, 45
sexual liberty of man and woman, 43
sexual life of woman before marriage is a problem, 48, 49
sexual morals of society, 50
sexual neuroses in man and woman, 45 (and footnote)
sexual over-indulgence from unsatisfac-

tory social and cultural conditions, 63
sexual satisfaction in young men, 16
sexual stimulation through films, 149
sexual urge, its apparent absence, 51
and marriage, 16
sexuality, fear of, 32
and religious moral, 46
mental resistance against, 46, 47
silent emotions, 35
silent regions of brain cortex, 35
sister and wife, comparison, 32
social character, 79
difficulties of, 79
of production, 82, 83
social conditions, and capacity of love of the individual, 50
and the emotion self, 34, 35
social decency, its protection, 21, 22, 86, 87, 88, 158
social environment, its contribution to individual's emotional condition, 130
and overcoming of individual's inferiority feeling, 57, 59, 61
social improvements may decrease significance of nervous constitution, 98
social instinct, 58, 73
social justice is old principle, 73
social knowledge, 42
social organization, can improve family, 30, 160, 161, 162
only the protector of individual, 176
social prevention and psychologist, 153
social process, 56, 64, 83, 97, 111, 120, 128, 187
planned, 175
forming the individual, 56
and individual aims, 59, 60
social progress, aided by science, 2
guarantee of, 143
social reactions of individual, 76
social restriction and collaboration, yet integrity of individual self, 175
social sense, 58
social structure and psycho-therapist's problems, 154
social traits of individual, psycho-analytical explanation, 66
speech-centre in brain, 116
speech difficulties a social problem of child, 79
speech, utilitarian and emotional significance, 114
Sperber, 114
spirit of Governmental system, 67 (*See* Government)
'spirit' and physiology of human being, 139
spontaneity and environmental conditions, 36
spontaneity of adult, different from child's, 129
spontaneity of life, 3
enforced, 4
if guided, the best, 128
stammering is a social difficulty of the child, 79
State, Ch. XII, Ch XIV, Ch. XXVI, 180
assistance is only departmental activity, 68
could do more for citizens, 90
control of essential production, 90, 168
and individual happiness, 67, 68
its responsibilities, 21
sovereignty and individual's mental processes, 57
Stekel, W, 70, 104, 151, 152, 176
on a severe judge, 18
on sexual grudge of parents, 19
stranger, his backing by authorities, 112
his environment, 110
his moral foundations, 116, 117
his difficulty in adaptation, 117
his ease in adaptation, 113
strict clergyman, 18
strictness in education, 13, 19, 142
stronger and weaker groups, 74
subconscious contents, relation to conscious, 102
subconscious motives in decision, 14
sublimation, 38, 66, 138
and art, 40, 41
capacity of, 40
creative and successful, 40
and religion, 38, 40
of sexuality into love, social attitudes, religion, 38
submission, 74, 128, 134, 173
to brutality, 75
and homosexual love, 75
satisfaction from, 75
without breakdown, is due to satisfaction, 75
subordination, and its factors, 83
and mental past of individual, 84
resentment against it in neurotic sensitives, 84
suppression of inclinations, 4, 158
symbiosis in psycho-analysis, 131
syphilis, in our civilization, 16
of brain, 17

teacher and aggression, 14
team-work and individual peculiarities, 134
tension within family unavoidable, 140, 141, 142, 177
theory and practice, in psycho-therapy, 151
in Government, 71
thriftiness in excess, a copy of approved social attitude, 97
tolerance, and adaptation needs energy, 160
in religious questions, 123, 124
toleration of stranger and of new is a mental task, 111
tradition, 88, 117, 178

transference, emotional, in daily life, 133
emotional, in psycho-analysis, 105, 131, 132
transmission of acquired qualities, 66

United States' economic and social outlook, 56
unsatisfied women as mothers, 30

venereal diseases, 16, 17
voluntary fairness alone no guarantee of social welfare, 175

warder and aggression, 14
weakness, physical and positional, 160
wife, compared with mother and sister, 32. (*See* fixation)
her position, 160
Wood Jones, Fred., 66
work, and emotional transference, 133
appreciation of, 159
working automaton, 40

youth, right to education in all problems 138, 141, 163
young couple and help of society, 30

The individual, if not deeply refined, is greatly influenced by the degree of ' strength ' shown by the other partner Weak and ill and helpless people are pitied ; but the elementary layer of the mind does not respect them very much And on the other side, strength and efficiency, and a certain impressiveness of the personality, may increase the sexual attraction. This is so chiefly in the sentiments of the woman toward the man. But it is just as possible for the man to be attracted by his wife if she enjoys a certain social esteem and he feels that *she is not unprotected* and not dependent on him both for her keep and for social esteem.

Mention should be made of a peculiar process that exists in our society, menacing the position of wives. The man professes to wish the woman pure, with plenty of inhibition in her sexual emotions, and with endless devotion to the well-being of her family. That is often the idea the girl or young woman gains before her marriage, from her intimate and wider circle Then she marries, and automatically, perhaps without any conscious intention of hers, her psyche continues to develop the above trends ; it represses her genuine interest in her husband as lover, and sublimates all her interests into devotion to work and duty, whilst neglecting to cultivate her ' personality ' and ' sex-appeal '. In the meantime the husband grows in maturity, becomes older and more experienced—and at times, more or less even consciously, craves for a different, more ' vivacious ' wife. Usually he represses this wish, from self-esteem, and also from esteem for his wife. But the repressive process frequently fails, and nervous irritability appears, with the result that the man spends more time than is expedient for his family-happiness amongst other men ; at a club or in politics, at work, and so on.

The man enslaves the woman ; and then, when she unguardedly carries her self-denial too far, the man's emotions revolt against this. An improved social position of women may protect them from such a mistake.

7. Tolerance and adaptation is a function, a task, of the psycho-nervous system. Yet, if a person's mind is essentially disturbed—by worries, or simply by the sense of insecurity—or if a person has to spend his working time in an environment that shows no human regard for his personality, he may subsequently lack the mental energy necessary to carry out the task of adaptation and tolerance in his home. This, in turn, may, and frequently does, hurt the wife, decrease her wish to be attractive for him ; and